comicsmylife.blogspot.in

मनोज

नया उपन्यास

दामाद सपेरा बेटी नागिन

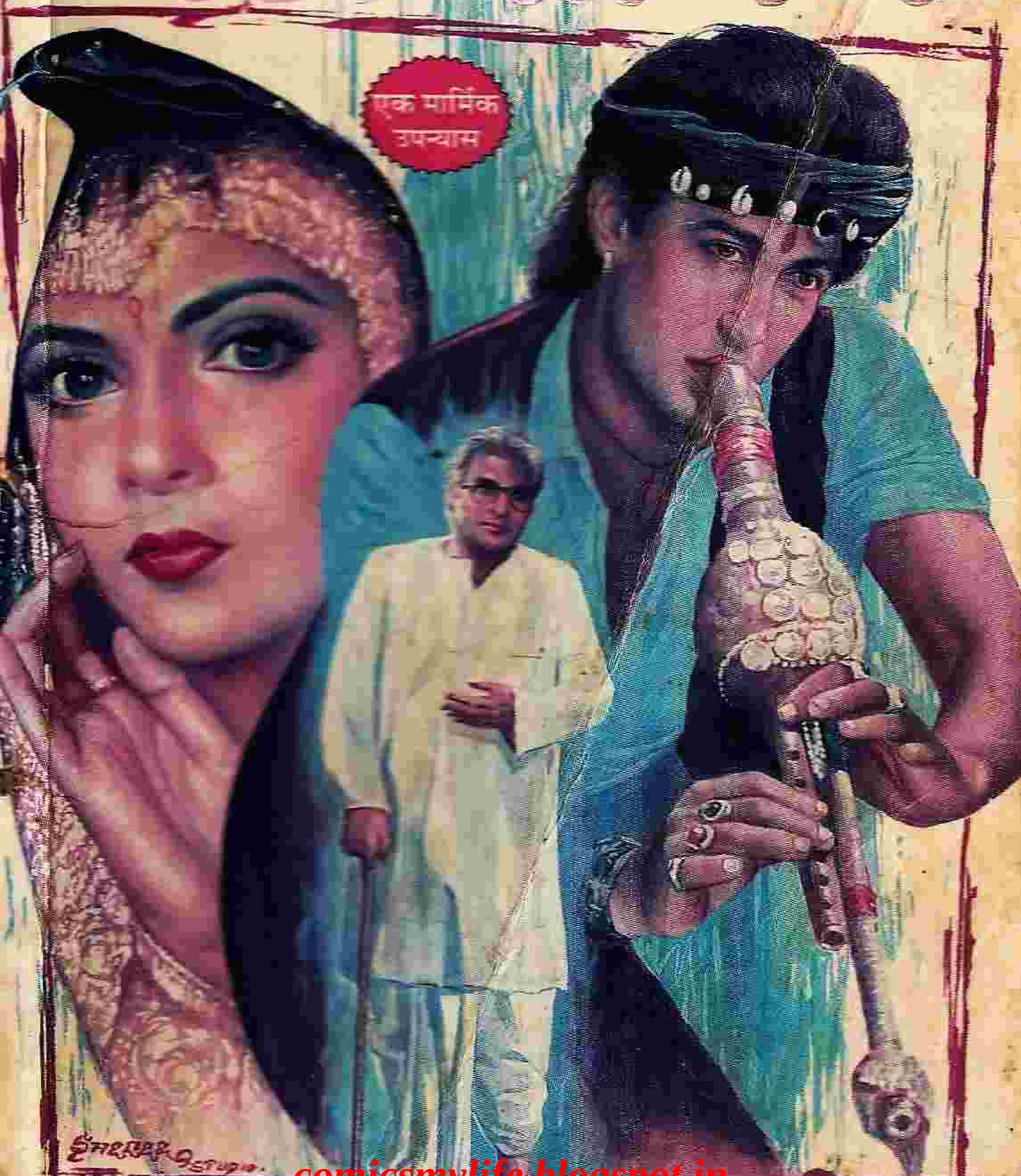

comicsmylife.blogspot.in

मनोज पब्लिकेशन्स
में मनोज के उपलब्ध उपन्यास

1. मिलन
2. अन्याय
3. मुसाफिर
4. पुड़िया
5. दहेज
6. विधवा
7. सुख-दुख
8. मझधार
9. सुहाना गम
10. औलाद
11. फर्ज का रिश्ता
12. बहन की डोली
13. सीता भाभी
14. अधूरा लगन
15. मंगल टीका
16. फूल और कांटे
17. सिन्दूर के लुटेरे
18. दहेज का कलंक
19. आज की औलाद
20. खून भरा आंचल
21. बदनाम फरिश्ता
22. खून बना सिन्दूर
23. डोली में लाश
24. काली बिन्दिया
25. गंगा का बेटा
26. दुल्हन का वचन
27. सूनी कलाइयां
28. ममता
29. अलबेला
30. बड़ी बहू
31. नजराना
32. सौतन
33. फांसी
34. बहू को न्याय दो
35. प्यार हुआ बलिदान
36. कलंकनी बहू
37. पाप की मेहंदी
38. उधार का मंगलसूत्र
39. सुहागिन दीदी
40. औरत का इंसाफ
41. नागिन का पति
42. सिन्दूर मिटा दूंगी
43. मैं सुहागिन हूं
44. प्यार झुकता नहीं
45. दुल्हन नहीं मैं आपकी
46. प्यार बना कफन
47. नागिन का बेटा
48. सात खून माफ हैं
49. रिवॉल्वर उठाओ अंकल
50. कलियुग का कर्ण
51. नन्हा फरिश्ता
52. मांग सजा दो सौतन की
53. पचास लाख का सिन्दूर
54. पांचवां बेटा
55. दस लाख की दुल्हन
56. रावण रेखा
57. सिन्दूर मेरे भाग्य का
58. शहनाई
59. राखी का कफन
60. दुल्हन मेरे साजन की
61. बहन बनी सौतन
62. सुहागिन बनी नागिन
63. अग्नि-परीक्षा राम की
64. कोई मां सौतेली नहीं
65. दामाद सपेरा बेटी नागिन

65\. मांग जला दी बेटी ने (प्रेस में)

मनोज पब्लिकेशन्स
761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084

दामाद सपेरा बेटी नागिन

मनोज

comicsmylife.blogspot.in

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रकाशक मनोज पब्लिकेशन्स
761, मेन रोड बुराड़ी, दिल्ली-110084
दूरभाष : 7611349, 7611869,
फैक्स : 7611546 मोबाइल : 9868112194
मुद्रक आदर्श प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

दामाद सपेरा बेटी नागिन : उपन्यास : मनोज

मूल्य : पच्चीस रुपये

इस उपन्यास के पात्र, स्थान तथा घटनाएं सर्वथा काल्पनिक हैं।
किसी भी प्रकार के वाद-विवाद का न्याय क्षेत्र दिल्ली रहेगा।

दामाद सपेरा बेटी नागिन

पराग कौटिल्य पाराशर के द्वारा न्यूयार्क के सेवन स्टार ग्रेड होटल ''अमेरिकन नम्बर वन'' में पार्टी दी गई थी जो उसकी बेटी पायल के बीसवें जन्मदिन के उपलक्ष्य में दी जा रही थी। विशाल हॉल में सैकड़ों व्यक्ति आमंत्रित थे। बिल गेट्स जैसा शख्स उस पार्टी में मौजूद था। साथ ही मौजूद थे कई अमेरिकन गवर्नमेंट के अधिकारी। कार्पोरेट जगत की क्लास वन क्रीम वहां पर मौजूद थी। हर शख्स की अपनी एक खास इमेज थी। पराग पाराशर अपनी बेटी के साथ तमाम गैस्ट्स को मिलवा चुका था। फिर वह डांसिंग फ्लोर की ओर बढ़ा। अचानक एक युवती को देख कर वह थमक कर रुक गया। उसकी दृष्टि युवती से यूं चिपक गई थी, जैसे गोंद में मक्खी।

पायल पाराशर ने अपने पिता को उस डांस करती युवती को घूरते देखा तो वह चौंक उठी। आखिर को उसके पिता न्यूयार्क की एक हस्ती थे। स्टील जगत में इण्डिया के बाद दूसरा नाम देश का नहीं बल्कि पराग पाराशर का नाम आता था। वह शख्स किसी युवती को यूं नहीं देख सकता था। क्योंकि उस शख्स के लिए विश्व की चुनिंदा सुन्दरियां भी वस्त्र बदलने से ज्यादा अहमियत नहीं रखती थीं।

''प...पापा! क्या देख रहे हैं आप?'' पायल ने पिता का हाथ दबाते हुए पूछा।

''अं...क...कुछ नहीं!'' चौंक उठा था पराग पाराशर।

''आप उस युवती को घूर रहे थे पापा। इज समथिंग स्पेशल इन दैट वूमैन?''

''मत करो ये सवाल बेटी।'' पिता ने धीमे से कहा।

''बेटी से राज छिपा रहे हैं पापा! अपनी पायल बेटी से।'' उसने आश्चर्य से कहा।

comicsmylife.blogspot.in

"क्योंकि मैं अपनी बेटी को दुख नहीं पहुंचाना चाहता।" उन्होंने फिर एक मेहमान से हाथ मिलाया, "आपकी उपस्थिति से मेरा सम्मान बढ़ा है मिस्टर रिक्सन। प्लीज एंजाय द पार्टी।"

"मैनी-मैनी हैप्पी रिटर्नस ऑफ द डे माई चाइल्ड।" सफेद बालों वाले बूढ़े रिक्सन ने एक लाल गुलाब को गिफ्ट के रूप में दिया।

"थैंक्स ए लॉट अंकल।"

दोनों फिर रिक्सन के साथ बार स्टेण्ड की ओर गए थे। जहां दोनों ने शैम्पीयन एंजाय की।

रिक्सन को फिर नए साथी मिल गए तो वह बेटी के साथ अन्य मेहमानों की ओर बढ़ गए।

"पापा! यदि मेरे भाग्य में दुख लिखा है तो क्या आप उसे दूर कर सकते हैं?"

"आफकोर्स।"

"मुझे यह बात दुख दे रही है कि आप उस युवती के बारे में खामोश हैं, जो बलिष्ठ कंधों वाले नौजवान के साथ नाच रही है। मैं जानती हूं उस नौजवान को। वह प्रिण्ट मीडिया का बादशाह डगलस थोर्पे है।"

"जिद्द मत करो बेटी।"

"प्लीज डैडी, टेल मी द ट्रुथ।"

"सच्चाई बड़ी कड़वी है बेटी।"

"आई डोंट केयर।"

"प्रॉमिस।" पिता ने अंगूठा आगे किया।

"यस, प्रॉमिस।" उसने अंगूठे के साथ अंगूठा मिलाया।

"ओ.के. बेबी, तुम मुझसे पूछा करती थी कि तुम्हारी मॉम (माँ) कौन है? उसकी एक भी फोटो हमारे पास मौजूद क्यों नहीं है?"

"उस बात का इस औरत से क्या रिश्ता पापा।"

"क्योंकि यही औरत कभी मेरी बीवी थी और इसने तुम्हें जन्म दिया था! माई वाइफ एण्ड युअर मदर। बट...बट...ए डर्टी बिच टू!"

"प...पापा!"

"उसने तुम्हें और मुझे इस कारण छोड़ दिया था, क्योंकि इसे

मर्द बदलने का शौक है। हम इण्डिया में थे, जब इसने तुम्हें जन्म दिया था। अब तुम बीस वर्ष की हो पायल।"

"सिर्फ सेक्स के कारण छोड़ा इसने?"

"यस, ममता की इसके लिए कोई कीमत नहीं।"

"व्हाट्स हर नेम?"

"कैथरीन...कैथरीन डायवोर्सड बाई पाराशर!"

तब पायल तेज-तेज कदमों के साथ डांसिंग फ्लोर की ओर बढ़ गई।

"चटाक्।" उसने कैथरीन को थप्पड़ मारा।

तमाचा खाकर कैथरीन नाम की वह युवती लड़खड़ा गई।

"कैथरीन जानना नहीं चाहती हो कि तुम्हारी बेटी की उम्र की लड़की ने तुम्हें भरी महफिल में तमाचा क्यों मारा? क्योंकि मैं चाहती हूं कि मां की ममता के लिबास में तुम अपने उद्‌गार प्रकट करो।"

"लड़की। तेरे तमाचे का जवाब मैं अवश्य दूंगी। लेकिन यहां इस भरी महफिल में नहीं। उसने पर्स खोल कर अपना कार्ड दिया, "मां और मां की ममता! इसका जवाब तुम्हें इस पते पर मिलेगा मिस पायल पाराशर। मेरा वह जवाब तुम्हारे तमाचे से ज्यादा ताकतवर होगा। आई लव मदरहुड बट युअर फादर डोंट।"

इतना कहने के पश्चात वह तेज-तेज कदमों से होटल के बाहरी द्वार की ओर आकृष्ट हो गई।

उस जवाब को सुनकर पायल अचम्भित रह गई।

❑❑

अगले दिन वह कैथरीन के विजिटिंग कार्ड वाले पते पर रवाना हुई तब उसके पिता ऑफिस के लिए निकल चुके थे।

लिंकन रोड पर कॉटेज नम्बर फाइव तक पहुंचने में उसे कोई परेशानी नहीं हुई थी। लेकिन जैसे ही उसने कार रोकी। वह यह देखकर चौंक उठी कि बाहर मानववध विभाग की गाड़ियां खड़ी थीं! फिर उसके सामने ही कैथरीन की लाश को मुर्दाघर ले जाने के लिए स्ट्रेचर पर लाया गया था।

जिन्दगी भर जिस मां के बारे में पिता से पूछती रही थी वह मिली भी तो चौबीस घण्टे से ज्यादा जीवित नहीं रह पाई।

comicsmylife.blogspot.in

उसने कार आगे बढ़ा दी! वह नहीं चाहती थी कि मोडिया उसके साथ कैथरीन का नाता जोड़े। यूं भी कैथरीन को उसने थप्पड़ मारा था और अब वह उसकी कॉटिज के बाहर देखे जाने का रिस्क अफोर्ड नहीं कर सकती थी। वह रवाना हो गई। दस मिनट पश्चात वह एक कॉफी हाउस में दाखिल हुई।

उसने कोल्ड कॉफी आर्डर की।

तभी उसका मोबाइल फोन ऑन हुआ।

''पायल पाराशर।''

''कैथरीन से बात करने का मौका नहीं मिल पाया स्वीटहार्ट?'' भर्राया स्वर उभरा।

''कौन हो तुम?'' चौंक उठी पायल।

''तुम्हारे बाप का सताया हुआ, जैसे कैथरीन थी। और...और जाने दो यकीन नहीं होगा तुम्हें।''

''होगा...होगा यकीन। और कौन है जिसे पापा ने सताया है मिस्टर अजनबी?''

''मिस्टर अजनबी! अच्छा नाम है।''

''बात को टालो मत! मेरा सवाल उधार है तुम पर।''

''उधार ही रहने दो स्वीटहार्ट! वरना तुम्हें अफसोस होगा कि सवाल करके तुमने गलती की थी।''

''नेक सलाह के लिए शुक्रिया। फिर भी मैं सवाल करना चाहती हूं मिस्टर अजनबी।''

''ओ.के. बेबी, सुनो मेरी बात! हमारी तरह तुम भी पराग पाराशर की सताई हुई हो। यकीन नहीं आता तो इण्डिया जाओ! वहां तुम्हें तेजपाल शर्मा नाम का एक शख्स मिलेगा! उससे सच्चाई पता करो। लेकिन एकदम से नहीं। उसे चन्द लाख रुपये देना, शर्मा परिवार में तुम्हें रोहन शर्मा से सम्पर्क करना है। तब धीरे-धीरे सच्चाई तुम्हारे सामने आएगी।''

''क्या करना होगा मुझे?''

''तुम्हें दो बार इण्डिया जाना है। वैसे भी तुम शोध करना चाहती हो।''

'''भारतीय रिश्ते' इसे शोध का विषय बना लो। अपने बाप को राजी करना तुम्हारा काम है।''

''वह मैं कर लूंगी। आगे कहो।''

''पहली बार और दूसरी बार में तुम्हें जो-जो करना है वह तुम नोट करती जाओ स्वीटहार्ट। नम्बर वन...'' फिर अजनबी के द्वारा उसे बताया जाने लगा था कि इण्डिया में पहली बार और दूसरी बार जाकर उसे क्या-क्या करना है और क्या-क्या नहीं करना है।

''यह सलाह मैंने नोट कर ली है मिस्टर अजनबी! क्या तुम भी इण्डिया में रहोगे?''

''शायद! नॉट श्योर।''

''पहले मुम्बई और बाद में दिल्ली। एक ही बार में क्यों नही।''

''हर काम स्टैप बाई स्टैप होता है हनी। अब इण्डिया में तुमसे बात करूंगा।''

फिर सम्बन्ध विच्छेद हो गया। तब उसने मोबाइल जेब में रखा। दो नाम उसके जहन में ठुक चुके थे—तेजपाल शर्मा और रोहन शर्मा।

□□

रोहन के लिए कोई मुश्किल नहीं थी कि चन्दन की लकड़ी से बनी अलमारी को खोल कर वह चमड़े से मढ़ी डायरी को निकाल कर पढ़ सके। लेकिन वह ऐसा कर नहीं पाया था। पारदर्शक कांच की अलमारी में उस डायरी को वह पिछले कई महीनों से निरंतर देख रहा था। लेकिन इसके बावजूद भी उसकी हिम्मत नहीं हुई थी कि विदा लेते पिता को दिए वचन को समय से पूर्व ही भंग करे। वह उस रहस्यमयी डायरी के कलेजे में दफन कहानी को पढ़ पाने का साहस नहीं कर पाया था। वह यह साहस इस कारण नहीं कर पाया था क्योंकि उसकी नसों में दौड़ते खून को पिता के आदर्श और संस्कार विरासत में मिले थे।

लेकिन उस रहस्यमयी डायरी के सामने जाकर वह खड़ा होता था तो उसके हृदय में अमिट वेदना का शूल भी उसकी आंखों को नम कर जाता था।

''रोहन बेटे!'' एक नारी का तड़प भरा स्वर उभरा, ''तुम आज भी अपने पिता की डायरी को देख कर आंसू बहा रहे हो न!''

उसने शीघ्रता से अपनी आंखों को आस्तीन से पोंछा और फिर

comicsmylife.blogspot.in

[illegible] सामने छलछलाती आंखों के साथ उसकी मम्मी नीलिमा देवी खड़ी थी। दुनिया जहान का तमाम दर्द जैसे उनके [illegible] करना चाहता था।

"नहीं मम्मी, ऐसा कुछ भी नहीं।" उसने घायल अधरों के साथ मुस्कराने का प्रयास किया।

लेकिन अपनी खोखली मुस्कराहट को खुद रोहन ने ही महसूस कर लिया था।

"इस अलमारी में कभी ताला नहीं लगा रोहन। अपने पिता की डायरी पढ़ने में इतना संकोच क्यों?"

"आप जानती हैं मम्मी कि वादा याद रखने वाला शख्स चोरी नहीं कर सकता। मैंने पापा का सदैव सम्मान किया है। उनकी शर्त को पूरा कर पाने की सामर्थ्य जब होगी—तभी मैं उनकी डायरी को हाथ लगा सकूंगा।"

"और यदि उस शर्त को पूरा कर पाने में सफल न रहे तो क्या जिन्दगी भर डायरी के रहस्य की छटपटाहट को अपने हृदय में तूफान की तरह महसूस करते रहोगे?" बेहद गम्भीर हो उठा था नीलिमा देवी का स्वर। उनके तेजस्वी चेहरे पर अब गम्भीरता अधिक नजर आने लगी।

"हां, मैं यदि जीवन की अंतिम सांसें भी ले रहा होऊंगा तब भी बिना शर्त पूरी किए मैं पापा की डायरी को नहीं पढ़ूंगा मम्मी।" ठोस स्वर था रोहन का।

"कलियुग में श्रवण कुमार के समान बेटे पैदा नहीं हो सकते। श्रीराम ने स्वयं कहा था इस सच्चाई को।"

"लेकिन श्रवण कुमार की परछाईं बनने का प्रयास तो बेटों के द्वारा किया जा सकता है मम्मी।"

"बेटे, एक रहस्य तुम नहीं जानते। लेकिन उस रहस्य को बताना मां की मजबूरी बन गई है।"

"कैसा रहस्य मम्मी?"

"तेरे पिता ने गृह त्याग करने से पहले मुझे कहा था कि यदि मैं चाहूं तो तुम्हें उनके दिए वचन से मुक्त भी कर सकती हूं। तेरे पिता नहीं चाहते थे कि उनके बेटे की मजबूरी से उपजी ग्लानि मां के दिल की तड़प का कारण बन जाए।"

"नहीं मम्मी, मैं पापा की शर्त को अवश्य पूरा करूंगा। यदि

आप मेरी तड़प नहीं देख सकती हैं तो क्या एक बेटा अपनी मां के चेहरे पर अपनी नालायकी की कहानी को पढ़ पाने का साहस कर सकेगा? मैंने उन्हें पिता से ज्यादा आपका पति माना है मम्मी! आपकी मांग में चमकते सिन्दूर की गरिमा को मैं लज्जित नहीं कर सकता।"

"मैं जानती हूं बेटे कि तू एक निष्ठावान पुत्र है। लेकिन डायरी पढ़ने के पश्चात तुम्हारे दिल की बेचैनी तो शांत हो सकती है।"

"बेचैनी तो शांत हो जाएगी। लेकिन उस ग्लानि का क्या होगा मम्मी, जो मैं हर सांस के साथ महसूस करूंगा। बेशक पिता की शर्त पूरी न कर सकूं, लेकिन उनको दिया हुआ वचन तो अवश्य ही पूरा कर सकता हूं मम्मी। मैंने उन्हें यही वचन दिया था कि जब तक मैं पांच करोड़ रुपया नहीं कमा लेता। मुझे डायरी को पढ़ने का हक नहीं होगा।"

"लेकिन यह राज मैं भी जानना चाहती हूं कि आखिर तुम्हारे पापा ने वचन की जंजीर के साथ उस अनोखी शर्त को क्यों जोड़ दिया था?"

"वह राज डायरी में दफन है मम्मी। आप चाहें तो बेशक उस राज को डायरी में पढ़ सकती हैं। लेकिन मैं उस राज के बारे में आपके मुख से एक शब्द भी नहीं सुनना चाहूंगा।" रोहन ने स्पष्ट किया।

"लेकिन मेरे दिल को उस वक्त हजार-हजार आंसू रोने पड़ते हैं बेटे जब तुम विवशता भरी आंखों से डायरी को एकटक देखते रहते हो।"

"नहीं मम्मी, मैं डायरी को विवशता भरी दृष्टि से नहीं देखता हूं। मैं तो यह सोचता हूं कि मेरी नाकामी के कारण मेरी मम्मी को अपने पति का वियोग सहन करना पड़ रहा है। यह डायरी मुझे इस बात का अहसास कराती है कि मैं अपने पिता से लगाव रखता हूं। क्योंकि अपने पिता की अनुपस्थिति को मैं वैसे ही महसूस करता हूं—जैसे कोई मां अपने खोए हुए बच्चों की वापसी का इन्तजार करती है।" रोहन तब काफी गम्भीर था।

"बेटे, क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हारे पापा ने पांच करोड़ की शर्त रख कर तुम्हारे साथ ज्यादती की है?" नीलिमा देवी ने

comicsmylife.blogspot.in

रोहन को टटोलने वाली दृष्टि से देखते हुए पूछा।

''नहीं मम्मी, उन्होंने कोई ज्यादती नहीं की। मैं उस देश में पैदा हुआ हूं जहां एकलव्य ने गुरुदक्षिणा के नाम पर अंगूठा काट कर उस गुरु को पेश कर दिया था—जिसे एकलव्य ने अपना गुरु माना था—वह भी मिट्टी की मूरत बना कर। फिर मैं तो इस संसार में अपने पिता की परछाईं बन कर आया हूं मम्मी। क्या इस देश की माटी में जन्मा बेटा अपने पिता की मांग को नाजायज या ज्यादती की संज्ञा दे सकता है? नहीं मम्मी, कभी नहीं। यदि दिल में बेटा होने का अहसास जिन्दा हो तो किसी भी पुत्र के लिए पिता का प्रेम खण्डित नहीं हो सकता है।''

''यह सुन कर मेरी कोख धन्य हुई बेटे कि तुम अपने पिता के प्रति ऐसा श्रद्धा भरा विचार रखते हो।'' बेहद गर्व के साथ कहा था नीलिमा देवी ने।

''मैं भी आपकी कोख का ऋणी हूं मम्मी। जिस कोख में रह कर मैंने संस्कार सीखे थे।''

''लोग श्रीराम को मर्यादा पुरुषोत्तम कहते हैं। जिन्होंने अपने पिता के वचन की लाज रखने के लिए राज-सिंहासन ठुकरा कर चौदह वर्ष का बनवास स्वीकार कर लिया था। लेकिन वह त्रेतायुग था बेटे। इस कारण श्रीराम को वह अग्निपरीक्षा नहीं देनी पड़ी थी—जो कलियुग में पैदा हुए पुत्र के रूप में तुम्हें देनी पड़ रही है।'' कहते हुए नीलिमा देवी का स्वर भर्रा उठा और आंखें डबडबा उठीं।

''य...यह आपने क्या कह दिया मम्मी!''

''सच्चाई यही है बेटे। श्रीराम स्वयं बनवास पर गए थे और उनके साथ सीता जैसी पत्नी और लक्ष्मण जैसा भाई भी था। वह राज-सिंहासन उन्होंने अपने श्रम से अर्जित नहीं किया था। वह बड़ा पुत्र होने के कारण उन्हें परम्परा के आशीर्वाद से मिला था। इस कारण राजसिंहासन को छोड़ना उनके लिए बेहद आसान था। लेकिन तुम्हें तो पांच करोड़ रुपया कमा कर उसका त्याग करना पड़ेगा।''

''यदि पांच करोड़ रुपया मैं कमा सका तो उसे पिता का आशीर्वाद ही समझूंगा मम्मी। वरना पांच करोड़ रुपयों का सपना देखना भी मेरे लिए नामुमकिन बात थी।''

''यह तुम्हारे हृदय की उदारता है रोहन बेटे जो तुम ऐसा सोचते हो। लेकिन श्रीराम को इस बात से ज्यादा दुख होता यदि उनके कारण राजा दशरथ को अज्ञातवास पर जाना पड़ता। उन्हें दिल में इस बात का संतोष तो था कि उनके पिता राजा दशरथ अपने महल में हैं। लेकिन तुम्हें तो यह संतोष भी हासिल नहीं हुआ बेटे। गुजरता हुआ हर क्षण तुम्हें इस बात का अहसास करवाता होगा कि तुम्हारे समर्थ न होने की वजह से तुम्हारे पिता को अज्ञातवास भोगना पड़ रहा है। श्रीराम को पिता की मृत्यु का सन्देश तो प्राप्त हो गया था। तुम तो यह भी नहीं जान सकोगे बेटे कि तुम्हारे पिता जीवित हैं या नहीं।''

''पापा ने जो सपना मुझे दिया है। वह पापा के रूप में जीवित है मम्मी। उस स्वप्न को पूर्ण करने के पश्चात मैं पापा को वापस लौटते हुए देखूंगा मम्मी। पापा की आंखों में तब मैं अपने प्रति आशीर्वाद की खुशी को स्पष्ट देख सकूंगा मम्मी। जिस वचन की जंजीर के साथ वह मुझे बांध गए हैं मम्मी। वह उनकी सांसों के साथ भी बंधी हुई है। उस जंजीर के दो सिरे हैं। एक सिरे पर पुत्र है और दूसरी तरफ पिता।''

''और मुझ अभागिन को उस जंजीर का वजन अपनी आत्मा पर महसूस करना पड़ रहा है। पति और पुत्र दोनों के हृदय का हाहाकार उस जंजीर के स्पन्दन के रूप में मेरी आत्मा को अनुभव करना पड़ रहा है बेटे। एक पिता ने वचन लिया और पुत्र ने वचन दिया। लेकिन पुत्र और पति के हृदय में जो भावनाएं हैं, क्या उनसे मेरा कोई सरोकार नहीं है बेटे? तुम तो वचन के बन्दी हो। लेकिन मुझ पर तो कोई भी बंधन नहीं। इसके बावजूद मैं पति का वियोग सहन कर रही हूं और साथ ही बेटी की मजबूरी के नश्तर को भी अपने दिल पर चलता महसूस कर रही हूं।''

''मम्मी, इस संसार में ऐसी कोई भी चीज नहीं है जो किसी बंधन से न जकड़ी हुई हो। चन्द्रमा यदि पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है तो पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कर रही है साथ ही अन्य ग्रहों के साथ भी उसका अदृश्य संतुलन बना हुआ है, जो नजर नहीं आता। लेकिन वह संतुलन दुनिया की तमाम जंजीरों की मोटाई से ज्यादा शक्तिशाली है। पापा अगर सूर्य हैं तो आप पृथ्वी हैं मम्मी! मैं एक उपग्रह की तरह से आप दोनों के बीच में हूं। हम

comicsmylife.blogspot.in

तीनों में ही एक संबंध है मम्मी। इस कारण असंतुलन की पीड़ा को हम तीनों को ही भोगना है।''

''मैं इतनी बड़ी-बड़ी बातें नहीं जानती बेटे। मैं तो सिर्फ इतना जानती हूं कि पांच करोड़ रुपयों के कारण तुम्हारे पिता को अज्ञातवास भोगने के लिए जाना पड़ा है। वह स्वयं हमसे सम्पर्क कर सकते हैं। लेकिन हम उन्हें ढूंढ़ने के सिवा कुछ और नहीं कर सकते। यदि तुम अपनी हार स्वीकार कर लेते हो बेटे तो तुम्हारी अभागी मां का सुहाग शायद वापिस लौट आए।''

''दुख, निराशा और पीड़ा को जो शख्स अपने चेहरे की स्थायी सम्पत्ति बना कर लाएगा, बेशक वह मेरे पापा और आपके पति होंगे। लेकिन उस चेहरे को हमने हंसते-मुस्कराते देखना है मम्मी। वरना वह चेहरा हमारी पीड़ा को बढ़ाएगा कम नहीं करेगा।''

नीलिमा देवी ने सहमति में सिर हिलाया।

फिर एकाएक वह चौंककर बोल उठी, ''ओह! किचन में दूध चढ़ा कर आई थी। उसके जलने की बदबू आ रही है।''

नीलिमा देवी ने फिर वापसी के लिए कदम उठाए थे। गहरी सांस भर कर वह भी पिता के कक्ष से बाहर आ गया। लेकिन निराशा उसके कंधों पर सवार थी।

❑❑

प्रेस के लिए रवाना होकर रोहन दस बजे ऑफिस के अपने चैम्बर में पहुंचा था। वह 'देशभक्त' नाम के अखबार का उपसंपादक था। उसके द्वारा पत्रकारों की खबरों को दुरुस्त किया जाता था और साथ ही 'देशभक्त' का संपादकीय भी उसी के द्वारा लिखा जाता था—जिसके नीचे अखबार के मालिक दीनानाथ मल्होत्रा का नाम जाया करता था। जबकि अखबार में उसका नाम कहीं पर भी प्रकाशित नहीं होता था।

उसने जम्मू-कश्मीर में हुए नर-संहार पर आज का सम्पादकीय तैयार करना था। दो घण्टे में वह उसे तैयार कर पाया था—जो सामान्य मन:स्थिति होने पर वह पैंतालीस मिनट में ही लिख सकता था।

फिर उसने चपरासी के द्वारा सम्पादकीय टिप्पणी को मालिक के चेम्बर में भिजवा दिया था। पत्रकारों की स्वीकृत की गई नई

खबरों को फिर उसने अपनी विशिष्ट भाषा-शैली में लिखकर कार्यकारी सम्पादक के पास भिजवा दिया। तीन बजे वह अपने काम से फ्री होकर कैंटीन में आकर बैठ गया था। दो बजे लंच समाप्त हुआ था। इस कारण कैंटीन में कोई विशेष भीड़ नहीं थी।

कॉफी और स्नैक्स शीघ्र ही टेबल पर आ गए। कॉफी के घूंट भरते हुए वह उस दिन के विषय में सोचने लगा था—जब पापा ने अज्ञातवास के लिए गृहत्याग किया था। उस घटना का एक-एक क्षण उसकी स्मृति में ज्यों का त्यों सुरक्षित था...वह मनहूस दिन शनिवार का था...फिर वह यादों में खो गया...

❑❑

...वह मनहूस दिन शनिवार का था। सुबह नौ बजे ही कोठी में एक पक्के रंग का अधेड़ उम्र शख्स बतौर मेहमान आया था। जिसके बारे में न रोहन को मालूम था और न ही नीलिमा देवी को। उसने सूती वस्त्रों के साथ पांवों में पम्प शू पहन रखे थे। एक लोहे की सन्दूकची वह साथ लेकर आया था।

''के.डी. शर्मा साहब इसी कोठी में रहते हैं?'' रोहन जैसे ही मेनगेट पर पहुंचा उस आगंतुक शख्स ने सवाल दागा।

''हां, यहीं रहते हैं। यह मेरे पापा का नाम है।'' रोहन ने नमस्कार करते हुए फिर मेनगेट खोला था।

''यानी तुम रोहन हो!'' अधेड़ उम्र शख्स के अधरों पर स्नेह भरी मुस्कान उभरी। सांवले चेहरे के साथ वह जब मुस्कराया तो उसके चमकदार दांतों ने सांवले चेहरे की खामी को पूरी तरह से ढक लिया था।

''अ...आप मेरे बारे में भी जानते हैं।'' चौंका था रोहन।

''जो जड़ों को जानते हैं उनसे टहनियां नहीं छिपी रहती रोहन बेटे। तुम्हें देखा अवश्य नहीं था। लेकिन नाम तो सुन रखा था। अब देख भी लिया। इस बात की हार्दिक खुशी भी है कि अपनी आंखों से तीसरी पीढ़ी को देख रहा हूं।'' फिर अन्दर आकर उसने स्नेह से पीठ थपथपा दी थी। रोहन ने उस शख्स के वस्त्रों से यह अनुमान लगा लिया था कि वह काफी लम्बी यात्रा करके आया है। आगंतुक को लॉन में बैठा कर रोहन अपने पिता क्रांतिदूत शर्मा को बुलाने के लिए रिहायशी भाग की ओर आकृष्ट हो गया था।

comicsmylife.blogspot.in

क्रांतिदूत शर्मा लॉन में आए थे और फिर गहरी भावुकता के साथ आगंतुक के गले जा लगे थे। फिर रोहन के लाख मना करने के बावजूद भी पिता ने लोहे के सन्दूक को स्वयं उठा कर आगंतुक का हाथ थाम कर रिहायशी भाग का रुख किया था।

''रोहन बेटे, दो बढ़िया चाय। मम्मी से कहना कि पानी की बूंद भी न हो। सिर्फ दूध की चाय। उसके बाद दौड़ कर गर्मागर्म जलेबी भी लेते आना। दोपहर को दाल, बाटी और चूरमा बनना चाहिए।'' रोहन ने देखा था कि आगंतुक के सम्मान के लिए पापा जैसे बिछे जा रहे थे।

''क्रांति, तू आज भी नहीं बदला। शरीर पर चर्बी अवश्य चढ़ गई है। लेकिन स्वभाव तेरा वैसा ही है—जैसे ठीक खरा सोना।'' आगंतुक ने मित्रवत अन्दाज में कहा था। रोहन तब मम्मी को स्पेशल चाय के लिए कह सीधा बाजार की ओर गया था। गर्मागर्म जलेबियां खरीद कर उसने कुछ कोफ्ते भी खरीद लिए थे। दरअसल आलू-पनीर के कोफ्ते रोहन की पसंद थी।

वह जब कोठी पर पहुंचा तो चाय सर्व हो चुकी थी और फिर वह स्वयं ही जलेबी और कोफ्तों का नाश्ता लेकर पिता के उस कमरे में पहुंचा था—जिसमें मम्मी का जाना तभी होता था जब जरूरी काम होता था। उस कमरे में क्रांतिदूत शर्मा ने आज तक किसी मित्र को भी नहीं बिठाया था।

''वाह! जलेबी के साथ कोफ्ते भी हैं।'' आगंतुक ने हर्षित अन्दाज में कहा।

इस दरम्यान आगंतुक न केवल स्नान कर चुका था बल्कि वस्त्र भी बदल चुका था।

यह बात अलग थी कि नए वस्त्र भी सूती थे और पुराने वस्त्रों की ही पूर्ण अनुकृति लिए थे।

जाहिर था कि आगंतुक ने पापा के ही बाथरूम का प्रयोग किया था। सफेद धुली गांधी टोपी अब आगंतुक के सिर पर नजर आ रही थी।

''रोहन बेटे, तुम भी बैठ जाओ। वरना दिल में यह मलाल रहेगा कि तुम्हारे साथ बैठकर नाश्ता करने का लुत्फ नहीं उठाया।''

रोहन तब चेयर पर बैठ गया था। उसने पिता के चेहरे पर

खुशी के उस झरने को मौजूद पाया था—जो आज घनिष्ठतम रिश्तों के बीच भी नजर नहीं आता।''

''पापा, आपने अंकल के बारे में नहीं बताया कभी?'' रोहन ने धीमे से टोका।

''बेटे, यह तेरे नानाजी के समान हैं।'' पापा ने मुक्तकंठ से ठहाका लगाया था, ''इनका नाम तेजपाल शर्मा है। यह महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले से आए हैं।''

''वहां कौन रहता है?'' रोहन ने भोलेपन से पूछा।

इस सवाल के जवाब में उसने कथित नानाजी और पापा को सकपका कर एक-दूसरे की आंखों में झांकते पाया। फिर दोनों के चेहरे दुख से भरे नजर आने लगे। जैसे अनजाने में उसने रेडियो का स्टेशन बदल दिया था और खुशी के गीत के स्थान पर एकाएक ही मुकेश का कोई दर्दीला नगमा गूंजने लगा था।

''म...मैंने गलत सवाल कर लिया पापा?'' वातावरण को यूं बोझिल होते देख कर रोहन ने अपराध भाव से पूछा।

''नहीं बेटे, तुम्हारा सवाल जायज है। क्योंकि उस स्थान के बारे में तुम्हें अवश्य जानना चाहिए था।'' क्रांतिदूत शर्मा ने भारी स्वर में कहा।

''इतना निराश क्यों होते हो क्रांति। हम आखिर को इंसान ही हैं। विधाता नहीं हैं हम। होनी-अनहोनी पर हमारा नियंत्रण नहीं।'' आगंतुक ने सांत्वना सी दी।

''हां, लेकिन इतना नियंत्रण तो अवश्य ही था कि मैं उस फरिश्ते को बचा सकता था। उसे एक जोड़ी पहने कपड़ों में अपने साथ ला सकता था।''

''गुजरे हुए व्यक्ति का अफसोस कर रहे हो क्रांति। वैसे मेरा ख्याल है कि तुम अब भी अपने पछतावे की अग्नि पर काबू पा सकते हो।''

''व...वह कैसे?'' उसने पापा को बुरी तरह चौंकते हुए देखा था।

''इस विषय में हम बाद में चर्चा करेंगे। बेहतर हो कि पहले नाश्ता किया जाए।'' तीनों ने फिर नाश्ता अवश्य किया था लेकिन उस स्वादिष्ट नाश्ते को दोनों ने जैसे कड़वी दवा की तरह से हलक के नीचे उतारा था।

comicsmylife.blogspot.in

"देस होकर आए हो ?" (राजस्थान में जन्मस्थान को देस कहा जाता है—जहां पुरखे भी रहते आए हो।)

"नहीं, दिल्ली की सीधी गाड़ी थी। इस कारण सोचा था कि पहले तुम्हारे पास ही चलूं। यह भी सच है कि निकला तो 'देस' के लिए ही हूं। जानता हूं कि बहुत बड़े लेखक हो। इस कारण यह सोच कर चला आया था कि काफी रुपया भी होगा तुम्हारे पास। लेकिन तुम्हारे अपनत्व भरे व्यवहार को देखकर ही समझ गया हूं कि जिन्दगी में अभी भी संघर्ष ही कर रहे हो क्रांति।"

"कैसे जाना कि सरस्वती के इस उपासक पर लक्ष्मी की स्नेह भरी दृष्टि नहीं पड़ी है ?" क्रांतिदूत शर्मा ने पूछा।

"क्योंकि दौलत होने के बाद इंसान रिश्तों को भूल जाता है। उसे याद दिलाना पड़ता है कि उनके बीच में क्या रिश्ता रहा था। सादगी पर अभिमान की धूल चढ़ जाती है। लेकिन तुम्हारी सादगी कायम है। फिर तुम्हारे पिता की बनवाई इस कोठी में तुमने दुकानें भी बना कर किराए पर चढ़ा रखी हैं। इससे अन्दाजा लगा लिया था।"

"आपका अनुमान सच है मामाजी। मान तो इंसान को मिल जाता है लेकिन दौलत का मिलना मुकद्दर की बात है।" क्रांतिदूत ने इत्मीनान के साथ कहा।

"रोहन, तुम क्या कर रहे हो बेटे ?" तेजपाल शर्मा ने फिर रोहन को सम्बोधित किया था।

"जर्नलिस्ट का कोर्स किया है।"

"काहे का ?"

"अखबार के रिपोर्टर का कोर्स।" उसने ज्यादा स्पष्ट किया।

"यानी तुम्हारे बेटे से भी यह उम्मीद नहीं कि भविष्य में यह धनवान बन सके। यह भी मां सरस्वती का ही उपासक निकला।" गहरी निराशा थी तेजपाल शर्मा के स्वर में, "मैं भी मजबूर हूं। क्योंकि दौलत का 'तोड़ा' मुझे भी है।"

"लेकिन दौलत की कमी होने के बाद भी हम इंसान हैं नानाजी। दौलत इंसान के चरित्र से बड़ी नहीं होती है। हम संतुष्ट हैं नानाजी। परिवार का गुजारा करने लायक रुपया तो हम कमा ही लेते हैं।" रोहन ने तनिक रोष भरे स्वर में कहा था, "अब हर इंसान तो टाटा-बिड़ला नहीं बन सकता है नानाजी। भारत के

अस्सी प्रतिशत परिवार हमारी ही तरह के हैं। क्या यह जरूरी है कि हमारा परिवार बाकी बीस प्रतिशत लोगों में आए ?"

"नहीं, कोई जरूरी नहीं बेटे। लेकिन बड़े स्वप्न देखने का हक सभी को होता है। विशेष तौर पर ऐसी स्थिति में जबकि इंसान को किसी का कर्ज चुकाना हो। वह कर्ज जो एक रहमदिल इंसान ने अपना कर्तव्य समझकर दिया था।"

"कर्ज ! पापा क्या आपने किसी से कर्ज लिया था।" रोहन ने आश्चर्य भरे स्वर में पूछा।

"नहीं बेटे, मैंने कर्ज लिया नहीं था। लेकिन वह कर्ज मुझ पर बाकी अवश्य है। जिस प्रकार एक पुत्र अपने माता-पिता से कर्ज नहीं लेता फिर भी उसे माता-पिता का ऋणी समझा जाता है। काबिल औलाद का दायित्व यही होता है कि वह माता-पिता के नैतिक दायित्व को कर्ज समझ कर उन्हें पूरा करे।" लेकिन रोहन नहीं समझ पाया था कि आखिर उसके पापा किस दायित्व और कर्ज की बात कर रहे हैं।

...फिर शाम तीन बजे की ट्रेन से तेजपाल शर्मा नाम के कथित नानाजी को छोड़ने के लिए खुद क्रांतिदूत शर्मा गए थे। वह वापस पांच बजे लौट कर आए थे। लेकिन आने-जाने के उन दो घण्टों में ही उन पर 'परिवर्तन' का जो जादू हुआ था। वह उनके चेहरे से प्रकट हो रहा था। एकदम उदास चेहरा, जिस पर पराजय के भाव थे। रोहन को तब अपने पिता ऐसे इंसान लगे थे, जो पराजय को अपना मुकद्दर मान कर पूरी तरह से टूट चुके थे।

"पापा ! आपकी तबीयत तो ठीक है न ?" रोहन ने विस्मय से पूछा था।

"मैं ठीक हूं बेटे। अपनी मम्मी से कहो कि वह एक चाय बना दें।"

"जी !"

□□

पन्द्रह मिनट पश्चात वह अपने पिता के कक्ष में ट्रे लेकर दाखिल हुआ था। पिताजी उस वक्त अपनी खास राइटिंग टेबल पर काले चमड़े की मढ़ी हुई डायरी के पृष्ठ पर कुछ लिख रहे थे। वह जानता था कि पापा उस डायरी में अपने जीवन की हर बात को लिखते आए हैं। लेकिन इस बात की उन्होंने सख्त हिदायत

comicsmylife.blogspot.in

... कि उनकी डायरी को कोई भी हाथ न लगाए।

"... पापा।"

"रख दो बेटे। हां, अपनी मम्मी से कहना कि मेरा सूटकेस तैयार कर दें।"

"बाहर जा रहे हैं पापा?"

"हां! अब तो आर-पार की लड़ाई लड़नी होगी बेटे। आखिर को इंसान अपने आप से तो नहीं भाग सकता। इंसान की अगर नैतिकता ही मर जाए तो फिर बाकी रह ही क्या जाता है?" बेहद गम्भीर था स्वर।

"पापा यह बदलाव तेजपाल नानाजी के आने से ही तो नहीं है?" रोहन ने शंकित स्वर में पूछा।

"नहीं, तुम्हारे नानाजी के आने से सिर्फ इतना ही हुआ है कि दायित्व निभाने की मंजिल मिल गई है।"

"पापा, मैं इक्कीस वर्ष का युवक हूं। क्या मैं आपके दायित्व को पूरा नहीं कर सकता?"

"तुम्हारे हिस्से का दायित्व तुम्हें ही निभाना है। लेकिन मेरे हिस्से का दायित्व मैं ही निभाऊंगा।" फिर उन्होंने चाय का घूंट भरने के पश्चात कहा, "मैं एक घण्टे इस डायरी में व्यस्त हूं बेटे। तुम्हारे तमाम सवालों का जवाब मैं रवाना होने से पहले अवश्य दूंगा।"

रोहन तब द्वार की ओर पलट गया था। आखिर शनिवार का वह मनहूस दिन क्या गुल खिलाने वाला था।

□□

सवा घण्टे पश्चात क्रांतिदूत शर्मा बाहर आए थे। उन्होंने अपना तैयार सूटकेस देखा था। रोहन और नीलिमा देवी आश्चर्य से उनके गम्भीर चेहरे को देख रहे थे। उनका गम्भीर चेहरा तूफान के पूर्व की शांति का अहसास दे रहा था। रोहन को न जाने क्यों लग रहा था कि 'शर्मा परिवार' में किसी अनहोनी के कदम पड़ चुके हैं।

"नील," वह मम्मी को 'नील' ही कहते थे, "मैं तुमसे और रोहन से आवश्यक बातचीत करना चाहता हूं। मुझे उम्मीद है कि तुम दोनों मेरे साथ सहयोग करोगे।" नीलिमा देवी और रोहन ने सहमति में सिर हिला दिए। साथ ही वह क्रांतिदूत शर्मा

के पीछे-पीछे उनके कमरे में प्रविष्ट हो गए।

डायरी उस वक्त भी राइटिंग टेबल पर थी। लेकिन वह खुली हुई नहीं थी। पापा राइटिंग टेबल के पास थे और रिवाल्विंग चेयर पर बैठने के पश्चात उन्होंने अपना रुख पत्नी और पुत्र की तरफ किया था।

"नील, सबसे पहले मैं तुमसे चन्द बातें करना चाहता हूं। उन बातों के साथ कुछ सवाल भी हैं। जिनका तुम्हें पूरी ईमानदारी से जवाब देना है। क्योंकि तुम्हारे ईमानदारी भरे जवाब ही मेरी आने वाली जिन्दगी की दशा और दिशा तय करने का कार्य करेंगे।"

पिता की उस लम्बी-चौड़ी भूमिका से रोहन ने अनुमान लगा लिया था कि उसके पिता किसी संजीदा निर्णय से उन्हें अवगत करना चाहते हैं।

"नाथ! अपनी पत्नी से आप अनुमति मांग रहे हैं। क्या आपको यकीन नहीं कि मैं आपके हर आदेश के सामने सिर झुकाती आई हूं। क्योंकि मेरी श्रद्धा आपके आदेश के साथ जुड़ी रहती है।"

"मैं जानता हूं नील कि तुमने एक आदर्श पत्नी की तरह से अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है। लेकिन मैं आश्वस्त नहीं कि मैंने पति के रूप में तमाम कर्तव्य पूरे किए हैं अथवा नहीं। मैं तुमसे जानना चाहता हूं नील। क्या एक पति के रूप में मैंने तुम्हारी तमाम अपेक्षाओं की पूर्ति की है?"

"मुझे आपसे कोई शिकायत नहीं नाथ! मैं तो हर जन्म में आपको पति रूप में पाना चाहूंगी।" नीलिमा देवी ने सपाट स्वर में कहा।

रोहन ने स्पष्ट अनुभव किया था कि उसकी मम्मी के जवाब में लेशमात्र भी झूठ अथवा झिझक नहीं थी।

"इस संसार में कोई भी इंसान स्वयं को पूर्ण नहीं कह सकता। कम से कम गृहस्थी का खेवनहार यह दावा नहीं कर सकता कि परिवार के किसी भी सदस्य को उसने जाने-अनजाने में कभी कोई दुख नहीं दिया। मैं भी मानता हूं कि अनजाने में ही सही—लेकिन पति के रूप में मैंने कुछ तकलीफें तो तुम्हें अवश्य ही दी होंगी। सरस्वती का यह उपासक पति तुम्हारी बहनों के

comicsmylife.blogspot.in

पतियों की तरह दौलतमंद नहीं हो पाया। इस कारण अपनी बहनों के सामने मेरी कमजोरी ने तुम्हें अवश्य ही शर्मिन्दा किया होगा। मेरे ससुराल वालों की भी तुम्हारे साथ पूरी सहानुभूति रही है। क्योंकि मेरे काम की चकाचौंध ने उन्हें भ्रमित कर दिया था। वह यह नहीं देख पाए थे कि मेरा पेशा बेशक सम्माननीय था, लेकिन गृहस्थी की गाड़ी चलने के लिए रुपयों की आमद भी होनी चाहिए।''

''नहीं नाथ, यह आपके और मेरे मायके वालों के ख्यालात हो सकते हैं। लेकिन मेरे दिल में इस बात का अभिमान रहा है कि मैं मां सरस्वती के उपासक की पत्नी हूं। दौलत तो ढलती फिरती छाया है जिसे मील के किसी पत्थर के साथ नहीं बांधा जा सकता। लेकिन इंसान का कार्य और उसकी प्रतिभा मील के वह पत्थर बने रहते हैं, जो इंसान को रोशन मीनार बना देते हैं—ऐसी मीनार जिससे लोगों को अपना रास्ता चुनने में मदद मिलती है। आकांक्षाओं के वह ख्वाब मैंने कभी नहीं संजोए नाथ—जो गृहस्थी की शांति को लील कर भी संतुष्ट न हों।''

''तुम्हारे इस जवाब में पूरी ईमानदारी है नील?'' स्वर भर्रा उठा था क्रांतिदूत शर्मा का।

''हां, मेरे जवाब में पूरी ईमानदारी है नाथ। मैं जानती हूं कि आपने अपनी ओर से परिवार की उन्नति में कभी कोई कसर बाकी नहीं उठा रखी। आपके परिश्रम का बेशक पूरा मूल्य न मिला हो—लेकिन हर चीज को तराजू पर या रुपयों के गणित से ही नहीं तौला जाता है। रुपया तो डाकू के पास भी होता है—लेकिन सम्मान नहीं होता। मैंने लोगों की आंखों में आपके प्रति प्रशंसा और सम्मान को देखा है नाथ। मैं उससे तृप्त भी हूं।''

''अब एक अहम सवाल कर रहा हूं नील। उस सवाल को इस दृष्टि से सोचना कि क्रांतिदूत शर्मा नाम के पति का एक स्वतंत्र व्यक्तित्व भी है, जो सिर्फ गृहस्थी के साथ ही बंधा हुआ नहीं है। क्या तुम्हारी नजर में एक इंसान के लिए गृहस्थी से अलग कुछ नहीं होता?''

''गृहस्थी के लिए जीने वाले तो अमूमन सभी होते हैं नाथ! लेकिन अच्छे इंसान पर सिर्फ परिवार का ही हक नहीं होता। परिवार की खातिर इंसान स्वयं को उसी में झोंक दे और अपने

उद्देश्यों को भी भूल जाए। ऐसा करना वास्तव में गलत ही होता है।'' बेहद सरलता और सहजता थी नीलिमा देवी के स्वर में।

''गौतम बुद्ध की तरह से मैं चुपचाप घर नहीं छोड़ना चाहता था नील। लेकिन यह सच है कि मैं गृहत्याग कर रहा हूं। क्योंकि एक बड़ी जिम्मेदारी को निभाने का वक्त आ गया है नील। यशोधरा और राहुल को सोते हुए छोड़ कर बुद्ध रवाना हुए थे। लेकिन यशोधरा का एक सवाल आज भी ठिठक कर पूछती है 'काश! मुझसे वह कहकर जाते!' मैं यह प्रश्न तुम्हारे और रोहन के हृदय में छोड़ कर नहीं जाना चाहता हूं।''

सुनकर मां-बेटा दोनों ही स्तब्ध रह गए। आने वाले तूफान की पदचाप को 'अनोखी खामोशी' से वह दोनों भांप चुके थे। लेकिन वह तूफान इतना भयानक होगा। इसकी कल्पना दोनों ही नहीं कर पाए थे।

''यदि आपको लगता है पापा कि गृहस्थी के दायित्वों को पूर्ण करने के बाद आप जा रहे हैं, तो शायद वह समय नहीं आया है।'' रोहन का विवेक जाग उठा था, ''परिवार को आपकी जरूरत है पापा। इतना तो मैं भी समझ रहा हूं कि तेजपाल नानाजी ने आपसे अवश्य ही कुछ कहा है। इसी वजह से आपने यह फैसला किया है। क्या यह ठीक नहीं होगा कि आप दो दिन बाद जाएं?''

''वह क्यों बेटे?''

''ताकि आपको अपने निर्णय पर पुनर्विचार का मौका मिल सके।''

इस पर क्रांतिदूत शर्मा के अधरों पर अनचाहे ही मुस्कान फैल गई। स्निग्ध और पवित्र मुस्कान—जो शरारती बच्चे की मासूम शरारत देख कर स्वत: ही होंठों की मिल्कियत बन जाती है।

''रोहन, तुम्हें लगता है कि तुम्हारे पिता को इस उम्र में किसी गंभीर निर्णय पर दो दिन सोचने की आवश्यकता है।'' क्रांतिदूत शर्मा ने यूं पूछा, गोया वह रोहन की बात पर हैरान थे।

''नहीं पापा, मैं जानता हूं कि आप उम्र के उस मुकाम पर हैं, जहां निर्णय लेने के लिए आपको किसी विलम्ब की कतई आवश्यकता नहीं। लेकिन एक सच यह भी है कि जल्दबाजी में कोई फैसला नहीं लेना चाहिए।''

comicsmylife.blogspot.in

"कुछ फैसलों पर समय लेना नामर्दानगी भी होती है रोहन बेटे।"

"यदि आप समझते हैं कि वह फैसला लिया जाना चाहिए तो फिर वह वाकई लिया जाना चाहिए।"

"जाने से पूर्व यह बता देना चाहता हूं बेटे कि दीनानाथ मल्होत्रा साहब से फोन पर बात हुई थी। वह तुम्हें अपने अखबार का उप-सहायक सम्पादक बनाना चाहते हैं। मैं समझता हूं कि इससे परिवार की वह आर्थिक दुश्वारियां खत्म हो जाएंगी—जिन्हें मेरे जाने से उठ खड़ा होना है।"

"यानी मेरे भविष्य की दिशा तय करने जा रहे हैं पापा आप।" चौंका था रोहन, "क्या मैं अपनी इच्छा के अनुकूल अपना भविष्य नहीं बना सकता ?"

"बेटा जब जवान हो जाता है तो उसका दायित्व परिवार के प्रति होता है। उस दायित्व को निभाते हुए ही तुम्हें अपने भविष्य के बारे में सोचना होगा।"

"वापसी कब होगी नाथ ?" नीलिमा देवी ने भर्राए हुए कण्ठ स्वर में पूछा।

"सम्भव है कि जीवित अवस्था में हमारी यह अंतिम मुलाकात हो नील! लेकिन रोहन यदि चाहे तो हमारी मुलाकात को बहुत शीघ्र मुमकिन बना सकता है। मां सरस्वती की जैसी कृपा रही—वैसी ही मां लक्ष्मी की कृपा हुई, तो भी मैं लौट आऊंगा नील।"

"म...मैं आपकी बात का मतलब नहीं समझा पापा। यदि मेरे किसी प्रयत्न से आप मम्मी की आंखों के सम्मुख रह सकते हैं, तो मैं अपनी जान भी देने को तैयार हूं।" बेहद उतावले स्वर में कहा था रोहन ने, "आप अपने बेटे को आदेश तो कीजिए पापा।"

"आदेश नहीं दे सकता बेटे। सिर्फ आग्रह ही कर सकता हूं मेरा आग्रह यही है बेटे कि बिना अपराध किए और बिना कानून को तोड़े—तुम पांच करोड़ रुपया कमा लेने में सक्षम हो जाओ तो मेरी वापसी हो जाएगी।"

सुनकर माता-पुत्र की आंखें फटी की फटी रह गईं। उन्हें इस बात की कतई उम्मीद नहीं थी कि सरस्वती का उपासक यह शख्स दौलत की शर्त लगाने वाला है।

"प...पांच करोड़ रुपया! लेकिन वह पांच करोड़ रुपया आपको क्यों चाहिए पापा ?"

"मुझे किसी व्यक्ति का कर्ज चुकाना है बेटे। उस व्यक्ति का खानदानी कर्ज है जो गत पचास वर्षों से हमारे खानदान पर है बेटे।"

"क...किस व्यक्ति का कर्ज पापा ?"

"श्री जगन्नाथ काटजू नाम के व्यक्ति का कर्ज।" सरसराते हुए स्वर में कहा था क्रांतिदूत शर्मा ने।

"लेकिन इस नाम की चर्चा तो मैंने कभी नहीं सुनी पापा। मैं इक्कीस वर्ष का हो गया हूं। यह नाम मैंने आपकी या मम्मी की जुबान से कभी भी नहीं सुना।"

"तुमने नहीं सुना बेटे। लेकिन मैंने सुना है। इस हिदायत के साथ सुना है कि इस बात को अपने पुत्र से भी गुप्त ही रखा जाए। क्योंकि यह नाम तुम्हारे खानदान पर एक इल्जाम की भांति है बेटे।" नीलिमा देवी ने धीमे से कहा था।

"मैं जानना चाहता हूं मम्मी ?"

"अवश्य जान सकते हो बेटे। लेकिन पांच करोड़ रुपया कमाने के पश्चात। वह भी अगले दो वर्षों में। उसके बाद जो भी वर्ष गुजरेगा—पांच करोड़ की राशि में एक करोड़—रुपयों की बढ़ोत्तरी हो जाएगी बेटे। यह कमाई बेईमानी द्वारा न की जाए।"

"यानी तीन वर्ष बाद छः करोड़ और चार वर्ष बाद सात करोड़ रुपए।"

"हां, सच्चाई यही है।"

"लेकिन पांच करोड़ रुपया जोड़ने में खानदान की कई पुश्तें खर्च हो जाती हैं। आप पत्थर पर दूब (घास) उगाना चाहते हैं पापा। दो वर्ष में पांच करोड़ रुपया कमा पाना दिन का देखा गया ख्वाब है।"

"जिन्दगी की बाजी लगाने की बात करने वाला बेटा कह रहा है इस बात को ?"

"नहीं पापा, यदि आपने बेटे को शर्तों से न बांधा होता तो यह बेटा पांच करोड़ दे सकता था। लेकिन ईमानदारी की कमाई से पांच करोड़ रुपया कमाना कहां संभव है पापा।"

comicsmylife.blogspot.in

"माँ सरस्वती के भक्त को मां लक्ष्मी द्वारा पसंद नहीं किया जाता। लेकिन तुम मां लक्ष्मी की अराधना करोगे तो शायद पचास करोड़ रुपया भी हासिल कर सकते हो।" कहने के बाद फिर गहरी सांस भरी थी क्रांतिदूत शर्मा ने।

"आप कहां जा रहे हैं? इस बारे में..."

"नहीं नील, मैं अपने वह पदचिन्ह छोड़ कर नहीं जाना चाहता जिसका पीछा करके कोई मुझ तक पहुंच सके।" स्पष्ट इन्कार किया सरस्वती के उस उपासक ने।

"फिर आपको कैसे मालूम होगा कि मैं पांच करोड़ रुपया कमाने में सक्षम हो गया हूं?" उसने किंचित हैरानी के साथ पूछा।

"जब तुम पांच करोड़ रुपया दो वर्ष में कमा लो या उसके बाद के वर्षों के हिसाब से वांछित रुपया कमा लो तो मेरी इस पर्सनल डायरी को पढ़ लेना। तुम्हारी समझ में खुद ब खुद आ जाएगा बेटे की हमारी मुलाकात कहां होगी और किस प्रकार होगी?"

"यानी मैं इस डायरी को तब तक न पढ़ूं, जब तक कि मेरे पास वांछित रकम न हो जाए?" उसने उलझन भरी दृष्टि से देखते हुए पूछा।

"हां, अन्य स्थितियां और भी हैं, जब तुम इस डायरी को पढ़ सकोगे। मेरी मौत के पश्चात या फिर निराश होने के बाद कि तुम उक्त रकम का प्रबंध नहीं कर सकते?"

"नाथ! मैं कुछ कहना चाहती हूं। लेकिन अगर मैं गलत सवाल कर लूं तो आप मुझे क्षमा करें।"

"नील, तुम मेरी पत्नी हो अर्द्धांगिनी हो। मेरे जिस्म का आधा हिस्सा। तुम निसंकोच होकर कहो।" पति ने बात काट कर इजाजत दी।

"नाथ। जब इतने वर्षों की मेहनत के पश्चात आप पचपन वर्ष की उम्र तक भी लाख रुपया जोड़ नहीं पाए तो फिर ऐसे में अपने पुत्र से यह उम्मीद रखना कि यह पांच करोड़ रुपया दो वर्षों में कमा लेगा। क्या यह आपकी व्यावहारिक सोच है? अभी तक तो यह अखबार के लिए कुछ खास खबरें ही भेजता रहा है।"

"तुम्हारा सवाल एकदम वाजिब है। मुझे इस बात का कोई

हक नहीं पहुंचता कि मैं अपनी संतान पर दो वर्ष में पांच करोड़ रुपया कमाने का उत्तरदायित्व छोड़कर जाऊं। लेकिन पिता होने के नाते मेरा पूरा अधिकार है अपने पुत्र पर। साथ ही मैं जानता हूं कि मेरे ख्वाबों को अगर मेरी जिन्दगी में कोई पूरा कर सकता है तो वह सिर्फ मेरा पुत्र है या फिर इसका वह मुकद्दर है, जिसमें पिता का प्यार लिखा है।"

"पापा, मैं आपको यकीन दिलाना चाहता हूं कि मैं दो वर्ष में ईमानदारी का पांच करोड़ रुपया कमाने का प्रयास करूंगा। लेकिन इसके लिए आपको गृहत्याग करने की क्या आवश्यकता है? आपकी मौजदूगी तो मेरे लिए उत्साह का कारण रहेगी पापा।"

"गृहत्याग करने का फैसला करते हुए क्या मेरा दिल खून के आंसू नहीं रोया है रोहन? रोया है मेरे बच्चे—बहुत रोया है। लेकिन फर्ज की पुकार पर मुझे जाना पड़ रहा है। यदि कोई भी अन्य सम्भावना होती तो मैं कभी भी घर छोड़ कर नहीं जाता बेटे। लेकिन मेरा जाना बहुत जरूरी है। हां, मुझे ढूंढ़ने का प्रयास मत करना बेटे न ही तुम तेजपाल नानाजी से सम्पर्क करने की कोशिश करोगे।"

"ठीक है पापा। मैं कोशिश करूंगा कि किसी भी प्रकार से आपकी वापसी की शर्त को पूरा कर सकूं।"

"कुछ और कहना चाहते हो रोहन?"

"सिर्फ एक सवाल करना चाहता हूं पापा। मैं जानता हूं कि संसार के किसी भी कोने में जाकर रहते भी आप सरस्वती मां की सेवा करना बन्द नहीं करेंगे। मैं चाहता हूं कि आप जो कुछ भी लिखें—वह प्रकाशकों के पास न जाए।"

"इस शर्त का कारण?"

"यही है कि आपका हर शब्द, आपकी हर सोच और आपकी लेखनी से निकला हर विचार मेरे पास आए।" बेहद गम्भीर था तब रोहन।

"लेकिन इससे फायदा क्या होगा?"

"नुकसान कुछ नहीं होगा पापा। मेरी रगों में आपका ही खून है। इस कारण मैं भी अपनी इस इच्छा को गुप्त रखना चाहता हूं।"

comicsmylife.blogspot.in

लेकिन तुम जानते हो बेटे कि मेरी कमाई का जरिया मेरी कलम ही होगी। घर से अलग होकर मैंने भी तो पेट पालना होगा बेटे।

''आपके बैंक अकाउन्ट में पचास हजार रुपया जमा है पापा। जो दुकान की सिक्योरिटी के रूप में आपके पास आया था। आप उन रुपयों का उपयोग कर सकते हैं और प्रत्येक माह इस बैंक अकाउन्ट में मैं पांच हजार रुपया जमा करवाता रहूंगा, जो हमें किराए से प्राप्त होता है।''

''लेकिन, ऐसा तुम क्यों चाहते हो बेटे?'' गहरा आश्चर्य क्रांतिदूत शर्मा के चेहरे से झांकने लगा।

''क्योंकि मैं एक प्रयोग करना चाहता हूं पापा। देखना चाहता हूं कि यदि यश को त्याग दिया जाए तो उसका क्या परिणाम होता है। सरस्वती की उपासना यदि लक्ष्मी मां को भेंट कर दी जाए तो क्या मां लक्ष्मी उसे स्वीकार करेंगी।'' उसने रहस्य भरे स्वर में कहा।

''तुम काफी अनोखी बातें कर रहे हो रोहन। लेकिन स्पष्ट कुछ नहीं बता रहे।''

''स्पष्ट मैं बता नहीं सकता पापा। क्योंकि आपके द्वारा इंकार भी किया जा सकता है।''

''ठीक है, यहां से जाने के बाद मैं जो कुछ भी लिखूंगा। वह तुम्हें भेज दूंगा रोहन।''

''थैंक्स पापा, मुझे विश्वास है कि मेरा प्रयोग असफल नहीं होगा।''

तब क्रांतिदूत शर्मा ने चमड़ा मढ़ी जिल्द वाली डायरी को चन्दन की लकड़ी से निर्मित अलमारी में रख दिया।

''अब मैं जा रहा हूं नील। मुझे यकीन है कि रोहन तुम्हारा पूरा ख्याल रखेगा।''

''आपने अलमारी को ताला नहीं लगाया पापा?'' रोहन ने चौंक कर पूछा था।

''जिनके दिल में चोर हो ताले उनके लिए कोई मायने नहीं रखते बेटे। मैं इस अलमारी पर ताला लगा कर यह साबित नहीं करना चाहता कि मुझे अपने पुत्र की निष्ठा पर किसी प्रकार का सन्देह है।'' सहज मुस्कान के साथ जवाब दिया पिता ने। फिर

दोनों ने क्रांतिदूत शर्मा के चरण-स्पर्श किए थे।

''ईश्वर कल्याण करे।'' भर्राए हुए स्वर में कहा क्रांतिदूत शर्मा ने। उनके हाथ दोनों के सिर पर थे।

इस अंतिम आशीर्वाद के साथ वह रवाना हो गए थे। तब अपने पिता को यूं जाते देखकर रोहन की आंखें आंसुओं से लबरेज हो उठी थीं।

''सर...सर!'' बिचारों में खोए रोहन ने परिचित स्वर सुना, ''रोहन साहब, आप यहां क्या कर रहे हैं।''

तब चौंक कर रोहन ने आवाज की दिशा में देखा था। वह कैंटीन में मौजूद था और सम्बोधनकर्ता उसके ऑफिस का चपरासी था।

''ओह! तुम हो नारायण।'' चौंक उठा रोहन, ''कहो, क्या बात है?'' पूछते हुए उसने महसूस किया कि उसकी दोनों आंखें गीली हैं। उसने रूमाल निकाल कर आंसू पोंछ लिए।

''आपकी आंखों में आंसू!''

''यूं ही, शायद आंखें आ रही हैं। आंखों में संक्रामक रोग फैल रहे हैं न।'' उसने शीघ्रता से झूठ गढ़ा।

''बड़े मालिक ने याद किया है आपको।'' नारायण नाम के चपरासी ने आने का उद्देश्य बताया।

उसने मेज की ओर देखा। कॉफी का प्याला आधा ही खाली हुआ था और स्नैक्स को तो उसने मुंह के लगाकर भी नहीं देखा था।

❑❑

कैंटीन हॉल से उठकर पहले वह अपने चैम्बर के बाथरूम में आया। उसने आंसुओं की लकीरों को साफ किया। उसके पश्चात मिस्टर दीनानाथ मल्होत्रा के वातानुकूलित ऑफिस में पहुंचा।

दीनानाथ मल्होत्रा साठ के फेर में पहुंचा हुआ शख्स था। जो तरक्की उसने की थी, जो सम्पन्नता उसने हासिल की थी और जो सुख वह भोग रहा था। उन तीनों की गवाही उसका चेहरा स्पष्ट सच से दे रहा था।

''आओ, बैठो रोहन।'' दीनानाथ मल्होत्रा ने विशालकाय मेज के पास वाली कुर्सियों की ओर इशारा किया।

वह धन्यवाद के साथ बैठ गया।

comicsmylife.blogspot.in

"रोहन, मैं चाहता हूं कि तुम एक माह की छुट्टी ले लो।" दीनानाथ मल्होत्रा ने कहने के पश्चात अपनी पीठ कुर्सी की पुश्त के साथ टिका ली।

उसने दीनानाथ मल्होत्रा की ओर यूं देखा गोया वह मजाक तो नहीं कर रहे लेकिन दीनानाथ मल्होत्रा के चेहरे पर गम्भीरता थी।

"मेरे काम के प्रति कोई शिकायत..."

"नहीं बेटे, ऐसा तो सोचना भी मत। दरअसल मैं एक खास काम तुम्हारे सुपुर्द करना चाहता हूं।"

"खास काम! क्या वह अखबार से ही ताल्लुक रखता है सर?" उसने जानना चाहा।

"नहीं, इसे मेरा व्यक्तिगत कार्य समझो। इस कार्य को मैं किसी खानदानी और शरीफ युवक के ही सुपुर्द कर सकता था। इस कारण मैंने तुम्हें चुना है। मेरा एक मित्र है पराग कौटिल्य पाराशर। वह अमेरिका में सैटल है। मेरे मित्र की बेटी पायल पाराशर भारत भ्रमण के लिए आ रही है। मैं चाहता हूं कि तुम इस काम में उसकी मदद करो। भारत वह पहली बार ही आ रही है।"

"यानी मुझे एक गाइड की तरह से मिस पायल पाराशर के साथ रहना होगा।"

"नहीं, गाइड की तरह नहीं। तुम्हें मैं अपने प्रतिनिधि के रूप में यह कार्य सौंप रहा हूं। तुम समझ सकते हो कि अपने दोस्त की बेटी के बारे में सोचना मेरा परम कर्तव्य बनता है। मैं तुम पर यकीन करता हूं रोहन।"

"आपका आदेश मेरे लिए स्वयं के पिता के आदेश के समान है सर। पायल आपकी मेहमान है तो फिर वह मेरे लिए भी मेहमान हुई सर।"

"और तुम्हारा संबंध उस राजस्थान से है, जहां मेहमान को ईश्वर का दूसरा रूप समझ कर उसका हर प्रकार से ख्याल रखा जाता है।"

"इसे आप मेरा सौभाग्य कह सकते हैं सर।" यह कहते हुए उसकी आंखों के आगे तेजपाल शर्मा नाम के कथित नानाजी का चेहरा घूम गया था। वह भी मेहमान की तरह से ही आए थे। लेकिन उस मेहमान के कारण पिछले एक वर्ष से वह पिता की

जुदाई को सहन कर रहा है।

"मुझे यकीन था कि तुम इन्कार नहीं करोगे बेटे।" फिर मल्होत्रा ने दराज में से एक चेक निकाल कर उसकी ओर बढ़ाया। साथ ही कहा, "यह चेक तुम्हें आज ही कैश कराना है। सिटी बैंक का चेक है। एक लाख रुपया तुम्हें अपने पास रखना होगा। ताकि मेरी बेटी समान पायल पाराशर के हर खर्च को तुम चुकता कर सको।"

"ठीक है सर।" उसने चेक थाम लिया।

वह एक लाख रुपए का बियरर चेक था।

"बैंक मैनेजर को मैं फोन कर दूंगा। क्योंकि एक लाख का बियरर चेक मैंने पहली बार साइन किया है। हां, पायल के विषय में बता दूं कि वह भारतवर्ष को अपने शोध का विषय बना कर आ रही है।"

"दैट्स ग्रेट। मैं इस काम में मिस पायल की मदद कर सकता हूं।" उसने शीघ्रता से कहा।

"ड्राइविंग जानते हो?"

"हां, एक दोस्त की कार चलाता रहा हूं। इस कारण ड्राइविंग कर सकता हूं।"

"वैसे तो पायल की ड्राइविंग भी परफैक्ट है। लेकिन कार ड्राइव करनी हो या जिन्दगी की गाड़ी ड्राइव करनी हो। एक्सीडेंट होने की गुंजाइश अनाड़ी ड्राइवरों के कारण ही पैदा होती है। आप कितने ही कुशल ड्राइवर क्यों न हों—अनाड़ी अगर आपकी कार से आ टकराया तो भी एक्सीडेंट ही होना है। दिल्ली का ट्रैफिक और यहां के लोगों का ट्रैफिक सेंस तुम जानते ही हो।"

"जी, दिल्ली में आजकल साधारण सरकारी कर्मचारी के पास भी कार होती है। नई न सही, पुरानी ही सही। क्योंकि कार को स्टेटस सिम्बल मान लिया गया है। बेशक पैट्रोल के पैसे न होने के कारण बीस दिन कार को चलाना संभव ही न हो पाए।"

"हां, मध्यमवर्गीय परिवारों की मानसिकता में भारी परिवर्तन आया है। उच्च वर्ग की हर चीज पर वह भी अपना हक समझने लगे हैं। बेशक उन चीजों के खर्चे अफोर्ड कर पाना उनके वश में न हो।"

comicsmylife.blogspot.in

''खर्चे अफोर्ड करने के लिए फिर उन्हें भी भ्रष्टाचार की गंगा में डूबकी लगानी पड़ती है। आज इसी कारण हर ओर करेप्शन का बोलबाला है। संतोष का धन जिसके पास नहीं वह हमेशा गरीब ही रहते हैं।''

''तुम यकीन नहीं करोगे बेटे। मैं एक ऐसे गोलगप्पे बेचने वाले को जानता हूं, जो 'लो इन्कम ग्रुप' फ्लैट में रहता है और गोलगप्पे बेचने के लिए अपनी कार से आता है। रेहड़ी पर तमाम समान लगा कर वह कार को पार्किंग स्थान पर छोड़ आता है।''

''बेशक स्थिति यही है सर। गनीमत है कि रेहड़ी पर हिसाब-किताब के लिए अभी कंप्यूटर नहीं लगाए गए हैं।''

इस पर दीनानाथ मल्होत्रा ने जबर्दस्त ठहाका लगाया था।

''गांधीजी की कल्पना का भारत कहां जा रहा है। यह उन्होंने कभी नहीं सोचा होगा। खैर, अकाउन्टस ऑफिस में एक लाख रुपए की रसीद साइन कर देना। ताकि अकाउण्ट्स मेन्टेन रहें। हां, यह मोबाइल भी साथ ले जाना।'' मल्होत्रा साहब ने मेज की टॉप पर मोबाइल फोन रखते हुए कहा।

''जी।'' फिर चेक और मोबाइल के साथ वह उठ खड़ा हुआ था।

❐❐

शाम को वह जल्दी ही घर पहुंच गया था। एक लाख रुपया उसके ब्रीफकेस में था। जिसे उसने गोदरेज की अलमारी में रख दिया। नीलिमा देवी को फिर उसने अपने नए कार्य के विषय में बताया था। साथ ही एक लाख रुपयों का जिक्र करते हुए अमेरिका से आने वाली पायल पाराशर के विषय में भी बताया था।

''पायल पाराशर। नाम से तो ब्राह्मण ही लगती है।'' नीलिमा देवी ने सोचपूर्ण स्वर में कहा, ''एक बार उसे घर पर अवश्य लाना बेटे। देखना चाहती हूं कि भारत की बेटी का जन्म अगर विदेश में हो तो उसके संस्कार कैसे होते हैं।''

''संस्कार तो वातावरण से मिलते हैं मम्मी। अमेरिका जैसे विकसित देश की लड़की भारतीय संस्कारों वाली तो हो नहीं सकती। कल वह भारत आने वाली हैं। यदि मुझे लगा कि वह हमारे घर लंच या डिनर कर सकती है तो मैं आपकी इच्छा

अवश्य ही पूरी कर दूंगा मम्मी।''

''उसकी उम्र कितनी है बेटे?''

''यह तो मैंने पूछा नहीं मम्मी। लेकिन भारतवर्ष पर शोध करने आ रही है तो कोई बच्ची तो होगी नहीं। वह हमारे भारतीय परिवार और हमारी संस्कृति के विषय में शोध ग्रंथ लिख रही है। इस कारण परिपक्व मस्तिष्क की होगी।''

लम्बी गोदरेज की अलमारी में से विचित्र प्रकार की मद्धिम ध्वनि बाहर आई।

नीलिमा देवी ने हैरानी से कहा, ''यह अलमारी में से कैसी आवाज आ रही है बेटे?''

तब वह उठ कर अलमारी के पास पहुंचा। चूंकि मोबाइल फोन को उसने अलमारी में ही रख दिया था। उसी की घण्टी का स्वर था।

मोबाइल फोन भी दीनानाथ मल्होत्रा ने उसके सुपुर्द किया था। ताकि पायल पाराशर के आने के पश्चात मिस्टर मल्होत्रा द्वारा रोहन से कभी भी सम्पर्क किया जा सके। उसने अलमारी में से मोबाइल फोन निकाला। फिर एक बटन दबाने के पश्चात उसने स्वर फूंका।

''रोहन बोल रहा हूं सर।''

''हां, एक आवश्यक बात करना भूल गया था।'' मल्होत्रा साहब का व्यग्र स्वर उभरा।

''जी, आदेश दीजिए सर।''

''मैं पायल की सिक्योरिटी के विषय में भूल गया था। तुम तो जानते ही हो कि हमारे देश में बेरोजगार युवकों की कोई कमी नहीं। इस कारण उनके पास भी समय की कमी नहीं। फिर जिनके पास समय की कमी न हो। वह शैतान को अपने खाली दिमाग में घर बनाने देते हैं।''

''आप निश्चिंत रहें सर। मैं गाइड और फ्रेण्ड के अलावा एक बॉडीगार्ड की सेवाएं भी अंजाम दे सकता हूं।'' उसके अधरों पर मुस्कान थिरक आई।

''तुम अपनी बात कर रहे हो?''

''हां, यूनिवर्सिटी का बॉक्सर था और ताइक्वाडों में 'ब्लैक बेल्ट' हासिल कर रखी है। साथ ही एन.सी.सी. का बैस्ट

comicsmylife.blogspot.in

कैडिट भी रह चुका हूं। शूटिंग रेंज में भी मेरी सेकेण्ड पोजीशन थी सर।''

''वाह! तुम्हारी इस काबिलियत की तो मुझे जानकारी ही नहीं थी। फिर भी तुम चाहो तो दो सिक्योरिटी गार्ड अपने साथ रख सकते हो। वह तुम्हारी कार के पीछे जीप में मौजूद रहेंगे।''

''उसकी कोई जरूरत नहीं सर। वैसे भी दिल्ली में विदेशी सैलानी काफी आते हैं। पायल पाराशर के आगमन को भी उसी सहज दृष्टि से सोचिए।''

''मित्र की बेटी की हिफाजत के बारे में हर कोण से सोचना मेरा फर्ज है।''

''मैं समझ सकता हूं सर। लेकिन सिक्योरिटी का इन्तजाम करके आप मुसीबतों को ही न्यौता देंगे।'' उसने बेहद गम्भीर स्वर में कहा।

''यानी?''

''इंसानी फितरत यह है सर कि जो चीज महत्वपूर्ण बन कर सामने नजर आती है। उस पर लोगों का ध्यान ज्यादा ही जाता है। पब्लिक प्लेसेस में हर प्रकार के व्यक्ति होते हैं। सिक्योरिटी देख कर वह ज्यादा परेशान करेंगे सर।''

''ओह! शायद तुम ठीक कह रहे हो।''

''आप निश्चिंत रहें सर। पांच-सात शोहदों का मैं आसानी से मुकाबला कर सकता हूं। फिर मेरा अनुमान गलत नहीं तो मिस पायल के पास लाइसेंसी रिवॉल्वर तो अवश्य ही होगा।''

''इस बारे में पुख्ता जानकारी नहीं है। लेकिन हो, तो बहुत ही बेहतर रहेगा।''

''आप निश्चिंत रहें सर। कोई भी अनहोनी तभी घटेगी—जब मेरी लाश गिरे। सिक्योरिटी के दो गार्ड तैनात करके मिस पायल को बेकार में 'हाईलाइट' करने से कोई फायदा नहीं।'' उसने बेहद ठोस स्वर में कहा।

''मैं निश्चिंत हुआ। वैसे कल तुम सुबह पांच बजे आ जाना। पालम चलना है। इस बहाने तुम्हारी ड्राइविंग की भी परख हो जाएगी।''

''बेहतर।''

''शुभरात्रि बेटे।'' फिर दूसरी ओर से रिसीवर क्रेडिल पर

रख दिया गया था। उसने संबंध विच्छेद कर दिया और फिर मोबाइल को सेन्टर टेबल पर रख दिया।

''यह लाश गिरने की क्या बात थी?'' मां के हृदय ने तड़प कर पूछा था।

''कुछ नहीं मम्मी, मामूली बात थी। मल्होत्रा साहब चाहते थे कि पायल के लिए सिक्योरिटी का इन्तजाम किया जाए। मैंने उन्हें मना कर दिया।''

''क्यों भला?''

''मम्मी क्या आपका बेटा किसी नारी की रक्षा करने में समर्थ नहीं?''

''अवश्य है। लेकिन तुम्हें अखबार की नौकरी के बजाय यह ड्राइवरी और चौकीदारी जैसा काम क्यों दिया जा रहा है।'' नीलिमा देवी ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए कहा, ''तेरे को साफ मना कर आना था।''

''आप भी कमाल करती हैं मम्मी। अंग्रेजी में एक कहावत है कि बॉस इज आल्वेज राइट। मैं उन्हें मना कर देता तो वह मेरा हिसाब बना कर चलता कर देते। फिर आजकल नौकरी मिलती कहां है मम्मी।'' मां की झुंझलाहट पर उसे हंसी आ गई थी।

''तो क्या आत्मसम्मान बेच कर नौकरी करेगा तू?''

''नहीं मम्मी, मैंने नौकरी की खातिर नहीं—बल्कि पापा और मल्होत्रा साहब की मित्रता का सम्मान रखने के लिए उनके प्रस्ताव को स्वीकार किया था। मुझे उनके आग्रह में अपनत्व नजर आया था मम्मी। मैं आश्वस्त हूं कि मेरे सिर पर बेगार नहीं थोपी गई है।''

''और अभी तू कह रहा था कि...''

''मैं मजाक कर रहा था मम्मी। मुझे अपना स्वाभिमान कागज के उन नोटों से ज्यादा प्यारा है।''

''हां, अब तू अपने पिता की भाषा बोल रहा है।'' नीलिमा देवी के चेहरे पर संतुष्टि के भाव आए, ''तेरे पापा हमेशा कहते आए हैं कि जहां भावना मर जाती है—वहां रुपयों की फितरत जिन्दा हो जाती है।''

''मैं पापा का खून हूं मम्मी। मेरे मुख से पापा का ही स्वर निकलेगा।'' उसने तब गम्भीर स्वर में कहा, ''मुझे यदि लगा

comicsmylife.blogspot.in

कि मिस्टर मल्होत्रा ने मुझे दोस्त का पुत्र होने के बजाय अपना नौकर समझा है तो मैं उसी दिन नौकरी छोड़ दूंगा।''

तब परम संतुष्टि के भाव दमके थे नीलिमा देवी के चेहरे पर।

□□

अगली सुबह वह दीनानाथ मल्होत्रा के साथ उनकी कार ड्राइव करते हुए पालम एयरपोर्ट पहुंचा था। इंदिरा गांधी इन्टरनेशनल एयरपोर्ट की पार्किंग से जब वह दोनों बाहर आए तो सुबह का उजाला पूर्व दिशा से नटखट अन्दाज में सिर उभारने लगा था। भोर का सूर्य—जैसे घुटनों पर चलता कोई शिशु।

''ड्राइविंग तो तुम्हारी परफैक्ट है बेटे।'' दीनानाथ मल्होत्रा ने मित्रवत अन्दाज में उसके कंधे पर हाथ रखा, ''तुमने परिवर्तन को अपनाया है। जबकि तुम्हारे पिता को आज भी उस साइकिल से लगाव है, जिस पर वह स्कूल जाते थे। कार की बात तो एक तरफ वह मोपेड तक चलाने को तैयार नहीं।''

''हां, पापा सोचते हैं कि विदेशी मुद्रा हम भारतवर्ष की श्रेष्ठ चीजों के निर्यात से प्राप्त करते हैं। उन्हें हमें प्रदूषण फैलाने वाली तरक्की पर खर्च करना पड़ता है। बात सही भी है सर।''

''हां, बात एकदम ठीक है। लेकिन ठीक बातें आजकल कौन सोचता है बेटे।''

''एक आग्रह करना चाहता था सर।''

''कहो।''

''मैं नहीं जानता कि मिस पायल का स्वभाव कैसा है। इस कारण आग्रह कर रहा हूं कि आप मेरे बारे में मिस पायल को यही बताएं कि मैं उनका पथ-प्रदर्शक हूं। मुझे अपने मित्र का पुत्र न कहें।''

''ऐसा क्यों चाहते हो तुम?''

''ताकि मिस पायल किसी भी बात का संकोच न करे।'' उसने अर्थपूर्ण आंखों से देखते हुए कहा, ''कुछ काम ऐसे भी हैं, जो सिर्फ नौकरों को ही बताए जा सकते हैं। मैं नहीं चाहता कि हमारे मेहमान को किसी प्रकार की हिचक हो। यूं तो मैं जानता हूं कि अमेरिका में रहने वाला प्रत्येक शख्स अपने कार्य को स्वयं ही करना चाहता है। वहां पति को अगर जूते साफ चाहिए तो पॉलिश पत्नी नहीं करती है।''

''फिर असलियत क्यों छिपाना चाहते हो बरखुरदार?''

''एक कारण तो बता ही दिया है। दूसरा कारण यह भी है कि मिस पायल जब वापिस जाएंगी तो सच्चाई बता कर आप मिस पायल को चौंका सकते हैं।''

''ठीक है, तुम कहते हो तो यूं ही सही। पायल के साथ एक प्रेक्टिकल जोक हो जाएगा।'' फिर विजिटिंग टिकट लेने के लिए रोहन खास काउन्टर की ओर बढ़ गया था।

फिर दोनों एयरपोर्ट के उस भाग में आए—जहां से वह प्लेन को रन-वे पर उतरते देख सकते थे।

''पायल को आप पहचानेंगे कैसे सर?'' उसने निर्दिष्ट स्थान की ओर बढ़ते हुए पूछा।

''यह तुम्हारी याददाश्त को क्या हो रहा है भई? दो वर्ष पूर्व ही तो मैं अमेरिका, ब्राजील, सोवियत संघ और जर्मनी की यात्रा पर गया था। तब अमेरिका में अपने मित्र से न मिलना हो—उसके परिवार से न मिलना हो। यह कैसे सम्भव हो सकता था?''

''दो वर्ष पहले मैंने पेपर ज्वाइन नहीं किया था सर। पापा वैसे भी रिजर्व नेचर के हैं।'' इस कारण आपके उस विदेशी दौरे की जानकारी नहीं थी सर।

तभी एनाउंसमेंट हुई थी। जो अमेरिकन एयर लाइंस के बोइंग सेवन प्लेन के विषय में थी। सुन कर दोनों ने राहत महसूस की कि प्लेन निश्चित समय पर था।

फिर कुछ ही मिनटों पश्चात बोइंग सेवन ओ सेवन उन्हें आकाश में नजर आया था। जिसे क्रू के सदस्यों ने पूरी कुशलता के साथ रनवे पर उतारा था। फिर प्लेन के द्वार के साथ सीढ़ी लगा दी गई थी।

दीनानाथ मल्होत्रा ने अपनी के.एन. सिंह जैसी आंखों पर दूरबीन लगा ली थी। यात्रियों ने द्वार से सीढ़ियों पर उतरना आरम्भ कर दिया था।

''यस, पायल आ गई है।'' उत्साह भरा स्वर था मिस्टर मल्होत्रा का।

''वह ब्ल्यू पोशाक वाली सर?'' उसने अनुमान लगाया।

''नहीं, वह जो जेड ग्रीन पोशाक पहने हुए है।''

''लेकिन वह तो अमेरिकन लग रही है सर। उसमें हिन्दुस्तानी

comicsmylife.blogspot.in

वाली कोई बात नहीं है।"

"मैं तुम्हें यह बताना भूल गया था कि मेरे मित्र पाराशर की पत्नी एक अमेरिकन ही थी।" कारण स्पष्ट किया गया।

"व्हाट!" रोहन चौंक उठा, "थी! क्या पाराशर अंकल की पत्नी का निधन हो गया?"

"पागल हुए हो। मैंने ऐसा कब कहा?"

"आपने 'थी' शब्द का प्रयोग किया था।"

"वह इस संदर्भ में क्योंकि तलाक के पश्चात भी 'थी' का प्रयोग किया जा सकता है।"

"ओह! यह जान कर काफी दुख हुआ।"

"दुख मनाने की कोई आवश्यकता नहीं। यह सब शादी के पूर्व ही तय हो चुका था। मिस्टर पाराशर को अमेरिका की नागरिकता प्राप्त करनी थी और ऐसा करने के लिए अमेरिकन नारी से शादी करना जरूरी था। इस कारण दोनों ने तीन वर्ष की 'मिच्युअल अण्डरस्टेण्डिग' के आधार पर एक सौदा किया था। तीन वर्ष पश्चात तलाक होना था और इस बीच कोई लड़की होती तो मिस्टर पाराशर के पास रहनी थी और लड़का होता तो मिसेज पाराशर ने डाइवोर्स के पश्चात लड़के को ले लेना था।"

"यकीन नहीं होता कि व्यावसायिक सोच विवाह जैसे पावन रिश्तों में भी आ चुकी है।" दुख था उसके स्वर में।

इस बीच वह दोनों पायल पाराशर को देखते रहे थे जो विमान से उतरने के बाद कस्टम ब्लॉक की ओर गई थी। विजिटर्स एरिना में उसने मल्होत्रा साहब को देखकर हाथ भी हिलाया था।

फिर वह दोनों उस स्थान की ओर बढ़ गए, जहां से कस्टम चैकिंग के पश्चात मिस पायल को बाहर आना था।

❐❐

बीस मिनट पश्चात वह बाहर आई थी। जेड ग्रीन पोशाक के साथ उसने ग्रीन ग्लासेस का ही चश्मा लगा रखा था। बेशक रंगत उसे अपनी मां से मिली थी। लेकिन चेहरे-मोहरे में भारतीय पिता की झलक रोहन को नजर आई थी। उसने आगे बढ़कर दीनानाथ मल्होत्रा के पांव छू लिए थे। उसके संस्कारों में जीवित थी भारतीयता की झलक। तब रोहन ने सहज अनुमान लगाया था।

"पायल बेटी, यह तुम्हारे सहायक हैं। मिस्टर रोहन शर्मा। मैं समझता हूं कि इण्डिया में रहते हुए तुम्हें ट्रबल शूटर की आवश्यकता हुई तो रोहन उस कसौटी पर खरा साबित होगा।" उसने परिचय करवाया, "यह मेरे मित्र पराग कौटिल्य पाराशर की बेटी है। मैंने तुम्हें बताया ही था।"

"हाए! ग्लेड टू मीट यू।" पायल ने अपने कटे हुए बालों को नफासत के साथ झटका और अपना दायां हाथ रोहन की ओर बढ़ा दिया।

लेकिन रोहन ने हाथ थामने के बजाय अभिवादन की मुद्रा में हथेलियां एकाकार कर दी।

"नमस्कार, मिस पायल। आपसे मिल कर खुशी हुई।"

"शुक्रिया।" उसने अपना हाथ वापिस खींच लिया। वह बढ़ाए हुए हाथ से हाथ न मिलाने के कारण कुछ अपसैट नजर आई थी।

फिर दो बड़े सूटकेस पोर्टर के द्वारा कार की डिक्की में रखवा कर वह तीनों रवाना हो गए थे। चूंकि कार रोहन के द्वारा ड्राइव की जा रही थी। इस कारण मल्होत्रा साहब और पायल पीछे की सीट पर बैठे थे। वैसे भी यह ठीक नहीं लगता था कि वह दोस्त की बेटी को पिछली सीट पर छोड़ कर रोहन के पास आगे बैठते।

"मैंने फोन पर आपसे चर्चा की थी अंकल कि मैं हिन्दी लिटरेचर पर शोध कर रही हूं। इस कारण भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में किसी जानकार व्यक्ति को आप मेरे लिए मुहैया कर सकेंगे।"

रोहन की आंखें विण्डस्क्रीन पर थीं—लेकिन उसके कान पीछे की ओर लगे हुए थे।

"रोहन तुम्हारी मदद करेगा बेटी। तुम दोनों का परिचय हो जाए, इसी कारण मैं रोहन को साथ लाया था।"

"मुझे लगता है कि आपने गलत व्यक्ति का चुनाव कर लिया है अंकल।" स्वर मद्धिम था। लेकिन इतना भी नहीं कि लापरवाह नजर आ रहा रोहन सुन न सके।

"जबकि मैंने सोचा था कि रोहन से परिचय होने के बाद तुमने समझ लिया होगा पायल बेटी कि यही भारतीय संस्कृति के संदर्भ में तुम्हारा बेहतर गाइड साबित हो सकता है।" रहस्य

comicsmylife.blogspot.in

भरा स्वर था मिस्टर मल्होत्रा का।

"क...क्या मतलब! मैं समझी नहीं अंकल?"

"तुमने रोहन की ओर परिचय के लिए हाथ बढ़ाया था। रोहन ने तब भारतीय संस्कृति के अनुसार हाथ जोड़ कर अभिवादन किया था, जो नमस्कार की भारतीय मुद्रा है। वैसे भी एक भारतीय युवक किसी नारी से हाथ नहीं मिलाता है।"

"ऐसा क्यों?"

"मेरे ख्याल से इस बात का जवाब तुम्हें रोहन से लेना चाहिए। रोहन सुन रहे हो न हमारी बातचीत?"

"जी। इसी कारण जवाब दे रहा हूं। कारण यही है कि भारतीय संस्कृति में नारी का हाथ उसकी सहायता के लिए और शादी होने के दरम्यान पकड़ा जाता है। वरना हाथ थामने को भारतीय मर्यादा के अनुकूल नहीं माना जाता है। बेशक अब आधुनिकता के कारण आज पुरानी मान्यताओं को शिक्षित युवा वर्ग नहीं मान रहा है। वह पश्चिमी देशों की तरह से खुलापन चाहता है। लेकिन भारतीय नारियों में एक प्रतिशत भी वैसी प्रगतिशील नारियां नहीं हैं। युवक अवश्य ही चाहते हैं कि पुरानी मान्यताएं टूट जाए। लगभग अस्सी प्रतिशत युवकों की चाहत यही होगी। लेकिन मैं सिर्फ उन युवकों की बात कर रहा हूं जो 'साइबर कैफे' (इन्टरनेट) का उपयोग करने लायक उन्नति कर चुके हैं।"

"कहो बेटी, क्या मैंने तुम्हारे लिए सही गाइड का चुनाव नहीं किया?"

"बेशक...बेशक किया है अंकल। मैं इसके लिए आपकी आभारी भी हूं।" उसने रोहन को देखते हुए कहा।

उसकी आंखों पर तब भी चश्मा था। इस कारण रियर व्यू मिरर में देखने पर भी वह आंखों की भावनाएं नहीं देख पाया था।

"वैसे एक बात मैं स्पष्ट बता देना चाहता हूं बेटी कि रोहन एक भावुक युवक है। इस कारण ध्यान रखना कि इसके स्वाभिमान को ठेस न लगे।"

"पथ-प्रदर्शक तो गुरु के समान होता है और गुरु का सदैव आदर किया जाता है। लेकिन गुरु को द्रोणाचार्य की तरह भी नहीं होना चाहिए, जो एकलव्य का अंगूठा ही गुरु दक्षिणा में मांग ले।

इससे गुरु की प्रतिष्ठा धूमिल होती है।" सपाट स्वर में कहा था पायल ने। बेशक स्वर में व्यंग्य नहीं था। लेकिन यह कह कर उसने इस बात का संकेत अवश्य दे दिया था कि वह भारतीय संस्कृति के विषय में थोड़ी बहुत जानकारी तो अवश्य रखती है।

"रोहन, कुछ कहना चाहोगे, इस विषय में?" मल्होत्रा साहब ने उसे उकसाया।

"यह तो प्रत्येक इंसान के विश्वास की बात है कि एक पौराणिक घटना को वह किस दृष्टि से देखता है। मिस पायल ने आंखों पर चश्मा लगा रखा है। इस कारण चश्मे की खास रंगत से उन्हें जो चीज नजर आएगी, वह नंगी आंखों से या अन्य चश्मे से दूसरे इंसान के द्वारा अलग रूप से बयान की जाएगी। इंसान सिर्फ आंखों पर ही चश्मा नहीं पहनता है। कई इंसान मस्तिष्क पर भी चश्मा पहनते हैं।"

"मस्तिष्क पर चश्मा! यह कहने का अभिप्राय?" चौंक उठी थी पायल। साथ ही उसने हरी रंगत वाला चश्मा भी उतार दिया था।

अब उसकी गहरी नीली आंखें स्पष्ट नजर आ रही थीं।

उसकी नीली आंखों में खामोशी की गम्भीरता थी और वह विदुषी नारी की आंखें नजर आ रही थीं।

"मिस पायल आपकी आंखें बेहद खूबसूरत हैं। यह जो चश्मा आपने पहन रखा था। उससे आपकी आंखों की सुरक्षा हो रही थी। लेकिन जो विद्वता आपकी आंखों में है। वह दुनिया का सबसे कीमती चश्मा पहन कर भी आपकी आंखों में नहीं आ सकती है। यह बात मानती हैं आप मिस पायल?" उसने पूछने के बाद पल भर को रियर व्यू मिरर में देखा।

दोनों के नेत्र पल भर को मिले। उस पल ने रोहन पर न जाने कैसा जादू किया था कि कुछ क्षणों को कार लहरा सी गई।

मल्होत्रा साहब को कहना पड़ा, "ड्राइविंग पर भी ध्यान दो रोहन बेटे। पथ-प्रदर्शक से पहले तुम उस वाहन को चला रहे हो—जिसमें तीन इंसान मौजूद हैं।"

"सॉरी सर, वाकई एक क्षण को संतुलन नहीं बन पाया था दिमाग का।"

"बेहतर होगा कि आगे की वार्ता बाद में की जाए। हमें भी

comicsmylife.blogspot.in

तुम्हारा ध्यान नहीं बंटाना चाहिए था।'' मिस्टर मल्होत्रा ने तब सहजता के साथ कहा था। फिर वार्ता पर विराम लग गया था।

मल्होत्रा साहब की कोठी पर पहुंचने के पश्चात वह आज्ञा लेकर रवाना हो गया था। जाते-जाते उसने कहा था, ''मैं शाम को चार बजे वापिस आऊंगा सर। भारतीय संस्कृति से सम्बंधित कुछ श्रेष्ठ साहित्य भी साथ लेता आऊंगा।''

□□

एक साधारण नारी रहस्य रखे जाने वाले सत्य को भी अधिक समय तक काबू नहीं कर पाती। इस कारण शीघ्र ही वह रहस्य उसके द्वारा दूसरे व्यक्ति को बता दिया जाता है। ऐसे में किसी रहस्य को जानने की उत्कंठा का दमन कर पाना साधारण नारी के लिए कहां तक सम्भव था?

नीलिमा देवी भी एक साधारण नारी ही थी। इस कारण वह नहीं समझ पा रही थी कि आखिर वह क्या वजह थी जिसके कारण उसके पति को आज्ञातवास पर जाना पड़ा है। साथ ही पांच करोड़ रुपया दो वर्ष में कमाने की जो हिदायत उसके पति द्वारा रोहन को दी गई थी। उस शर्त या हिदायत ने नीलिमा देवी की जिज्ञासा को चरम-सीमा पर पहुंचा दिया था। डायरी को वह आज सुबह से ही कई बार देख चुकी थी। फिर अलमारी पर ताला भी नहीं था और वह उस डायरी को पढ़कर अपनी तमाम जिज्ञासाओं का समाधान भी कर सकती थी। रोहन की अनुपस्थिति भी उन्हें उकसा रही थी कि वह पति की उस डायरी को अवश्य पढ़े। लेकिन संस्कार थे, जो आड़े आ रहे थे। नीलिमा देवी इसी कारण आज तक डायरी नहीं पढ़ पाई थी।

लेकिन आज वह एक वर्ष पश्चात काफी उद्विग्न और परेशान हो चुकी थी। पति की जुदाई और डायरी के रहस्य ने अजगर बन कर संस्कारों को निगलना आरम्भ कर दिया था। संस्कारों का पूरा हाथी निगल चुका था। सिर्फ पूंछ ही बाकी रह गई थी।

नीलिमा देवी चोर दृष्टि से डायरी को देख रही थी, जो अलमारी के पारदर्शक कांच से स्पष्ट नजर आ रही थी। चमड़ा मढ़ी वह डायरी अब उन्हें अपनी सौतन नजर आने लगी थी।

तभी डोरबैल की आवाज सुन वह चौंक उठी। सेफ्टी चेन लगा कर उन्होंने दरवाजा खोला। द्वार पर एक बाईस-तेईस

वर्षीय युवक था। जिसके हाथ में एक पार्सल था। जाहिर था कि युवक कोरियर सर्विस से आया था।

''मिस्टर रोहन शर्मा का निवास यहीं है आण्टीजी?'' युवक ने पेन निकालते हुए पूछा।

''हां, यही मकान है बेटे!''

''कोरियर पैकेट है आण्टी। यहां हस्ताक्षर कर दीजिए।'' युवक ने पैकेट देकर फार्म भी आगे बढ़ाया।

जहां रोहन का नाम था। वहां हस्ताक्षर करके नीलिमा देवी ने युवक को चलता किया। उस पैकेट पर पते के स्थान पर जो लिखावट दर्ज थी। उसे अपने पति की लिखावट के रूप में स्पष्ट शिनाख्त भी कर लिया। पति की लिखावट देख कर ही भावनाओं का सावन उनकी आंखों में झिलमिला उठा।

नीलिमा देवी ने सावधानी के साथ पैकेट खोला। अन्दर एक पत्र था और उसके नीचे ही एक फाइल थी। जाहिर था कि फाइल में उनका ताजा लेखन था। लेकिन वह लेखन एक वर्ष पश्चात भेजा गया था। पत्र में लिखा था :

प्रिय नीलिमा एवं रोहन,

सदा खुश रहो।

एक वर्ष गुजर चुका है। इस दरम्यान मैंने तुम दोनों की सुध नहीं ली। जाहिर है कि यह शिकायत जायज भी है। लेकिन मेरी मजबूरी के कारण तुम दोनों मेरे इस अपराध को क्षमा कर दोगे। पहले मैं नीलिमा से ही कहना चाहता हूं। पत्नी होने के कारण नीलिमा के प्रति मेरा प्रथम दायित्व है। मैं जानता हूं कि हमारे गृहस्थ जीवन में तुम्हें बेशक मुझसे कोई शिकायत न रही हो। लेकिन यूं एकाएक बिना कारण बताए अज्ञातवास पर चले जाने की वजह जानने का हक तुम्हें अवश्य ही था। तुम्हारा यह अधिकार भी था कि तुम भी मेरे साथ अज्ञातवास को चलती। लेकिन तुम पत्नी होने के अतिरिक्त एक मां भी हो नीलिमा। मैं नहीं चाहता था कि मां के हृदय को पुत्र वियोग सहना पड़े। मैं इसी कारण तुम्हें अपने साथ नहीं ले गया था।

नीलिमा, मैं जानता हूं कि रोहन जैसे पुत्र को पाकर

comicsmylife.blogspot.in

[illegible] हैं। लेकिन पांच करोड़ रुपया दो वर्ष में कमाने का जो वचन मैंने उससे लिया है। वह लगभग असम्भव ही है। इसके बावजूद भी मैं आशावान हूं कि रोहन मेरी शपथ को अवश्य ही पूरा करेगा।

नीलिमा, मैं तुम्हें इस बात की इजाजत देता हूं। यदि तुम मेरी डायरी पढ़ना चाहती हो, तो ऐसा करने के लिए स्वतंत्र हो। इस प्रकार मेरे दिल में यह संतोष रहेगा कि मैंने अपनी पत्नी के साथ विश्वास धर्म निभाया है। लेकिन डायरी में दर्ज रहस्य को तुम्हें गुप्त रखना होगा। एडवोकेट क्षितिज क्षेत्रपाल के माध्यम से मुझे पांच हजार रुपया महीना प्राप्त होता रहा है। क्षितिज क्षेत्रपाल को मेरे विषय में पूरी जानकारी है। अब पत्र समाप्त करने से पूर्व आश्वस्त करना चाहता हूं कि मेरी आंखों में भी जुदाई के उतने ही आंसू हैं, जितने तुम्हारे और रोहन की आंखों में हैं।

तुम्हारा पति
क्रांतिदूत शर्मा

पति के हस्ताक्षर को फिर उसने पावन अधरों से चूम लिया। ठीक तभी पदचाप के स्वर उभरे। नीलिमा देवी ने चौंक कर देखा। बरामदे की सीढ़ियों से रोहन प्रवेश द्वार के करीब आ रहा था। उन्होंने शीघ्रता से अपने आंसू पोंछे और फिर पत्र को अपने आंचल में छिपा लिया।

कॉलबेल से पहले ही नीलिमा देवी ने द्वार खोल दिया।

''ओह ! यानी आप पापा के कमरे में थीं। वहीं से अन्दर आने वाला शख्स नजर आता है।'' रोहन ने चमकती मुस्कान के साथ अनुमान लगाया।

''हां, ठीक पहचाना बेटे।''

''क्या कोरियर से डाक आई है मम्मी ?'' उसने सोफा चेयर पर बैठते हुए जूते उतारते हुए पूछा।

''कै...कैसे मालूम !'' चौंक उठी नीलिमा देवी।

''बाहर साइकिल के पहियों के निशान थे। गैंस तो कल ही आई है। इस कारण कोरियर से डाक आई हो सकती है। वैसे भी सरकारी डाक तो शाम तीन-चार बजे ही आती है।'' उसने स्पष्ट

किया।

''बिल्कुल अपने पिता की तरह ही सोचते हो। वह भी हवा सूंघ कर बता देते थे कि उसमें किस चीज की महक है। पदचाप सुनकर ही वह अनुमान लगा लेते थे कि आने वाले शख्स का इरादा क्या है। वह इंसान की भावनाओं को उसकी आंखों में पढ़ लेते थे। ठीक उसी तरह की प्रकृति तुममें भी विकसित हो रही है।''

''आम के वृक्ष में आम ही लगेंगे मम्मी। उसमें बबूल के कांटे नहीं लगेंगे। जिस पिता का पुत्र हूं। उनका स्वरूप तो मेरी छाया में भी नजर आएगा मम्मी। यानी आप मान रही हैं कि एक अर्से बाद कोरियर एजेण्ट आया है।''

''हां, तुम्हारे पापा ने पिछले वर्ष जो कुछ भी लिखा है। वह तुम्हारे नाम से पोस्ट कर दिया है।''

''वाह ! साथ में कोई पत्र भी लिखा होगा पापा ने ?''

''नहीं, पत्र तुम्हारे लिए नहीं है बेटे। वह पत्र सिर्फ मेरे लिए ही था।''

''पिता की सुरक्षा भरी छांव नसीब में नहीं। क्या मां का वह आंचल भी सूख गया है जिसमें स्नेह की शीतलता मिलती थी।'' आहत था उसका स्वर, ''पिता ने अग्निपरीक्षा ली है मम्मी। लेकिन उसी शीतलता के सहारे ही तो मैं उस अग्निपरीक्षा की कसौटी पर खरा साबित हो सकूंगा।''

''यानी पिता का पत्र पढ़ने को व्याकुल हो ?''

''जो इन्कार करे, वह नालायक बेटा ही हो सकता है मम्मी ! कम से कम मैं नालायक नहीं। यदि नालायक होता तो पापा ने मुझे वह जिम्मेदारी न सौंपी होती।''

तब नीलिमा देवी ने वह पत्र पुत्र के सुपुर्द कर दिया था। वह नहीं चाहती थी कि अज्ञातवास पर गए पिता के हृदय से निकले शब्दों से उनका पुत्र महरूम रह जाए।

❐❐

पत्र पढ़ने के पश्चात वह पिता द्वारा भेजा गया वर्ष भर का लेखन अपने निजी कक्ष में ले आया था। लगातार छः घण्टों तक वह उस सृजन को पढ़ता रहा था। ऐसा पहली बार नहीं हुआ था कि प्रेस में जाने से पूर्व पिता के लेखन को उसने पढ़ा था। लेकिन

comicsmylife.blogspot.in

इस बार के लेखन में उसे नयापन महसूस हुआ था। कई स्थान पर तो वह रोने को विवश हो गया था।

''क्या आज डिनर नहीं करना बेटे ?'' नीलिमा देवी का स्वर सुन कर वह चौंका।

''लंच में भी आज तुमने कुछ नहीं लिया। मैंने सोचा था कि पिता का लेखन पढ़ते हुए तुम्हारी भूख-प्यास उड़ गई होगी। हमारे यहां एक कहावत है कि भूखे उठना चाहिए लेकिन भूखे पेट सोना कभी नहीं चाहिए।''

''ओह! साढ़े नौ बज रहे हैं।'' उसने दीवार घड़ी पर नजर डाली—जो साढ़े नौ बजने का संकेत दे रही थी।

''मैंने भी लंच नहीं किया बेटे। तुम्हारी राह देखती रही थी।''

''यानी बेटे के कारण मां को भूखा रहना पड़ा।'' उसने फिर ठण्डी सांस भरी।

''नहीं बेटे, पिता के प्रति तुम्हारे लगाव को अपने दिल में अनुभव करके भूख नहीं लगी।'' नीलिमा देवी ने स्नेह भरे स्वर में कहा, ''आओ बेटे, खाना खा लो।''

वह उठ खड़ा हुआ था। डाइनिंग हॉल में दोनों ने खाना खाया था। लेकिन वह पेट भरने की औपचारिकता भर थी। जब इंसान के दिल में किसी प्रियजन की कचोटने वाली स्मृति होती है तो उसे भोजन में भी कोई रुचि नहीं रह जाती।

''आपने क्या तय किया मम्मी ?''

''किस बारे में बेटे ?''

''डायरी को पढ़ने के विषय में ? आपके सामने तो विकल्प है मम्मी। पापा ने आपको इजाजत भी दे दी है।''

''कुछ तय नहीं कर पा रही हूं। जिस रहस्य से मेरा बेटा अपरिचित रहे। उस रहस्य के बारे में मैं भी नहीं जानना चाहूंगी। यही बात है मेरे दिल में बेटे।''

''पुत्र से ज्यादा पति के प्रति भारतीय नारी ज्यादा सोचती है। यह एक ठोस सच्चाई है मम्मी। आप चाहें तो इस बारे में अपने दिल को टटोल कर देख सकती हैं।''

''भारतीय नारी के बारे में तुमने सच्चाई बयान की है बेटे। लेकिन जब पति और पुत्र दोनों ही त्याग के पर्याय बन जाते हैं तो

भारतीय नारी भी त्याग के मामले में उनसे पीछे नहीं रहती। यदि तुम्हारे पिता ने पत्नी पर पुत्र मोह को तरजीह न देते हुए अज्ञातवास का निर्णय ले रखा है तो इसके पीछे अवश्य ही कोई जायज वजह होगी।'' सपाट स्वर था नीलिमा देवी का, ''मैं अपने पति के निर्णय का सम्मान करना चाहती हूं बेटे। उस सम्मान को जिज्ञासा की भेंट नहीं चढ़ाना चाहती।''

''लेकिन गुजरते हुए हर दिन के साथ मैं अपनी आत्मा पर शर्मिन्दगी के बोझ को अनुभव करता हूं।'' उसके स्वर में भावुकता उतर आई थी, ''आप तो जानती हैं मम्मी कि पापा ने मुझ पर कितना विश्वास किया है। लेकिन पांच करोड़ रुपया मैं दो वर्ष में कमा सकूंगा—इस बात की तो मैं कल्पना भी नहीं कर सकता मम्मी। पापा को दिए हुए वचन को मैं कैसे पूर्ण करूं ? यह बात सोच-सोच कर भी डरता हूं कि मैं पापा की उम्मीद पर खरा न उतर सका तो फिर क्या होगा ?''

''बेटे, इंसान यदि ईमानदारी के साथ अपनी कोशिश करके भी सफलता प्राप्त नहीं कर सके तो उसे शर्मिन्दा होने की कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिए।'' गम्भीरता थी स्वर में, ''शर्मिन्दगी उस इंसान को होती है जो वचन देने के बाद उसे पूरा करने का प्रयास तक नहीं करे।''

''मुझे तसल्ली देने के लिए आप ऐसा कह रही हैं मम्मी। लेकिन सच्चाई यही है कि जो पुत्र पिता की उम्मीदों पर खरा न उतर सके, वह नालायक होता है।''

''तुम्हारी इस हताशा और निराशा को मैं क्या समझूं ? यही कि तुम हौसला त्याग चुके हो ?''

''मैंने हिम्मत नहीं छोड़ी है मम्मी। लेकिन पांच करोड़ रुपया कमाने का विकल्प भी तो मुझे नहीं सूझ रहा।'' उसने धीमे से कहा, ''पांच करोड़ रुपया दो वर्ष में एकत्र करने का सपना भी मैंने कभी नहीं देखा था।''

''बेटे मेरी एक बात याद रखना कि जागी आंखों से देखे हुए ख्वाब अवश्य पूरे होते हैं। अपने पिता के स्वप्न को तुमने स्वीकार किया था। इस कारण स्वप्न की पूर्ति के अवसर ईश्वर द्वारा अवश्य दिए जाएंगे। तुम्हें सिर्फ उन अवसरों को पहचानना होगा बेटे। लेकिन बड़े स्वप्न बड़ी कीमत और बड़ी कुर्बानी से ही प्राप्त

comicsmylife.blogspot.in

होते हैं।''

तब रोहन को लगा था कि मम्मी के उस कथन ने निराशा के अन्धेरे को तार-तार कर दिया है। उम्मीद का तेजस्वी सूर्य उसकी निराशा भरी रात में जैसे एकाएक दमक उठा। लेकिन सूर्य की प्रखर किरणों की उम्मीद से वह अपने स्वप्न को सफलता की रोशनी कैसे दे सकता है ? तब यही सोच रहा था रोहन।

लेकिन एक सच्चाई को उस वक्त वह नहीं जान पाया था कि आस्था और विश्वास की नींव पर परिश्रम का महल खड़ा करने वाले लोगों के साथ विधाता की शक्तियां भी कार्य करने लगती हैं।

❑❑

पायल पाराशर ने अपने शोध के विषय पर गहराई से मनन किया था। अमेरिका में संयुक्त परिवार के बिखराव और भारतवर्ष में संयुक्त परिवार और उनके रिश्तों की गहराई। यही उसके शोध का विषय था। एक सप्ताह पायल के साथ गुजारने के पश्चात रोहन ने महसूस किया था कि मासूम दिखने वाली वह युवती उस समुद्र की तरह थी। जिसकी योग्यता की गहराई का अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता था।

आज भी वह दीनानाथ मल्होत्रा की कोठी पर सुबह के ठीक आठ बजे पहुंच गया था। बाहर कोठी के लॉन में ही पायल मौजूद थी और उसने जो वस्त्र पहन रखे थे। वह बता रहे थे कि पायल दिल्ली भ्रमण के लिए बिल्कुल तैयार ही बैठी है।

''शुभ प्रभात मिस्टर शर्मा।'' पायल ने कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा।

''शुभ प्रभात! कैसी हो तुम पायल ?'' उसने बैठने के पश्चात औपचारिक रूप से पूछा।

''मैं ठीक हूं। लेकिन पिछली रात को मैं ढंग से नींद नहीं ले पाई थी।'' उसने मित्रवत अन्दाज में कहा, ''तुम क्या सोचते हो रोहन ? मैंने शोध का जो विषय चुना है, उसमें मैं कामयाब हो सकूंगी ?''

''दिमाग को सिर्फ खुली आंखों की जरूरत होती है। शोध के विषय का जोड़, बाकी, गुणा और भाग तब तुम स्वयं कर सकोगी।''

''शोध का विषय तो मेरे पास है। उसके जोड़, बाकी, गुणा और भाग ही तो समझ नहीं आ रहे।''

''रिश्तों की गणित के बारे में तुम क्या समझती हो पायल! तुम्हें बुरा तो अवश्य लगेगा। लेकिन इस कठिन विषय को तुमने चुना अवश्य है। लेकिन इसके साथ तुम इंसाफ कर सकोगी। इसमें मुझे सन्देह है।''

''चैलेंज कर रहे हो ?'' पायल चौंकी। अपनी स्वप्निल आंखों को उसने रोहन के चेहरे पर गड़ा दिया। गोया उसके चेहरे से इस बात का अनुमान लगाना चाहती थी कि क्या वाकई रोहन ने संजीदगी के साथ कहा था। पायल की चौकस निगाह का अर्थ बखूबी पढ़ा रोहन ने भी।

वह मुस्करा कर बोला, ''पायल, योग्यता उम्र की मोहताज नहीं हुआ करती। लेकिन रिश्तों का सच समझने के लिए कोई भी योग्यता पूर्ण नहीं। उसका अनुभव किया जा सकता है। लेकिन एक शोध-लेखिका के बतौर इस विषय को तुम कभी भी स्पष्ट नहीं कर सकोगी। मैं तुम्हें निराश नहीं करना चाहता हूं। न ही मैं तुम्हारी योग्यता पर सन्देह कर रहा हूं। लेकिन समुद्र को तैर कर पार करना या फिर सूर्य पर कदम रखने की इच्छा रखना—इन दो असम्भव कार्यों की तरह से ही तुम्हारा विषय है।''

''क्या परेशानी है इस विषय में ?'' पायल ने रोष भरे स्वर में पूछा, ''फिर तुम्हारी इस टिप्पणी को मैं स्वीकार करूं भी तो क्यों ? मैं पता कर चुकी हूं कि तुम्हारी हैसियत अंकल के दैनिक समाचार पत्र में सहायक उप-सम्पादक की है। जाहिर है कि तुम ऐसे इंसान हो रोहन, जिसने खबरों की दुनिया में रहते हुए मसालेदार खबरों को चुनना है। इस कारण तुम एक आलोचक की दृष्टि रखते हो। लेकिन मुझे तुम्हारी राय नहीं चाहिए। क्योंकि मैंने अपने कार्य को किस प्रकार करना है—यह मैं जानती हूं।''

''यदि वाकई ऐसा है तो मुझे हार्दिक खुशी हुई सुनकर। इंसान का आत्मविश्वास हिमालय की तरह बुलन्द और समुद्र के तल जितना गहरा और रहस्यमय होना चाहिए।''

''एक सप्ताह की मुलाकात में किसी के व्यक्तित्व को समझना आसान नहीं होगा।'' उसने सपाट अन्दाज में कहा, ''रिश्तों की दुनिया इसी संसार की चीज है। उसका अध्ययन

comicsmylife.blogspot.in

करना मुश्किल सही, असम्भव नहीं।''

''ईश्वर करे कि आप वाकई अपने मकसद में कामयाब हों। मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं।''

''धन्यवाद, लेकिन मैं चाहूंगी कि मेरे विषय को लेकर आपके दिमाग में जो सन्देह हैं, उन्हें तुम स्पष्ट करो रोहन। क्यों लगता है तुम्हें कि मैं अपने शोध विषय के साथ इंसाफ नहीं कर सकूंगी ?''

''क्योंकि मैंने एक असम्भव बात को सम्भव होते देखा है। इस कारण रिश्तों की जटिलता को शब्दों की सीमा में बांध पाना सम्भव नहीं। सिर्फ पारिवारिक रिश्ते ही तुम्हारी शोध का विषय है। यदि मित्रता, शत्रुता, घृणा, द्वेष, गुरु-शिष्य और वासना पर आधारित रिश्ते तुम्हारी शोध में अन्य विषय होते तो तुम्हें कई जन्मों की आवश्यकता होती मिस पायल। खैर, आज का क्या प्रोग्राम है ?''

''वह भी बता दूंगी। लेकिन इसके पेश्तर मैं यह जानना चाहती हूं रोहन की तुम्हारी निजी जिन्दगी में ऐसी कौन सी घटना घटी है, जिसके कारण तुम्हारे लिए पारिवारिक रिश्तों की जटिलता को समझ पाना असम्भव हो गया है ?''

''क्या यह बताना जरूरी है ?''

''यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास है तो बेशक बता सकते हो। वैसे मैं वचन देती हूं कि यह बात मेरे कानों से सुनी अवश्य जाएगी लेकिन मुख के द्वारा रहस्य ही रखी जाएगी।'' उसने ठोस स्वर में कहा।

वह सोच में पड़ गया। जाहिर था कि वह अपने पापा के विषय में ही कहना चाहता था। लेकिन कुछ सोच कर उसने निर्णय किया कि वह अपने पिता का नाम उजागर किए बिना ही उस रहस्यमय सच्चाई का रहस्योद्घाटन करेगा।

''पायल, मेरा एक मित्र है। अपने माता-पिता की वह इकलौती संतान है। उसके पिता परिवार के प्रति पूर्ण समर्पित रहे हैं। मुझे ही क्या उनके हर परिचित को इस बात का यकीन था कि अपने पुत्र और पत्नी को जान से ज्यादा प्यार करने वाले शख्स को सिर्फ मौत ही जुदा कर सकती थी। जाहिर था कि यह ख्याल आम इंसान का था तो उनके पुत्र और पत्नी को भी यकीन था कि

वह इंसान पति और पिता के रूप में पूरी जिन्दगी परिवार के साथ गुजारने वाला है। मैंने उनके विश्वास को खण्डित होते देखा है।'' उसने अपनी भावुकता पर काबू पाते हुए कहा, ''परिवार और दुनिया के विश्वास की चिता पर कदमों के निशान अंकित करते हुए उस पिता ने रिश्तों को झोंक कर स्वयं के लिए अज्ञात स्थान चुन लिया। इस सच को मैंने घटते देखा है।''

''कमाल है। इस मामूली घटना को तुम इतना महत्व दे रहे हो रोहन! पलायन का कोई भी कारण हो सकता है। कोई पढ़ाई, स्त्री, परिवार से मोहभंग हो जाने की कोई घटना या फिर ईश्वर की आराधना के लिए गृहत्याग।''

''नहीं, पलायन करने वाले शख्स ने यह वायदा भी किया था कि एक शर्त पूर्ण होने पर वह वापिस आएगा।''

''कैसी शर्त ?''

''उसने अपने पुत्र को कहा था कि वह दो वर्ष में पांच करोड़ रुपया एकत्र कर पाया, तभी परिवार में उसकी वापसी मुमकिन हो पाएगी। जबकि उस व्यक्ति का बेटा निम्न मध्यमवर्गीय परिवार का युवक है। जिसने करोड़पति बनने के बारे में भी कभी नहीं सोचा है। यह सोच उसके लिए असम्भव थी।''

''स्ट्रेंज...वैरी स्ट्रेंज!'' उसने विस्फारित नेत्रों के साथ कहा, ''यह तो वाकई हैरत में डालने वाली घटना है। कहीं ऐसा तो नहीं कि वह व्यक्ति भारी रकम का कर्जाई हो और कर्जदारों से तंग आकर भाग....''

''नहीं।'' उसने पायल की बात काटी, ''वह शख्स न तो शराब का सेवन करता था न ही उस व्यक्ति को सट्टेबाजी का शौक रहा—न ही उस व्यक्ति को समाज सेवा करने का नशा था—न ही वासना उसकी कमजोरी थी। यहां तक कि रुपयों को भी उसने कभी महत्व नहीं दिया। वह व्यक्ति श्रीकृष्ण के 'गीता-सार' को अपनी व्यावहारिक जिन्दगी का हिस्सा बना चुका था। जिसने सादा पहना और सादा ही खाया था। वह शख्स बेटे के सामने अपनी वापसी की शर्त पांच करोड़ रुपया रखकर चला गया। उसने पुत्र और पत्नी को भी नहीं बताया कि उन पांच करोड़ रुपयों से वह क्या करने वाला था ?''

''एक व्यक्ति जो परिवार से अलग होने की कल्पना भी नहीं

comicsmylife.blogspot.in

कर सकता था। एकाएक वह पत्नी और पुत्र को बता कर अज्ञातवास पर चला जाता है, साथ ही वापसी के लिए पांच करोड़ रुपयों की शर्त बता कर।'' उसने मंत्रमुग्ध अन्दाज में कहा, ''यूं लगता है जैसे किसी उपन्यास का रहस्यमय चेप्टर पढ़ा जा रहा हो!''

''तो रिश्ते का एक चेहरा यह भी है। इसी कारण मैंने कहा था कि रिश्तों की तह तक पहुंच पाना आसान नहीं होता है मिस पायल।''

''मैं उस परिवार से मिलना चाहूंगी रोहन।''

''सॉरी, मेरे मित्र को यह पसंद नहीं आएगा कि मैंने इस बात की चर्चा तुमसे की है।''

''ओह! फिर तो रहने दो रोहन। वैसे तुम्हारे मित्र के पिता क्या करते थे?''

''वह मां सरस्वती की पूजा करते थे।''

''क...क्या?''

''वह एक लेखक थे। उनकी सैकड़ों पुस्तकें भी प्रकाशित हुई हैं।''

''एक लेखक ही अपने पुत्र के सामने ऐसी शर्त रख सकता था। मैं उस परिवार के बारे में जानने को बेताब हूं रोहन। मैं उस लेखक की पुस्तकों का भी अध्ययन करना चाहूंगी।''

''अपने मित्र से पूछ कर ही बता सकूंगा पायल। उसने यदि इंकार कर दिया तो फिर इस बारे में तुम्हें अपनी जिज्ञासा को एक मामूली स्वप्न समझ कर भूला देना होगा।'' सपाट स्वर था रोहन का, ''मैं लेखक का नाम भी नहीं बता सकूंगा। क्योंकि लेखक पिता का नाम जानने के पश्चात उस परिवार को जान लेना तुम्हारे लिए पलक झपकने के कार्य की तरह से आसान हो जाएगा।''

''अपने मित्र से मेरा जिक्र करना। मेरी शोध का भी जिक्र करना। शायद वह मान जाए।'' पायल ने अनुनयपूर्ण नेत्रों से देखते हुए कहा।

''मुमकिन नहीं लगता।''

तब पायल सोच में डूब गई। रोहन ने उसे सोचते देख कर खामोश रहना बेहतर समझा।

''रोहन, तुमने मेरे सम्मुख एक ऐसा द्वार खोल दिया है

जिसके अन्दर प्रविष्ट होना मेरे लिए तय है। मैं तुम्हारे मित्र के मुख से यह रहस्य अवश्य ही सुनूंगी। यह भी वायदा रहा तुमसे। मैं उस द्वार के अन्दर प्रवष्टि होकर रहूंगी।''

''मेरे मित्र की मंजूरी पर ही ऐसा सम्भव है। वरना किसी भी सूरत में नहीं।''

''मंजूरी की सूरत पैदा करने का आर्ट मुझे आता है मिस्टर रोहन। वैसे तुम्हारे मित्र का नाम क्या है?'' गम्भीर—बेहद गम्भीर थी तब पायल।

''मैं नहीं बता सकता।'' रोहन ने उससे ज्यादा गम्भीर होकर कहा।

''तो गोया मेरे गाइड नाममात्र के ही हो!'' कहने के बाद उसने ठण्डी सांस भरी।

''मैं पहले उसका मित्र हूं। गाइड तो बाद में बना हूं। इस कारण मेरी पहली निष्ठा उसके साथ है।''

''ठीक है, तुम अपने मित्र से चर्चा करना। यदि उसका जवाब 'हां' में हो तो ठीक है।'' उसने उठते हुए कहा, ''मैं उससे स्वयं बात कर लूंगी। अभी तो मैं उन झुग्गी-झोंपड़ियों में जाना चाहती हूं, जो रेलवे ट्रेक के साथ बनी हुई हैं। मैं गरीब की झोंपड़ी के भीतर झांककर यह देखना चाहती हूं कि गरीबी के कारण परिवार या रिश्ता किस हद तक प्रभावित होता है।''

''कैसे जानोगी यह सब?'' रोहन चौंका था इस बार।

''वह तुम स्वयं ही देख लोगे।''

रोहन उसे आश्चर्य से घूरता हुआ उठ खड़ा हुआ। वह महसूस कर रहा था कि उसने पायल को समझने में थोड़ी भूल की है। वह असाधारण व्यक्तियों के वर्ग में से एक थी। जिसे वह साधारण लड़की समझने की भूल कर बैठा है।

❑❑

सराय रोहिल्ला दिल्ली स्टेशन से लगती हुई झोंपड़-पट्टियों की रोहन को जानकारी थी। वह जानता था कि जीवन के मोह में बंधे हजारों लोग वहां जीवित नर्क को भोग रहे हैं। गरीबी की उस कोढ़ का उसने बारीकी से मुआयना किया था। हर इंसान से अपेक्षा रखी जा सकती है कि वह किस स्थिति में कैसे व्यवहार करेगा। लेकिन गरीबी की जोंक के हवाले हुए व्यक्ति

comicsmylife.blogspot.in

का व्यवहार इतना अप्रत्याशित होता है कि वह कुछ भी कर सकता है। क्योंकि मर्यादा के हर बंधन से वह आजाद होता है।

तब रोहन को ख्याल आया था कि वह उत्तर प्रदेश से आए हुए रमजान खान से पायल को मिलाए। रमजान खान अखबार के दफ्तर में नाइट वॉचमैन का काम करता था। इस कारण पूरी सम्भावना यही थी कि रमजान खान स्लम एरिये की अपनी झोंपड़ी में अवश्य ही मिल जाएगा।

उसका ख्याल गलत भी नहीं निकला। वह झोंपड़ी के बाहर फोल्डिंग चारपाई पर घोड़े बेच कर सो रहा था। रोहन ने जब उसे जगाया तो उसे यकीन ही नहीं आया कि वह अखबार के सहायक उप-सम्पादक रोहन और एक अप्सरा समान लड़की को देख रहा है। रमजान खान ने स्वयं को चिकौटी काटी। पीड़ा की लहर ने उसे इस बात का यकीन दिलाया कि वह ख्वाब नहीं बल्कि हकीकत देख रहा है।

''स...साब आप यहां! आदेश दिया होता तो मैं स्वयं ही मौजूद हो जाता।'' उसने लुंगी ठीक करते हुए कहा।

''यह मोहतरमा मालिक के मित्र की बेटी हैं और भतीजी के समान है। यह तुमसे कछ जानकारी चाहती हैं। इनकी जिद्द थी कि यह स्वयं रिहायश पर पहुंचे।''

''रिहायश!'' उसने ठण्डी सांस भरी, ''यदि मेरी यह झोंपड़ी रिहायश है, तो आपका स्वागत है साब। मोहतरमा मुझसे क्या पूछना चाहती हैं ?''

''मैं जो कुछ भी पूछना चाहती हूं। वह तुम्हारे परिवार के बीच पहुंच कर ही पूछना चाहती हूं।'' पायल ने मृदुल स्वर में कहा।

तब रमजान खान ने सकपका कर अपनी झुग्गी की ओर देखा था। वह झुग्गी जो ईंटों पर गारा लगा कर खड़ी की गई थी और छत के नाम पर कुछ बांस थे और उन बांसों पर ही प्लास्टिक शीट डाल दी गई थी ताकि अन्दर छाया रहे और बारिश से भी बचाव हो सके।

रमजान खान पैंतालीस वर्ष के आस-पास की उम्र लिए था। लेकिन जिन्दगी के थपेड़ों की कशमकश में उलझे होने के कारण वह पचपन वर्ष का नजर आता था।

''रमजान भाई, मैं तुम्हारी मुश्किल समझता हूं। लेकिन यह मोहतरमा जो चाहती हैं उसके लिए सहयोग करो।'' रोहन ने मित्रवत अन्दाज में उसकी मुश्किल हल करने का प्रयास किया।

''जी साब, मैं बर्मे पर हाथ-मुंह धोकर आता हूं। आप मोहतरमा को झोंपड़ी में ले जाएं।''

फिर उसने झोंपड़ी की ओर मुंह करके आवाज लगाई थी, ''जुबैदा, अरी ओ जुबैदा! मेहमान आए हैं, इन्हें अन्दर बिठा।''

तब एक कृशकाय नारी आकृति बाहर आई। वही जुबैदा थी। उसने आश्चर्य के साथ अपने शौहर के पास मौजूद लोगों को देखा।

आधे घण्टे पश्चात ही रमजान खान ने आना था। इस कारण झुग्गी में प्रविष्ठ होने के पश्चात वह दोनों फोल्डिंग कुर्सियों पर सम्भल कर बैठ गए! क्योंकि कुर्सियों के पाए कुछ ढीले थे। जुबैदा वहीं जमीन पर बैठ गई थी। जबकि चार बच्चे कौतुक भरी दृष्टि से आगंतुकों को देख रहे थे।

चार बच्चों में तीन लड़के थे और एक लड़की थी। उनकी उम्र क्रमश: चौदह, बारह, ग्यारह और आठ वर्ष की थी।

''खालाजान (मौसी)मैं आपसे कुछ सवाल करना चाहती हूं। उम्मीद है कि आप सही जवाब देंगी। पायल ने सकुचाई हुई नारी आकृति को सम्बोधित किया।

''मैं अनपढ़ गंवार मैं आपके सवालों के भला क्या जवाब दे सकती हूं।''

''खालाजान, मेरे सवाल बहुत मामूली हैं। आप इत्मीनान रखें, मैं आपसे वही सवाल करूंगी जो घर-परिवार से सम्बंधित होते हैं।''

''जी, क्या पूछना चाहती हैं आप ?''

''इस जीवन से आप कहां तक सुखी हैं खालाजान ?''

''यह दोजख है जिसमें पिछले जन्म के पापों की अधूरी सजा हमें भोगनी पड़ रही है। अल्लाहताला से यही गुजारिश करती हूं, बेटी कि वह तमाम सजा इस जिन्दगी में ही दे दे—ताकि मेरे अगले जन्म पर उन पापों की परछाईं भी बाकी न रहे।''

''लेकिन पूर्व जन्म के पाप क्या आपको याद हैं ?'' पायल ने सादगी से पूछा।

comicsmylife.blogspot.in

"नहीं, किसे याद रहते हैं बेटी।" उसने फिर गहरी सांस भरी थी, "लेकिन इस जन्म की नेकी-बदी का हिसाब अवश्य रख रही हूं।"

"शादी से पहले आप कहां रहती थीं खालाजान?"

"तब जमनापार की एक झुग्गी में रहती थी। मेरे वालिद रिक्शा चलाते थे। उन्होंने ही यह रिश्ता तय किया था।"

"क्या आपको नहीं लगता कि आपके खाविंद द्वारा आपको अच्छे जीवनयापन के अवसर मुहैया नहीं किए जा रहे हैं?" उसने सावधानी से पूछा। गोया उसे डर था कि गरीब का आत्मसम्मान उस सवाल से घायल होकर भड़क न उठे। गरीब की पूंजी उसका स्वाभिमान होती है। इस कारण वह उस पर आंच नहीं आने देता। जबकि दौलतमंद का स्वाभिमान या अहंकार उसकी दौलत होती है। वह उस पर चोट बर्दाश्त नहीं करता।

"एक मुस्लिम नारी के लिए उसका शौहर ही अल्लाह का दूसरा नाम होता है बेटी। शौहर की गरीबी से तंग आकर पवित्र रिश्तों को न निभाया जाए तो किसी गरीब युवती को पति का सुख प्राप्त नहीं हो सकता। मेरे शौहर की किस्मत में जो लिखा है। उसे तो मैंने स्वीकार करना ही है बेटी।"

"क्या इच्छा नहीं होती कि आप अच्छे माहौल में रहें, जहां आपके बच्चों की परवरिश बेहतर ढंग से हो सके?"

"जिस तरह हर इंसान की एक मुकर्रर उम्र होती है। वैसे ही गरीब की चाहतों की भी तयशुदा उम्र होती है। उस उम्र के निकलने के बाद वह स्थिति के हवाले हो जाती है और चाहतों को भाग्य और अल्लाह के नाम कर देती है। मैंने भी सोच लिया है कि इस जीवन में संतोष ढूंढ़ लिया जाए। जिन्दगी का एक कठोर सत्य यह भी है बेटी कि संतान के जन्म लेने के पश्चात मां-बाप की चाहतों का दायरा संतान की खुशी तक ही सिमट कर रह जाता है।"

"क्या कभी अफसोस नहीं हुआ कि चार बच्चे पैदा करके आपने अपनी दुश्वारियों को बढ़ाया है।" उसने हिचकिचाते हुए पूछा।

इस जवाब पर प्रौढ़ा के चेहरे पर लज्जा के भाव दमके। उसने

सिर झुका कर कहा, "पति की चाहत के सामने स्त्री को सिर झुकाना पड़ता है बेटी। तुम्हारी शादी नहीं हुई। इस कारण तुम यह बात अनुभव नहीं कर सकोगी कि गरीब भी गृहस्थ जीवन का आनन्द बिस्तर पर ही लेते हैं। वह आनन्द जो रईसजादों को प्राप्त होता है। वही आनन्द गरीब को भी प्राप्त होता है। शारीरिक सुख के बाद मातृत्व का दायित्व उठाना ही होता है। लेकिन हमारे मजहब में संतान को अल्लाह का उपहार माना जाता है। इस कारण गरीबी की जिन्दगी जीते हुए भी गर्भ गिराने की बात हम नहीं सोच सकते।"

"खालाजान इन चारों बच्चों के भविष्य के बारे में क्या सोचती हैं आप?"

"यह सोचना अल्लाह का काम है। चोंच दी है तो चुग्गा भी वही देगा।"

"क्या आपको नहीं लगता कि दोजख की जिन्दगी में बच्चों को हिस्सेदार बना कर आपने गलती की है?"

"नाली का कीड़ा नाली में ही अण्डे देता है। समुद्र की मछली समुद्र में। फिर अफसोस किस बात का?"

"क्या बच्चे स्कूल जाते हैं?"

"नहीं। स्कूल की फीस, किताबें और वर्दी का खर्चा कहां से आएगा। हां, अकबर को पांच जमात तक अवश्य ही पढ़ाया है। फिर शाहजहां और जहांगीर का जन्म हुआ तो अकबर का स्कूल बन्द हो गया।"

"ऐसा क्यों?"

"अकबर का स्कूल बन्द करने से ही शाहजहां और जहांगीर की परवरिश हो सकती थी बेटी।"

"अपनी बेटी का क्या भविष्य सोचा है?"

"बेटी, तुम्हारा हर सवाल एक तीर की तरह से मेरे हृदय को छलनी कर रहा है। आखिर इन सवालों का मकसद क्या है, सबब क्या है? क्यों तुम वह नश्तर चला रही हो, जो खुद तुम्हें भी तकलीफ दे रहे होंगे—क्योंकि तुम स्वयं भी नारी हो।"

"बिना किसी उद्देश्य के कौन किसी को चोट पहुंचाता है खालाजान। अल्लाह का बनाया हुआ बन्दा मजबूरी के रू-ब-रू होकर ही गुनाह करता है। मेरे सवाल भी गुनाह के समान हैं।

comicsmylife.blogspot.in

लेकिन इन सवालों के जवाब जानना मेरे लिए आवश्यक है।''

''खालाजान, पायल ठीक कह रही है। सवालों के नश्तर पर दोतरफा धार है। सवाल करने वाला भी घायल हो रहा है। लेकिन नश्तर का प्रयोग मजबूरी में ही किया जाता है। इसकी मजबूरी यह है कि नश्तर चलाए बिना इन्हें ऊंची तालीम हासिल नहीं होगी।'' उसने हस्तक्षेप करके समझाना चाहा।

''ऐसी तालीम का क्या फायदा जिसकी बुनियाद मजबूरों के खून से तैयार की गई हो। ऐसी तालीम से तो मेरे अनपढ़ बच्चे ही अच्छे हैं रोहन बेटे।''

''खालाजान दीपक की बाती स्वयं जलकर दूसरों को रोशनी देती है। इसी प्रकार तालीम की रोशनी फैलाने के लिए जलना भी पड़ता है और जलाना भी पड़ता है। कुरान शरीफ जैसा पाक ग्रंथ उस वक्त लिखा गया था खालाजान—जब हमारी मां समान इस पृथ्वी पर पर्याप्त मात्रा में भोजन-पानी था—जिससे मां के हर बच्चे की भूख-प्यास मिट जाती थी। लेकिन वही हाथ आज अगर कुरान शरीफ लिखते तो उनमें काफी अन्तर हो जाना था। चार शादी और हर बच्चा खुदा की मेहर न माने गए होते। बेशक कुरान शरीफ में परिवर्तन नहीं आएगा। लेकिन आज की शिक्षा का उजाला आज के युग की मर्यादा को पूरा करने वाला बन सकता है।''

तभी रमजान खान झुग्गी में प्रविष्ट हुआ। वह नित्य क्रियाओं से फारिग होकर कुर्ता पायजामा पहन चुका था। वह आकर अपनी पत्नी के करीब ही चटाई पर बैठ गया। जबकि चारों बच्चे रहस्य भरी दृष्टि से रोहन और पायल को देख रहे थे। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि उनकी समझ में वार्तालाप के वृक्ष का एक पत्ता भी नसीब नहीं हुआ था।

''अब मैं आपसे कुछ सवाल करना चाहती हूं।'' उसने रमजान खान को सम्बोधित किया।

''बेशक-बेशक।''

''क्या आपको इन चारों बच्चों के भविष्य की कोई चिन्ता है खान साहब?''

''इनकी चिन्ता अल्लाह को होनी चाहिए।'' उसने आहत स्वर में कहा, ''एक बाप जितनी चिन्ता कर सकता है। उतनी

चिन्ता...नहीं-नहीं, उससे कई गुना ज्यादा चिन्ता मैं कर चुका हूं। लेकिन चिन्ता करने से ही तो समस्या का माकूल हल नहीं निकलता बेटी। जो जिस जमीं से उठा है—उसी जमीं पर उसे गिरना भी है। कोई शाह बनकर गिरता है और कोई फकीर बनकर।''

''मैं आपकी समस्या को चुटकी बजाते हल कर सकती हूं खान साहब। लेकिन बदले में आपको भी कुछ देना होगा।'' पायल ने रहस्य भरे स्वर में कहा।

खान दम्पति के अलावा तब रोहन ने भी हैरान नजरों से पायल को देखा था। वह भला उनकी समस्याओं को किस प्रकार हल कर सकती थी।

''अंधे से पूछा नहीं जाता बेटी कि उसे आंखें चाहिए या नहीं!'' प्रौढ़ा ने हसरत भरी दृष्टि के साथ देखते हुए कहा, ''नेकी के लिए पूछा नहीं जाता और बदी को टाल दिया जाना चाहिए बेटी।''

''बेशक! लेकिन हर चीज की एक कीमत होती है। मैं भी आपसे एक कीमत मांगूगी और बदले में आप सभी को एक पक्का फ्लैट और लाख रुपया अलग से दूंगी।''

''यदि यह मजाक है पायल तो इस बेहूदा मजाक के लिए तुम्हें इसी वक्त माफी मांग लेनी चाहिए।'' रोहन ने रोष भरे अन्दाज में कहा।

''यदि तुमने मेरी संजीदा बात को मजाक समझा है तो मैं यही कहूंगी कि तुमने मुझे बहुत घटिया दर्जे की युवती समझा है रोहन। इसके लिए तुम्हें क्षमा मांगनी चाहिए।''

''यदि वाकई ऐसा है, तो सॉरी।''

''सॉरी, डजन्ट मेक ए डैडमैन अलाइव!''

''मैं जानता हूं। लेकिन मैंने जो कुछ कहा था वह खान परिवार की भावनाओं को नजर में रखकर कहा था।'' उसने तुरंत सफाई दी।

''एक बात का ध्यान रखो रोहन कि तुम इण्डिया में मेरे गाइड हो। मेरी किसी बात में तुमने दखल नहीं देना है। क्योंकि अपनी मंजिल तक पहुंचने के लिए मुझे स्वयं ही मार्ग चुनना है।'' सपाट स्वर था उसका—यह वार्तालाप उन्होंने इंग्लिश में किया

comicsmylife.blogspot.in

था। भाषा की शक्ति राजपोशी का पर्दा भी बन सकती है। रोहन ने यह बात तब शिद्धत से महसूस की थी।

''मैं ध्यान रखूंगा।''

''खान साहब, मैं आपको दिल्ली में तीन कमरों का एक फ्लैट और एक लाख रुपया नगद दे सकती हूं। लेकिन उसके बदले में आपको एक चीज देनी पड़ेगी।'' उसने पुनः प्रौढ़ व्यक्ति को सम्बोधित किया।

''हमारे पास ऐसी कोई चीज नहीं है जिसकी कीमत हजार रुपए भी हो। तुम गलत सौदा करने जा रही हो बेटी।'' रमजान खान फिर ठहाका लगा कर हंस पड़ा था।

''यह हंसने की बात नहीं है खान साहब।'' उसने बैग खोलकर पांच सौ के नोटों की दो गड्डियां टूटे स्टूल पर रख दीं, ''आप यह रुपया रख सकते हैं। तीन कमरों का फ्लैट आप आज इसी वक्त चल कर खरीद सकते हैं। उसका रुपया भी मैं दूंगी।''

''बदले में तुम क्या चाहती हो ?'' गम्भीर हो गया परिवार का खेवनहार।

''आपके चार बच्चों में से एक को रखना चाहूंगी। आप किस बच्चे को दोगे ? इसका निर्णय भी आप पर ही छोड़ती हूं। खुदा ने आपको चार फूल से बच्चे दिए हैं। कुछ बदनसीबों को तो एक संतान भी मयस्सर नहीं होती।''

''य...यह तुमने क्या मांग लिया बेटी ! एक माली को अपने सभी पौधे प्यारे होते हैं।''

''माली कुछ पौधों को लगाता है। लेकिन कुछ पौधे उसके अधिकार क्षेत्र की जमीन पर ऐसे भी पैदा होते हैं, जो अनायास ही उग जाते हैं। उन पौधों को खर-पतवार का नाम देकर माली उखाड़ फेंकता है। इसी प्रकार इंसान की जिन्दगी में भी एक हादसा होता है। दो-तीन संतान के बाद वह और संतान नहीं चाहता। लेकिन पूरा ध्यान रखने के बाद भी अल्लाह की मर्जी को बदल पाना सम्भव नहीं होता। आप अपने दिल पर हाथ रखकर बताइए खान साहब कि आपने कितनी संतानों के बाद यह चाहा कि अब और संतान न हो ?''

''द...दूसरी संतान के पश्चात !'' उसने हड़बड़ा कर कहा। जाहिर था कि उस सच्चाई को उसने बौखलाहट में ही कुबूल

किया था।

''यानी तीसरी और चौथी संतान ने अनायास ही जन्म लिया। वैसे ही, जैसे इंसान की जिन्दगी में कोई दुर्घटना घट जाती है।''

''लेकिन दुर्घटना जब दिल में पलने लगती है तो फिर अच्छी घटना और बुरी घटना में कोई फर्क नहीं रह जाता है बेटी। आज यह चारों ही बच्चे मुझे प्रिय हैं। मैं किसी को भी खर-पतवार का नाम देकर गृहस्थी की बगिया से बेदखल नहीं कर सकता।''

''कोई जोर-जबर्दस्ती नहीं है खान साहब। फिर भी मैं यह बता देना चाहती हूं कि आप यदि किसी संतान को मेरे हवाले करते हैं तो मैं उसका पूरा ख्याल रखूंगी। उसे वह सब मिलेगा, जो आप भी नहीं दे सकते।''

''नहीं, मैं अपने किसी भी बच्चे को अपनी समृद्धि के नाम पर नीलाम नहीं कर सकती।'' जुबैदा तब चारों बच्चों के निकट हो गई थी। जैसे कोई पक्षी अपने बच्चों को पंखों की शरण में लेता है।

''इस वक्त आप भावुक हैं। आप यह नहीं समझ पा रही हैं खालाजान कि आपके बच्चे पिता की कमाई पर आश्रित हैं। दिल्ली में लाखों व्यक्ति सुबह घर से काम के लिए रवाना होते हैं। लेकिन ऐसा एक भी दिन नहीं गुजरता है जिस दिन वह सभी व्यक्ति घर पहुंचे हों। दिल्ली का ट्रैफिक आए दिन किसी न किसी की बलि लेता है। इन झुग्गियों में बच्चों के साथ-साथ वह बीमारियां भी पल रही हैं, जो आए दिन किसी न किसी झुग्गी में मातम की चीखें गूंजा देती है। एक बच्चे को देने से आप अपने तीन बच्चों को महफूज स्थान दे सकती हैं खालाजान।''

इस बात का असर हुआ।

शौहर और बीवी ने एक-दूसरे को टटोलने वाली दृष्टि से देखा फिर झुग्गी में पसरी हुई मौत तथा अभाव की परछाईं को सीलन के रूप में महसूस किया। सीलन की वह कंपकंपी जो दोनों के मेरूदण्ड में सिहरन पैदा कर गई थी। फिर उन मासूम बच्चों की ओर देखा, जो माकूल परवरिश से वंचित थे।

''अब भी सोच रहे हैं आप ? शायद आप उस चिड़िया के बच्चे की कल्पना नहीं कर पा रहे हैं, जिसे उड़ना आने के बाद चिड़िया स्वयं ही घौंसले से निकाल देती है। चिड़िया जानती है

comicsmylife.blogspot.in

कि घोंसले के बाहर असुरक्षित दुनिया है। इसके बावजूद भी वह ऐसा करती है। क्योंकि वह जिन्दगी भर उसे बच्चा नहीं बनाए रखना चाहती। ईश्वर ने चिड़िया से ज्यादा दिमाग आपको दिया है।''

''हां—दिया है। लेकिन ज्यादा दिमाग में ज्यादा मोह-ममता भी दी है। अपने जिगर के टुकड़े को रुपए और सुविधाओं के लिए नहीं बेचा जाता।''

''मैं आपके जिगर के टुकड़े को खरीद नहीं रही। मैं उसे गुलाम बनाकर नहीं रखना चाहती हूं। मैं अविवाहित हूं। इस कारण यह भी नहीं है कि आपके बच्चे को मैंने गोद ले लेना है। मैं सिर्फ एक प्रयोग कर रही हूं। निन्यानवें प्रतिशत सम्भावना इसी बात की है कि आपका बच्चा आपको वापिस मिल जाएगा।''

''यदि इतनी बड़ी गारन्टी के साथ बच्चे को वापस ही करना है तो फिर उसका सौदा क्यों?'' खान ने आश्चर्य पूर्वक पूछा।

''मैं बताना चाहता हूं कि...'' कहना चाहा था रोहन ने। लेकिन पायल के चेहरे पर रोष के भाव देख कर वह खामोश हो गया।

''कहिए न शर्मा साहब। आप चुप क्यों लगा गए? आप मेरे ज्यादा करीब हैं। आपकी बात को मैं ज्यादा आसानी के साथ समझ सकूंगा।''

''रोहन साहब कुछ नहीं कहेंगे। क्योंकि आपके लिए रोहन साहब की जो हैसियत है, वही हैसियत इनके लिए मेरी भी है। अखबार के ऑफिस का समय इन्हें मेरे लिए दिया गया है। मेरे आदेश की अवहेलना यह नहीं कर सकते हैं।''

''मोहतरमा मैं आपको जानता भी नहीं। फिर अपने बेटे को कैसे आपके हवाले कर सकता हूं।''

''वैसे ही जैसे मैं आपके हवाले फ्लैट और एक लाख रुपया करने वाली हूं।''

''शर्मा साहब क्या यह सच कह रही हैं?''

''हां, एकदम सच कह रही हैं। इनकी हैसियत ऐसी है कि यह आपको एक लाख रुपया देने के अलावा दिल्ली में तीन कमरों का फ्लैट भी दिलवा दें।'' उसने रोबोट की तरह से जवाब दिया।

''आपकी राय...''

''न मेरी राय है न कोई गारन्टी। न ही यह बेहूदा किस्म का मजाक है।''

''बेटी, तुम्हारे दिल में क्या है? तुम इस अनोखी शर्त से क्या हासिल करोगी?''

''जो मैं हासिल करूंगी। वह मैं जानती हूं। आप जो हासिल करेंगे, आप जानते हैं। गारन्टी यही है कि आपका बच्चा अच्छी परवरिश पाएगा और एक दिन आपके पास लौट भी आएगा।'' उसने ठोस स्वर में कहा।

''मैं मल्होत्रा साहब से बात करके फाइनल जवाब दूंगा। अपनी बीवी की राय भी लेना चाहूंगा।''

सहसा बड़ा बेटा अकबर बोल उठा, ''अब्बूजान आप मुझे इनके हवाले कर दीजिए। यदि मेरे तीनों बहन-भाई अम्मी और आपको अच्छी परवरिश मिलती है, तो इसे मैं अल्लाह का फजल समझूंगा।''

''अकबर! मेरे बच्चे। तुम मेरे सबसे बड़े बेटे हो। मेरी सारी उम्मीदें तुमसे हैं। हम दोनों ने सबसे ज्यादा प्यार भी तुम्हें किया है अकबर।''

''इस कारण आपने मेरे बहन-भाई को वह प्यार नहीं दिया जो इन्हें चाहिए था। मैं पांच जमात पढ़ गया। लेकिन इन्हें तो मदरसा देखना भी नसीब नहीं हुआ।''

''नहीं मेरे लाल। हम छः साथ ही रहेंगे। हम कभी भी नहीं बिछुड़ेंगे।'' जुबैदा का स्वर भर्रा उठा था।

''अब हम इजाजत चाहेंगे। मैंने प्रस्ताव रखना था। वह प्रस्ताव रख दिया। अब आप परसों तक जवाब दे सकते हैं। वरना मैं किसी अन्य परिवार से बात करूंगी।'' फिर अभिवादन की मुद्रा में हथेलियां जोड़ कर उसने फोल्डिंग कुर्सी को अपने भार से मुक्त कर दिया।

रोहन भी उठ खड़ा हुआ।

जबकि छः जनों का परिवार सम्मोहन के जाल में फंसा, उन्हें जाते हुए देख रहा था। रमजान खान को यह भी नहीं सूझा कि वह उन्हें झुग्गी के द्वार तक रुखसत करने के लिए जाए।

पूरा परिवार भौचक्का होकर रह गया था।

comicsmylife.blogspot.in

□□

मेन रोड पर आने के पश्चात् रोहन ने कार को अतिरिक्त गति दे दी थी। उसके जबड़ों में कसाव था। जाहिर था कि पायल के प्रस्ताव को उसने स्वीकृत नहीं किया था। अपनी प्रसन्नता का इजहार वह कार की तेज गति के द्वारा व्यक्त कर रहा था।

"क्रोध पर तुम्हारा हक हो सकता है। लेकिन जिंदगी पर सिर्फ मेरा हक है रोहन। कार की गति के द्वारा क्रोध क्यों ? जुबान से भी कह सकते हो।"

"जुबान से उतरे शब्द चुभ भी सकते हैं। मैं जानता हूं कि जुबान के कारण ही दुनिया में आधे फसाद होते हैं। आप मेरे मालिक की मेहमान हैं। इस कारण आपका सम्मान करना मेरा धर्म है। मुझे अधर्म करने पर विवश मत कीजिए। मैं अपने कर्तव्य का पालन कर रहा हूं।"

"यूं कार तेज चला कर कर्तव्य का पालन कर रहे हो ?" उसने मुस्कान बिखेरते हुए ही पूछा।

"कार तेज नहीं चल रही।"

"आज आठवें दिन मैं तुम्हारे साथ कार में हूं। सात दिन की स्पीड को सच मानूं या आज की स्पीड को ? सेफ एण्ड स्लो, रैश एण्ड फास्ट ड्राइविंग के बीच का अंतर न समझ पाने की उम्र तो मेरी रही नहीं। जिस बात पर क्रोध है, उसे शब्दों में व्यक्त करो। मैं तुमसे कतई भी नाराज नहीं हूं रोहन।" उसने पूर्ववत मुस्कान के साथ कहा।

"सच्ची बात मिस पायल ?" उसने आश्वस्त होना चाहा।

"हां।" उसने फिर मुस्कान का जादू बिखेरा।

"आपको मैं..."

"नाराजगी दूर करना चाहते हो तो 'आप' शब्द को गोली मारो। 'तुम' शब्द में अपनापन है।"

"देखो पायल, मैं मानता हूं कि तुम अपने डाक्टरेट विषय के लिए प्रेक्टिकल एक्सपेरीमेंट कर रही हो। लेकिन इस प्रकार के प्रयोग का एक ही रूप तुम देख रही हो। दूसरे रूप को नरजअंदाज कर देना चाहती हो।" उसने कार की गति को सत्तर से चालीस पचास के दरम्यान लाते हुए कहा।

"दूसरा रूप क्या है ?"

"खान परिवार वह दूसरा रूप है। उन गरीबों को एक लुभावना सपना देकर तुम अपनी डाक्टरेट के लिए कुछ पंक्तियां हासिल कर लोगी। लेकिन उनके जीवन में तो तूफान आ जाएगा। जो एक लाख रुपया तुम वहां छोड़ कर आई हो। वह रुपया मां-बाप के स्नेह की छाया को अजगर बनकर निगलना आरंभ कर देने वाला है।"

"तुमने आधा सच कहा है। पूरा सच यह है कि उन्हें मैंने फ्लैट का भी लालच दिया है। वह लालच बड़े अजगर के समान है।"

"क्या वाकई तुम ऐसा करोगी ?"

"क्या ?"

"एक बच्चा प्राप्त करने के लिए दस-बारह लाख रुपया खर्च करोगी ?"

"हां, मैं तब भी संजीदा थी और अब भी संजीदा हूं।"

"लेकिन बच्चे का तुम क्या करोगी ?"

"यह वक्त बताएगा। लेकिन इतना भरोसा रखो कि मैं उसकी परवरिश बेहतर ढंग से करूंगी।"

"वह बच्चा कहां पर रहेगा ?"

"सॉरी, मैं इसे सीक्रेट रखना चाहती हूं।"

"मुझसे भी !"

"हां। तुमसे भी। क्या तुम मुझसे सीक्रेट नहीं रख रहे हो रोहन ?"

"मैं...मैं क्या सीक्रेट रख रहा हूं ?" वह चौंका।

"अपने मित्र का नाम-पता। जिसके पिता पांच करोड़ की शर्त रख कर पलायन कर गए हैं।" उसने स्पष्ट किया।

"ओह ! वह सीक्रेट। लेकिन वह मेरा नहीं बल्कि मेरे दोस्त का सीक्रेट है।"

"एक ही बात है। मैं भी तुम्हारी मित्र हूं। तुम दो मित्रों में फर्क कर रहे हो।"

"मित्र वह होता है जिसके साथ बैठ कर सेर भर नमक खाया गया हो। इस कहावत के अनुसार तुम मेरी मित्र नहीं हो सकती।"

"फिर मैं भी तुम्हारी मित्र नहीं हो सकती। हम अपने-अपने

comicsmylife.blogspot.in

पत्ते गुप्त रख सकते हैं।''

''क्या तुम भारतीय रिश्तों को गरीबी और अभाव के तराजू पर तौल कर परखना चाहती हो ?'' उसने रुष्ट स्वर में पूछा।

''यूं ही मान लेने में हर्ज नहीं।''

''पूरे विश्व के सामने यह साबित करना चाहती हो कि भारतीय परिवार के रिश्ते इतने खोखले हैं कि अमीरी का हथौड़ा उसे चकनाचूर कर सकता है।''

''नहीं, मैं भारतवर्ष का अपमान नहीं करना चाहती। यह मेरे पिता की मातृभूमि है। मैं तो सिर्फ डाक्टरेट की उपाधि हासिल करने के लिए अपने विषय के साथ इंसाफ करना चाहती हूं। इंसान जब कुएं से एक बाल्टी पानी लाता है, तो देखने वाले लोगों की नजरों में उस पानी के अनेकों उपयोग चमक सकते हैं। लेकिन वास्तविक उद्देश्य तो पानी खींचने वाला शख्स ही जानता है।''

''तुम मेरे लिए पहेली बनती जा रही हो पायल।'' उसने फिर गहरी सांस भरी, ''यदि वाकई तुम दस-बारह लाख रुपए खर्च करने के मूड में हो, तो फिर तुम्हारी डाक्टरेट तुम्हें काफी महंगी पड़ने वाली है। बेहतर तो यह होगा कि तुम डाक्टरेट की डिग्री खरीद लो। यहां इण्डिया में डाक्टरेट की डिग्री आसानी से खरीदी जा सकती है। हर चीज बिकती है। कीमत लगाने वाला चाहिए।''

''तुम्हें क्या लगता है कि पायल नाम की उस लड़की की खोपड़ी में विधाता ने भेजा न रखने की भूल की है।''

''नहीं, जिनके पास भेजा होता है। वही खरीद-फरोख्त की बात कर सकते हैं।''

''फिर तो तुम्हारे मित्र के पिता के पास सबसे ज्यादा भेजा है। उन्होंने पांच करोड़ रुपयों की शर्त जो रखी थी।'' व्यंग्य का जवाब व्यंग्य से दिया गया था।

तिलमिला उठा रोहन। क्योंकि यह व्यंग्य उसके पिता पर किया गया था। दोस्त के पिता पर नहीं।

''बेहतर होता कि हम विषय को तब्दील कर दें।'' उसने क्रोध पर काबू पाते हुए कहा, ''भारतीयता की भावना के कारण मैं जोश खो बैठा था।''

''दैट्स ऑल राइट रोहन। मैं भी शर्मिन्दा हूं। मुझे भी क्रोध नहीं करना चाहिए था। वैसे भी जहां क्रोध की गुजर हो, वहां विवेक का गुजर नहीं होता।''

''यहां कब तक रहने का इरादा है ?'' उसने विषय बदलने का प्रयास किया।

''छः माह तक तो रहूंगी ही। उसके बाद सोचूंगी कि मेरी थिसिस (शोध) पूरी हो चुकी है अथवा नहीं। छः माह तो तुम्हें मुझे झेलना ही पड़ेगा।''

इस बात पर तब वह भी मुस्करा दिया था। दिलों का क्रोध और अनबन उस मुस्कान की भेंट चढ़ गए।

''क्या दिल्ली में कोई प्राइवेट डिटेक्टिव तुम्हारी निगाह में है, जिसका काफी नाम हो ?'' उसने पूछा।

''भागीरथ मदान नाम का एक डिटेक्टिव है। उसका ऑफिस कनॉट प्लेस पर है।'' फिर उसने पूछा, ''प्राइवेट डिटेक्टिव की जरूरत क्यों महसूस हो रही है ?''

''जाहिर है मैंने अपना शोध प्रबंध पूरा करना है। प्राइवेट डिटेक्टिव के पास पति-पत्नी में ऐसे कई केसेज आते हैं—जिनमें पति ने पत्नी के चरित्र पर और पत्नी ने पति के चरित्र पर सन्देह किया होता है। मेरा विषय भारतीय परिवार है। इस कारण प्राइवेट डिटेक्टिव और तलाक के केस लड़ने वाला एडवोकेट भी मेरी मदद कर सकते हैं।''

''यानी हर जगह मदद चाहती हो। स्वयं की दृष्टि का उपयोग नहीं करना चाहती।''

''यह स्वयं की दृष्टि ही है जो 'सोर्स' खोज लेती है। वैसे भी सामाजिकता या भावना का कोई आधारभूत नियम नहीं होता है। मेरी शोध का विषय तुम शायद गलत समझ रहे हो। पुरातन काल से स्थापित रिश्तों के मापदण्ड किन-किन बातों से तिरोहित हो जाते हैं। किन-किन बातों से रिश्तों के तयशुदा मापदण्ड सच्चाई की कसौटी पर खरे नहीं उतरते। विषय वास्तव में यह है रोहन।''

तब यह सुन कर रोहन को लगा था कि पायल के बारे में जो छवि उसने बना रखी है। वह उस छवि से कहीं ज्यादा विराट है।

कुछ मिनट पश्चात उसने कार एक बहुमंजिला इमारत के

comicsmylife.blogspot.in

बाहर पार्किंग में पार्क कर दी। भागीरथ मदान प्राइवेट डिटेक्टिव का साइन-बोर्ड तीसरी मंजिल पर चमक रहा था। कनॉट प्लेस जैसी जगह में ऑफिस होना ही इस बात का संकेत था कि वह अपने धंधे में सफलता के झंडे गाड़ चुका था।

□□

भागीरथ मदान से ही मिलने की जिद्द के कारण पायल पाराशर को भागीरथ मदान के सामने पहुंचाया गया था। वरना ज्यादातर केसेज मदान के स्टाफ द्वारा ही हैण्डिल किए जाते थे।

भागीरथ मदान साठ के फेर में पहुंचा हुआ शख्स था। वह लोगों से कतई उलट मिजाज का शख्स लगता था। क्योंकि उनके बाल डाई कर रखे थे लेकिन सफेद मूंछों को उम्र का पैमाना मान कर उनकी रंगाई-पुताई का खर्च बचा लिया था। उसकी कंजी आंखें चालाकी और मक्कारी का प्रतीक थीं। गाल की उभरी हुई हड्डियां उसके दृढ़ संकल्पवान होने को दर्शा रही थी। जबकि घुटनों से लम्बे हाथ उसके भाग्यशाली होने का संकेत दे रहे थे।

"प्लीज हैव ए सीट। माई सेल्फ इज भागीरथ मदान मिस पायल पाराशर।" नपे-तुले अन्दाज में अपनी बात कही और फिर उसके बैठने तथा बोलने का इन्तजार भी किया।

"पहले तो मैं क्षमा चाहूंगी कि मैंने आपके स्टाफ के साथ सहयोग नहीं किया। मैंने आपसे मिलने की जिद्द को अंत तक कायम रखा।"

"क्षमा मांगने की आवश्यकता नहीं। क्योंकि जिसे क्षमा करने की जरूरत होती है—वह मुझ तक पहुंच नहीं पाता। तुम भी इस कारण आई हो क्योंकि मैंने अपने स्टाफ के साथ तुम्हें मूवी कैमरे के माध्यम से बहस करते हुए देख लिया था।"

"स्मार्ट।"

"यस आई एम।" उसके अधरों पर मुस्कान की रेखा बनी, "अब बताओ, क्या प्रॉब्लम है तुम्हारी ?"

"देशभक्त दैनिक समाचार पत्र का नाम..."

"यस, मैंने सुना है।" उसने बात काटी।

"गुड, उस अखबार के सम्पादकीय विभाग में रोहन शर्मा नाम का एक युवक है। वह सहायक उप-सम्पादक है। मैं

चाहती हूं कि आप उसके एक मित्र की खोज करें, जिसके पिता अज्ञातवास पर हैं।"

भागीरथ मदान ने चौंक कर उसकी ओर देखा।

"माजरा क्या है ?"

"वही, जो मैंने बताया। रोहन शर्मा का वह मित्र कौन है, जिसके पिता परिवार के बीच मौजूद नहीं। मैं उस शख्स में रुचि रखती हूं।"

"यह रुचि रखने का कारण ?"

"इट इज ए सीक्रेट।"

"रोहन शर्मा से पूछ कर देखा ?"

"न देखा होता तो यहां क्यों आती।"

"यू आर स्मार्ट टू।"

"थैंक्स फॉर द काम्पलीमेंट।"

"यानी रोहन शर्मा से पूछताछ किए बिना ही मैंने उसके मित्र का पता लगाना है।"

"हां। रोहन को भनक भी न लगे कि आप उसके किसी ऐसे मित्र को खोज रहे हैं।" उसने सावधान किया।

"यानी रोहन से तुम्हारा रिश्ता है।"

"हां, मित्रता का।"

"वैसे, आप क्या चीज हैं मिस पायल ?"

"बताना पड़ेगा ?"

"हम हर क्लाइंट के बारे में जानकारी रखना चाहते हैं। ताकि कोई क्लाइंट हमसे गलत कार्य न करवा ले। प्रीवेंशन इज बैटर दैन क्योर।"

"मैं पायल पाराशर हूं। मिस्टर मल्होत्रा के पास अमेरिका से आई हुई गैस्ट—जो पी.एच.डी. कर रही है। क्या इतना परिचय पर्याप्त है।"

"मोर दैन इनफ।" उसने संतुष्टि में सिर हिलाया, "अब आप निश्चिंत होकर जा सकती हैं।"

"आपकी फीस ?"

"आप मिस्टर दीनानाथ मल्होत्रा की गैस्ट हैं। इस कारण मेरी भी गेस्ट हैं। भारतीय परम्परा यही है कि अतिथि आपका हो या मेरा। वह दोनों के लिए अतिथि है।" उसने बेहद अपनत्व के

comicsmylife.blogspot.in

साथ जवाब दिया।

"इसे मैं क्या समझूं ? आपकी मेहरबानी!"

"नहीं, यह बात मैं दिल से कह रहा हूं। कभी अमेरिका आना हुआ तो आप मुझे अतिथि बना कर अपना कर्ज या मेरी फीस चुका सकती हैं।"

"काफी चालाक हैं आप अंकल। सौदा मुनाफे का किया है, घाटे का नहीं।"

इस पर भागीरथ मदान कहकहा लगा कर हंस पड़ा। पायल ने उस हंसी को मंत्रमुग्ध अन्दाज में देखा। क्योंकि उसका ख्याल था कि भागीरथ मदान नाम का वह शख्स हंसना नहीं जानता था। जो कम हंसते हैं, उनकी हंसी में ही जादू होता है।

❑❑

दो दिन पश्चात सुबह ग्यारह बजे रोहन का फोन उसके पास आया था। पिछले दो दिनों से उसने रोहन को कांटेक्ट नहीं किया था, क्योंकि वह अपनी थिसिस के नोट्स बनाने के लिए प्वाइंट्स का अध्ययन कर रही थी। जिन्हें उसने अपनी थिसिस में हाइलाइट करना था।

"वैरी प्लेजेंट सरप्राइज रोहन। कैसे फोन किया तुमने ?" उसने स्वर पहचानने के पश्चात सहजता के साथ पूछा।

"रमजान खान वाले मामले में प्रोग्रेस हुई है। सोचा, तुम्हें सूचना दे दूं।"

"अच्छा किया! प्रोग्रेस क्या हुई है ?"

"तुम्हारे प्रस्ताव पर वह अपने पुत्र को नीलाम करने के लिए तैयार हो गया है।"

"वाकई!"

"हां, गरीबी बहुत बड़ी चीज होती है। हमारे देश में मजबूरी और गरीबी को महात्मा गांधी के नाम से कहा जाता है। यानी गरीबी का नाम महात्मा गांधी और मजबूरी का नाम भी।"

"गरीबी का नाम महात्मा गांधी ? इसका मतलब क्या हुआ ? समझा सकोगे ?"

"हमारे यहां यह एक कहावत हो गई है। इंसान के पास अगर रुपया नहीं है तो वह सादा जीवन गुजारने को विवश रहता है। लेकिन रुपए की कमतरी को छिपाने के लिए वह स्वयं को

सादगी पसंद प्रचारित करता है। इसी कारण कहावत बन गई गरीबी का नाम महात्मा गांधी या फिर मजबूरी का नाम महात्मा गांधी।"

"गजब का सेंस ऑफ ह्यूमर रहा होगा उसके पास—जिसने इस कहावत को ईजाद किया।"

"सेंस ऑफ ह्यूमर नहीं—उसके पास एक आलोचक की दृष्टि रही होगी। विवशता यही है कि सकारात्मक आलोचना को समझने के बजाय लोग उसमें 'मजाक' या 'व्यंग्य' को ही समझ पाते हैं। क्योंकि वास्तविक गांधी तो वह है, जो सब कुछ होते हुए भी त्याग भावना और सादगी को चुने। वरना तो लोग मजबूरी में त्याग करते हैं। एक शराबी अपने परिवार को इस मजबूरी में खर्चा देता है—क्योंकि उसे परिवार की आवश्यकता है। उस परिवार की, जो उसके लिए होटल के स्टाफ की तरह से होता है।"

"तुम ठीक कह रहे हो रोहन।" उसने संजीदगी के साथ स्वीकार किया, "खैर, रमजान खान इस वक्त कहां पर मौजूद है ?"

"वह मेरे पास ही मौजूद है। उसने पश्चिम पुरी में एक फ्लैट पसंद किया है। तुम्हारे दिए एक लाख रुपयों में से वह एडवांस भी दे चुका है। हमें इसी वक्त वह फ्लैट खरीदना होगा।"

"और अकबर की सुपुर्दगी ?"

"अकबर मेरे निवास पर मौजूद है।"

"मुझे कहां पहुंचना होगा ?"

"रचना सिनेमा हॉल तुमने देखा हुआ होगा। मैं अपने साथ रमजान खान को लेकर रचना पर पहुंचता हूं। उसके परिसर में तुम मौजूद रहना।"

"मैं एक घण्टे के अन्दर-अन्दर वहां पहुंच रही हूं।"

कहने के बाद उसने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया। यूं वह बीस मिनट में ही रचना पर पहुंच सकती थी। लेकिन उसने एक कानूनी शपथ-पत्र भी तैयार करना था, जो अकबर से सम्बंधित था। जिसमें अकबर की सुपुर्दगी के बारे में पूर्ण ब्यौरा था और वह ब्यौरा इस प्रकार था कि भारतीय कानून उसे किसी नाबालिग बच्चे की खरीद-फरोख्त की संज्ञा न दे सकता हो। वह काफी

comicsmylife.blogspot.in

चतुराई से हर कदम बढ़ा रही थी।

❑❑

शाम के पांच बजे वह वापिस लौटी थी। इस अवधि में उसके द्वारा फ्लैट के लिए दस लाख रुपया दिया गया था और अकबर की—सुपुर्दगी भी कानूनी शपथ-पत्र के आधार पर ली गई थी। बाप की पीड़ा को तब उसने रमजान खान की आंखों में और स्वयं के प्रति वितृष्णा को रोहन की आंखों में देखा था। जबकि अकबर की स्थिति उस बकरे की भांति नजर आ रही थी—जिसे बलि चढ़ाया जाना हो। मां-बाप की सुरक्षित छाया से अलग कर देने वाली बलि। पांच बजे वह अपनी ही कार से रवाना हुई थी। उस वक्त अकबर सहमा-सिकुड़ा हुआ सा उसकी बगल में मौजूद था।

''अकबर, हर बच्चा भविष्य का सपना देखता है। तुमने भी अपने भविष्य के बारे में अवश्य ही कुछ सोच रखा होगा?'' पायल ने विण्डस्क्रीन पर दृष्टि जमाए रखते हुए पूछा।

''पराधीन को सपने देखने का हक नहीं होता दीदी।'' बेहद सहजता के साथ जवाब दिया किशोरवय अकबर ने।

''मुझे दीदी कह रहे हो तो फिर स्वयं को पराधीन क्यों कह रहे हो?''

''क्योंकि मेरी मां की ममता इस वक्त सिसक रही होगी।'' उसने आहत स्वर में कहा।

''उस दिन तो तुमने बड़े हौसले के साथ कहा था कि परिवार की खुशहाली के लिए तुम अपने परिवार से बिछुड़ने को तैयार हो?''

''वह हौसला तो मुझमें अभी भी है दीदी। मैं सिर्फ अम्मी के बारे में सोच रहा हूं। एक संतान को बेचने की पीड़ा मां के हृदय को ही सबसे ज्यादा झेलनी होती है।'' अकबर ने भर्राए स्वर में कहा।

''क्या तुम्हें इस बात का आश्चर्य नहीं होता कि तुम्हारे मां-बाप ने अच्छी रिहायश और कुछ रुपयों के लिए तुम्हें बेच दिया है?''

''झुग्गी वाली रिहायश में मैं अपनी अम्मी और छोटे बहन-भाइयों को नहीं रखना चाहता था। इस कारण बड़ा पुत्र होने के

कारण मैंने अपना फर्ज निभाया है।'' अकबर ने गीली आंखों को फिर आस्तीन से पोंछ लिया था।

''यदि त्याग किया है तो फिर आंसू क्यों?''

''त्याग और आंसू का वही रिश्ता होता है जो एक सैनिक और उसके घावों का होता है। सैनिक का शौर्य उसे घाव देता है और घाव से खून रिसता है। जबकि त्यागी के आंसू रिसते हैं—जिन्हें वह अपनी मिल्कियत समझता है। मां की मजबूरी को एक बेटा ही समझ सकता है। मैंने समझा भी था। यही मेरा धर्म था। जबकि पति और अन्य बच्चों की खुशहाली के लिए अम्मी ने स्वयं की ममता को बेचा है दीदी। आप गलत सोच रही हैं कि अम्मी ने अपने बेटे को बेच दिया है।''

''लेकिन हकीकत तो यही है कि मां ने अपने बेटे को गैर के हवाले कर दिया है। क्या इस नीलामी से मां की ममता का खोखलापन साबित नहीं हो जाता?''

''यदि ऐसा है तो फिर आप उस मां समान मातृभूमि को क्या कहेंगी, जो आजादी के लिए और दुश्मन राष्ट्रों से सुरक्षा के लिए लाखों सपूतों के जीवन की बलि ले चुकी है। क्या मातृभूमि ने अपने सपूतों की लाशों पर ठहाके लगाए होंगे दीदी? नहीं, सच यह नहीं है। सच यह है कि हर मां की ममता को समझने वाला बेटा भी यह जानता है कि मां की रक्षा करने के लिए मुझे सदैव कुर्बानी के लिए तैयार रहना चाहिए।'' उस किशोर की गहरी तकरीर सुन कर पायल को आश्चर्य हुआ था।

उसने आश्चर्य से पूछा, ''क्या वाकई तुम उन भावनाओं को महसूस करते हो, जो तुमने बयान की हैं? यदि ऐसा है तो फिर आज तक तुमने कोई कुर्बानी क्यों नहीं दी?''

''हर बेटे के नसीब में मां की सेवा का सुख नहीं होता? दुनिया का हर बेटा ममता भरी छांव पाता हो, ऐसा भी नहीं है। इसी प्रकार मां के लिए कुर्बानी का जज्बा रख कर भी कुर्बानी का मौका किसी-किसी बेटे को ही मिल पाता है। आज तक यह मौका नसीब नहीं हुआ था। लेकिन अल्लाह के करम से आपके मुबारक कदम हमारी झुग्गी में पड़े, तो इस बेटे को कुर्बानी का आसान मौका नसीब हो गया।''

''ठीक। अब आगे क्या सोचा है अपने भविष्य के बारे में।''

comicsmylife.blogspot.in

उसने क्षण भर को उसकी ओर देखा था फिर।

"घोड़े का भविष्य वह शख्स तय करता है, जो उसकी लगाम को हाथ में रखता है। अच्छा-बुरा जो भी मिले। यह घोड़े का नसीब है। मैं उस शेरनी के हवाले हूं जिसके सामने मैं कुछ नहीं कर सकता। जो भी करना है वह शेरनी ने ही करना है।"

"स्कूल में पढ़ना चाहते हो अकबर भाई?" उसने स्नेह भरे स्वर में पूछा।

"गुलाम को कोड़े से तकलीफ नहीं होती, जितनी उसकी गुलामी पर किए गए मजाक से होती है। आपका सवाल मुझे वैसे ही तकलीफ दे रहा है।"

"परिस्थितियों से बड़ी पाठशाला इस दुनिया में अन्य कोई भी नहीं है। यही कारण है कि कम उम्र होने के बाद भी तुम किसी बुजुर्ग की तरह से बात कर रहे हो। क्योंकि बिवाई फटने का दर्द वही जानता है, जो उसे भोगता है। तुमने जो कुछ भोगा है। उसने ही तुम्हें विचार करने की शक्ति दी है। लेकिन विचार सदैव सत्य नहीं होते। सिद्धांत हर कसौटी पर खरे नहीं उतरते। क्योंकि इतिहास गवाह है कि गुलामों ने भी ताज पहना है। हर गुलाम को तख्त ही मिले यह जरूरी नहीं।"

"क्या इस गुलाम को यह पूछने का अधिकार है कि आपने मेरे बारे में...मेरे भविष्य के बारे में क्या फैसला किया है? मैं किस प्रकार आपके कर्ज को चुका सकूंगा?"

"एक छोटा भाई बनकर। अच्छा और समझदार छोटा भाई बनकर तुम मेरा कर्ज चुका सकते हो। इस कारण बहन की नीयत पर शक करना बन्द कर दो।"

"उस बहन पर शक न करूं, जिसने भाई को मां की गोद से दौलत की बांह का इस्तेमाल करके खींचा है?"

"यानी नफरत ही करना चाहते हो?" उसने बेहद निराशा के साथ सिर को झटका दिया।

"आप कुछ भी समझने के लिए स्वतंत्र हैं।"

"इतनी बड़ी गलती भी इंसान को नहीं करनी चाहिए कि शर्मिन्दगी पोंछने के लिए यह संसार भी छोटा पड़ जाए। बेशक नफरत करो। लेकिन उस नफरत के दायरे को इतना मत बढ़ाओ कि वह एक दिन तुम्हारे ही लिए शिकंजा बन जाए। एक ऐसा

शिकंजा जिससे फिर तुम्हें मुक्त होने का मौका ही प्राप्त न हो।"

"जो इंसान स्वयं को बेच चुका हो उसे नफरत करने की आजादी तो सौदे के साथ अधिकार स्वरूप मिलती है। परछाईं तो अवश्य बनेगी, यदि सूर्य की रोशनी में सफर करना है, आप मेरे शरीर के हर अंग पर काबू पा सकती हैं। लेकिन मेरी सोचों पर आपका वश नहीं। घोड़ा बिकने के बाद भी पानी अपनी मर्जी से ही पीता है। मेरे दिलो-दिमाग में घर बना चुके विचारों को बनाए रखना और उन्हें खण्डहर बना देना मेरे बूते में है, आपके नहीं। मेरी जुबान से आप 'अल्लाह' को गाली दिलवा सकती हैं। लेकिन मेरी आत्मा उस वक्त भी अल्लाह की इबादत कर रही होगी।"

"तुम नफरत के उस मुकाम पर पहुंच चुके हो, जहां से तुम खुद वापसी का रास्ता नहीं ढूंढ़ सकोगे। क्योंकि हर रास्ते की चाबी तुम फेंक चुके हो। लेकिन खातिर जमा रखो अकबर भाई। उन रास्तों को खोल कर प्रेम और स्नेह के नए मुकाम तक भी मैं तुम्हें ले जाऊंगी। कथनी और करनी के बीच बहुत फर्क होता है। लेकिन कथनी और करनी के फर्क को तुम्हारे दिल से नोंचने के लिए मुझे ही कुछ करके दिखाना होगा।" इतना कहने के पश्चात उसके जबड़े सख्ती से कस गए थे।

"यह गुलाम शर्मिन्दा है दीदी। गुलाम की वजह से मालिक को तकलीफ नहीं होनी चाहिए।" उसने यंत्रचालित ढंग से जुमले उच्चारित किए।

और तब मुस्करा कर रह गई पायल। उस दर्दीली मुस्कान के साथ, जो उसके हृदय से निकल कर अधरों पर आई थी। फिर कार के रुकने तक वह खामोश ही रही थी। जबकि अकबर उसे खिल्ली उड़ाने वाले अन्दाज में कई बार देख चुका था।

जिस मंजिल पर कार रुकी थी। वह मंजिल थी—प्राइवेट डिटेक्टिव भागीरथ मदान के ऑफिस के सामने बना हुआ पार्किंग स्थल।

लेकिन वह यह नहीं जान पाई थी कि एक खास टैक्सी के द्वारा कोई उसका पीछा कर रहा था।

□□

भागीरथ मदान से दूसरी मुलाकात में विशेष इन्तजारी नहीं

comicsmylife.blogspot.in

करनी पड़ी थी। अमेरिकन लड़की के साथ एक सामान्य से किशोर को देख कर मदान को आश्चर्य हुआ था। वैसे भी अकबर के बदन पर जो वस्त्र थे—वह गरीबी और अभावों की कहानी कह रहे थे। इस कारण आश्चर्य में उन्मुकता की भावना भी शामिल हो गई थी।

''आज मैं आपके पास दूसरी मदद मांगने के लिए आई हूं मदान साहब। आपको 'अंकल' इस कारण नहीं कह रही हूं, क्योंकि दूसरे कार्य का पारिश्रमिक आपको प्राप्त करना ही होगा।'' उसने ठोस स्वर में कहा।

''भागीरथ मदान अपनी भतीजी के लिए दो कार्य भी कर्तव्य समझ कर पूरा न करे बेटी?''

''आप तो अपने आत्म-गौरव को बनाए रखना चाहते हैं। सारे कर्तव्य मेजबान के ही नहीं होते। कुछ कर्तव्य मेहमान के भी होते हैं। वरना उस मेजबान की स्थिति वैसी ही हो जाती है, जैसी एक हाथी के कारण हुई।''

''हाथी के कारण?''

''हां, तूफान से बचने के लिए हाथी ने गरीब की झोंपड़ी में सूण्ड रखने की इजाजत मांगी थी। उस इजाजत के कुछ देर बाद हाथी झोंपड़ी में था और मेजबान बाहर।''

''बढ़िया। सुने हुए जोक को नए ढंग में सुना है। इस कारण तुम पारिश्रमिक देने के लिए आजाद हो। वैसे यह बच्चा कौन है बेटी?''

''इसका नाम अकबर है! मैं चाहती हूं कि अकबर के विषय में आपको पूरी जानकारी दूं।''

''मैं बेताब हूं जानने के लिए।''

''आप इस पत्र को पढ़ लीजिए। आपकी समझ में सब कुछ आ जाएगा।'' कहने के पश्चात उसने पर्स में से एक लिफाफा निकाल कर मदान की ओर बढ़ा दिया।

मदान ने लिफाफे में रखे पत्र को निकाल कर पढ़ा। इस दरम्यान उसने कई बार पायल और अकबर की ओर भी देखा था। पत्र की पीठ के साथ चेक पिनअप किया हुआ था। वह दो लाख का चेक था। पत्र और चेक को उसने पुनः लिफाफे में रखा और मेज की दराज में डाल दिया।

''यानी मेरी दरख्वास्त मंजूर हुई?''

''न हुई होती तो चेक और पत्र मैंने तुम्हारे सुपुर्द कर देना था बेटी।'' स्वर में स्नेह था और आंखों में विशेष प्रकार का आश्चर्य।

''कुछ पूछना चाहते हो अंकल?''

''नहीं। तुमने सब कुछ विस्तार से लिखा है। मेरे आश्चर्य का कारण यह है कि तुम्हारे भोले चेहरे की ऊपरी मंजिल पर जो तीक्ष्ण दिमाग है, मैं उसका अनुमान नहीं लगा पाया था।'' इतना कहने के पश्चात उसने कार्डलैस बैल का बटन पुश किया था।

प्रतिक्रिया स्वरूप एक नौजवान अन्दर आया।

''बादल, इस बच्चे को तुमने संभ्रांत वर्ग का बच्चा बनाना है। इसका पूर्ण कायाकल्प होना चाहिए कि इसे जन्म देने वाली मां भी एक बार को धोखा खा जाए।'' मदान ने अकबर की ओर इशारा किया।

''बहुत बेहतर सर!''

''कायाकल्प के बाद बच्चे को वापिस ले आना।'' फिर मदान ने अकबर को सम्बोधित किया, ''बेटे, तुम बादल भइया के साथ जाओ।''

जवाब में वह पायल को देखते हुए बोला, ''मालकिन दीदी, क्या आपकी इजाजत है?''

''हां, मेरी इजाजत है।'' भींचे जबड़ों के साथ जवाब दिया था पायल ने।

अगले दो मिनट पश्चात वातानुकूलित ऑफिस में मदान और पायल ही रह गए थे। बादल द्वारा अकबर को अपने साथ ले जाया जा चुका था।

''पायल बेटी, भारतीय परिवार की संस्कृति को यदि तुम दौलत के मापदण्ड से तौल कर निष्कर्ष निकालना चाहती हो तो वह निष्कर्ष क्या होगा? यह कि मां-बाप अगर अभावों के बीच जी रहे हों तो वह समृद्धि पाने के लिए अपने जिगर के टुकड़े को बेच सकते हैं?'' वितृष्णा का भाव लहजे में अनचाहे ही समाविष्ट हो गया था।

''यानी आप, भी यही सोच रहे हैं कि मैंने दौलत का उचित उपयोग नहीं किया? आप भी यही समझते हैं कि मैंने तस्वीर का

comicsmylife.blogspot.in

सिर्फ निगेटिव रुख ही पेश करना है ?''

''ठीक है, मैं तुम्हारे उत्तर से संतुष्ट हुआ पायल।''तभी फोन की घण्टी घनघनाई थी। मदान ने रिसीवर उठाया, ''मदान दिसं एण्ड।''

''सर मैं अभिनव वागले बोल रहा हूं।'' दूसरी ओर से स्वर उभरा था।

''हां, बोलो वागले, पता लगाया कुछ ?''

''पता कर चुका हूं सर। पूरी रिपोर्ट यह है कि...'' फिर दूसरी ओर से रिपोर्ट लेने के पश्चात मदान ने ओ.के. कहा और रिसीवर यथा-स्थान रख दिया।

''फोन पर बात करते हुए आप मेरी ओर बार-बार विशिष्ट दृष्टि से देखते थे अंकल। ऐसा लगता है कि फोन पर मुझसे ताल्लुक रखती बातचीत हो रही थी।'' पायल ने अन्दाजा पेश किया।

''कमाल की दृष्टि है तुम्हारी।'' मदान ने प्रशंसा की, ''मेरे देखने के अन्दाज मात्र से पता लगा लिया कि फोन पर तुम्हारे कार्य का जिक्र हो रहा है। तुम्हारा अनुमान एकदम सही है। तुमने जो पहला कार्य बताया था। वह मेरा एजेण्ट मुकम्मल कर चुका है।''

''मैं जानने को बेताब हूं कि ऊंट किस करवट बैठा ?''उसने उत्सुक नेत्रों से देखते हुए आग्रह किया ! तब वह उत्सुक बच्चे के समान लगी थी।

''ऊंट बैठा नहीं। क्योंकि जो कुछ भी था—वह खड़े ऊंट से ही प्राप्त किया जाता तो तुम्हारा काम किसी सूरत में नहीं होना था।''

''य...यानी ?''

''मिस्टर रोहन शर्मा का कोई ऐसा मित्र नहीं, जिसके पिता को पलायन करना पड़ा हो और जिसकी रोजी-रोटी लेखन से ही निकलती हो।''

''यानी रोहन ने झूठ बोला।''

''उसने आधा सच बोला और आधा झूठ बोला। यह सच है कि एक व्यक्ति परिवार की आइन्दा जिम्मेदारियों से मुंह चुरा कर अज्ञातवास पर गया है। जाने का कारण भी उसने रहस्य ही रखा

है।''

''कौन है वह इंसान ?''उसने धड़कते दिल से पूछा।

''खुद रोहन के पिता क्रांतिदूत शर्मा ! द फेमस नॉवल राइटर ! क्रांतिदूत शर्मा !'' मदान ने सरगोशी के अन्दाज में कहा, ''रोहन ने अपने काल्पनिक मित्र का सहारा लेकर स्वयं ही अपने पिता का जिक्र किया था। क्योंकि इंसान की यह फितरत होती है कि वह अपनी भावनाओं को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्त करता है। चूंकि तुम्हारे शोध का विषय भी रिश्तों पर आधारित था। इस कारण अपने पिता के रहस्यमय पलायन की बात व्यक्त करने से वह स्वयं को रोक नहीं पाया।''

''हां, दुख व्यक्त करने से बंट जाता है। रोहन ने शायद इसी कारण मुझे बताया होगा। लेकिन वह रहस्यमय पलायन क्यों किया गया ? इस बारे में आपने पता लगाया ?''

''नहीं, अलबत्ता, यह अवश्य ही पता लगाया है कि पांच करोड़ रुपयों की शर्त वाली बात सही है। मिस्टर के.डी. (क्रांतिदूत) शर्मा ने बेटे के सामने वापसी की शर्त पांच करोड़ रुपया रखी थी।''

''यह तो मैंने बताया था आपको। आपके एजेण्ट ने इस शर्त की तस्दीक कैसे की ?''उसने शंका का समाधान चाहा।

''वह एक पहुंचा हुआ ढोंगी बन कर शर्मा परिवार में पहुंचा था। नीलिमा देवी को जब उसने बताया कि मिस्टर के.डी. शर्मा घर से चले गए हैं और उसकी वापसी की शर्त पांच करोड़ रुपया है तो नीलिमा देवी ने मेरे एजेण्ट को पहुंचा हुआ पीर-फकीर मान लिया। फिर उनके द्वारा मेरे एजेण्ट को बताया गया कि उसके पति अपने पलायन का भेद एक चमड़ा मढ़ी डायरी में लिख कर गए हैं। लेकिन उनका बेटा उस डायरी को तभी पढ़ सकता है, जब वह पांच करोड़ रुपया कमाने में कतई असफल हो जाए।''

''चमड़ा मढ़ी डायरी !''

''हां, वह डायरी एक खुली अलमारी में मौजूद है। उस पर ताला नहीं लगाया शर्मा जी ने क्योंकि वह जानते थे कि ऐसा कोई ताला नहीं बना, जो उत्सुकता की चाबी के पैदा होने पर न खुल सके।''

''इस कारण उन्होंने ताला लगाने की जरूरत ही नहीं

comicsmylife.blogspot.in

समझो।'' उसने मंत्रमुग्ध अन्दाज में कहा।

''सच्चाई यही है। यद्यपि मिस्टर शर्मा ने अपनी पत्नी को यह छूट दे दी थी कि वह चाहें तो उस डायरी में दर्ज पलायन के रहस्य को पढ़ लें। लेकिन मिसेज शर्मा ने भी उस डायरी को नहीं पढ़ा है।''

''ऐसा भला क्यों?''

''क्योंकि उन्हें इस बात का डर है कि डायरी पढ़ने के कारण उनका बेटा रोहन यह न समझ ले कि उन्हें अपने बेटे द्वारा पांच करोड़ रुपया कमा लेने की कोई उम्मीद नहीं है। वह अपने बेटे का उत्साह बढ़ाए रखना चाहती हैं न कि उसे कम करना चाहती हैं।''

''शी इज ए ग्रेट लेडी।'' उसने प्रशंसा की, ''पुत्र के उत्साह के विषय में सही सोचा है उन्होंने।''

''स्वयं मेरी उत्सुकता जाग उठी है कि फेमस राइटर क्रांतिदूत शर्मा ने सरस्वती उपासक होते हुए मां लक्ष्मी के सामने आत्मसमर्पण करते हुए पलायन क्यों किया।'' भागीरथ मदान ने बेहद गम्भीर स्वर में कहा, ''उस डायरी में वाकई कोई ऐसा रहस्य दफन होगा, जो बेहद हैरतअंगेज है।''

''आप ठीक कह रहे हैं अंकल। मैं उस रहस्य को जानना चाहती हूं।''

''मुझे डर था कि तुम यह तीसरा काम भी मुझे अवश्य ही बताने वाली हो।'' गम्भीर चेहरे पर हास्य की मुस्कान ने जन्म लिया था।

''यानी आप यह काम करेंगे।''

''अपनी भतीजी को मना कैसे कर सकता हूं।''

''लेकिन यह काम होगा किस प्रकार?''

''इसकी जिम्मेदारी तुम मुझ पर छोड़ दो। उस डायरी को तुम पढ़ भी सकोगी और किसी को कानों-कान भनक भी नहीं लगेगी कि डायरी पढ़ी जा चुकी है।''

''यह कैसे मुमकिन हो सकेगा?'' उसकी नीली आंखों के आगे पलकों ने कई बार आंखमिचौली खेली।

''कैसे? इसे मुझ पर छोड़ दो। तुम्हें सिर्फ एक कार्य करना होगा। मुझे मिस्टर दीनानाथ मल्होत्रा की मदद की आवश्यकता

होगी। मेरा प्लान यह है कि...'' उसने फिर प्लान के विषय में बताया था।

प्लान सुनने के पश्चात पायल पाराशर को स्वीकार करना पड़ा था कि भागीरथ मदान वाकई एक शातिर दिमाग का मालिक है और सफलता के जो झण्डे उसने गाड़ रखे हैं वह कोई तुक्का नहीं है।

□□

अगली सुबह पायल के फोन पर रोहन कोठी पहुंचा था। दीनानाथ मल्होत्रा प्रेस जाने के लिए तैयार हो चुके थे।

पायल उस वक्त ड्राइंग रूम में ही मौजूद थी। रोहन पर नजर पड़ते ही पायल समझ गई कि अकबर को उसके मां-बाप से दूर करने के कारण वह नाराज है। उसकी नाराजगी वाजिब भी थी। क्योंकि वह स्वयं भी पिता की गैरमौजूदगी को महसूस कर रहा था।

''पायल तुम्हें ज्यादा परेशान तो नहीं कर रही रोहन?'' अभिवादन की रस्म निभाने के पश्चात रोहन ने मल्होत्रा के मुख से सुना था।

''हम भारतीय लोगों के लिए अतिथि देवता के समान होता है। फिर यह अतिथि तो कई समुद्र पार से आया है।'' रोहन ने सादगी के साथ जवाब दिया। चेहरे पर दर्ज नाराजगी को स्वर में शामिल करने से बचाया था रोहन ने।

''गुड। यानी तुम्हारा चुनाव करके मैंने कोई गलती नहीं की। और, मैं तो इस वक्त जा रहा हूं। तुम आज भी पायल के साथ ही व्यस्त रहने वाले हो लेकिन परसों तुम्हें एक महत्वपूर्ण कार्य करना होगा।''

''आदेश कीजिए सर।''

''जयपुर में दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष सम्मेलन हो रहा है। मैं चाहता हूं कि तुम उस सम्मेलन को न केवल कवर करो। बल्कि उस पर एक स्पेशल फीचर भी तैयार करो।''

''क्या यह बेहतर नहीं होगा सर कि हमारे अखबार के लिए जो ज्योतिष सेवाएं दे रहे हैं और जिन्हें ज्योतिष की जानकारी है। उन्हें इस सम्मेलन में भेजा जाए?''

''पण्डित नाथूलाल शास्त्री की बात कर रहे हो तुम?''

comicsmylife.blogspot.in

"जी।"

"मैं नहीं जानता कि उस सम्मेलन को कवर करने के लिए ऐसा व्यक्ति जाए, जो ज्योतिष के बारे में स्वयं की निश्चित धारणाएं रखता हो। पण्डित नाथूलाल शास्त्री के साथ प्रॉब्लम यही है कि वह सम्मेलन के प्वाइंट और एंगल को अपनी ही सोच से देखेंगे। जबकि हमें पाठकों तक उस सम्मेलन के प्रत्येक विचार को पहुंचाना है। फिर चाहे वह विचार ज्योतिष की दृष्टि से कमजोर ही क्यों न हो। ऐसा वही व्यक्ति कर सकता है, जिसे ज्योतिष की वही जानकारी देनी है, जो सम्मेलन में व्यक्त की गई। टीका-टीप्पणी तो बाद की बातें हैं।"

"यदि ऐसा है तो मैं जाने को तैयार हूं सर। लेकिन मेरी एक प्रार्थना है।"

"कहो।"

"पण्डित नाथूलाल शास्त्री को भी मेरे साथ भेजा जाए। वरना वह व्यर्थ में मुझे अपना प्रतिद्वन्द्वी समझ लेंगे। उन्हें मालूम होगा कि उनके स्थान पर मुझे भेजा गया है तो उनका ईगो (स्वाभिमान) हर्ट होगा।"

"हां, उनके स्वाभिमान को चोट अवश्य लगेगी। लेकिन मैं शास्त्री जी से कह चुका हूं कि बजाते खुद वह बेहतरीन ज्योतिष ज्ञाता है। इस कारण इस सम्मेलन में नया कुछ नहीं होगा। अतः उनका समय व्यर्थ नहीं किया जाएगा। बुजुर्गवार शास्त्रीजी ने मेरी इस टिप्पणी को अपना सम्मान समझ लिया है। इस कारण तुम्हारे लिए मैदान एकदम साफ है।"

"कमाल की सूझ है सर आपके पास।" उसने प्रशंसा की।

"मैं अखबार का मालिक हूं। मैं जानता हूं कि कर्मचारियों के बीच तालमेल किस प्रकार बना कर रखा जा सकता है। प्रत्येक को उसके सम्मान से नवाज कर संतुष्ट करना एक सफल बिजनेसमैन का गुण होता है।"

"यह गुण आपमें कूट-कूट कर भरा हुआ है।" पायल ने मुस्करा कर कहा।

"नहीं, कूटने के बाद उसे छाना भी गया है और उसके बाद भरा गया है।" तीनों ने फिर समवेत ठहाका लगाया था।

"ओ.के. दैन, हैव ए नाइस डे।" दीनानाथ मल्होत्रा उसके

पश्चात द्वार की ओर आकृष्ट हो गए थे।

"आज कहां चलना है मिस पायल?"

"मैंने सुना है कि दिल्ली में भी रेड लाइट एरिया है। आज मैं उस एरिये में जाना चाहती हूं। जानते हो वह एरिया कहां है?"

"अखबार नवीस हूं। इनकार तो कर ही नहीं सकता। वह इलाका अजमेरी गेट के पास लोकेटिड है। लेकिन यह मत समझना कि मैं वहां की जानकारी अपनी रुचि के कारण रखता हूं।"

"जो शख्स वेश्याओं में दिलचस्पी रखता हो। उसे मल्होत्रा अंकल मेरा गाइड नहीं बना सकते थे। इस कारण सफाई देने की तुम्हें कोई आवश्यकता नहीं।"

"क्या वहां भी किसी रिश्ते को नंगा करना है?" उसने चुभते हुए स्वर में पूछा।

"जब भी कोई लड़की वेश्या बनकर बदनाम बाजार में पहुंचती है, तो उसके पीछे किसी न किसी रिश्ते की नग्नता ही जिम्मेदार होती है वह रिश्ता उस नारी से पहले नंगा होता है, जो उस नारी को वेश्या बनाता है।" पायल ने उसके क्रोध को नजरअन्दाज करते हुए कहा, "वह रिश्ता, जो धोखा देकर किसी नारी को वेश्यालय पहुंचाता है।"

"वहां की युवतियां अपने घाव को भूल चुकी हैं। तुम उन्हें हरा करना चाहती हो?"

"कुछ घाव कभी नहीं भरते। जब भी किसी वेश्या को अपने जिस्म खोलने के बाद वासना का खेल खेलना होता है—तब हर बार वह घाव ताजा हो जाता है।" पायल ने गम्भीर स्वर में कहा।

"क्या तन के बाजार में भी खरीददारी करोगी?"

"शायद हां, शायद नहीं। अभी कुछ तय नहीं किया गया है। लेकिन इतना अवश्य है कि आज भी मुझे ढेर सारी दौलत को दांव पर लगाना है।"

"खुशनसीब हो तुम पायल। दौलत के भारी भरकम दांव लगाती हो। कुछ लोग चन्द सिक्कों के अभाव में भूखे पेट सोने को भी मजबूर रहते हैं।"

"यही भाग्य है। राजा और रंक भाग्य से ही बनते हैं। बहुत कम लोग होते हैं जो दुर्भाग्य की लेखनी को अपने परिश्रम की

comicsmylife.blogspot.in

बून्दों द्वारा मिटा पाने में सफल होते हैं। मैं जन्म से भाग्यशाली हूं। क्योंकि धन की देवी मां लक्ष्मी की कृपा मेरे पिता पर थी।''

''ठीक कहा तुमने। इसी कारण तुम्हें दौलत की कद्र नहीं। क्योंकि पसीना बहा कर दौलत कमाने का कोई अनुभव जो नहीं है तुम्हारे पास।''

''लड़ने का इरादा बना कर आएं हो ?''

''मैंने अपना विचार रखा है। लड़ने का इरादा होता तो मैं यहां आता ही नहीं। वैसे रूप के बाजार में क्या कोई खास सौदा करना है तुम्हें ?''

''यह तो वहां जाकर ही मालूम होगा कि मैंने क्या करना है मिस्टर रोहन। तुम साथ चलने को तैयार हो ?''

''एक नारी अगर रूप बाजार की सीढ़ियां चढ़ती नजर आए तो उसे भी बुरी नजर से ही देखा जाता है। बेहतर होगा कि तुम पुरुष वेश बना कर चलो।''

''कोई बुरी नजर से देखेगा तो मुझे देखेगा। तुम्हें परवाह करने की क्या आवश्यकता ?''

''क्योंकि मेरे सामने अगर किसी नारी को बुरी दृष्टि डाल कर छेड़ा गया तो मैं खामोश नहीं रह सकूंगा। ऐसे में स्ट्रीट फाइटिंग की नौबत आ जाएगी और तुम्हारा मिशन खतरे में पड़ जाएगा।''

''ठीक है, मैं सिख के वेश में तुम्हारे साथ चलूंगी। लेकिन मैं सिख बनूंगी कैसे ?'' उसने भोलेपन के साथ पूछा।

''एक पत्रकार को जासूस भी होना पड़ता है और कई बार उसे हुलिया भी बदलना पड़ता है। मैं तुम्हारे मेकअप-गेटअप का सामान लेकर आता हूं।'' उसने आश्वस्त किया और फिर रवाना हो गया।

□□

डेढ़ घण्टे पश्चात वह दोनों एक ऐसे कोठे की सीढ़ियां चढ़ रहे थे, जो अन्य कोठों की तुलना में ज्यादा गुलजार नजर आ रहा था। दोपहर हो चुकी थी। इस कारण रात को जागरण करने वाली वेश्याओं की सुबह अभी हुई ही थी। रसूलन बी—यह नाम था उस कोठे की मालकिन का—जो अपने कोठे में डेढ़ सौ लड़कियों को रखे हुए थे। वह दोनों सीढ़ियां चढ़कर बरामदे में पहुंचे तो उन्हें दो गुण्डे टाइप व्यक्तियों ने रोक लिया। जाहिर था कि वह

दलाल भी थे।

''इस वक्त धंधा नहीं होता। दिल्ली में क्या नए आए हो तुम दोनों।'' एक गुण्डे ने बनियान की बांह ऊंची करते हुए अपनी मसल्स सलमान खान की तरह से दिखाई।

''न तो हम दिल्ली में नए हैं और न ही हमें यहां के धंधे में रुचि है।'' रोहन ने जवाब दिया, ''रसूलन बी से बात करने आये हैं।''

''कौन हैं आप ?''

उसने प्रेस का कार्ड दिखाकर कहा, ''पुलिस के खुफिया विभाग से मेरा ताल्लुक है।'' दोनों की बोलती बन्द हो गई। एक गुण्डे ने अन्दर जाकर दरवाजा खोल दिया। वह बैठक जैसी जगह थी। जहां दो जोड़ी सोफे पड़े हुए थे।

दोनों सोफा चेयर पर जा बैठे। इस दरम्यान एक गुण्डा टाइप व्यक्ति अन्दर सूचना देने गया था।

पांच मिनट पश्चात गोलमटोल जिस्म की मालकिन रसूलन बी तेज कदमों से आई थी। ऐसा लग रहा था जैसे कोई भारी-भरकम गेंद लुढ़क कर उनकी ओर आ रही हो।

''बन्दापरवर, हमसे क्या खता हुई! हम तो नियम से हफ्ता दे रहे हैं।'' रसूलन बी ने हाथ जोड़ते हुए कहा।

''खता कुछ नहीं हुई है खसमखाणी।'' सरदार बनी पायल ने भारी आवाज में पंजाबी एसेंस डाला, ''इधर में नई कुड़ी कौन आई है तेरे पास ?''

''नई कुड़ी तो कोई नहीं आई दारजी।'' उसने बौखला कर कहा।

''झूठ न बोलो ! मैंनू सब पता है एक कुड़ी यहां नई आई है।'' उसने ठोस स्वर में कहा।

''एक हफ्ता पहले नेपाल से कुड़ी को यहां लाया गया था।''

''की नाम है कुड़ी दा ? नाम दस कुड़ी दा।''

''[illegible] है साहब।''

''मैंनू उस नाल गल करनी है।''

''हुजूर, हम पर दया तो रहेगी न।''

''कुड़ी नूं देखेबाद तय करणगे—हुणे ता अे दसो बड़ी बी

comicsmylife.blogspot.in

कुडी दा सत्यानाश ते नहीं हो गया।''

''अभी तक तो सलामत है साहब।''

''अरे झूठ न बोल्लो।''

''मुझ पर खुदा की मार जो 'झूठ कहा'।''

''ठीक है। रत्ना नू साडे कोल भेज—उस्तरां रत्ना दा सौदा किन्ने बिच्च हुआ?''

''पूरा एक लाख रुपया दिया था माई-बाप।''

''ठीक है, बड़ी बी—कुडी नूं पेश कर। ओदे नाल खास गल करनी है।''

''जा माधुरी को जाकर बोल कि वह रत्ना को साथ लेकर कमरा नं. पांच में पहुंचे।'' रसूलन बी ने गुण्डे को आदेश दिया। तीखे तेवर वाला गुण्डा अब भीगी बिल्ली बन चुका था।

उसके जाने के बाद रसूलन बी ने उन्हें कमरा नम्बर पांच में पहुंचा दिया। कमरे में शानदान डबल बैड था और वह एयरकंडीशनर था। जाहिर था कि उस कमरे का उपयोग बड़े आदमियों के लिए किया जाता था।

''बड़ा शानदार कमरा है।'' रोहन ने अन्य सुविधाओं का जायजा लिया।

''मिनी फ्रीज, ब्ल्यू फिल्म देखने के लिए टी.वी., वी.सी.आर. और अटैच्ड लेटबाथ।''

''आपकी दुआ है सरकार।''

''लोग आते हैं इस औकात के?'' उसने कमरे को निर्दिष्ट करने के लिए उंगली से गोल घेरा बनाया।

''अब आप से क्या छिपा है सरकार। सन्तरी से लेकर मंत्री तक के मुबारक कदम इस कमरे में पड़ चुके हैं।''

''किसी मंत्री ने फीता काट कर उद्घाटन नहीं किया इस कमरे का?'' व्यंग्य था रोहन के स्वर में।

''यह रण्डी बाजार है साहब। यहां फीता काट कर नहीं बल्कि नाड़ा काट कर उद्घाटन किया जाता है।'' उसने शरारत भरे अन्दाज में कहा, ''अच्छाइयों पर तो हर शख्स अपना नाम देखना चाहता है लेकिन बुराई के पत्थर पर कौन अपना नाम खुदवाता है साब।''

''हां, वैसे भी खुदाई खिदमतगार ही तो यहां पर आते हैं।''

रोहन ने शुष्क स्वर में कहा, ''लेकिन यह भूल जाते हैं वह लोग कि उनकी मां ने जिस कोख में रखकर उन्हें जन्मा था। वह उसी को कलंकित कर रहे हैं।''

''आप तो खफा नजर आ रहे हैं सरकार।'' रसूलन बी ने चौंकते हुए कहा, ''मैं तो सोच रही थी कि रत्ना राणा को आपकी शान में मुफ्त पेश करूं। इस प्रकार उसकी नथ उतराई की रस्म हो जाती।''

''हमारा मिजाज दूसरे टाइप का है। हम नारी की मर्यादा को बनाने वाले हैं बड़ी बी, बिगाड़ने वाले नहीं।''

''सरकार मजाक कर रहे हैं आप।''

''मजाक तो तुम कर रही हो बड़ी बी। एक औरत होकर औरत के जिस्म की नीलामी करती हो।''

ठीक तभी द्वार खुला और गुण्डे जैसे शख्स और एक अन्य युवती रत्ना नाम की लड़की को लगभग खींचते हुए कमरे तक आए थे।

रत्ना राणा बेमिसाल सौन्दर्य की मालकिन थी। लेकिन वह उम्र के महज सत्रहवें वर्ष में थी। मासूम, नाजुक और बेइन्तहा आतंकित रत्ना राणा की स्थिति देखकर रोहन का खून खौल उठा था। लेकिन जिस झूठ की बुनियाद पर उसकी वहां एन्ट्री हुई थी—उसे बरकरार रखने के लिए क्रोध पर काबू रखना आवश्यक था। पायल ने आंखों ही आंखों में क्रोध जब्त करने का संकेत दिया था।

''अब कृपया मेहरबानी आप तीनों यहां से जा सकते हैं। हमें जो भी पूछना होगा, वह हम रत्ना से अकेले ही पूछना पसंद करेंगे।'' रोहन ने पुलसिया रौब झाड़ा।

तीनों ने आदेश का पालन किया।

सावधानी के रूप में पायल ने दरवाजा अन्दर से बन्द कर दिया।

अब रत्ना राणा नाम की वह लड़की भय से थर-थर कांप रही थी।

''रत्ना बहन, हम पर विश्वास रखो। हम तुम्हारी आजादी के लिए आए हैं।'' रोहन ने उसके सिर पर हाथ रखते हुए कहा, ''मैं तुम्हारे मुंह बोले भाई के समान हूं।''

''भ... भाई!'' अटाटूट घृणा थी डेढ़ शब्दों के जुमले में, जो

comicsmylife.blogspot.in

उसने उच्चारित किया था।

''मैं भी तुम्हारी ही तरह एक लड़की हूं। लेकिन मुझे सरदार बनकर आना पड़ा है।'' पायल ने तब अपने स्वाभाविक स्वर में कहा।

एक सरदार के मुख से नारी स्वर सुन कर रत्ना को सदमे की स्थिति में भी आश्चर्य हुआ था। साथ ही कुछ उम्मीद भी बंधी तो भय की बर्फ भी पिघली।

''क...क्या चाहते हैं आप दोनों ?''

''तुम्हारी रिहाई चाहते हैं बहन। लेकिन उसके पहले हम यह जानना चाहते हैं कि तुम नेपाल से दिल्ली के इस कोठे पर कैसे आई ?''

''दुनिया की कोई भी नारी कोठे की सीढ़ियां खुद चढ़कर नहीं आती उसे सीढ़ियों पर धकेल कर लाया जाता है साहब। हां, आप स्वयं को मेरा भाई मत कहिए। क्योंकि इस रिश्ते की अर्थी को मैंने दौलत समेट कर बड़ी शान से जाते हुए देखा है।''

''य...यानी ?'' पायल चौंकी।

''मेरा एक धर्म भाई ही मुझे यहां पर पहुंचा कर गया है। वह भाई जिसे मैं राखी बांधा करती थी। जिसने हर रक्षाबंधन पर मेरी हिफाजत की शपथ को दोहराया था। वही भाई दौलत के कारण बहन का दुश्मन बन गया।'' इतना कहने के पश्चात वह फूट-फूट कर रो पड़ी थी। पायल को कोई आश्चर्य या दुख नहीं हुआ था। रोहन अवश्य ही बोला था, ''धिक्कार है उस भाई पर, जो बहन के विश्वास का खून करने के लिए दौलत समेट कर चला गया।''

''मैं पहली और आखिरी नारी हूं जिसे रिश्ते ने छला है। इस नरक-कुण्ड में मैं जिन अभागी नारियों के साथ रही हूं। उनकी दास्तान सुनने के पश्चात मैंने मान लिया है कि दौलत से बड़ा कोई रिश्ता नहीं है। किसी ने अपनी नव-ब्याहता पत्नी को यहां पर लाकर बेचा है। किसी ने अपनी भतीजी को, किसी ने अपनी भांजी को, किसी ने अपनी बेटी को और किसी ने मदद का रिश्ता बनाकर उसे जलील किया है। कुछ बदनसीब तो ऐसी भी हैं, जिन्हें घर के मर्दों ने ही अपनी हवस का निशाना बना लिया था। फिर भेद खुलने के डर से उन्होंने कलंकित किए हुए रिश्ते को

यहां लाकर बेच दिया।''

''सच्चाई यही है कि कोठे से ज्यादा गन्दगी घरों में होती है। लेकिन वह गन्दगी नजर नहीं आती। नजर आने की कोशिश करती है तो उसे कोठे की गन्दगी बना दिया जाता है।'' रोहन ने गम्भीर स्वर में कहा, ''एक पत्रकार होने के नाते मैं यह जानता हूं कि आजकल अनहोनी जैसी घटनाएं घट रही हैं। बेटी अगर बाप के पास सुरक्षित नहीं तो फिर कहां सुरक्षित रहेगी ?''

''अ...आप लोग मुझे रिहा करवाने के लिए आए हैं ?'' रत्ना ने लरजते स्वर में पूछा।

''हां, तुम्हें आजादी मिलेगी रत्ना।''

''यहां से आजाद होने के बाद मेरा क्या होगा ? यहां गर्म गोश्त के भेड़िए और सौदागर आते हैं तो वह वापिस भी जाते हैं। कई भेड़िए तो बाहर ही शिकार करते हैं। मैं बाहर सुरक्षित रहूंगी। इस बात की क्या गारण्टी है ?''

''सभी जानते हैं कि एक दिन मौत आएगी। लेकिन मौत की अहम् सच्चाई के कारण लोग जीना तो नहीं छोड़ देते। बेशक बाहर भी भेड़िए हैं। लेकिन भेड़ियों का जोर सिर्फ भेड़ पर चलता है रत्ना। शेरनी की दहाड़ से ही भेड़िए भाग खड़े होते हैं। अब तुम स्वयं को भेड़ बना कर रखना चाहती हो या फिर शेरनी बनना चाहती हो। इस बात का निर्णय तुम्हें स्वयं ही करना है।'' कठोर था रोहन का स्वर।

''म...मैं बन सकूंगी शेरनी।''

''यह सवाल उस बिल्ली से करो, जो बन्द कमरे में खतरा महसूस करने पर बचाव छोड़ कर आक्रमण आरम्भ कर देती है। जिन्दगी की मुकर्रर सांस तक इंसान को लड़ना पड़ता है। धन्य है वह लोग जो दूसरों के लिए संघर्ष करते हैं। क्या तुम स्वयं के लिए भी नहीं लड़ोगी ?'' आहत था उसका स्वर, ''मां भवानी और रानी झांसी की परम्परा क्या खत्म हो चुकी है रत्ना ?''

और यह सुनकर थर-थर कांपती उस बाला में गजब के आत्मविश्वास का जन्म हुआ था। सुकोमल नेत्र अंगारे बन गए और उनसे चिंगारियां बरसने लगीं। जबड़े सख्ती के साथ कस गए।

वह दृढ़ता और ठोस इरादे की प्रतिमूर्ति नजर आने लगी।

comicsmylife.blogspot.in

"मैं उस धर्म भाई की असलियत जाहिर करूंगी। ताकि वह दूसरी लड़कियों को जिस्म की मण्डी में न पहुंचा सके।" उसने जलते हुए स्वर में कहा।

"शाबाश! अब लग रहा है कि नारी में सिर्फ ममता ही नहीं बल्कि ज्वाला भी होती है।" रोहन ने उसका हौसला बढ़ाया।

"यानी हमने रत्ना को साथ लेकर ही जाना है।" संतोष की सांस ली फिर पायल ने। फिर वह द्वार की ओर बढ़ी तथा उसने द्वार खोल दिया।

लेकिन द्वार खुलते ही उन तीनों को चौंक जाना पड़ा था। क्योंकि द्वार के बाहर तलवारों के साथ कुछ गुण्डे मौजूद थे और रसूलन बी उनके बीच खड़ी होकर भयानक अन्दाज में उन्हें घूर रही थी।

❒❒

"पुलिस के खुफिया विभाग में पत्रकार कब से होने लगे हैं?" बड़ी बी ने जहरीली मुस्कान के साथ कहा, "मैं तो धोखा खा गई थी। लेकिन माधुरी ने सरदार के नाखूनों पर नेल पॉलिश लगी हुई देख ली थी।"

तीनों स्तब्ध रह गए। यानी भाण्डा फूट चुका था। ऐसे में रसूलन बी उनके साथ कोई भी सलूक कर सकती थी। वैसे भी तलवार थामे खड़े गुण्डों के तेवर काफी आक्रामक लगे थे।

"रसूलन बी, हमारा रास्ता छोड़ दे।" पायल ने अपनी पगड़ी और नकली दाढ़ी-मूंछ उतार कर फेंक दी।

"वाह! तू भी क्या शानदार लड़की है! अब रत्ना के साथ-साथ यह भी इस कोठे की जीनत बनेगी। इन दोनों के कारण हुस्न के बाजार में तहलका मच जाएगा।" रसूलन बी ने जब पायल की सुन्दरता को देखा तो वह व्यंग्यपूर्ण स्वर में बोली थी, "पकड़ो! इन तीनों को। छोकरा अगर ज्यादा पंगेबाजी करे तो इसे भी काट कर रख दो।"

"हम वह नहीं हैं जो तलवारों से कट जाएं।" रोहन ने ठोस स्वर में कहा, "रसूलन बी, हम तीनों ने यहां से सलामत जाना है। खून गिरा कर जाएं या शांति से जाएं। फैसला तुम्हें करना है। रत्ना राणा को हम लेकर जाएंगे, इसे पत्थर की लकीर समझो।"

"वह तो माइक्रोफोन के जरिए सुन ही चुकी हूं। इसमें नया

क्या है? बड़े हमदर्द बन कर आये थे तुम दोनों रत्ना के। इस कोठे की सीढ़ियां एक तरफा हैं। ऊपर तो आती हैं, लेकिन घुंघरू पहने पांवों के लिए सीढ़ियां उतरती नहीं हैं।"

"यानी यहां आने वाले महत्वपूर्ण व्यक्तियों की व्यक्तिगत जिन्दगी के गोपनीय राज जानने के लिए ही तुमने माइक्रोफोन लगवा रखे हैं। जिन्हें रिसीवर के माध्यम से तुम सुन भी सकती हो और रिकॉर्ड भी कर सकती हो।" रोहन ने तीखे स्वर में कहा।

"तेरे इस विशेष कक्ष की यह विशेषता शायद उन लोगों को अवश्य ही पसंद आएगी, जो तेरी ब्लैकमेलिंग के शिकार हैं या जिनके गोपनीय राज तूने दूसरों को बेचे हैं।"

"अब अगर इस बारे में भी तुम तीनों जान चुके हो तो फिर तुम तीनों की जिन्दगी में मौत की शाम करना अनिवार्य हो गया है। काट डालो, तीनों को। वैसे भी रूप की मण्डी में आए-दिन चीखें गूंजती हैं और उन्हें सुनने वाला कोई नहीं होता।"

चारों शोहदे नंगी तलवार लेकर अन्दर की ओर झपटे थे।

लेकिन एकाएक ही उन चारों को ठिठक कर रुक जाना पड़ा था। वह पायल की ही हरकत थी जिसने चारों को आक्रमण के बजाय सुरक्षा की स्थिति में पहुंचा दिया था। वह फटी-फटी दृष्टि से पायल के हाथ में कसे हुए अमेरिकन रिवॉल्वर के रूप में यमदूत की भयानकता को अनुभव कर रहे थे।

"तुम्हें कुछ बातों की जानकारी नहीं है। पहली तो यह कि रिवॉल्वर एकदम असली है। दूसरी यह कि मेरा सौ मीटर तक भी निशाना सच्चा है और तीसरी बात स्वयं को बचाने के लिए कत्ल करने पर कोई भी कानूनी पाबन्दी नहीं। जबकि तुम पांचों की लाशें तुम पांचों की जिन्दगी से ज्यादा बढ़िया होंगी। लेकिन तुम्हारे कर्मों का हिसाब तो ईश्वर ने ही लेना है। मैं तो बचाव में तुम पांचों का कत्ल करूंगी।"

चारों तलवारबाज हड़बड़ा कर पीछे हट गए। उनकी आंखों से आतंक यूं टपक रहा था जैसे टूटे छत्ते से शहद।

"बड़ी बी, तेरे को समझाया था। लेकिन तेरी समझदारी में तो सूरमा भोपाली बैठा हुआ था। इस कारण वहां तो सिर्फ सूरमा भोपाली की आवाज ही पहुंच सकती थी।" फिर वह तलवारबाजों की ओर घूमा, "जिन्दगी चाहते हो तो तलवारों को इतनी जल्दी

comicsmylife.blogspot.in

गिराओ, जितनी जल्दी कोई हथेली पर रेंगते बिच्छू को गिराता है।'' रोहन ने जलते हुए स्वर में अंगारे बरसाए।

उस चेतावनी की अपेक्षित प्रतिक्रिया हुई। चारों ने तलवारें कालीन पर डाल दीं।

''अब अच्छे बच्चों की तरह से दरवाजे के बाहर निकल जाओ। लेकिन नजर आते रहना।'' पायल ने धमकाया था इस बार।

फिर रोहन ने आगे बढ़कर चारों तलवारों को काबू करके उन्हें डबल बैड के नीचे फेंक दिया। फिर हाथ यूं झाड़े, जैसे उन पर धूल लगी हो।

''त...तुम लोग नहीं जानते कि कितनी बड़ी ताकत से टकरा रहे हो तुम!'' बड़ी बी गुराई।

''टकरा तो चुके हैं। अब जो होगा, वह देखा जाएगा। लेकिन अब तू वासना के उन सौदागरों से मदद की कोई उम्मीद मत रख—जिनके गोपनीय राज तूने माइक्रोफोन की मदद लेकर जाने हैं। वह लोग तेरी कोई भी मदद नहीं करेंगे बड़ी बी।''

रसूलन बी के चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। रोहन ने उसकी कमजोर नस पर हाथ रखा था। ब्लैकमेलर का हश्र ब्लैकमेलर बेहतर जानता है।

''आ...आखिर तुम दोनों हो कौन?'' उसने बौखला कर पूछा था।

''जो भी हैं, सिर्फ कायर नहीं हैं। इस कारण निहत्थों को गोली नहीं मारेंगे।'' रोहन ने फिर रत्ना को सहारा दिया था।

वह तीनों रिवॉल्वर के बूते पर बाहर निकले थे।

ठीक तभी...एक करिश्मा हुआ था।

रत्ना राणा रसूलन बी पर झपट पड़ी थी। उसने रसूलन बी की चोटी पकड़ कर कई दमदार तमाचे उसके चेहरे पर मारे और फिर घृणा से उसके चेहरे पर थूक दिया। जिसे बड़ी बी ने रूमाल से पौंछ लिया।

''हरामजादी! कुतिया! तू इस लायक भी नहीं कि तुझ पर थूका जाए। लेकिन फिलहाल तेरी औकात दिखाने का कोई और उपाय नहीं था मेरे पास।'' रत्ना राणा ने खौफनाक अन्दाज में कहा, ''तूने तो इन लड़कियों को उगालदान बना कर रख दिया

है, जिसमें वासना की खार थूक कर ग्राहक तेरे हाथ गर्म करके जाते हैं। मैं तो इसी वक्त तेरी लाश गिरती देखना चाहूंगी। लेकिन इस कलियुग में बुरे लोगों को मौत भी जल्दी नहीं आती।''

□□

रसूलन बी सहम कर पीछे हट गई। वह चारों शोहदे भी पीछे हट गए थे। उस कोठे की तमाम वेश्याएं बाहर आकर भीड़ की शक्ल में उस दृश्य को देख रही थीं। जो उन्होंने अपनी कल्पना में सोचा तो बहुत बार था। लेकिन साक्षात देखा नहीं था। आज देखकर उनकी आत्मा पर ठण्डक पड़ गई थी।

''ऐ छोकरियों! चलो अपनी कोठरियों में। यह हमारे आपस का मामला है।'' रसूलन बी ने युवतियों की ताकीद की। उसे डर था कि कहीं वह भी बगावत पर न उतर आएं रोहन ने भी उसके भय को समझ लिया था।

''क्या तुम शराफत की जिन्दगी नहीं गुजारना चाहती?'' पायल ने युवतियों के समूह को सम्बोधित किया, ''क्या तुम नहीं चाहती कि इस घुटन भरे माहौल से तुम लोगों को मुक्ति मिले?''

''कोठे की सीढ़ियां किसी घर में नहीं उतरतीं। वह सीढ़ियां तो श्मशान घाट तक पहुंचती है।'' रसूलन बी ने गुर्रा कर कहा, ''यह कोठा लाइसेंसी है। यह तमाम युवतियां मेरी जड़ खरीद गुलाम हैं।''

''ईश्वर ने जिन्हें आजाद पैदा किया है उन्हें तुम गुलाम बनाने वाली कौन होती हो? तुममें से जो कोई भी इस नरक कुण्ड से मुक्ति चाहती है, वह मेरे पास आ जाए।'' पायल ने ऊंचे स्वर में कहा।

तब बड़ी हिम्मत करके दो युवतियां आगे आईं जो कम उम्र की थीं। उनकी हिम्मत देख कर चार और लड़कियां भी आगे आ गईं। लेकिन बाकी युवतियां वापिस अपनी कोठरियों की ओर लौट गईं।

''रंडियों का कोठा चलाने वाली यह रसूलन बाई तुम सातों को बख्शेगी नहीं।''

''ज्यादा से ज्यादा तू हमें मौत दे सकती है रसूलन बी। मौत

comicsmylife.blogspot.in

से ज्यादा कुछ दे नहीं सकती। वैसे भी यहां हर पल की मौत मरने से बेहतर है कि आजादी की सांस लेने का प्रयास करते हुए मरें।'' बाकी छ: में से एक ने बेखौफ अन्दाज में कहा।

दूसरी ने उसका अनुसरण किया, ''हम खुद यहां वेश्या बनने नहीं आई थीं। तूने अगर हमारी कीमत दी थी तो हमसे नहीं पूछा था और न ही वह कीमत तूने हमको दी थी। तूने हमारी नीलामी का रोकड़ा उन दल्लों को दिया था जो अपनी मां का भी सौदा कर सकते हैं।''

''यहां से जा तो रही हो। लेकिन अब तुम्हारे घर के दरवाजे भी तुम पर बन्द हो चुके हैं।'' रसूलन बी ने आखिरी हथियार का इस्तेमाल किया था।

''तेरी जैसी रण्डी विधाता से बड़ी कभी नहीं हो सकती?''

फिर रोहन और पायल के नेतृत्व में सातों युवतियां आजादी की सांस लेने के लिए वासना की बेड़ियों से आजाद हो गई थीं।

बात की बात में ही यह बात जंगल में लगी आग की तरह फैल गई थी। कोठों से झांक-झांक कर कई युवतियां उन्हें हसरत भरी दृष्टि से देख रही थीं। लेकिन रिहाई भी उसी को मयस्सर होती है, जिसके भाग्य में वह लिखी गई है। भाग्य भी तब साथ देता है, जब इंसान हौसला करता है। जिनमें हौसला नहीं होता! वह भाग्य के बजाय दुर्भाग्य को स्वयं ही अपनी किस्मत बना लेते हैं।

कुल नौ प्राणी थे। इस कारण एक टैक्सी और बुक की गई थी। लेकिन सवाल यह था कि किस्मत की मारी उन सात नारियों को किस स्थान पर ले जाया जाए। किस तरह उनकी जिन्दगी की सुरक्षा की जाए। पायल काफी संकोच में नजर आ रही थी। वह तय नहीं कर पा रही थी कि उन नारियों को मल्होत्रा निवास पर ले जाया जाए अथवा नहीं।

रोहन ने फिर सुझाव रखा था, ''मेरे ख्याल से बेहतर होगा कि हम इन सातों को मेरे निवास पर ले जाएं।''

''तुम्हारे घर वालों को तो कोई आपत्ति नहीं...''

''इंसान का आचरण ही पारिवारिक माहौल को तय करता है। क्या तुम्हें लगता है कि मेरा सम्बन्ध किसी दकियानूसी और परम्परावादी परिवार से होगा, जो रूढ़ियों के बंधन में जकड़ा

होगा। जिसे समाज में जागृति लाने का कोई शौक नहीं होगा।''

''नहीं, मैं मानती हूं कि तुम्हारा परिवार आज के कल्चर को फॉलो करने वाला होगा। वैसे भी तुम्हारे पिता के विषय में मैं ज्यादा कुछ नहीं जानती हूं। फिर विचारों में 'जनरेशन गैप' भी एक कारण बन जाता है। इस कारण स्थिति को साफ कर लेना ही मैंने बेहतर समझा था।''

''यानी स्थिति साफ हुई?'' वह हंस दिया ताकि माहौल का तनाव कम हो सके। टैक्सी उनकी कार के पीछे-पीछे चल रही थी। जिसमें चार युवतियां थी। बाकी तीनों उनकी कार की पिछली सीट पर मौजूद थीं।

''हां, अब संकोच नहीं रहा। आपके परिवार से मिल कर बाकी संकोच भी दूर हो जाएगा।'' उसने नि:संकोच स्वीकार किया।

''विश्वास रखो।'' उसने सहजता के साथ कहा, ''जहां तुम जा रही हो। वहां सब कुछ तुम्हारे अनुकूल होगा। वापसी में तुम्हें किसी भी प्रकार की ग्लानि नहीं होगी।''

तब राहत नजर आई थी पायल के चेहरे पर।

मल्होत्रा परिवार की कोठी पर पहुंचने के पश्चात पायल ने मदान के एजेन्ट की रिपोर्ट को दुरुस्त पाया। परिवार में सिर्फ रोहन और उसकी माताजी नीलिमा देवी ही थी। उसके पिता घर पर मौजूद नहीं थे। नीलिमा देवी ने उन सभी का स्वागत किया था।

''आज तो रोहन ने कमाल कर दिया है। यह इतना झेंपू किस्म का लड़का है कि आज तक इसने किसी लड़की को मित्र नहीं बनाया। आश्चर्य है कि आज इसने रिकार्ड तोड़ा भी तो आठ लड़कियों को साथ लाकर।'' नीलिमा देवी ने कॉफी के साथ घर में मौजूद नाश्ता उनके साथ करते हुए कहा था।

''कमाल यूं ही नहीं हुआ करते मांजी। हर कमाल के पीछे कोई ठोस वजह होती है।'' पायल ने नीलिमा देवी के चेहरे पर दृष्टि जमाते हुए कहा, ''रोहन ने आज मेरे साथ पुण्य का कार्य किया है।''

''मैं अगर गलत नहीं तो तुम्हारा नाम पायल पाराशर होना चाहिए बेटी। तुम्हारा जिक्र यह अक्सर करता ही रहता है।''

''आपका अनुमान दुरुस्त है मांजी। मेरा ही नाम पायल है।

comicsmylife.blogspot.in

मेरे बारे में रोहन ने अगर कुछ बताया है तो आप समझ गई होंगी कि मैं..." उसने सिर को दो उंगलियों से ठकठकाते हुए आगे कहा, "दिमाग से थोड़ी क्रेक हूं।"

"जो दुनिया से अलग नजर आता है, उसके बारे में साधारण लोग शायद यह सोचें। लेकिन रोहन जैसे बेटे की मां से तुमने गलत उम्मीद रखी है। इतिहास में ज्यादातर बोलबाला सिरफिरों का ही रहा है।"

पायल ने तब महसूस किया था कि सामने बैठा रोहन अगर विद्वान है तो नीलिमा देवी भी विदूषी हैं।

"मांजी, मैं आपसे कोई बात छिपाना नहीं चाहती। मेरे साथ जो यह सात मासूम युवतियां हैं। मैं इनके विषय में आपको बता देना चाहती हूं। दरअसल मैं नहीं चाहती कि आप बाद में कहें कि सच्चाई आपसे छिपा कर रखी गई। मुझे रोहन ने आश्वस्त किया था। इस कारण मैं इन्हें यहां लाई हूं।"

"तुम यही कहना चाहती हो न बेटी कि यह सातों भटकी हुई युवतियां हैं। जिनका दुर्भाग्य इन्हें जिस्म की मण्डी में ले गया था। अब सौभाग्य मेहरबान हुआ है तो यह सातों उस मण्डी से आजाद होकर खुले आकाश के नीचे सांस ले रही हैं।"

"यानी रोहन ने आपको बता दिया था।"

"मां और बेटे के बीच ऐसी कोई बात नहीं होनी चाहिए, जो बेटा मां से और मां बेटे से न कह सकें। रोहन ने जो कुछ भी किया उस पर मुझे फख्र है। साथ ही मैं तुम्हारी भी प्रशंसा करूंगी कि अमेरिकन होने के पश्चात भी तुम नारी का सम्मान करती हो।"

"अब तो सुकून मिल गया न पायल ?" रोहन ने शरारत भरे अन्दाज में कहा।

"हां। लेकिन पूरा सुकून तब मिलेगा। जब मैं अपना मिशन पूरा करूंगी।"

"अधूरा मिशन ?"

"मुझे अपनी इन सात बहनों को इस योग्य बनाना है कि पाप की लंका जलाने के बाद यह आत्मनिर्भरता के रामराज्य को महसूस कर सकें। इन्हें ऐसा व्यवसाय करना चाहिए, जिससे यह शराफत की जिन्दगी गुजार सकें।" पायल का चेहरा तब बेहद गंभीर हो गया था।

वह सातों भी नम आंखों के साथ उन तीनों को देख रही थीं। क्योंकि एक लम्बे समय के पश्चात उन्हें घर जैसा माहौल प्राप्त हुआ था। जहां उनकी चिन्ता घर के सदस्यों की भांति ही की जा रही थी।

"बेटी, तुम लोग क्या कर सकती हो ?" नीलिमा देवी ने सातों को सम्बोधित किया।

"हम घर के तमाम कार्य कर लेती हैं।" रत्ना ने जवाब दिया।

"क्या तुम सातों मिल कर मैस चला सकती हो ?" रोहन ने चौंक कर पूछा, "दरअसल मेरा एक मित्र है। उसकी कंस्ट्रक्शन कम्पनी के दो हजार लोग दिल्ली आए हुए हैं। सभी पुरुष सदस्य हैं और उन्हें मैस की सुविधा भी चाहिए।"

"नारी तो साक्षात अन्नपूर्णा का रूप होती है।" नीलिमा देवी ने शीघ्रता से कहा, "इस सुनहरे अवसर का तुम्हें लाभ उठाना चाहिए। वैसे चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। कुछ सहायक नौकर भी तुम लोग रख सकती हो।"

सातों की आंखों में उम्मीद की लौ झिलमिलाने लगी।

"हम यह कार्य कर लेंगी भइया।" रत्ना राणा ने शीघ्रता के साथ कहा, "लेकिन मैस चलाने के लिए जगह और दूसरे समानों की जरूरत होगी।"

"कितना रुपया लग जाएगा इसमें ?" पायल ने रोहन को सम्बोधित किया।

"यदि उन्हें जमीन पर बैठा कर पत्तल-दोने में खाना खिलाया जाए, तो कोई विशेष खर्च नहीं आएगा। जो खर्च आवश्यक होगा। उतना एडवांस रुपया मैं अपने मित्र से दिलवा सकता हूं।" रोहन ने पायल को आश्वस्त किया।

"लेकिन उन दो हजार व्यक्तियों के भोजन की व्यवस्था किस स्थान पर की जाएगी ? दो हजार व्यक्तियों की रिहाइश के आस-पास ही वह जगह होनी चाहिए।" रत्ना ने राय दी।

"हां, यह तुम ठीक कह रही हो रत्ना।" पायल ने फिर रोहन को सम्बोधित किया, "तुम्हारे मित्र ने दो हजार लोगों के रहने का भी इन्तजाम किया होगा ?"

"हां, उसने इन्तजाम किया है। दिल्ली नगर निगम के द्वारा

comicsmylife.blogspot.in

उसका टेण्डर पास हुआ है। वह टेण्डर दो हजार करोड़ रुपयों की लागत का है। उसने दो वर्ष में पचास हजार क्वाटर्स का निर्माण करना है। यह निर्माण कार्य गुड़गांव और दिल्ली के बीच किया जा रहा है। ताकि कमजोर तबके के लोगों के कल्याण हेतु आवास उपलब्ध कराए जा सकें। उन क्वाटर्स में सार्वजनिक पार्क, सामुदायिक भवन व खेल मैदान की भी सुविधा है। अतः उसी स्थान पर दो हजार कर्मचारियों के रहने के लिए टिन शेड लगा कर इन्तजाम आरम्भ किए गए हैं। उसी स्थान पर मैस आरम्भ करने की भी जगह मिल जाएगी।''

''वाह! फिर तो मैस का यह प्रयोग निसन्देह कामयाब साबित होगा।'' पायल ने प्रशंसा की। उसकी आंखों में उम्मीद के चिराग जल उठे।

''तुमने उस मित्र का कभी जिक्र नहीं किया बेटे?''

''आपको बताना भूल गया मम्मी। पिछली रात को ही उसका फोन आया था। मैंने आपको जगाना उचित नहीं समझा और सुबह मुझे बताना याद नहीं रहा।''

''फिर भी वह मित्र कौन है?''

''वासुदेव कुमारन की याद है आपको?''

''वह आंध्र प्रदेश वाला?''

''हां, दो वर्ष पूर्व उसकी शादी आंध्र प्रदेश के बिल्डर की बेटी से हुई थी। वह अपने फादर इन लॉ के साथ मिल कर काम कर रहा है। इस बार उसने स्वतंत्र रूप से यह टेण्डर लिया है। क्योंकि वह फादर इन लॉ पर ही आश्रित नहीं रहना चाहता।''

''यह तो बहुत अच्छी बात है। लेकिन उस नालायक ने मुझे भी याद किया या नहीं?''

''वह आपके हाथ के बाफला बाटी, चूरमे के लड्डू, दाल और गट्टे की सब्जी को बहुत याद कर रहा था। कह रहा था कि एक दिन आएगा और पेट भर कर खाएगा। फिर चाहे उसे डायरिया (दस्त) ही क्यों न हो जाए।''

रोहन की इस बात पर सभी कहकहा लगा कर हंस पड़े थे। यह जीवन भी कितना विचित्र होता है। कुछ घण्टे पहले जो सात युवतियां वासना की दलदल को अपना भाग्य समझ कर गुलामी भोग रही थीं। वह महज चन्द घण्टों पश्चात गुलामी की बेड़ियां

काट कर सहजता से हंस रही थीं। सच ही है—इंसान वातावरण और परिस्थिति के अनुरूप ही आचरण करता है।

❒❒

वासुदेव कुमारन सांवली रंगत का खुलादिल इंसान था। बिल्डर के रूप में स्वयं उसका नाम भी अपनी अलग पहचान बना चुका था। बावजूद इसके, उसमें अहंकार नहीं आया था।

यही कारण था कि रोहन अपने साथ आठ युवतियों के काफिले को लेकर उसके होटल सूइट में पहुंचा तो उसके चेहरे पर अप्रियता की शिकन के बजाय प्रसन्नता की ढेरों खुशी थिरक उठी।

''वाह! वॉट ए प्लेजेंट सरप्राइज।'' उसने चहक कर उन सभी का स्वागत किया था, ''मुझे उम्मीद नहीं थी कि तुम आज ही आ जाओगे।''

''यानी मानते हो कि मैं तुम्हारी उम्मीदों पर भारी साबित हुआ हूं।''

''भाई मेरे, फोन तो कर दिया होता।''

''रिसेप्शन पर फोन करके पता कर लिया था। तुम्हें इस कारण फोन नहीं किया था, क्योंकि मैं तुम्हें चौंका देने का इरादा रखा था।''

''तुम सेनापति बन कर आए हो। लेकिन सेनापति के साथ सेना का औचित्य समझ में नहीं आया!'' उसने युवतियों पर उचटती दृष्टि डाली।

''तुमने जो काम बताया था। यह सभी उस कार्य को पूर्ण करेंगी। लेकिन अपने बूते पर आश्वासन देने के बजाय मैं इनकी बातचीत तुमसे से डायरेक्ट करवाना चाहता था।''

''ओह! वह मैस वाला काम?'' उसने शीघ्रता से पूछा।

''हां, वह मैस वाला काम। इन सात युवतियों को काम की [illegible] भी दो।''

''दो हजार व्यक्तियों की मैस चला सकेंगी यह? पीछे ऐसा कोई कार्य करती रही हैं?'' कहने के पश्चात उसने युवतियों की ओर देखा। गोया उनसे जवाब चाहता हो।

उनकी ओर से पायल ने जवाब दिया, ''माउण्ट एवरेस्ट पर तेनसिंह नोर्गे पहुंचा था तो वहां पहुंचने का उसे कोई अनुभव नहीं

comicsmylife.blogspot.in

था। नीलआर्म स्ट्रांग ने जब चन्द्रमा पर पहला कदम रखा तो उसे भी उसका अनुभव नहीं था। यह छः लड़कियां भारतीय नारी हैं और भारतीय नारी खाना बनाने में पारंगत होती है और आग्रह करके खिलाने में भी। सबसे बड़ी बात यही है मिस्टर कुमारन कि जब आप उंगली थाम कर किसी स्कूल में गए होंगे तो वहां आपसे यह नहीं पूछा गया होगा कि आपको पिछले स्कूल का अनुभव है या नहीं।''

वासुदेव चकित रह गया। जबकि पायल की बातों ने रोहन का चेहरा धुआं-धुआं कर दिया। उसे लग रहा था कि वासुदेव कहीं बुरा न मान जाए।

लेकिन शीघ्र ही वासुदेव के चेहरे पर एक दिलकश मुस्कान नृत्य करने लगी।

''क्या आप ही इनकी इंचार्ज हैं ?'' उसने पायल पर दृष्टि फोकस करते हुए पूछा।

''नहीं, मैं इनकी इंचार्ज नहीं। लेकिन इनकी खैरख्वाह अवश्य हूं। मैं इनकी मदद करना चाहती हूं। मैं चाहती हूं कि दुनिया के सामने यह उदाहरण पेश करें कि लाचारगी और बेचारगी के सम्मुख समर्पण करने के बजाय हौसले की किरण का स्वागत करना चाहिए।''

''यह पायल हैं।'देशभक्त' दैनिक समाचार पत्र के मालिक की भतीजी जो अमेरिका से आई हैं। यह एक शोध-ग्रंथ तैयार कर रही हैं। जिसके लिए कुछ व्यावहारिक अनुभवों का संकलन कर रही हैं।''

''ओह! आई सी। मैं भी सोच रहा था कि भारतीय नारी में इतनी बोल्डनैस कैसे आ गई। खैर, मैं मिस पायल की तकरीर से सहमत हूं। अनुभव की जरूरत वहां नहीं होती, जहां मजबूत इरादा हो। मैं अपने दो हजार कर्मचारियों का खाना बनाने के लिए इन्हें मैस चलाने का अनुबंध दूंगा। शुरू में यह अनुबंध एक माह के लिए होगा। फिर बाद में इसे दो वर्ष के लिए स्थायी कर दिया जाएगा।''

बाकी छः के चेहरे पर प्रसन्नता के भाव थिरकने लगे।

''थैंक्स ए लॉट यार। तुमने बहुत बड़ा अहसान किया है मुझ पर।''

''तुझ पर! तुम्हारा इन युवतियों से क्या रिश्ता है ?''

''वही जो दीपक का रोशनी के साथ होता है। मैं इनके लिए दीपक हूं और मेरी प्रेरणा को यह रोशनी के समान समझ रही हैं।''

''तुम तो पहेलियां बुझा रहे हो सरस्वती नन्दन! साफ-साफ कहो, इनका तुम दोनों से क्या संबंध है ?''

''मैं बताती हूं। इनके साथ हमारा वही रिश्ता है, जो इंसान का इंसानियत के प्रति होता है। भक्त के विश्वास का ईश्वर के साथ होता है। इन छहों को हमने...'' फिर पायल ने पूरी सच्चाई बता दी थी।

उस सच्चाई को सुनकर वासुदेव कुमारन गम्भीर हो गया। जाहिर था कि वेश्यावृति का धंधा करने वाली नारियों को रसोई तैयार करने के चार्ज का एग्रीमेंट देते हुए वह संजीदगी से विचार कर लेना चाहता था।

''देखो, मैं तुम्हारी और रोहन की प्रशंसा करने के अलावा इन छः बहादुर युवतियों की भी दाद देता हूं। वाकई तुम दोनों ने नेक कार्य किया है। लेकिन सर्वाधिक खुशी मुझे इस बात की है कि तुम मुझे भी इस नेक कार्य में शरीक कर रहे हो।''

''हवन करते समय हाथ जल भी जाते हैं मिस्टर कुमारन।'' पायल ने पुनः कहा, ''वह लोग इन मासूमों के पीछे पड़े हुए हैं, जिन्होंने दावा किया था कि जहाज और कोठे का पंछी चाहे कितनी देर और दूर तक उड़े लेकिन अंततः उसे वहीं लौटना पड़ता है।''

''यानी उन लोगों के द्वारा दुष्प्रचार किया जाएगा।'' कुमारन ने चौंक कर पूछा।

''नंगा शख्स अगर बदला लेने पर उतर आए तो फिर वह किसी भी हद तक जा सकता है।'' रोहन ने बेबाकी के साथ स्वीकार किया।

''ओह! यह तो समस्या हो गई। मैं साफ बता देना चाहता हूं कि मेरे साथ जो दो हजार अन्य कर्मचारी यहां पर आएंगे। वह ज्यादातर ट्रिप पर ही रहते हैं। इस कारण बीवी बच्चों के पास समय गुजारने के लिए वह छुट्टियों में ही जा पाते हैं। जाहिर है कि अधिकतर समय घर से दूर होने के कारण उन्हें पेट और जिस्म

comicsmylife.blogspot.in

दोनों की ही भूख लगती है। इस कारण वह लोग अक्सर ही कोठों पर जाया करते हैं। उनमें से कुछ व्यक्तियों को अपवाद माना जा सकता है, जो पत्नी के प्रति वफादार हैं। लेकिन उनकी संख्या उंगलियों पर की जा सकती है। उन वेश्याखोरों को यदि मालूम होगा कि उनकी मैस का खाना ऐसी लड़कियों द्वारा बनाया जा रहा है, जो वेश्यावृति के धंधे में लिप्त रही हैं, तो वह मैस के बहिष्कार की बात करेंगे। उनका तर्क होगा कि वेश्या के हाथ का बना खाना नहीं खाएंगे। जबकि वह वासना के अधीन होकर वेश्याओं के हाथ तो क्या होंठ भी चूमते रहे होंगे। कथनी और करनी का यह फर्क होगा उन लोगों में। तुम मेरी परेशानी समझ सकते हो।''

''आपकी परेशानी वाजिब है मिस्टर कुमारन। लेकिन उन लोगों को यदि प्यार से समझाया जाए तो कोई वजह नहीं कि वह सहमत न हो जाएं।'' रत्ना राणा ने धीमे से कहा, ''कोई भी नारी स्वयं वेश्या नहीं बनती। हमारे साथ जो हादसा घटा है, वह उनकी बहन-बेटियों के साथ भी घट सकता है।''

''मैं तुम्हारे तर्क से सहमत हूं। लेकिन दो हजार ऐसे लोगों को समझाना आसान नहीं जिनकी बुद्धि का पैमाना निम्न स्तर का होता है।''

''यदि उन लोगों द्वारा स्वीकार कर लिया जाए तो?'' पायल ने कुमारन की आंखों में झांका।

''यदि ऐसा हो जाए तो जितनी खुशी आपको होगी। उससे कम खुशी मुझे नहीं होगी।'' उसने विशाल हृदय के साथ कहा।

''ठीक है, मैं यह चैलेंज स्वीकार करती हूं। लेकिन उन दो हजार कर्मचारियों को सम्बोधित करने का अवसर मुझे अवश्य ही मिलना चाहिए। वह अवसर कब मिल सकता है?''

''कल ही मिल जाएगा। मैंने कल उन्हें साइट पर ले जाना है, जहां उनकी रिहाइश का इन्तजाम किया जा रहा है। उन्हें वहां सम्बोधित किया जा सकता है।''

''लेकिन कल मैंने तो जयपुर जाना है पायल। वहां ज्योतिष सम्मेलन की कवरेज करनी है।'' रोहन चौंक कर बोला।

''तुम निश्चिंत होकर जा सकते हो। मैं उन्हें समझाने का पूरा प्रयास करूंगी। मुझे यकीन है कि वह अपनी कमअक्ली के जाल

में अवश्य ही फंस जाने वाले हैं।''

''कमअक्ली के जाल में?'' वासुदेव कुमारन चौंका।

''हां, अक्लमंद को अक्ल से और कमअक्ल को भावनाओं द्वारा काबू किया जा सकता है। वैसे बेहतर होगा कि यह चमत्कार आप कल ही देखें।''

''मैं तैयार हूं। क्योंकि मैं तुम लोगों का साथ देना चाहता हूं। मैं तो यहां तक भी सहमत था कि उन्हें बताए बिना ही मैस आरम्भ कर दी जाए। लेकिन आप लोगों का मानना है कि वासना के सौदागर हकीकत उजागर करने के लिए कमर कसे बैठे हैं। इस कारण पर्दादारी करना ठीक नहीं समझ रहा।''

''सच्चाई कुछ देर अप्रिय अवश्य लगती है। लेकिन उसे बयान करने का सही ढंग चाहिए।''

''हां, यह ठीक बात है मिस पायल। बेहतर तो यही रहेगा कि आप ही उन्हें सम्बोधित करें।''

''लेकिन मैं आपसे एक फेवर चाहूंगी।''

''बेशक! बोलो?'' उसने प्रश्न भरी दृष्टि से देखा।

''आपको...'' फिर उसने अपना सुझाव पेश किया। जिसे सुन कर सभी के चेहरे खिल उठे।

□□

रत्ना राणा एण्ड पार्टी की सुरक्षा के मद्देनजर उन सातों को होटल में ही दो सुइट दिलवा दिए गए थे। साथ ही सिक्योरिटी को चौकस कर दिया गया था कि दोनों सुइट पर विशेष निगरानी रखी जाए।

तत्पश्चात वह रोहन के साथ कोठी पर वापिस लौटी थी मल्होत्रा साहब की कोठी के बाहर पुलिस की जिप्सी खड़ी हुई थी। यह देख कर दोनों ही चौंके थे। माजरा उनकी समझ में आ गया कि यह हरकत रसूलन बी के द्वारा अंजाम दी गई होगी।

जब वह दोनों ड्राइंग रूम में पहुंचे तो उन्होंने दीनानाथ मल्होत्रा साहब के सामने एक अधेड़ उम्र पुलिस ऑफिसर को मौजूद पाया। जिसकी वर्दी पर डी.सी.पी. अशोक खन्ना के नाम-पद की तख्ती लगी हुई थी।

''बैठो बेटी।'' मल्होत्रा साहब ने गम्भीर स्वर में कहा, ''यह तो नादान है रोहन। लेकिन तुम तो समझदार हो। तुमने जो

comicsmylife.blogspot.in

हरकत की है, उससे पुलिस केस बन जाने वाला है।''

पायल बैठने का उपक्रम कर रही थी। लेकिन जब रोहन को डांटते हुए सुना तो वह खड़ी हो गई।

''आप गलत शख्स को डांट रहे हैं अंकल।'' उसने तुरन्त आपत्ति की, ''रोहन को मैं अपने साथ लेकर गई थी न कि रोहन मुझे ले गया था।''

''पायल तुम यह समझने की कोशिश करो कि यह अमेरिका नहीं बल्कि इण्डिया है।''

''मैं यह समझती हूं अंकल। यदि अमेरिका और इण्डिया के बीच का भेद मुझे मालूम न होता तो मैंने रोहन को आज उस बदनाम बाजार में नहीं ले जाना था।''

''मैं तुम दोनों से कुछ सवाल करना चाहता हूं।'' डी.सी.पी. अशोक खन्ना ने वार्तालाप में हस्तक्षेप किया, ''उम्मीद करता हूं कि तुम दोनों में से कोई भी झूठ नहीं बोलेगा।''

''आप इत्मीनान रखिए ऑफिसर। हमें झूठ बोलने की कोई आवश्यकता ही नहीं है।''

''दैट्स गुड। अब यह बताओ कि वह सातों युवतियां कहां हैं, जिन्हें तुमने रसूलन बी के कोठे से अगवा किया था?''

''जवाब अवश्य दिया जाएगा। लेकिन हमने उन्हें अगवा नहीं किया है। बल्कि हमने उन्हें मुक्त किया है।''

''मुक्त किया है! मैं पूछ सकता हूं कि किस हैसियत से आपने यह कार्य किया?'' अशोक खन्ना ने फिर ठण्डी सांस भरी और पूछा, ''पुलिस की हैसियत से? कानून का कोई आदेश था आपके पास?''

''क्या भलाई करने के लिए इस देश में कानून की इजाजत लेना आवश्यक होता है मिस्टर खन्ना?'' पायल ने कठोर स्वर में पूछा।

''कानून हाथ में लेकर भलाई करना हर देश में गुनाह है। एक लायसेंसी चकला घर में वेश्याएं ही मिलेंगी। यदि वहां जबर्दस्ती नारियों को वेश्या बनाकर रखा जाता है तो आप पुलिस में कम्पलेंट करते।''

''और कम्पलेंट होने तक रत्ना राणा को किसी अन्य कोठे पर ट्रांसफर कर दिया जाना था।'' पायल ने दलील पेश की।

''बेशक किया जा सकता था। लेकिन कानून की यही प्रक्रिया न्यायोचित थी।''

''डी.सी.पी. खन्ना साहब, क्या आप उस इलाके के इंचार्ज हैं?'' रोहन ने कठोर स्वर में पूछा।

''हां, वरना मैं क्यों आता?''

''दुरुस्त फरमाया आपने। क्या मैं आपसे यह पूछने की धृष्टता कर सकता हूं कि रेड लाइट एरिये के चकलाघरों में आपने कब-कब पुलिस फोर्स भेजी? ताकि आप यह जान सकें कि वहां जबर्दस्ती किसी युवती को वेश्या बनने पर मजबूर तो नहीं किया जा रहा?''

''सवाल पूछने का हक मेरा है, तुम्हारा नहीं मिस्टर रोहन।'' डी.सी.पी. खन्ना गुर्राया।

''एक पत्रकार के रूप में मैं आपसे सवाल कर रहा हूं। न्यायपालिका और कार्यपालिका में यदि भ्रष्टाचार हो तो एक पत्रकार को जवाब देना पड़ता है।''

''रोहन, कण्ट्रोल युअर सेल्फ। डी.सी.पी. खन्ना मेरे अच्छे मित्रों में से एक हैं। इनके साथ तुम दोनों ने सहयोग करना है और इसे मेरा आदेश समझो।''

''मेरा नाम रोहन शर्मा है मल्होत्रा साहब। भ्रष्टाचार और रिश्वतखोर के सामने घुटने टेक देने की बात तो मेरे जहन में यमराज भी पैदा नहीं कर सकता। फिर मैं आपकी नौकरी करता हूं तो उसका फायदा आपको मिलता है। वरना कोई किसी को चार पैसे मुफ्त में देने को राजी नहीं। ज्यादा से ज्यादा आप मुझे नौकरी से ही निकाल सकते हैं। लेकिन यह मत भूलिए कि काबिल शख्स के लिए दरवाजे कभी बन्द नहीं होते।''

''तुम मुझे धमकी दे रहे हो, रोहन शर्मा! जानते हो कि मैं तुम्हारे पिता की उम्र का हूं और उनका मित्र भी।'' मल्होत्रा ने शुष्क स्वर में कहा।

''आप यह साबित कहां कर रहे हैं कि आप मेरे पिता तुल्य हैं? पहले आप तमाम घटनाक्रम पायल के मुख से सुन लीजिए। उसके बाद फैसला कीजिए कि मैंने आपसे कोई भी गलत बात कही है अथवा नहीं।''

''इस नादान बच्ची से क्या पूछना है?''

comicsmylife.blogspot.in

''मैं नादान नहीं हूं अंकल। मैं डाक्टरेट करने जा रही हूं। दरअसल रोहन को मैंने ही कहा था कि उसने आज मेरे साथ रूप बाजार जाना है।''

''जान सकता हूं क्यों ?''

''मेरी पी.एच.डी. की डिग्री का विषय है 'रिश्ते-नाते।' मैं एक कोठे पर जाकर देखना चाहती थी कि बहन, बेटी, पत्नी और मां का दर्जा रखने वाली नारी को बेशर्म बनने पर किन रिश्तों के दबाव ने मजबूर किया था। रसूलन बी के कोठे पर...'' फिर उसने पूरा विवरण प्रस्तुत किया।

''सॉरी रोहन बेटे। मैं शायद जोश में तुम्हें गलत कह गया। लेकिन तुम्हें डांटने का अधिकार मुझे है।'' अपनत्व लौट आया था स्वर में।

''बेशक है सर। लेकिन अन्याय करने का अधिकार तो मैं अपने पिता को भी नहीं दूंगा। जिनका मैं उतना ही सम्मान करता हूं जितना कि ईश्वर का। आपके पास तो मैं महज नौकरी ही कर रहा हूं।''

''गलती क्या सिर्फ छोटे ही करते हैं ? नहीं, बड़ों से भी गलती हो जाती है बेटे।'' फिर दीनानाथ मल्होत्रा ने डी.सी.पी. खन्ना की ओर घूमते हुए कहा, ''पायल ने सच्चाई बयान की है। रसूलन बी ने आपके पास जो रिपोर्ट दर्ज करवाई है वह सरासर झूठी है।''

''लेकिन रिपोर्ट पर एक्शन तो लेना पड़ेगा। यूं रिवॉल्वर की नोक पर सात वेश्याओं का अपहरण करके ले जाना सरासर गैरकानूनी था।''

''क्या एक्शन लेना चाहते हैं आप खन्ना साहब ?'' पायल ने व्यंग्यपूर्ण स्वर में पूछा।

''जाहिर है कि मैं आप दोनों को अरेस्ट करूंगा और अदालत में पेश करूंगा। उसके बाद अदालत देखेगी कि आप दोनों गुनहगार हैं या नहीं। आप दोनों के खिलाफ एक सौ पन्द्रह गवाह भी हैं।'' डी.सी.पी. अशोक खन्ना ने फौरन ही भावी कार्यवाही का डरावना मंजर साकार किया। हां, आप भी गवाह पेश कर सकते हैं।''

''मेरा गवाह तो मेरा राम है खन्ना साहब आप बेशक मुझे

गिरफ्तार कर सकते हैं।''

''मिस्टर खन्ना, आप यहां किसी को गिरफ्तार नहीं कर सकते। इसे आप हिदायत समझ लीजिए, चैलेंज नहीं।'' दीनानाथ मल्होत्रा ने इस बार खुल कर रोहन और पायल का पक्ष लिया था, ''मेरे अखबार के सहायक-उप सम्पादक और मेरी भतीजी को गिरफ्तार करने से पहले आपको लोहे के चने चबाने पड़ेंगे।''

''म...मल्होत्रा साहब इनके खिलाफ मैंने एफ.आई.आर. दर्ज की है।''

''बेशक की है। जबकि मैं इनकी अग्रिम जमानत करवा चुका हूं। यह देखिए एन्टीसिपेटरी बेल के कागजात।'' मल्होत्रा साहब ने जेब से कोर्ट का आदेश-पत्र निकालकर बढ़ाया। डी.सी.पी. खन्ना के साथ-साथ पायल और रोहन भी चौंक उठे थे।

''राइट मिस्टर मल्होत्रा। मैं इजाजत चाहूंगा।'' डी.सी.पी. खन्ना फिर उठ खड़ा हुआ। लेकिन वह अंगारों की सेज पर था। वह बात उसके हाव-भाव दर्शा रहे थे।

जाहिर था कि रेड लाइट एरिये से उसे भारी कमाई होती थी।

□□

''अ...आपने 'एंटीसिपेटरी बेल' कब प्राप्त कर ली थी सर ? आपको कैसे मालूम हुआ कि रसूलन बी के कोठे पर हमने कोई उत्पात मचाया है ?'' रोहन ने आश्चर्य से पूछा।

इस सवाल का जवाब सुनने के लिए पायल भी बेकरार नजर आ रही थी।

''कई समुद्र लांघ कर मेरी भतीजी-बिटिया आई है। इसके पिता श्री कौटिल्य पाराशर ने मुझ पर पूरा विश्वास किया। इस कारण पायल की हिफाजत के बारे में सोचना मेरा कर्तव्य नहीं बल्कि धर्म हो गया था। प्राइवेट डिटेक्टिव भागीरथ मदान मेरा दोस्त है। उसने अपने तीन एजेण्ट तुम्हारी निगरानी पर रखे हुए हैं। मुझे यह भी मालूम है कि तुम दोनों फाइव स्टार होटल 'ओलम्पिक' से आ रहे हो। जहां तुम्हारी मुलाकात वासुदेव कुमारन नाम के बिल्डर से हुई, जो आंध्र प्रदेश से आया हुआ है।''

दोनों के नेत्र फटे के फटे रह गए।

comicsmylife.blogspot.in

"हम सोच रहे थे कि दादाजी को चश्मे के बिना नजर नहीं आता। इस कारण शरारत कर ली जाए।" उसने एक अमेरिकन मुहावरा प्रयोग किया, "लेकिन यह मालूम नहीं था कि दादाजी के पास शरारते सूंघने का चश्मा अलग से रखा हुआ है!"

"पायल बेटी, बुजुर्ग अगर लापरवाह न हों, तो वह हर शरारत पर दृष्टि रख सकता है। तुम लोगों की उम्र मैंने भी गुजारी है। तब मेरा भी जवान खून काफी गर्म था। तुमने तो सात ही लड़कियों को मुक्त करवाया था। मैं पूरा बाजार ही खाली करवा देता।"

"म...मैं क्षमा चाहता हूं सर। म...मैंने आपको समझने में भूल कर दी!" रोहन ने भावुक अंदाज़ में हाथ जोड़ते हुए शर्मिन्दगी महसूस की।

"मुझे ईश्वर जैसा सम्मान नहीं चाहिए बेटे। लेकिन मुझे शैतान समझ कर मेरा निरादर किया जाए, यह बात भी मैं स्वीकार नहीं करूंगा। मैंने सोचा था कि मेरे मित्र क्रांतिदूत शर्मा का पुत्र मेरे को अंदर-बाहर से समझ चुका होगा। लेकिन वह पारखी दृष्टि तुम्हें नहीं मिली, जो तुम्हारे पिता के पास है।"

"इस अपराध का प्रायश्चित हो तो कैसे सर?" उसका स्वर भर्रा उठा था।

"पागल हो गए हो! बच्चों का काम है शरारत करना और बड़ों का काम है शरारतों को क्षमा करना।" इतना कहते हुए दीनानाथ मल्होत्रा ने रिसीवर उठा कर नम्बर डायल किया था।

रोहन की दृष्टि डायल होते फोन नम्बर पर थी। सात अंकों का वह फोन नम्बर पुलिस कमिश्नर नायडू का था।

वह समझ गया कि मल्होत्रा साहब पूरे घटनाक्रम से पुलिस कमिश्नर को अवगत कराना चाहते हैं। ताकि डी.सी.पी. अशोक खन्ना की उड़ान को रोकने के लिए उसके पर कतरे जा सकें।

पांच मिनट में संक्षिप्त वार्तालाप के पश्चात मल्होत्रा साहब ने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया।

"किससे बात कर रहे थे अंकल?" पायल ने जानना चाहा।

"पुलिस कमिश्नर मिस्टर नायडू से।" रोहन बोला।

"तो गोया डायल होते हुए नम्बर से ही पहचान लिया था तुमने!"

"ऐसी हस्तियों के फोन नम्बर तो याद रखने ही पड़ते हैं सर!" वह झेंपते हुए बोला।

"दैट्स गुड! हां, कल सुबह तुम जयपुर जा रहे हो। मैं चाहता हूं कि तुम इस घटना के विषय में भूल कर जयपुर जाओ। मिस्टर नायडू ने कहा है कि वह इस मामले को ठण्डे बस्ते में पहुंचा देंगे। रसूलन बी ने अगर ज्यादा उछलने की कोशिश की तो फिर उसे अपने कर्मों की सजा मिल जाएगी। मैं नहीं चाहता कि एक वेश्या के साथ इंतकाम लेने के लिए मेरा नाम जोड़ा जाए।" दीनानाथ मल्होत्रा का स्वर गंभीर था।

"यस सर! आप ठीक कह रहे हैं। वह छिछोरी औरत आपकी दुश्मनी के भी लायक नहीं है।"

"अब तुम जाओ रोहन। कल तुम्हें जयपुर के लिए सुबह जल्दी ही निकलना होगा।"

रोहन सहमति में सिर हिला कर उठ खड़ा हुआ। तब पायल भी उसे पोर्च तक छोड़ने के इरादे से गई थी।

❑❑

रोहन जयपुर के लिए जा चुका था। जबकि कोठी में अकेली नीलिमा देवी ही रह गई थीं। पति और पुत्र की अनुपस्थिति को कोठी का सन्नाटा आज ज्यादा मजबूती से बयान कर रहा था।

"नाथ! समझ में नहीं आता कि आपकी ऐसी क्या मजबूरी थी, जिसने आपको हमसे बिछुड़ने के लिए विवश कर दिया। आखिर ऐसी क्या वजह थी नाथ, जो पांच करोड़ रुपयों की खातिर आपको पुत्र और पत्नी का त्याग कर देना पड़ा?" पति की आदमकद तस्वीर के सामने नीलिमा देवी का भर्राया स्वर गूंज रहा था, "दौलत को आपने अपने जीवन में कभी भी महत्व नहीं दिया। फिर उम्र के ऐसे मुकाम पर जहां पुत्र ने तमाम जिम्मेदारियां ले ली थी। आपने धन के लिए गृह त्यागा? जबकि आप तो कहा करते थे नाथ कि रोहन जैसे ही जिम्मेदारी उठाने वाला होगा, उसका विवाह करके आप मेरे साथ तीर्थ यात्राओं पर रवाना होंगे! आखिर आपका वचन किस मजबूरी के सामने हार गया नाथ?"

लेकिन तस्वीर ने भला क्या जवाब देना था। पति के अधरों पर दिलकश मुस्कान उसी प्रकार कायम रही थी।

comicsmylife.blogspot.in

जब विदा होते पति ने ही रहस्य का ताला नहीं खोला था तो बेजान तस्वीर कैसे कुछ कह सकती थी।

फिर वह सिसककर बोली, ''मैं आपकी जिन्दगी में अर्द्धांगिनी बन कर आई थी नाथ, आपके जिस्म का आधा हिस्सा! इस कारण आपके हर सुख-दुख में मैं बराबर की हिस्सेदार थी। आपने सुख में तो हिस्सा दिया, लेकिन दुख की धूप को आपने नहीं बांटा। अब पत्र में इस बात की इजाजत दे दी है नाथ कि मैं आपकी डायरी में वह कारण देख लूं, जिसके कारण आपको गृहत्याग करना पड़ा था। लेकिन मेरा पुत्र उस कारण को नहीं जान सकता तो फिर उसकी मां होने के नाते मैं किस प्रकार उस डायरी को छूने का साहस कर सकती हूं! मुझे यही लगेगा कि अपने पुत्र की योग्यता पर मुझे संदेह है। मैं पुत्र को हौसला देना चाहती हूं। उसका हौसला तोड़ना नहीं चाहती नाथ!''

तभी कॉलबेल की घण्टी ने उनका ध्यान भंग किया। बहते हुए आंसुओं को उन्होंने आंचल से पोंछा और फिर द्वार की ओर आकृष्ट हो गई।

मैजिक आई से उन्होंने झांककर देखा। द्वार पर पायल कौटिल्य पाराशर मौजूद थी।

नीलिमा देवी ने शीघ्रता से द्वार खोल दिया।

पायल अंदर पहुंची तो उसके पास सफारी बैग देखकर नीलिमा देवी चौंकी।

''कहीं जाना है पायल बेटी?'' नीलिमा देवी ने सफारी बैग को देखते हुए पूछा।

''नहीं, मैं यहां रहने के लिए आई हूं आण्टी। रोहन की वापसी तक आप अकेली रहेंगी, इस कारण सोचा कि आपको भी साथ मिल जाएगा।'' उसने सोफा चेयर पर बैठते हुए बेतकल्लुफ अंदाज में कहा।

''यह तुमने बहुत अच्छा किया बेटी!'' नीलिमा देवी ने राहत भरे स्वर में कहा, ''आज जैसा सन्नाटा इस घर में पहले कभी नहीं रहा था, क्योंकि रोहन के पिताजी तो अक्सर ही घर पर रहते थे।''

''रोहन के पापा! हां, क्या वह कहीं गए हुए हैं?'' पायल ने सपाट स्वर में फिर कहा, ''मल्होत्रा अंकल बता रहे थे कि रोहन

के पिता एक नामी लेखक हैं। सरस्वती मां के परम उपासक। इस कारण लक्ष्मी की ओर से उन्होंने सदैव पीठ ही रखी थी। सुनते हैं कि जो सरस्वती मां का भक्त होता है, लक्ष्मी मां उसके पास नहीं आती। सरस्वती और मां लक्ष्मी में परम्परागत बैर है। क्या यह सच है आण्टी?''

''मैं नहीं जानती कि इस बात में कहां तक सच्चाई है, लेकिन एक बात अवश्य जानती हूं कि जिसके पास संतोष का धन हो। वह लक्ष्मी मां के बजाय सरस्वती मां की ही पूजा करता है।''

''लेकिन आज के युग में मां लक्ष्मी के महत्व को नकारा नहीं जा सकता। यह कहना ज्यादा उचित होगा कि आज मां लक्ष्मी का ही वर्चस्व है।''

''यह तो अपनी-अपनी सोच है बेटी। खैर...मैं भी क्या चर्चा ले बैठी। उन सात अभागिन युवतियों के भाग्य का क्या फैसला हुआ?''

''कुमारन साहब को तो कोई आपत्ति नहीं है। लेकिन जिन दो हजार लोगों के लिए वह मैस चलाई जाएगी, उन्हें सच्चाई बताना आवश्यक है आण्टी।''

''ओह! मैं नहीं समझती कि वह दो हजार लोग इस बात पर सहमत हो जाएंगे कि उनका खाना ऐसी नारियों द्वारा बनाया जाए, जो तन बेचने का धंधा करती थीं।'' बेहद निराशा थी नीलिमा देवी के स्वर में।

''मुझे यकीन है कि उन दो हजार लोगों द्वारा कोई भी विरोध नहीं किया जाएगा। बल्कि उनके द्वारा सहयोग ही किया जाएगा।'' पायल ने ठोस स्वर में कहा।

''इतना विश्वास है तुम्हें!'' दंग रह गई नीलिमा देवी।

''हां मुझे पूरा विश्वास है आण्टी। आज शाम को ही इस बात का निर्णय भी हो जाने वाला है।''

तब आश्चर्य से देखती रह गई थी नीलिमा देवी।

❑❑

दिल्ली और गुड़गांव के बीच अजमेर रोड राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या आठ पर बाईं ओर गरीब तबके के लोगों के लिए वह रिहायशी निर्माण कार्य किया जाना था। पायल अपने साथ नीलिमा देवी को लेकर उस स्थान पर पहुंच चुकी थी, जहां

comicsmylife.blogspot.in

कुमारन कंस्ट्रक्शन प्रा. लिमिटेड के द्वारा अपने कर्मचारियों के लिए अस्थाई रैन-बसेरे का इंतजाम किया गया था। उसी रैन-बसेरे के साथ मैस का भी निर्माण किया गया था। आज उसी मैस का शुभारम्भ वासुदेव कुमारन के द्वारा किया जाना था।

एक विशाल टीन शेड का हॉल बनाया गया था। उस हॉल के एक भाग में स्टेज बनाया गया था। जहां वासुदेव कुमारन, पायल पाराशर और नीलिमा देवी मौजूद थीं। जबकि सामने टेबल-कुर्सियों पर दो हजार कामगार बैठे हुए थे। लेकिन उसके बावजूद ट्यूबलाइट रोशन की गई थी, क्योंकि शाम के साए गहरे हो चुके थे।

सहसा वासुदेव कुमारन ने माइक के स्टेज के सामने रखे माइक के करीब आकर कर्मचारियों को संबोधित किया।

''आप लोगों को आश्चर्य हो रहा होगा कि आज मैस के उद्घाटन की औपचारिकता क्यों निभाई जा रही है? आज तक ऐसा कभी भी नहीं हुआ कि मैस आरम्भ करने से पूर्व किसी नेता की तरह से भाषण करने की आवश्यकता महसूस हुई हो। लेकिन जो कभी न हुआ हो, वह भविष्य में भी नहीं होगा—इसकी कोई गारण्टी नहीं हुआ करती है। कल सुबह तक मैंने इस बात की कल्पना भी नहीं की थी कि मुझे मैस आरम्भ करने से पूर्व आप लोगों को संबोधित करना पड़ेगा। लेकिन अकारण कुछ भी नहीं होता। इस संबोधन के पीछे भी कारण है। जाहिर है कि वह कारण आप लोग भी जानना चाहते होंगे।'' फिर रुक गया था बोलते हुए वासुदेव कुमारन।

तभी भीड़ में से कइयों ने कहा, ''हां, वह कारण हम भी जानना चाहते हैं। आखिर वह क्या वजह है जिसके कारण आप हमें संबोधित करने को विवश हुए हैं। वरना तो आपका आदेश ही हमारे लिए वेद-वाक्य और धर्म के समान होता आया है कुमारन साहब।''

''मैं आप लोगों की इस भावना की कद्र करता हूं। लेकिन मैं अपना कोई भी निर्णय आप पर थोपना नहीं चाहता हूं। खैर, यह तो आप लोग जानते ही हैं कि कुमारन कंस्ट्रक्शन कम्पनी के हम सभी व्यक्ति नई चीज का निर्माण करते हैं। पुरानी खस्ताहाल इमारतों, पुलों और अन्य प्रकार की बिगड़ी अवस्था वाली हर

वस्तु को नई शक्ल व नया आकार देते हैं। यह सच है न?''

''जी हां, यह सच है।'' दो हजार कण्ठ स्वरों ने उस सच्चाई की साक्षी दी थी।

''मैं सिर्फ यह करना चाहता हूं कि नया निर्माण या बिगड़े हुए ढांचों को सुधारना यदि हमारा कर्म है तो क्या वास्तविक जीवन में भी कर्म को अपनाना चाहिए या नहीं?''

''जरूर अपनाना चाहिए।''

''यदि किसी व्यक्ति को जबरन पथभ्रष्ट कर दिया गया हो तो आवश्यकता पड़ने पर क्या आप उसकी मदद का सहानुभूतिपूर्ण जज्बा नहीं रखेंगे? जो व्यक्ति बुरे लोगों का साथ छोड़ कर अच्छाई के रास्ते पर आना चाहता हो। क्या उसकी मदद नहीं करनी चाहिए?''

''अवश्य करनी चाहिए!''

''हम सभी के पास परिवार है। उस परिवार में हमारी माताएं, बहनें, पत्नी और बेटियां भी हैं। यदि हमारे परिवार की किसी बहन, बेटी का अपहरण करके उसे पेशा करने पर विवश किया जाए तो क्या आप उसके बारे में जान कर खामोश रह जाएंगे? क्या आप उसकी मदद के लिए आगे नहीं बढ़ेंगे?''

''हम मदद तो करेंगे ही और उन लोगों का खून भी पी जाएंगे, जो हमारी बहन-बेटी को गलत निगाह से देखने की भी जुर्रत करेगा।'' कई लोगों ने रोष भरे स्वर में कहा।

''आज आप लोगों के सामने परीक्षा की घड़ी है। क्योंकि आज तक मैंने आपके हाथों की कारीगरी को सराहा है और आज मैं आपकी आत्मा की खूबसूरती की प्रशंसा भी करना चाहता हूं। अब हम सभी लोगों के सामने मैस का भोजन परोसा जाएगा, लेकिन मेरा अनुरोध है कि जब तक मैं स्वयं भोजन न कर लूं। तब तक आप लोग वह भोजन नहीं करेंगे, जो आपकी आंखों के सम्मुख होगा। भोजन करने के पश्चात मैं आपको संबोधित नहीं करूंगा। बल्कि पायल पाराशर आपको संबोधित करेगी, जो अमेरिका से भारत आई हुई है।''

''ठीक है सर, हमें आपकी बात स्वीकार है।'' कुछ वृद्ध जनों ने कहा था।

फिर कुमारन स्टेज पर आ गए। शीघ्र ही कुमारन के सामने

comicsmylife.blogspot.in

खाना परोसा गया था। खाना सात युवतियों के द्वारा परोसा जा रहा था। वासुदेव कुमारन् ने भोजन करना आरम्भ कर दिया। इसी दरम्यान केटरिंग सर्विस के वेटर्स ने दो हजार कर्मचारियों के सामने थालियां परोसने का कार्य आरम्भ कर दिया।

वासुदेव कुंमारन ने जब तक खाना खाया। तब तक सभी के आगे भोजन की सुवासित थालियां परोसी जा चुकी थीं।

□□

वासुदेव ने भोजन करने के उपरांत हाथ धोकर रूमाल से साफ किए थे। ठीक उसी वक्त पायल पाराशर माइक के करीब पहुंची और उसके ठीक पीछे रत्ना राणा एण्ड कम्पनी पहुंच गई थीं। दो हजार कामगार सांस रोक कर पायल के बोलने की राह तक रहे थे।

''आप में से कई लोग मेरे पिता के समान हैं और कई लोग भाइयों के समान। मेरा नाम पायल पाराशर है और मैं अमेरिका से आई हूं। मैं उच्च कुलीन ब्राह्मण परिवार की बेटी हूं। लेकिन इसके बावजूद भी मैं रूढ़िवादी नहीं हूं। मैं यह परख कर सकती हूं कि अच्छाई और बुराई के बीच क्या अंतर है। खैर, आज का यह रात्रिकालीन भोजन मेरे साथ खड़ी हुई इन सात नारियों के द्वारा तैयार किया गया है। इन सातों नारियों का पूर्ण मेडिकल चैकअप किया गया है। ये सातों पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं और मैं इनकी मेडिकल रिपोर्ट भी साथ लेकर आई हूं। इनके द्वारा तैयार किया गया खाना स्वास्थ्य की दृष्टि से पूर्ण निरापद है। लेकिन इन सातों नारियों की जिन्दगी त्रासदियों से भरी पूरी रही है। इन सातों को उन लोगों के द्वारा छला गया है, जो इनके अपने ही थे। कोई पति था, कोई भाई था, कोई प्रेमी था, कोई जनसेवक का मुखौटा लगाने वाला शख्स और कोई सौतेली मां। जिन्होंने इन सातों को कोठे पर बेच दिया था। लेकिन मैंने इन सातों को उस कोठे से मुक्त करवाया है, क्योंकि यह शराफत की जिंदगी गुजारना चाहती थीं। लेकिन शराफत की जिंदगी गुजारने के लिए रुपयों की भी आवश्यकता होती है। वरना भूखे पेट का ईमान ज्यादा देर तक शराफत पर यकीन नहीं करता। जिस कोठे से मैंने इन्हें मुक्त करवाया है—उसकी मालकिन का कहना है कि यह सभी जहाज के पंछी की तरह से जहाजरूपी कोठे पर वापिस लौट

आने वाली हैं। क्योंकि इन्हें समाज में सहारा नहीं मिलेगा। उसका यह दावा है कि इन जैसी मजबूर नारियों के लिए कोठे की सीढ़ियां सिर्फ चढ़ने के काम आती है। जहां से इनका जनाजा ही बाहर जा सकता है। लेकिन मैं इन्हें जिंदा लेकर आई हूं और यह चाहती हूं कि यह सातों शराफत की जिंदगी गुजारते हुए एक रोशन मीनार जैसी मिसाल कायम करें। लेकिन...!'' इतना कहने के पश्चात पायल ने कुछ देर तक पॉज (विराम) लिया और फिर सभी को उत्सुक देख कर कहा, ''लेकिन यह सातों प्रेरणा की बुलन्द रोशन मीनार तभी बन सकती हैं, जब हम सभी इनके साथ सहयोग करें। हां, यह अवश्य कहना चाहूंगी कि उस परिवार का सदस्य मदद न करे, जिस परिवार की कोई नारी स्वयं वेश्या बनी हो—खुद अपनी मर्जी से। यदि ऐसा नहीं है तो आप दो हजार व्यक्तियों को यह साबित करना है कि आप समाज सुधार चाहते हैं। यदि आप चाहते हैं कि मां दुर्गा के स्वरूप को सार्थक करने वाली नारी को वेश्या बन कर कोठे पर न बैठना पड़े, यदि आप चाहते हैं कि कोठे की दीवारों में जबरन हमारी बहन-बेटियों को वेश्या बना कर न रखा जाए, यदि आप चाहते हैं कि इन सातों को आपका आशीर्वाद मिले, यदि आप चाहते हैं कि धर्मयुद्ध में इन अबलाओं का साथ देकर आप कोठे में नारकीय जीवन गुजारने वाली नारियों को भी आजादी के लिए प्रेरित करें; तो सिर्फ आपने एक ही कार्य करना है और वह कार्य मुश्किल नहीं है। आपने सिर्फ अपने सामने रखे हुए भोजन को ग्रहण करना है। वैसे ही, जैसे आदरणीय वासुदेव कुमारन ने वह भोजन ग्रहण किया था। बस, इसके सिवा मैं आपसे कुछ नहीं कहना चाहती हूं।'' फिर पायल पाराशर बिना कुछ और कहे स्टेज पर रखी कुर्सियों में से एक पर बैठ गई।

फिर कुमारन ने आगे बढ़ कर सन्नाटा तोड़ा, ''मैं इन तमाम युवतियों को अपनी बहन स्वीकार कर चुका हूं। अब आप लोग मेरी बहनों का सम्मान करना चाहते हैं तो यह भोजन कर सकते हैं और जो न करना चाहे—वह बेशक यहां से जा सकता है। मैं अपनी मर्जी को किसी पर जबर्दस्ती थोपना नहीं चाहता हूं।'' इतना कहने के पश्चात वह भी अपने स्थान पर आकर बैठ गया।

जी हां—कहने की जरूरत नहीं कि कुमारन और पायल के

comicsmylife.blogspot.in

जादुई शब्दों ने चमत्कार कर दिखाया था। दो हजार लोगों ने एक साथ खाना खाना आरम्भ कर दिया था। उन्हें भोजन करते देख कर मंच पर बैठी पायल और नीलिमा देवी की आंखें उल्लास के आंसुओं पर नियंत्रण नहीं कर पाई थीं। क्योंकि दो हजार लोगों ने खामोशी के साथ खाना आरम्भ करके जो निर्णय दिया था, वह स्वागत करने योग्य था। भविष्य के लिए संकेत थे वह हाथ, जो भोजन कर रहे थे।

□□

वासुदेव कुमारन ने उन सातों को बहन का दर्जा देने के अलावा अपनी कम्पनी में नियुक्ति भी प्रदान कर दी थी। पत्रकारों को जब इस अनोखी खबर की सूंघ लगी तो वह होटल ओलम्पिक में ठहरे वासुदेव कुमारन के पास जा पहुंचे थे। वासुदेव कुमारन ने उन्हें पूरे घटनाक्रम की जानकारी दे दी थी।

यही कारण था कि अगली सुबह दिल्ली वासियों ने बहुत अर्से के बाद ऐसी खबर अखबारों की सुर्खियों में देखी थी, जो विनाश से नहीं सृजन से ताल्लुक रखती हुई न्यूज थी। दुख और निराशा के प्रतीक बन गए समाचार पत्रों में आशा और विश्वास का शिशु उन्हें सांस लेता नजर आया।

जाहिर है कि खबर पूरे विस्तार के साथ सिर्फ 'देशभक्त' दैनिक समाचार-पत्र में ही प्रकाशित हुई थी। जिसमें इस बात का बयौरा भी दिया गया था कि नारी के जिस्म का धंधा करवाने में भ्रष्ट पुलसिए और भ्रष्ट राजनेता भी शामिल थे।

सुबह नीलिमा देवी और पायल पाराशर ने एक साथ समाचार-पत्र देखा था। क्योंकि रात को ही मल्होत्रा साहब ने फोन करके इस बारे में उन्हें जानकारी दे दी थी।

''बहुत समय बाद यह महसूस हुआ है बेटी कि घर की चार दीवांरी के बाहर भी करने को बहुत कुछ है।'' नीलिमा देवी ने भावुक स्वर में कहा, ''नारी की शक्ति अगर एक हो जाए तो फिर हर गलत परम्परा पर प्रहार किया जा सकता है।''

''आप ठीक कह रही हैं आण्टी। अब वक्त आ गया है कि लोगों को संगठित होकर सामाजिक बुराइयों का बहिष्कार करना आरम्भ करना चाहिए। जागृति तो जागे लोगों से ही आ पाएगी। जो सत्य से आंखें चुरा कर दिल की आवाज नहीं सुनते हैं, वह

स्वयं के प्रति कुसूरवार होते हैं आण्टी। फिर एक समय ऐसा भी आता है, जब उनकी आत्मा मर जाती है और सिर्फ शरीर जीवित रह जाता है। जिसे सिर्फ रोबोट की तरह से कार्य करना होता है।''

''मैं आज समझ पाई हूं कि रोहन के पिता के उपन्यासों को लोग क्यों पसंद करते हैं, क्योंकि वह लोगों की आत्मा को जगाने का कार्य कर रहे हैं!''

''आण्टी, मैंने उनकी कोई किताब नहीं पढ़ी। क्या मैं उनकी किताब पढ़ सकती हूं?''

''क्यों नहीं बेटी, आओ मैं तुम्हें उनके कक्ष में ले चलती हूं। उस कक्ष में उनकी किताबों के अलावा भी विश्व का चुनिंदा साहित्य मौजूद है।''

वह दोनों फिर उस कक्ष में पहुंचे थे जो क्रांतिदूत शर्मा का निजी कक्ष था। लेखन कक्ष और अध्ययन कक्ष भी।

कांच की अलमारी में वह साहित्य था, जिसका सृजन उसके पति ने किया था। निकट पहुंच कर अचानक वह बुरी तरह से चौंक उठी, क्योंकि ऐसा लग रहा था कि अलमारी को किसी ने छेड़ा है। चमड़ा मढ़ी डायरी भी उस स्थिति में नहीं थी—जिस स्थिति में उनके पति ने उसे बंद किया था।

''क्या हुआ आण्टी! आप इस प्रकार से चौंक क्यों उठीं?'' पायल ने पलकें झपकाते हुए पूछा।

''ऐसा लगता है पायल कि हमारी गैरहाजरी में कोई व्यक्ति इस कक्ष में आया था!''

''य...यह आप क्या कह रही हैं आण्टी! क्या कोई चीज यहां से गायब हुई है?''

''नहीं, यह मामला चोरी का नहीं है, क्योंकि इस कमरे में ऐसा कुछ नहीं, जिसे चुराया जा सके। वह किसी खास उद्देश्य से ही इस कमरे में आया होगा।''

''लेकिन कौन? कौन आया होगा आण्टी?'' पायल ने भोलेपन से सवाल किया।

वह समझ गई थी कि जो कार्य उसने भागीरथ मदान को सौंपा था। वह कार्य उसके एजेण्ट के द्वारा बड़ी चतुराई से पूर्ण किया गया है।

comicsmylife.blogspot.in

''उनकी डायरी खड़ी स्थिति में रहती थी। अभी डायरी आड़ी स्थिति में है। वह शख्स अवश्य ही इस डायरी के चक्कर में आया होगा!'' बेहद गंभीर था नीलिमा देवी का स्वर।

फिर उन्होंने आगे बढ़कर अलमारी को खोला था, जिस पर कोई ताला नहीं लगा था। कंपकंपाते हाथों के साथ नीलिमा देवी ने डायरी को उठाया। फिर उसके पृष्ठ पलटे थे। लेकिन उन्हें यह देख कर सदमा लगा कि डायरी के किसी भी पृष्ठ पर कुछ अंकित नहीं था। वह डायरी एकदम कोरी थी। नीलिमा देवी के अधरों से चीख उबल पड़ी।

''क्या बात है आण्टी! अ...आप काफी परेशान लग रही हैं।'' बौखला उठी थी पायल।

''कि...किसी ने उनकी डायरी चुरा कर कोरी डायरी इस चमड़े की जिल्द में रख दी है बेटी!'' वह यूं बोली थी, जैसे उनकी जिंदगी भर की कमाई लूट ली गई हो। चेहरा कागज की मानिंद सफेद पड़ गया था।

''लेकिन डायरी भला कोई क्यों चुराएगा?''

''उस डायरी में पांच करोड़ रुपयों का एक ऐसा राज दफन था, जिसके कारण मेरे पति को अज्ञातवास भोगने पर विवश होना पड़ा। अब उनकी बेशकीमती धरोहर हमारे पास नहीं रही!'' कहने के पश्चात वह हांफने लगी थीं।

पायल ने यूं दर्शाया जैसे उसे भारी आश्चर्य हुआ हो। लेकिन उसे मालूम था कि डायरी के साथ छेड़छाड़ करने वाला शख्स मदान का कोई असिस्टेंट ही होगा। लेकिन मदान के साथ उसने यह बात तय की थी कि विशेष प्रकार के कैमरे से डायरी के पृष्ठों को कैमरे द्वारा शूट किया जाएगा। लेकिन पूरी डायरी चुरा कर लैदर फोल्डर में दूसरी डायरी रखने की बात नहीं हुई थी।

फिर भी प्रत्यक्षतः उसने कहा, ''आण्टी, आपने डायरी पढ़ कर देखी थी?''

''न...नहीं!''

''संभव है कि अंकल ने डायरी में कुछ भी न लिखा हो!'' उसने तसल्ली देनी चाही।

''नहीं, वह मेरे साथ तो क्या, किसी के साथ भी झूठ नहीं बोल सकते थे।''

''क्या डायरी की यह बात किसी चौथे शख्स को भी मालूम थी?''

''नहीं!''

''फिर कोई क्यों डायरी चुराएगा? क्या उसमें पांच करोड़ के किसी खजाने का जिक्र था?'' उसने सादगी के साथ सवाल किया, जिसमें हमदर्दी भी शामिल थी।

''नहीं बेटी, खजाने का कोई राज नहीं था।''

''लेकिन उस डायरी को कोई इसी कारण चुराना चाहेगा, क्योंकि चोर को उस डायरी से कोई लाभ कमाना हो। संभव है कि पांच करोड़ की डायरी वाली बात किसी और को मालूम हो गई हो?'' उसने बेहद भोलेपन के साथ कहा।

लेकिन सच्चाई यह भी थी कि एक वृद्धा से झूठ बोलते हुए वह बेहद आत्मग्लानि का अनुभव कर रही थी। उसका जमीर उसे धिक्कार रहा था। नीलिमा देवी की व्याकुलता ने उसे भी बेचैन कर दिया था।

''बेटी, उस डायरी में सिर्फ यह लिखा था कि वह अपने बेटे से पांच करोड़ रुपया क्यों चाहते हैं। अज्ञातवास पर जाने की उनकी मजबूरी वही पांच करोड़ रुपया थी बेटी!''

''ओह! ऐसी एक बात का जिक्र रोहन ने मुझसे किया था।'' एकाएक उसने बुरी तरह से चौंकने का अभिनय किया, ''रोहन ने कहा था कि उसके एक मित्र के पिता ने अपने पुत्र पर पांच करोड़ की जिम्मेदारी सौंप कर गृहत्याग किया था। आप कह रही हैं रोहन के पिता ने ही ऐसा किया था। सच्चाई क्या है आण्टी! रोहन ने इस बारे में मित्र का जिक्र क्या झूठा किया था?''

''रोहन ने मित्र का नाम लेकर तुमसे जो कुछ भी कहा था बेटी, वह स्वयं उसके पिता की और रोहन की सच्चाई है!''

''ओह! यानी रोहन ने सच कहा, लेकिन वह सच अधूरा था। उसने यह नहीं बताया कि स्वयं उसके पिता ने ही पांच करोड़ रुपया कमाने की शर्त के साथ गृहत्याग किया है।''

''लेकिन आश्चर्य है कि रोहन ने यह राज तुम्हें क्यों बता दिया! जबकि तुम्हारी और उसकी पहचान चन्द सप्ताहों की ही रही है।''

''शायद उसकी वजह मेरी शोधग्रंथ का विषय रही हो!''

comicsmylife.blogspot.in

''य...यानी !''

''मैंने बताया था न कि मैं भारतीय पारिवारिक रिश्तों पर रिसर्च को शोध रूप में मुकम्मल करना चाहती हूं। ताकि समाज शास्त्र में पी.एच.डी. की डिग्री मुझे हासिल हो सके! यह सुन कर रोहन ने पिता की अनोखी शर्त के विषय में बता दिया होगा!''

''जरूर यही बात रही होगी। दरअसल वह तुम्हें बताना चाहता था कि रिश्ते अगर तंग हो सकते हैं तो उनमें कोई खास रहस्य भी हो सकता है। इस प्रकार उसने अपने दिल की बात भी तुमसे कह दी और तुम्हें एक दिशा भी दिखा दी कि निस्वार्थ रिश्ता उम्र के अंतिम मुहाने पर पहुंच कर किसी अलौकिक रहस्य के कारण पांच करोड़ रुपयों के स्वार्थ में बदल सकता है।''

''लेकिन रोहन यह बात मुझसे स्पष्ट कह सकता था आण्टी।'' उसने धीमे से कहा, ''मैंने अपनी जिन्दगी की हकीकत को उससे नहीं छिपाया तो फिर उसे सच्चाई छिपाने की क्या आवश्यकता थी आण्टी!''

''हां, इस सवाल का जवाब तो रोहन ही दे सकता है, लेकिन इस वक्त तो हमें डायरी के विषय में सोचना है बेटी। डायरी किसने चुरा ली?''

''मैं तो स्वयं चकित हूं आण्टी!''

''कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम्हें इस बात का शक हो गया हो कि रोहन ने मित्र का नाम लेकर स्वयं की जिंदगी की सच्चाई बयान की है। इस कारण तुमने ही वह डायरी गायब की हो?''

''यह आप क्या कह रही हैं आण्टी! मैं तो इस कमरे में प्रविष्ट ही पहली बार हुई हूं। फिर मेरे पास चोरी करने का मौका ही कहां था?''

''मैंने पूछा है बेटी! इल्जाम नहीं लगाया है तुम पर। वह भी इस कारण पूछा, क्योंकि तुम्हें रोहन ने अपने पिता की डायरी के बारे में बताया था। फर्क सिर्फ इतना ही था कि उसने उन्हें अपने मित्र का पिता बताया था, लेकिन शायद तुम समझ गई थी कि रोहन अपने जीवन की सच्चाई बयान कर रहा है। इस कारण डायरी में दफन रहस्य को पढ़ने के लिए तुमने...!''

''आण्टी, मैं अपने पिता की शपथ खाकर कहती हूं कि मैंने डायरी को छुआ तक नहीं है। न ही मैं यह जानती हूं कि उस डायरी में क्या लिखा था। मैं तो इस बात पर हैरान हूं कि रोहन ने मेरे सामने सच्चाई ही क्यों नहीं रखी!''

''जाहिर है कि परिवार के रहस्यों में कुछ ऐसे रहस्य भी होते हैं, जिन पर से घर का सदस्य पर्दा नहीं हटाना चाहता। ख़ैर, तुम यहां इत्मीनान से बैठ कर रोहन के पिता की कोई भी किताब पढ़ सकती हो। मैं तब तक नाश्ता तैयार करती हूं।''

नीलिमा देवी के जाने के बाद उसने अलमारी खोली थी। अलमारी के सबसे निचले खाने में कोरियर पार्सल के साथ मैन्यूअल स्क्रिप्ट रखी हुई थी। उसने स्क्रिप्ट को देखा। वह ताजा स्क्रिप्ट थी। लेकिन कहां से भेजी गई थी? यह उस पर नहीं लिखा हुआ था। उसने फिर स्क्रिप्ट के ऊपर वाले खाने में से एक उपन्यास निकाला। जिसका नाम था—देवता बाबू!

ठीक उसी समय फोन की घण्टी घनघनाई थी।

उसने रिसीवर उठाया, ''शर्मा रेजीडेंस!''

''मैं रोहन बोल रहा हूं! क्या तुम पायल बोल रही हो?'' स्वर में आश्चर्य नहीं था।

''हां, ठीक कहा तुमने। लगता है कि मुझे फोन करने से पहले तुम मल्होत्रा अंकल को रिंग कर चुके हो!''

''गुड गैस वर्क! मैंने अंकल को फोन किया था क्योंकि ज्योतिष सम्मेलन की कवरेज मैंने हॉट लाइन पर भेजने का निर्णय किया था। तब उन्होंने बताया था कि तुम मम्मी को कम्पनी देने के उद्देश्य से मेरे घर पर हो।''

''लेकिन यहां पर गड़बड़ हो गई है रोहन!'' उसने संजीदगी के साथ कहा।

दरअसल पायल यह जानती थी कि पैरलल फोन पर रोहन की मम्मी भी उनका वार्तालाप सुन रही है। एक ओर रिसीवर उठाए जाने का स्वर उसने स्पष्ट पहचाना था। इस कारण सहज वार्तालाप करना आवश्यक था।

''गड़बड़! कैसी गड़बड़?''

''पहले तो मैं एक शिकायत करना चाहूंगी—तुमने अपने मित्र का जिक्र करके एक झूठ बोला था। मित्र के पिता के पलायन

comicsmylife.blogspot.in

के बारे में। जबकि यह तुम्हारी ही जिंदगी का सच है, जो तुमने अपने काल्पनिक मित्र का गढ़ कर सुनाया था।''शिकवा था स्वर में।

''त...तुम्हें कैसे पता कि यह मेरी जिंदगी का सच है या मेरे मित्र की?''स्वर में गंभीरता थी।

''आण्टी ने बताया है मुझे!''

''मम्मी ने भला क्यों बताया?''

''क्योंकि अलमारी में जो डायरी थी। वह गायब हो गई। उसके लैदर जैकिट में दूसरी डायरी है, जिस पर एक शब्द भी अंकित नहीं। सवाल यह उठता है कि क्या वाकई तुम्हारे पापा ने डायरी में कुछ लिखा था या उसे अधूरी रख छोड़ा था!''

''मैं नहीं मान सकता कि पापा ने नई-नकोर डायरी रख कर झूठ बोला होगा!''

''आण्टी भी यही कह रही हैं। मुझे आण्टी को बताना पड़ा कि डायरी के बारे में तुमने मुझे जानकारी दी थी लेकिन दोस्त और उसके पिता की कहानी सुना कर। इस पर आण्टी को शक हुआ कि मैंने ही तो वह डायरी चोरी नहीं कर ली। तुम्हारे एक झूठ के कारण मुझे आण्टी की निगाह में चोरी का सस्पेक्ट बनना पड़ा है!''

''म...मैं उसके लिए क्षमा चाहता हूं। लेकिन पापा की डायरी गायब कैसे हो गई? कौन है वह शख्स, जो पापा की डायरी में रुचि रखता था?''

''बेटे!''तभी तीसरा स्वर उभरा, ''मैंने पैरलल फोन पर तुम दोनों की बातचीत सुन ली है। अब पायल पर मुझे कोई शक नहीं। लेकिन डायरी के बारे में पायल ने जो कुछ भी कहा है, वह एकदम सच है।''

''ओह! आप हमारी बातचीत सुन चुकी हैं मम्मी!'' रोहन का स्वर था, ''आप व्यर्थ चिन्ता मत कीजिए मम्मी। शायद पापा ने डायरी बदल दी हो!''

''नहीं, यदि ऐसा होता तो उन्होंने अपने वर्ष भर के लेखन के साथ जो पत्र भेजा था। उसमें यह नहीं लिखा होता कि मैं चाहूं तो डायरी में दर्ज रहस्य को पढ़ सकती हूं!'' नीलिमा देवी नें अकाट्य तर्क पेश किया।

''आप ठीक कह रही हैं मम्मी!'' रोहन को उनका तर्क स्वीकार करना पड़ा।

''मैं रिसीवर रख रही हूं। ताकि आप दोनों इत्मीनान से बात कर सकें।''पायल ने फिर रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया था।

उसका उद्देश्य यूं भी पूर्ण हो चुका था।

तभी उसके अंदर से आवाज आई, ''पायल! जो लेखन सामग्री एक वर्ष के अज्ञातवास के दौरान क्रांतिदूत शर्मा ने लिखी है। तुम्हें उसे पढ़ना चाहिए, क्योंकि कोई भी लेखक अगर दुखी और वेदना का समय गुजारता है, तो उसकी झलक उसके सृजन में अवश्य ही नजर आती है।''

तब उसकी नजरें उन पृष्ठों पर चिपक गईं, जो कोरियर सर्विस से आए थे।

❑❑

उस रात को पायल पाराशर नीलिमा देवी के पास ही रुकी थी। रात्रि में उसने वह तमाम लेखन भी पढ़ लिया था। सुबह के पांच बजे ही वह सो पाई थी। दस बजे रोहन आ गया था। उसने ही जगाया था। वह उसके पिता के कक्ष में दीवान पर ही सो गई थी। हस्तलिखित पृष्ठ उसने वापिस अलमारी में रख दिए थे।

''मम्मी बता रही थी कि पिछली रात तुम पापा के लिखे साहित्य को पढ़ रही थी।'' उसने कॉफी की ट्रे सेन्टर टेबल पर रखते हुए कहा।

''हां, वाकई स्वीकार करना पड़ेगा कि तुम्हारे पापा के पास मानव-मन की गहराइयों में उतरने की और फिर उसे ज्यों का त्यों पाठकों के सामने रख देने की बेमिसाल कला है जो हर लेखक को नसीब नहीं होती।'' उसने उनींदी आंखों के साथ प्रशंसा का गीत गाया।

''पापा की कौन-सी किताब पढ़ी?''

''जो-जो हाथ में आती गई, वह पढ़ती चली गई। मैं यह देखना चाहती थी कि एक लेखक की दृष्टि कितनी विराट और विविध हो सकती है। गहराई के साथ जज्बातों की विचित्रता का खजाना है उनके लेखन में।''

''हां, इसी कारण वह पाठकों के दिल पर राज करते हैं, लेकिन साहित्य अकादमियों के द्वारा कभी भी सम्मानित नहीं

comicsmylife.blogspot.in

किए गए।''

''इसकी वजह?'' उसने कॉफी का प्याला उठाते हुए पूछा।

''क्योंकि पापा के लेखन को लोकप्रिय साहित्य माना गया है, उसे वह साहित्य नहीं माना गया, जो भारतीय साहित्य की परिभाषा में आता है।''

''और भारतीय साहित्य की परिभाषा में क्या-क्या आता है?''

''सच जानना चाहोगी?''

''जाहिर है!''

''नम्बर वन पर काम आते हैं 'जोड़-तोड़ के रिश्ते, मंत्री व अफसरों के दबाव। मिल-बांट कर खाने का गणित। मीडिया के द्वारा तय किया गया लेखन जो साहित्यिक हो। यदि वह लोकप्रिय हो तो फिर साहित्य में नहीं आएगा। साहित्य वह है जो लायब्रेरी की अलमारियों में धूल और दीमक के द्वारा पढ़ा जाए या फिर अमीरजादों की पर्सनल लायब्रेरी में से झांक कर उनकी वैभवता में साहित्य रुचि को प्रदर्शित करने का कार्य भी करे!''

''कमाल है!'' उसने हैरत के साथ कहा, ''यह तो दोगलापन है!''

''हां, यह भारत में ही होता है। यदि 'जुरासिक पार्क' किसी भारतीय ने बनाई होती तो उसे ऑस्कर अवार्ड से सम्मानित नहीं किया जाता। लेकिन वह स्टीवन स्पील्टबर्ग ने बनाई थी, इस कारण मनोरंजनपूर्ण होने के पश्चात भी उसे कला फिल्म का दर्जा मिला था, जिस भारतवर्ष में कामसूत्र को कभी साहित्य का दर्जा दिया गया था। अब उसी भारत में कामसूत्र पर टिप्पणी को भी अश्लीलता के दायरे में माना जाता है।''

''तुम्हें इस बात का दुख है कि भारतीय साहित्यिक मंचों के द्वारा तुम्हारे पिता को सम्मानित नहीं किया गया!''

''नहीं, मुझे इस बात का दुख नहीं है, मुझे उस विचारधारा का दुख है जो सर आर्थर कानन डायल, अगाथा क्रिस्टी और जेम्स हेडली के साथ सिडनी शैल्डन को मनोरंजन की श्रेणी में रखते हुए भी पूर्ण साहित्य का दर्जा देता है। यदि सृजन में भी राजनीति और दलाली की भागीदारी होती हो तो गुलशन नन्दा, सुरेन्द्र मोहन पाठक और मनोज और पापा जैसे लेखकों को भला

कौन पूछेगा?''

''खैर...सुबह-सुबह क्यों मूड खराब किया जाए! पहले तो तुम यह बताओ रोहन कि तुमने अपने पिता की सच्चाई को मित्र के पिता के नाम पर क्यों स्थानांतरित कर दिया था?'' उसने गंभीर स्वर में पूछा।

''गोपनीयता की शर्त से बंधा हुआ था, इस कारण पूर्ण सच्चाई को नहीं बता पाया।''

''गोपनीयता, आस्था और स्नेह पूरा रखा जाता है, आंशिक नहीं। फिर तुमने आधी गोपनीयता क्यों रखी? विषय तो बता दिया लेकिन पात्र का नाम नहीं बताया! क्या विषय को छिपाना भी आवश्यक नहीं था रोहन?''

''यह जानने के पश्चात कि तुम भारतीय पारिवारिक रिश्तों पर शोध प्रबंध लिख कर पी.एच.डी. डिग्री (डॉक्टरेट) करना चाहती हो तो मैं तुमसे उस विषय को छिपा नहीं सका था। जो रहस्य मेरे दिल को भी कचोट रहा था। एक बेटे और एक पत्नी को छोड़ कर जाने की कोई भी मजबूरी हो सकती है। लेकिन वापिस आने की शर्त पांच करोड़ रुपया! मैं पिता की इस शर्त के कारण अपने विवेक पर काबू नहीं रख पाया। इस कारण मैं तुम्हें भी चकित होते हुए देखना चाहता था। शायद इस प्रकार मैं स्वयं को विशिष्ट बनाने की अदृश्य इच्छा भी रखता था।'' उसने अपनी सोचों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण किया था।

''मैंने आज एक निर्णय लिया है रोहन!''

''निर्णय?'' रोहन चौंका।

''हां, मैं अमेरिका वापिस जा रही हूं।''

''फिर डॉक्टरेट की डिग्री?''

''उसे हासिल करने से क्या होगा? जब तुम्हारे पिता की प्रतिभा को ही नकार दिया गया है, तो फिर मैं तो उनके एक पासंग योग्यता भी नहीं रखती। मैं सोचती हूं कि तालीम की डिग्री हासिल करने से अच्छे तो वह दो कार्य है, जो मैंने भारत में आकर किए।''

''कौन से कार्य?'' रोहन चौंका।

''खान परिवार की मदद और रत्ना राणा एण्ड कम्पनी को वेश्यावृति से मुक्त करवा कर उन्हें पांवों पर खड़ा होने में मदद

comicsmylife.blogspot.in

करने का। एक डॉक्टरेट करने से अच्छा है कि मदर टेरेसा की सेवा भावना की छाया बनने की कोशिश ही की जाए। विद्वान होने से ज्यादा अच्छा है कि आप बेहतर इंसान बनें। यदि किसी के आंसू पोंछने में आप समर्थ होते हैं तो फिर झूठे सम्मान की आवश्यकता कहां रह जाती है रोहन?''

''हां, जीवन की एक हकीकत यह भी है। लेकिन हर व्यक्ति आंसू पोंछने लायक समर्थ कहां हो पाता है। मैंने ऐसे लोग भी देखे हैं, जो जीवन के आखिरी मुकाम में स्वयं रोते रहे, क्योंकि उन्होंने अपना जीवन आंसू पोंछने में लगा कर स्वयं को कंगाल कर लिया था। गांधी और लिंकन ने भी आंसू पोंछने का कार्य किया था। लेकिन उसकी कीमत उन्हें खून बहा कर चुकानी पड़ी थी। जिस तरह लोकप्रिय इंसान को अपयश भी भेंट में मिलता है, ठीक उसी तरह सेवा करने वाले शख्स को भी उस अग्निपरीक्षा से गुजरना पड़ता है जो साधारण इंसान के वश में नहीं होती। अग्नि के सामने सिर्फ सिद्धांत ही बचते हैं, लेकिन इंसान राख हो जाता है।''

''कोई इंसान अमृत पीकर नहीं जन्मा रोहन। राख तो एक दिन सभी ने होना है। मिट्टी का शरीर कब्र की मिट्टी के नीचे तो दफन होना ही है। लेकिन जिन्दगी की सार्थकता तो उस व्यक्ति की है, जिसकी पीठ को बाहर से नहीं, बल्कि अंदर से उसकी अंतर्रात्मा के द्वारा संतोष के हाथों से थपथपाया गया हो। इंसान जब स्वयं से बात करता है तो उसे स्वयं पर गर्व होता है। वही सार्थक जीवन जीकर जाता है रोहन। मैंने इस सच्चाई को गहराई से समझ लिया है।''

''मेरे ख्याल से तुम यह फैसला भावुकता भरे क्षणों में कर रही हो।''

''नहीं, मैंने काफी सोच-समझ कर फैसला किया है। ज्यादा से ज्यादा मैं एक सप्ताह और यहां पर रुकना चाहूंगी।'' उसने ठोस स्वर में कहा।

''खान परिवार के अकबर नाम के किशोर के बारे में क्या सोचा है तुमने?''

''जाहिर है कि दो वर्ष तक उसके बारे में मैंने कुछ भी नहीं बताना है।''

''बेशक तुम न बताओ, लेकिन भागीरथ मदान तो अवश्य ही बताएगा!'' उसने सरगोशी की, ''बादल नाम का उसका एक असिस्टेंट लेकर गया था अकबर को।''

''हां, उस दिन तुमने मेरा पीछा किया था रोहन!''

''हां, जानना चाहता था कि लाखों रुपया खर्च करने के बाद तुम उस किशोर का क्या करने वाली हो।'' उसने बेहिचक स्वीकार किया।

''क्या जाना फिर?''

''कुछ नहीं जान पाया। दिल्ली के ट्रैफिक जाम में फंस गया था। लेकिन बादल से मिल कर मैं सच्चाई जान सकता हूं पायल। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि तुम ही उस सच्चाई के विषय में बता दो!''

''समय से पहले जानना चाहते हो?''

''यदि तुम्हें बताना स्वीकार हो तो!''

''सॉरी! मैं अभी नहीं बताना चाहती, लेकिन यह वचन देती हूं अगले वर्ष तक अकबर खान के बारे में तुम सब कुछ जान लोगे।''

''अमेरिका में तुम्हारा कांटेक्ट नम्बर क्या होगा?''

''नम्बर दिया जाए या नहीं। इस बारे में भी सोच कर ही बता सकूंगी।'' बेहद रहस्यमय स्वर था उसका।

''अभी कुछ नहीं बताना चाहती?''

''नहीं।''

''यकायक जाने का प्रोग्राम किसी खास कारण से ही बनाया है तुमने। मैं नहीं समझता कि पापा के लेखन ने तुम पर इतना गहरा असर डाला है। रामायण, महाभारत, गीता, कृष्ण, बाइबिल और गुरुग्रंथ साहिब पढ़ कर लोगों में क्रांति नहीं आई। फिर मेरे पिता का लेखन उन ग्रंथों की तुलना में कहीं पर भी नहीं टिकता है।''

''साहित्य समाज का दर्पण है। इस कारण मेरे लिए तो वह सत्य कथा भी साहित्य है, जो सत्य घटनाओं पर आधारित पत्रिकाओं में प्रकाशित होती है। किसी भी देश की संस्कृति को समझने के लिए उसके वर्तमान को जानना आवश्यक होता है रोहन। लेकिन तुम्हें यह संदेह क्यों हुआ कि मैं किसी खास

comicsmylife.blogspot.in

वजह से जाना चाहती हूं ?''

''क्योंकि मम्मी की तरह से मुझे भी यह शक होने लगा है कि डायरी के गायब होने में तुम्हारा हाथ है। आखिर को तुम्हारा संबंध भागीरथ मदान जैसे प्राइवेट डिटेक्टिव के साथ है। फिर कोठी के मुख्य द्वार की डुप्लीकेट चाबी में तुम्हें सौंपकर गया था, ताकि तुम किसी भी वक्त मम्मी को संभालने के लिए पहुंच सको।''

''इल्जाम सबूत के साथ लगाया जाता है। शक के आधार पर नहीं रोहन।'' उसने फिर कॉफी का प्याला समाप्त करके मेज पर रख दिया।

तभी नीलिमा देवी अंदर प्रविष्ट हुई तो उनकी बातों पर विराम चिन्ह लग गया।

❑❑

भागीरथ मदान के ऑफिस के बाहर पहुंचने तक वह सतर्क रही थी कि उसका पीछा न किया जा रहा हो। उसका पीछा नहीं किया गया था। यदि किया गया था, तो फिर पीछा करने वाला पायल के अनुमान से कहीं ज्यादा स्मार्ट रहा था।

भागीरथ मदान का अभिवादन करके वह वातानुकूलित ऑफिस की आरामदायक कुर्सी में धंस गई।

''तुम्हारा बताया तीसरा कार्य भी मुकम्मल हो गया पायल।'' भागीरथ मदान ने मुस्कराते हुए कहा, ''डायरी के प्रत्येक पृष्ठ की फोटो खींची गई है। बादल उन्हें ही लेने के लिए स्टूडियो गया है।''

''जब पूरी कार ही आपके पास है तो पहिया अलग करने की क्या जरूरत थी अंकल ?'' उसने चुभती हुई दृष्टि से देखते हुए कहा, ''मेरा मतलब आप समझ रहे हैं न मदान अंकल ?''

मदान के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभर आए थे।

''यह तुम क्या कह रही हो बेटी! कार से और उसके पहिए से तुम्हारा क्या अभिप्राय है ?'' उसने हैरानी भरे अंदाज में पलकें झपकाते हुए पूछा।

''कार यानी पूरी की पूरी डायरी और पहिए का मतलब डायरी के फोटोग्राफ।''

''ओह! तुम कहना चाहती हो कि बादल ने डायरी ही चुरा

ली।'' गंभीर था इस बार स्वर।

''हां, डायरी में सिर्फ खाली पृष्ठ हैं। जाहिर है कि डायरी बदली गई है। यह भेद शर्मा परिवार के अलावा सिर्फ हम तीन लोगों तक सीमित था अंकल। शर्मा परिवार तो अपनी ही चीज को चुराने से रहा। अब बचते हैं मैं, आप और बादल। मैं डायरी क्यों चुराना चाहूंगी, यदि प्रत्येक पृष्ठ की फोटोकॉपी मुझे मिल रही हो। रह जाते हैं आप और बादल। आपने डायरी गायब न करवाई हो। लेकिन बादल तो ऐसा कर सकता है।''

''नहीं, बादल ऐसा नहीं कर सकता!''

''इंसान की उत्सुकता उससे चोरी भी करवा सकती है।''

''बादल एक जहीन इंसान है। इतनी अक्ल उसमें है कि डायरी गायब होने का संदेह उस पर किया जाएगा। इस कारण उसने डायरी कभी नहीं चुरानी थी। वह डायरी बाद में भी चुरा सकता था। फिर उसके पास डायरी चुराने की जायज वजह भी तो होनी चाहिए बेटी!''

''डायरी में लिखा पांच करोड़ रुपयों का वह कारण, जिसने क्रांतिदूत शर्मा को गृहत्याग करने पर मजबूर किया था!'' उसने एक-एक शब्द पर वजन डालते हुए कहा, ''वह कारण बादल को चोरी करने पर विवश कर सकता था!''

''बादल ने फोटोग्राफ खींचे थे। वही उन्हें डेवलप करवाने के लिए भी गया है। उन फोटो पेजेस की वह कितनी भी कॉपी करवा सकता था। इस कारण डायरी चुराने की उसे भला जरूरत ही क्या थी। यदि मीठा देने से ही काम होता हो तो जहर क्यों दिया जाएगा!''

''ओह! मैंने इस एंगिल से नहीं सोचा था अंकल। रीयली आई एम वेरी सॉरी!''

''कोई बात नहीं। मुझे वह लोग पसंद हैं जो दिल की बात जुबान पर ले आते हैं। खैर, अब सवाल यह उठता है कि क्रांतिदूत शर्मा की डायरी को चुराने की जुर्रत किस शख्स ने की होगी ?''

''अब तो उस डायरी-चोर को भी आपने ही ढूंढना है अंकल। आखिर डायरी चुराने का उसका मकसद क्या है ?''

''बेटी, उस डायरी में पांच करोड़ रुपयों का एक रहस्य था।

comicsmylife.blogspot.in

जाहिर है कि उस रहस्य के कारण ही डायरी की चोरी हुई, लेकिन चोर को वह राज कैसे मालूम हुआ ? चोर चोरी करने गया था या डायरी पढ़ने में वक्त बर्बाद करने !''

''मैं भी यही सोच रही हूं अंकल। मैं समझ नहीं पा रही कि किसी चोर को उस डायरी में रुचि होगी ! उसके लिए तो डायरी की कीमत सौ रुपए भी नहीं रही होगी।'' उसने स्वीकार किया।

''सो देयर यू आर।''

''बेशक, यह बात सच है कि उस चोर के लिए डायरी की कोई अहमियत नहीं थी। फिर भी उसने वह डायरी चुराई है। यानी उस चोर के पास अवश्य ही कोई जायज वजह है।'' पायल ने गंभीर स्वर में कहा।

ठीक उसी समय फोन की घण्टी घनघनाई।

□□

''मदान प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी।'' भागीरथ मदान ने व्यवसाय सुलभ कोमलता के साथ जवाब दिया।

''मिस्टर मदान, उस डायरी में तुम्हारी क्या दिलचस्पी थी ? तुम्हारे एक असिस्टेंट के द्वारा उस डायरी के हर पृष्ठ को कैमरे में कैद किया गया था। मैं जानना चाहता हूं कि आपके असिस्टेंट बादल ने ऐसा क्यों किया ?'' भर्राए स्वर ने सवाल दागे।

''कौन हो तुम ?'' हैरान रह गया भागीरथ मदान।

''मैं एक चोर हूं।'' जवाब ने हैरानी में इजाफा किया।

''चोर ?''

''हां, परसों की रात आठ बजे मैंने शर्मा परिवार की कोठी पर ताला लगा देखा था। इस कारण चोरी के इरादे से मैंने कोठी में घुसने का मानस बनाया। रात के नौ बजे मैं कोठी में दाखिल हुआ था। मैं कोठी के पिछवाड़े रेन-पाइप से चढ़ कर दालान में कूदा था। फिर मैंने दालान के द्वार की कुण्डी को मेगनेट के द्वारा खोला और अंदर प्रविष्ट हो गया। मैं अभी एक कमरे में पहुंचा ही था कि मैंने दरवाजा खुलने की आहट सुनी। मैं घबरा कर दीवान के नीचे छिप गया। फिर मैंने एक शख्स को दबे पांव उसी कमरे में दाखिल होते हुए देखा था। उसके पास पैंसिल टॉर्च थी। उसने लाइट जलाने का कोई प्रयास नहीं किया। मैं समझ गया कि मेरी तरह वह भी एक चोर हैं। लेकिन उसने जब अलमारी में रखी

एक डायरी के पृष्ठों को कैमरे में कैद करना आरम्भ किया तो मेरा माथा ठनका। मैं समझ गया कि वह शख्स चोर नहीं हो सकता है। फिर उसके द्वारा एक फोन किया गया था। फोन पर उसने अपना नाम बताते हुए काम पूरा होने के विषय में बताया था। एक प्राइवेट डिटेक्टिव का सहयोगी एक डायरी के पृष्ठों को कैमरे में शूट करने आया था। यह जानने के बाद मेरी दिलचस्पी उस डायरी में पैदा हुई और मैंने उसी कमरे में रखी एक डायरी को डायरी की लैदर जैकिट में डाल दिया और वास्तविक डायरी पार कर ली। मैंने सोचा था कि उस डायरी में क्रांतिदूत शर्मा की कोई कमजोर रग होगी या फिर किसी गुप्त खजाने का जिक्र होगा। लेकिन अफसोस, उसमें ऐसा कुछ भी नहीं था।''

''मुझसे क्या चाहते हो तुम ?''

''मैं जानना चाहता हूं कि उस डायरी में आखिर क्या राज दफन है। वह क्या वजह थी, जिसके कारण तुम्हारे असिस्टेंट ने डायरी के पृष्ठों का छायांकन किया था ?''

''बड़ी शुद्ध हिंदी बोल रहे हो—'छायांकन!' कहां से सीख लिए यह शब्द ?''

''पढ़ा-लिखा बेरोजगार और हालात का सताया चोर हूं !'' आह भरी गई थी।

''चोर ही बने रहना चाहते हो ?''

''न...नहीं !''

''यदि भागीरथ मदान के नाम पर विश्वास हो तो उसके ऑफिस में डायरी के साथ पहुंच जाओ। तुम्हें नौकरी भी मिलेगी और लाख रुपयों का इनाम भी।''

''मैं सोचकर जवाब दूंगा ?'' जवाब देने में वक्त लगा था। जाहिर था कि कुछ हद तक वह भयभीत भी था।

''तुम उस स्टेशन पर मौजूद हो, जहां सवारी गाड़ी किसी खराबी के कारण रुकी है और वह खराबी कुछ क्षणों में दूर हो जाएगी। ऐसा न हो कि गाड़ी रवाना हो जाए और बुद्ध बनने के प्रयास में तुम बुद्धू ही बने रह जाओ। हर इंसान के नसीब में वह क्षण आते हैं, जब भाग्य द्वार पर आता है। मूर्ख लोग उस वक्त द्वार नहीं खोला करते, क्योंकि उन्हें नसीब पर रोने की आदत दोहरानी होती है।''

comicsmylife.blogspot.in

"यानी उस डायरी में कोई ऐसी चीज अवश्य है, जिसके लिए आप नौकरी और लाख रुपयों का लालच दे रहे हैं!" अज्ञात चोर का सतर्क उत्तर था।

"मांस खाते हो?"

"नहीं!"

"मैं मांस खाता हूं। इस कारण मांस की उपयोगिता मेरे लिए है, जो उसे खाता है। डायरी की उपयोगिता भी मेरे लिए है, तुम्हारे लिए नहीं। यदि तुम चाहो तो डायरी को जला भी सकते हो। मेरे पास उससे भी लजीज मांस मौजूद है, मेरे भाई। बादल के द्वारा खींचे गए फोटोग्राफ्स वह लजीज मांस है।"

"अ...आप डायरी का क्या करेंगे?"

"कुछ नहीं!"

"आप झूठ बोल रहे हैं!"

"एक काम करो। वह डायरी उसके मालिक को वापिस लौटा दो। उसके बाद मेरे पास आना। तब तुम्हें यकीन आ जाएगा कि डायरी का मेरे लिए कोई मूल्य नहीं। न ही उसके मालिक के लिए डायरी किसी कुबेर के खजाने के समान है।"

"वह मुझे गिरफ्तार करवा देगा!"

"नहीं करवाएगा। मैं उसे समझा दूंगा। एक घण्टे में मेरे पास तुम डायरी लेकर आ सकते हो या फिर डायरी शर्मा परिवार में पहुंचाने की बात कह सकते हो। तुम्हारी नौकरी और लाख रुपए का इनाम पक्का। लेकिन खबरदार, तुम शर्मा फैमिली को यह नहीं बताओगे कि मेरे असिस्टेंट को तुमने डायरी के पृष्ठों का छायांकन करते हुए देखा था!"

"ठीक है, मुझे सौदा मंजूर है।" कहने के पश्चात फिर दूसरी ओर से रिसीवर रख दिया गया था।

"कौन था?" एक तरफा बातचीत से काफी कुछ अनुमान लगा चुकी पायल ने पूछा।

"वही, डायरी चोर...!" रिसीवर रख कर मदान ने पूर्ण विवरण बताया था।

"वह स्वयं आएगा?" हैरत से तब भी मुक्त नहीं हो पाई थी।

"बेशक आएगा। आखिर को उसने नौकरी और लाख रुपया

हासिल करना है।"

"आप देंगे?" शंकित सा स्वर था।

"हां।" सहज मुस्कान में सच्चाई थी।

"क्यों?"

"मदान प्राइवेट डिटेक्टिव एजेंसी की गुडविल को कायम रखने के लिए। अनाधिकार प्रवेश का आरोप प्राइवेट डिटेक्टिव पर भी लगता है।"

"ओह! वह लाख रुपया मैं दूंगी। मेरी वजह से नुकसान आपको क्यों?"

"नहीं, गलती बादल की थी। उसे आश्वस्त होना चाहिए था कि कोई अन्य तो कमरे में मौजूद नहीं। इस कारण मैं तुम्हें दोषी नहीं ठहरा सकता पायल।"

"लेकिन...!"

"बहस से फायदा नहीं। मैं आज जिस मुकाम पर हूं। वह सिद्धांतों की बदौलत है। जिन्हें मैंने मजबूती के साथ थाम रखा है। यदि सिद्धांत के बंधन ढीले करूंगा तो वहीं पहुंच जाऊंगा, जहां से आरम्भ किया था। रुपया कभी भी सिद्धांतों से बड़ा नहीं होता। संसार में हर चीज की कीमत चुकानी पड़ती है। लापरवाही की कीमत भी चुकानी पड़ती है।"

"ठीक है, जैसा आप कहें!"

"नाश्ता करते हैं, पायल बेटी। तब तक वह चोर भी आ जाएगा और बादल भी।"

"भूख तो मुझे भी लगी थी।"

"दैट्स गुड!" उसने फिर कार्डलैस बैल के बटन पर हाथ मारा था।

❑❑

नाश्ते के दौरान पायल पाराशर ने अपने आने का असली मकसद बयान किया था। उस मकसद और मकसद के लिए मांगे गए सहयोग ने प्राइवेट डिटेक्टिव भागीरथ मदान को बेहद रोमांचित कर दिया था। जितना वह अपनी पूरी जिंदगी में नहीं हुआ था। यदि यह कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

"आर यू सीरियस?" आश्चर्य से मुक्त होने के बाद मदान ने पूछा।

comicsmylife.blogspot.in

''यस, आई एम ?'' कहते हुए वह गंभीर थी।

''तुम क्रेजी हो गई हो पायल! क्या इस बात के लिए तुम्हारे पिता इजाजत देंगे ?''

''बेशक देंगे। क्योंकि दौलत के अलावा कुछ और देने के लिए उनके पास है भी नहीं।'' गंभीरता कायम थी, ''बेटी को रुपया देने में उन्हें कभी संकोच नहीं रहा।''

''पिता का प्यार नहीं दिया उन्होंने ?''

''दौलत कमाने के बीच डाइनिंग हॉल में जितना समय प्यार के लिए दिया जा सकता है, उतना उन्होंने दिया। लेकिन दौलत देने के लिए कंजूसी नहीं बरती।''

''लेकिन पांच करोड़ रुपया देते हुए तुम्हारे पिता को हजार बार सोचना होगा।''

''नहीं सोचना पड़ेगा, क्योंकि पांच करोड़ रुपया उनके लिए वही कीमत रखता है, जो एक लखपति के लिए पांच रुपया। रुपया वह मुझे दे देंगे, लेकिन मैं चाहती हूं कि बाकी का काम प्लान के अनुसार हो।''

''लेकिन तुम यह रुपया क्यों फूंकना चाहती हो ?''

''अपनी थिसिस की मुकम्मल कामयाबी के लिए।'' दृढ़ संकल्प था स्वर में।

''मेरा सहयोग चाहती हो, किस दृष्टि से ?''

''जिस दृष्टि से आप चाहें!''

''रुपया तो मैंने भी बहुत कमाया है पायल बेटी! आज तक बैल की तरह से दौलत के खूंटे से बंध कर गोल घूमता रहा था। सोचता हूं कि सीधा चलने का आनन्द भी उठाया जाए। गोल घेरे से उकताहट अनुभव कर रहा हूं।''

''लेकिन उससे हासिल कुछ नहीं होगा!''

''यह रहस्य मैं समझ चुका हूं पायल कि मानव का दिल प्राप्त हो चुकी वस्तुओं के प्रति आकर्षण का अनुभव नहीं करता है, वह तो अप्राप्ति की ओर भागता है।''

''अप्राप्ति का चुंबक इंसान को एक विशेष दिशा में खींचता है अंकल। यही कहना चाहते हैं न आप? टेप रिकॉर्डर की चाह पूरी होने के बाद आप 'डैक' की ओर आकर्षित होते हैं। टेप रिकार्डर का आकर्षण समाप्त हो जाता है। हैलीकॉप्टर खरीदने के

बाद अप्राप्त हवाई-जहाज का आकर्षण आपको खींचता है और पाया हुआ हैलीकॉप्टर महत्वहीन हो जाता है।'' पायल ने गंभीरता के साथ उसके कथन की व्याख्या की।

''कमाल की नजर है तुम्हारी! गूढ़ रहस्य को कितनी सरलता से बयान कर दिया।'' मदान ने प्रशंसा की, ''अब तो उस अप्राप्ति के आनन्द के प्रति मैं ज्यादा गंभीर प्रयास करूंगा। शायद उस रहस्य को पाकर मेरा दिल तृप्त हो जाए। वरना जिन्दगी के अंतिम क्षणों में वह अहसास शायद मरने भी नहीं देगा कि मैंने कागजी नोटों के नाम पर ईश्वर के चमत्कारिक जिस्म को नष्ट कर दिया।''

''शुक्र है कि एक प्राइवेट डिटेक्टिव भी इस दार्शनिक विचार की परवरिश कर सकता है।'' गहरी सांस भरी फिर पायल ने। तभी उसके मोबाइल फोन में जीवन के लक्षण पैदा हुए।

''पायल पाराशर दिस एण्ड!'' उसने बटन दबा कर संबंध स्थापित किया।

''म...मैं रोहन बोल रहा हूं!'' बेहद उत्तेजना थी उसके स्वर में।

''हां, क्या बात है ? काफी रोमांच है तुम्हारे स्वर में!'' उसने चौंकते हुए कहा।

''एक ऐसी अनोखी घटना हुई कि शायद तुम भी उस पर यकीन न करो!''

''ऐसी क्या बात हो गई ?''

''मैं तुम्हें यह बताना चाहता हूं कि डायरी मुझे प्राप्त हो गई है, जो एक लिफाफे में थी और अंदर एक कागज भी मौजूद था। कागज पर लिखा था—'मैं एक चोर हूं। डायरी को कीमती समझ कर उठा ले गया था, लेकिन पढ़ने के पश्चात अहसास हुआ कि डायरी की कीमत तुम्हारे लिए अमूल्य हो सकती है, मेरे लिए तो खाली डायरी का मूल्य ज्यादा होता!' वह चोर स्वयं डायरी देने आया था। डायरी देखते ही मैं मेनगेट की ओर भागा था। उसे शायद अहसास हो गया था। इस कारण मेनगेट खोलकर तेजी से भाग गया था। लेकिन वह डी.टी.सी. की उस बस से नहीं बच पाया, जो उसकी मौत का बहाना बन कर उस

comicsmylife.blogspot.in

मार्ग पर आ रही थी।''

''ओह ! फिर वह पत्र... !''

''मैंने अंदर जाकर अब पढ़ा है। मैं तो लिफाफे में डायरी को देखते ही उसके पीछे दौड़ा था !'' स्वर में इस बार उत्तेजना थी।

''इंसान जिंदगी भर दौड़ता है, कभी चोरी करके, कभी चोर को पकड़ने के लिए और कभी मौत की ओर भी। लेकिन जिस ओर दौड़ना चाहिए। उस दौड़ को सभी भूल चुके हैं। अपने सृष्टिकर्ता की ओर दौड़ा जाए तो फिर हर दौड़ से मुक्ति मिल जाती है। ईश्वर को प्राप्त करने के पश्चात भी इंसान को कर्तव्यों की अपनी दौड़ तो लगानी पड़ती है। लेकिन उस दौड़ में न थकान होती है, न दुख होता है; न प्रसन्नता होती है और न ही उस दौड़ का अहसास उसे होता है रोहन ! तुम्हारी उत्तेजना बता रही है कि चोर के पीछे दौड़ कर तुम्हें आश्चर्य और मानसिक आघात लगा है। तुम्हें गलतफहमी भी हो सकती है कि तुम्हारे दौड़ने के कारण ही वह गरीब मारा गया।'' पायल ने बेहद मृदुलता के साथ कहा।

सामने बैठे मदान को लगा था, जैसे वह स्वर वीणा के तारों से झंकृत हुआ है या फिर कोई पहाड़ी झरना चट्टान से टकरा कर संगीत के स्वरों का इंद्रधनुष बना रहा हो। देखता रह गया था वह पायल का चेहरा। एक अलौकिक आभा तब उसे पायल के चेहरे पर नजर आई थी।

''सच तो यही है कि मैं उसके पीछे न दौड़ा होता तो वह जीवित होता !'' आत्मग्लानि थी रोहन के स्वर में, ''जो जवाब मैं पाना चाहता था, वह जवाब चोर ने पहले ही लिख कर दे दिया था, फिर भी मैं उसके पीछे भागा। वह मेरी पकड़ से बच कर मौत के हाथों गिरफ्तार हो गया पायल। मम्मी भी काफी आहत हैं। उन्हें भी यही लग रहा है कि मैंने उसके पीछे नहीं भागना था, क्योंकि डायरी पर हमारा अधिकार था, उसकी व्यक्तिगत जिन्दगी से हमारा कोई रिश्ता नहीं था !''

''आण्टी को समझाना और तुम भी यह बाखूबी समझ लो कि मौत तो उसकी ओर डी.टी.सी. की बस बन कर रवाना हुई थी। तुम भागे तो उसे रोकने के लिए थे। लेकिन वही नहीं समझ पाया कि वह जीवन से ही मुक्ति पाने को दौड़ रहा है। उसकी

मौत का भार अपने दिल पर रखने की कोई आवश्यकता नहीं है रोहन। भाग्य में जो लिखा है, उसे बदलना इंसान के वश में नहीं।''

''फिर भी मेरा दिल यही कहता है कि मेरे कारण ही... !''

''मत सुनो उस दिल की आवाज, क्योंकि जिन्दगी और मौत के लिए तुम बहाना तो बन सकते हो। लेकिन उसके जिम्मेदार नहीं हो सकते हो। फिर भी मरने वाले के विषय में जानकारी अवश्य ही प्राप्त करना। हृदय की वेदना को कम करने के और भी कई उपाय हैं। पश्चाताप अगर है तो उसकी पूर्ति के भी मार्ग हैं।''

''ठीक है, मैं उसके विषय में पता करूंगा। वैसे कोई आश्चर्य नहीं कि सांध्य कालीन अखबार में उसके बारे में विवरण प्रकाशित हो।''

''उस 'पत्र' को संभाल कर रखना, बेहतर तो यह होगा कि कोठी पर ही ले आना। मैं भी चोर द्वारा लिखे पत्र को पढ़ना चाहूंगी !''

''ठीक है !''

''खुद को और आण्टी को समझाने की कोशिश करो। हां, पुलिस के सामने मत कह देना कि तुम उसे पकड़ने के लिए दौड़े थे।'' उसने आगाह किया।

''मैं जानता हूं। इस प्रकार की सच्चाई सुन कर पुलिस को यकीन हो जाता है कि सामने वाले से रुपये ऐंठे जा सकते हैं।''

''ठीक है बंद करती हूं।'' उसने फिर मोबाइल ऑफ कर दिया था।

''क्या हुआ ?'' मदान ने पूछा।

जवाब में उसने विवरण बताया।

सुन कर मदान बोला, ''उसके भाग्य में मेरी नौकरी नहीं लिखी थी, लेकिन उसके परिवार के पास एक लाख रुपया अवश्य पहुंच जाना चाहिए। मरने वाले को मैंने जुबान दी थी, इस कारण अपनी गरिमा को बरकरार रखना आवश्यक है ! अंतर्रात्मा के नेत्र उस गरिमा पर जो लगे रहते हैं।''

''कितने लोग हैं जो वचन की कीमत को समझते हैं।'' पायल ने फिर उठ कर वॉश बेसिन पर हाथ धोए थे।

comicsmylife.blogspot.in

''कम से कम सफल लोगों के बारे में तो कहा जा सकता है कि वह जुबान के धनी होते हैं। वचन पूरा करने वाला ही कामयाब होता है। झूठ का झुनझुना अस्थाई तरक्की दे सकता है। लेकिन ठोस और स्थाई नहीं।'' उसने भी हाथ धोकर रूमाल से पोंछे थे।

''अब मैं चलूंगी। उस चोर का आखिरी खत लेकर रोहन शाम को कोठी पर आएगा। मैं चाहती हूं कि रात नौ बजे डिनर हम साथ करें। ताकि कोई भी कमी हमारे प्लान में बाकी न रहे।'' उसने उठते हुए कहा।

तभी बादल ऑफिस में प्रविष्ट हुआ था।

''ठीक समय पर आए हो बादल। पायल बस निकलने ही वाली थी।''

बादल को देख कर पायल ने बैठने का कोई उपक्रम नहीं किया। अलबता उसने हाथ से वह बैग अवश्य ले लिया, जिसमें डायरी के पॉजिटीव प्रिण्ट थे।

''मैं प्रिण्ट्स देख लूंगी मदान साहब, क्या तुमने प्रिण्ट्स देखे थे बादल?''

''हां!'' उसने स्वीकार किया, ''देखना आवश्यक था कि प्रिण्ट में अक्षर पढ़े जा रहे हैं अथवा नहीं।''

''मैं बाद में आपको बता दूंगी कि डायरी में क्या लिखा हुआ था।'' फिर अभिवादन करने के पश्चात वह द्वार की ओर आकृष्ट हो गई।

□□

सिद्धार्थ चक्रवर्ती उस युवक का नाम था, जो डी.टी.सी. की बस का शिकार हुआ था। खुद पोस्ट ग्रेजुएट था और पिता पोस्टमैन थे। पिता की कमाई से ही सात पेट पल रहे थे। शाहदरा जमुना पार के दो कमरों के मकान में वह सभी प्राणी रहते थे। सिद्धार्थ बाईस वर्ष का था और सबसे छोटा था। बाकी चार कुंवारी बहनें थीं, जो उससे बड़ी थीं। जाहिर था कि पुत्र प्राप्ति की लालसा में ही पांचवीं संतान पर जाकर चक्रवती दम्पति ने विराम चिन्ह लगाया था। एक बेटे का मुख देखने की खातिर चार बेटियों को इस संसार में लाया गया था। जबकि वही बेटा अकाल मौत मर गया। जिसके कंधों पर जाना था, उसे ही कंधा देने की

आवश्यकता आन पड़ी थी।

भागीरथ मदान को वह मकान ढूंढने में कोई विशेष परेशानी नहीं हुई थी, जहां से मातम के स्वर चिता जलने के बाद भी गूंज रहे थे।

''मैंने आपको पहचाना नहीं साहब?'' सिद्धार्थ के पिता भुवन ने धीमे से पूछा।

वृद्ध की उम्र पचपन वर्ष के आस-पास थी। लेकिन जवान बेटे की मौत ने उनकी उम्र में जहां एकाएक इजाफा कर दिया था, वहीं परिवार की देखरेख के दायित्व ने उन्हें सजग भी बना दिया था।

किसी परिवार में जब दुर्घटना होती है तो सबसे ज्यादा फर्क उसी शख्स को पड़ता है, जिससे परिवार के पेट उससे बंधे हुए होते हैं।

''सिद्धार्थ मेरा परिचित था। मैं उसे नौकरी देने की बात कह चुका था। लेकिन ईश्वर को शायद यह मंजूर नहीं था चक्रवर्ती साहब!'' मदान ने उसके कंधे पर सहानुभूति से भरा हाथ रखा।

''ओह! ऐसा कह कर आपने विधाता के प्रति मेरे आक्रोश को और गहरा कर दिया है। नालायक बेटा अगर मर जाए तो उसका दुख नहीं होता है। जितना एक लायक बेटे की मौत पर होता है। वह लायक होकर मरा, यह नहीं बताना था साहब आपको।''

''आप ठीक कह रहे हैं चक्रवर्ती साहब, लेकिन अब अपने दुख और आक्रोश को भूल कर अपने परिवार के विषय में सोचना है। चार बेटियों के पिता हैं आप। चारों की शादी हो जाए। वह उम्र हो चुकी है बच्चियों की।'' भागीरथ मदान ने भीगे स्वर में कहा, ''विधाता को भी वही फूल पसंद आया चक्रवर्ती साहब, जिसने फल बन जाना था। एक ऐसा फल जो परिवार की आर्थिक दुश्वारियों को कम करने वाला था।''

''हां और उसे ही काल ने अपना ग्रास बना लिया।'' वृद्ध की आंखों में दुख के मोती चमक उठे।

''हौसला रखिए चक्रवर्ती साहब। अपनी ओर से मैं एक साधारण भेंट देने आया हूं। बेशक आपके बेटे ने मेरी नौकरी में एक दिन भी नहीं गुजारा था, लेकिन मैं उसे नौकरी के लिए

comicsmylife.blogspot.in

आश्वस्त कर चुका था। यह बैग में आपके पास छोड़े जा रहा हूं। इसमें सिद्धार्थ के नसीब का एक लाख रुपया रखा हुआ है।''

वृद्ध के चेहरे पर आश्चर्य के भाव उभरे। जाहिर था कि वृद्ध भुवन चक्रवर्ती ने जमाना देखा था। वह समझ सकते थे कि एक लाख रुपया यूं ही नहीं दे दिया जाता। उसके पीछे ठोस वजह होती है।

''इसे क्या समझूं?'' कांपते अधरों से शब्द फिसले।

''यही समझ लीजिए कि मैं आपके भाई की तरह से यह रुपया अपनी बेटियों के भविष्य के लिए दे रहा हूं!'' स्वर भर्रा उठा था मदान का।

''यह रुपया मुझे नहीं चाहिए।''

''ज...जी!''

''यदि आप वाकई मेरे भाई की तरह से सोचते हैं मदान साहब, तो मेरी बेटियों को अपनी बेटियां मान कर इनकी शादी...!'' आगे कुछ नहीं कह पाया था वह पोस्टमैन। जो अपनी तमाम नौकरी के दरम्यान गम और खुशी के पैगाम बांटता रहा था लेकिन अपनी ख्वाहिश का पैगाम व्यक्त कर पाने में समर्थ नहीं हो पाया था। यही संसार का सत्य है लेकिन कड़वा सत्य।

''समझ लीजिए कि सिद्धार्थ मेरे रूप में आपके पास पुनः लौट आया है। अब सिद्धार्थ की बात मान कर यह रुपया रख लीजिए और इसमें मेरा कार्ड भी है। आप जब भी आवाज लगाएंगे, मैं हाजिर हो जाऊंगा।''

''सच कह रहे हो!'' वृद्ध की जुबान इतना ही कह सकी थी।

''झूठ वह बोलते हैं, जिन्हें कुछ हासिल करना होता है चक्रवर्ती साहब, आप तो मुझे सिर्फ एक कापी दे दीजिए, जिसमें सिद्धार्थ के लिखे हुए शब्द हों। यदि उसकी डायरी दे सकें तो आपका अहसान होगा। डायरी पढ़ कर मैं उसकी अधूरी इच्छाओं की पूर्ति कर सकूंगा।''

''भावना बेटी, अपने भइया की डायरी लाओ तो जरा।'' भावना उठ खड़ी हुई थी।

वापिस लौटी तो उसके पास डायरी थी।

भागीरथ मदान ने डायरी लेकर कोट की जेब में डाल ली। फिर दस मिनट पश्चात वह वहां से रवाना हो गया। वापसी में वह बेहद संजीदा था।

□□

इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर कई परिचित चेहरे थे, जो पायल पाराशर को विदा करने के लिए आए थे। वह चेहरे—दीनानाथ मल्होत्रा, रोहन शर्मा, नीलिमा देवी, भागीरथ मदान, वासुदेव कुमारन, रत्ना राणा और बादल के थे। सभी चेहरे उस बिछोह से क्लांत नजर आ रहे थे।

विजिटर्स लॉबी से वह पायल पाराशर को प्लेन की ओर बढ़ते हुए देख रहे थे। मात्र ढाई सप्ताह के प्रवास में ही उसने भारत में अपने ऐसे मित्र बना लिए थे जो उसकी विदाई के वक्त अपनी आंखों को द्रवित होने से नहीं बचा सके थे। दिल में भारीपन था। होंठों पर मुराद थी कि किसी प्रकार पायल रुक जाए लेकिन जाने वाले रुका नहीं करते। खुद पायल भी नम आंखों के साथ प्लेन की ओर बढ़ी थी। फिर पायल ने सीढ़ी हटाए जाने से पूर्व अंतिम बार हाथ हिला कर उन्हें विदाई दी थी। फिर कुछ देर बाद अमेरिकन एयर लाइंस का विमान रनवे पर दौड़ा और फिर शीघ्र ही वह आकाश की बांहों में था। विमान को ही वह पायल का प्रतीक मान कर तब तक देखते रहे थे, जब तक कि वह ओझल न हो गया।

''क्या दीदी से अब कभी मुलाकात नहीं होगी?'' रत्ना राणा ने छलछलाती आंखों को पोंछते हुए रोहन से पूछा था।

''इंसान की जिन्दगी में देवी-देवता एकाध बार ही आते हैं रत्ना। वह एकाध बार का साथ भी ज्यादा लम्बा नहीं हुआ करता है।'' लरजते स्वर में बोला था रोहन।

''मुझे यूं लग रहा है, जैसे मैंने अपनी बेटी को शादी के बाद विदा किया हो।'' दीनानाथ मल्होत्रा ने भागीरथ मदान के कंधे पर हाथ रखते हुए कहा।

''यही मैं भी महसूस कर रहा हूं मल्होत्रा भाई!'' मदान ने फिर गहरी सांस भर कर छोड़ी, ''फरिश्तों का साथ ज्यादा नहीं रहता।''

''हां, ठीक कहते हो दोस्त। इस मामले में मेरा दोस्त

comicsmylife.blogspot.in

भाग्यशाली है, जो पायल जैसी बेटी का पिता है। लेकिन वह नालायक तो दौलत में डूब कर बेटी के गुणों को शायद कभी देख ही न पाया हो।''

''पराग कौटिल्य पाराशर की बात कर रहे हैं आप ?''

''हां, वही तो पायल का बाप है। अपनी इकलौती बेटी से ज्यादा वह दौलत को चाहता है। कितनी बार समझाया है कमबख्त को कि बेटी को वक्त दे। लेकिन नहीं, एकदम चिकना घड़ा बनाया है भगवान ने।''

''एकमात्र पुत्री और उससे भी लगाव नहीं!'' बुरी तरह चौंक उठा मदान, ''एक भारतीय बाप के हिन्दुस्तानी दिल में दौलत इतनी गहराई तक तो नहीं समा सकती थी कि बेटी के लिए ही स्थान बाकी न रहे।''

''काबुल में सारे घोड़े ही नहीं होते। गधों का वहां भी गुजर है। एक हिन्दुस्तानी बाप अपने दिल को विलायती भी बना सकता है।''

''ऐसे बाप से तो मैं अवश्य बात करना चाहूंगा।''

''दिल ही जलाओगे, बाकी हासिल कुछ नहीं होगा।''

''सर, चलें!'' रोहन ने निकट आकर पूछा था।

''हां, चलना तो पड़ेगा ही।''

फिर सभी बाहरी द्वार की ओर आकृष्ट हो गए।

□□

दिल्ली से प्लेन मुम्बई पहुंचा था। मुम्बई पहुंचने के पश्चात कई यात्री प्लेन से नीचे उतरे थे। वहां से एक घंटे पश्चात उड़ान थी। पायल पाराशर भी अन्य यात्रियों के साथ उतरी थी। उसके पास एक एयर बैग था। जिसे लेकर वह टॉयलेट में प्रविष्ट हुई थी। दस मिनट पश्चात वह टॉयलेट से बाहर आई तो उसका हुलिया एकदम तब्दील हो चुका था। गोरा दमकता हुआ चेहरा अब सांवला हो गया था और आंखों की पुतलियों का रंग ब्रिल्लौरी हो गया था। वस्त्र भी तब्दील हो चुके थे।

सांताक्रुज एयरपोर्ट के उस एरिया से वह बाहर आ चुकी थी। जहां अब कस्टम चैकिंग का कोई चक्कर शेष नहीं रह गया था।

टॉयलेट्स के बगल में ही शानदार कैंटीन बनी हुई थी। उसने कैंटीन में प्रविष्ट होने के पश्चात पूरी कैंटीन का मुआयना किया।

फिर बाईं दीवार के कोने के साथ लगी मेज की ओर वह आकृष्ट हुई। उस टेबल के साथ रखी कुर्सियों में से एक पर पतला-दुबला वृद्ध शख्स बैठा था। पायल पाराशर स्थिर कदमों के साथ उसकी ओर आकृष्ट हुई।

''हैलो, कैसे हैं नाना जी!'' उसने बैठने का उपक्रम करते हुए पूछा।

''ओह! तुम पायल पाराशर...अपना हुलिया बदल कर आई हो!''

''जी, ज्यादा इंतजार तो नहीं करना पड़ा नानाजी!''

वह शख्स तेजपाल शर्मा था। वही तेजपाल शर्मा जो रोहन का भी नाना था।

''मैं तुम्हारा नाना नहीं!'' उसने गहरी सांस भरी।

''जानती हूं, लेकिन रोहन के तो नाना हैं आप। इस कारण मेरे लिए भी नाना हो गए।''

''देखो लड़की, तुमने मुझे दो लाख रुपए दिए। इस कारण मैंने क्रांतिदूत शर्मा को वह सब जाकर कहा, जो मेरे बताए बिना वह स्वीकार नहीं कर सकता था। अब तुम और क्या चाहती हो?'' शुष्कता थी स्वर में।

''बदड़ी नागल और रींगस आपका देस है। वहां गए आपको ग्यारह माह पूरे हो चुके हैं। मैं चाहती हूं कि आप वहां का एक फेरा और लगाएं।''

''वह क्यों?'' उसने खुरदरे स्वर में पूछा।

''ताकि मैं आपको दो लाख रुपया और दे सकूं।''

''क्यों चाहती हो ऐसा?'' चौंक उठा वृद्ध तेजपाल शर्मा।

''बताना जरूरी तो नहीं। हां, एक काम अवश्य करना। आकोला रोड पर आपने जो नया बंगला बनाया है। उसकी चाबी मेरे सुपुर्द कर देना। मैं एक किराएदार के बतौर वहां पर रहना चाहती हूं। इसी बहाने बुलढाणा भी देख लूंगी।''

''तुम...तुम बुलढाणा में रहोगी!''

''क्यों, बुलढाणा में क्या नारियों का गुजार नहीं। सिर्फ पुरुष ही बसते हैं वहां?''

''नहीं, लेकिन...!''

''दो लाख रुपया नहीं कमाना चाहते शर्मा साहब?'' उसने

comicsmylife.blogspot.in

तुरंत लालच के दाने से तेजपाल की पूछताछ को काबू करना चाहा।

"लड़की! तुम नहीं जानती हो कि मैं भी करोड़पति हूं। मुझे दो लाख रुपयों का लालच देने से कोई फायदा नहीं। तुम्हारे कहे से मैंने क्रांतिदूत शर्मा को वह जानकारी दे दी थी और साथ ही उसे उकसाने के लिए चैलेंज भी कर दिया था। मैं जानता था कि क्रांतिदूत शर्मा अपने स्वर्गवासी मामाजी हनुमान प्रसाद शर्मा की काफी इज्जत करता था। इस कारण मेरे उकसाने पर वह बुलढाणा जा पहुंचा था।"

"क्या वह अब भी वहीं पर हैं?"

"हां, वहीं पर है। लोगों के ताने सुनने पड़ते हैं उस विद्वान व्यक्ति को। खून जलता है उसका वहां रहते हुए।" चेहरा तमतमा उठा था तेजपाल शर्मा का, "मैं चाह कर भी उसकी कोई मदद नहीं कर सकता, क्योंकि वह स्वाभिमानी शख्स मदद लेने को तैयार नहीं। इस चक्रव्यूह से तुमने ही फंसाया है उसे। न जाने क्या नाटक रचना चाहती हो तुम।"

"कोई बात नहीं शर्मा साहब। अब मैं आपको अपने नाटक का वह भाग भी दिखाऊंगी, जो आपको अपार खुशी देगा।" उसने ठोस स्वर में कहा।

"मजाक कर रही हो।"

"नहीं, हकीकत बयान कर रही हूं लेकिन दिखाने से पहले मैंने खुद भी कुछ देखना है। उसके बाद ही आपको वह खुशी दे सकूंगी।"

"देखो लड़की, मुझे तुम्हारा दो लाख रुपया भी नहीं चाहिए और न ही मैं कुछ देखना चाहता हूं।" तेजपाल शर्मा ने सफेद रंग की टोपी को ठीक करते हुए कहा, "मेरे लिए तो यही हैरानी की बात हुई कि तुम्हारे बुलावे पर मैं बुलढाणा से मुम्बई आ गया।"

"अब आप यहां से रींगस भी जाएंगे।"

"जबर्दस्ती है?"

"नहीं, लेकिन यह फोटोग्राफ्स तो देख लीजिए।" पायल ने जेब से फोटोग्राफ्स निकाल कर दिखाए।

उन फोटोग्राफ्स में तेजपाल शर्मा विभिन्न युवतियों के साथ बिस्तर पर कलाबाजियां खाते नजर आ रहे थे।

सांवली रंगत एकदम स्याह हो गई।

"ब्लैकमेल करना चाहती हो?" तेवर ढीले पड़ गए।

"केंचुए को अगर सांप बनने की सूझे तो उसे केंचुआ बनाना पड़ता है। वरना सांप के मुगालते में बेचारा मारा जाता है। मैं नहीं चाहती कि किसी केंचुए को मेरे कारण जिन्दगी से हाथ धोना पड़े।"

"आखिर तुम हो कौन? शर्मा परिवार से तुम्हारा रिश्ता क्या है?"

"क्या सिर्फ इतना जानना काफी नहीं होगा कि मैं जो कुछ भी कर रही हूं। उसके लिए बेतहाशा रुपया फूंक रही हूं। जाहिर है कि मेरी लालसा रुपया कमाने की तो हर्गिज नहीं हो सकती, क्योंकि रुपयों के मामले में आपकी सोचने की शक्ति से ज्यादा धनवान हूं मैं। मेरे लिए आपकी वही हैसियत है, जो आपके लिए किसी मजदूर की होती होगी।"

"यानी जो कुछ भी तुम कर रही हो उसका उद्देश्य दौलत नहीं?"

"कौन देगा मुझे दौलत! आप? जो नकली दांतों के बाद भी रुपए को उन्हीं से पकड़ कर रखते हैं! शर्मा परिवार, जो अपना गुजारा मुश्किल से कर पा रहा है। हनुमान प्रसाद शर्मा, जो इस दुनिया में नहीं। कौन सा किरदार मुझे फायदा पहुंचा सकता है?"

"दुश्मनी की भावना से कर रही हो यह सब?" तेजपाल शर्मा ने सरसराते हुए स्वर में पूछा।

तभी वेटर फ्रूट जूस और स्नैक्स लेकर आया। उसकी मौजूदगी तक दोनों ने खामोशी की परवरिश होने दी।

"नहीं, कोई भी व्यक्ति यदि दुश्मन को खत्म करना चाहे तो उसको साल भर इंतजार करने की जरूरत नहीं। खास करके मुझ जैसी लड़की को तो कतई नहीं। दुश्मन को परास्त करना मेरी हॉबी है।"

"हॉबी!" अंग्रेजी से अनभिज्ञ तेजपाल चौंका।

"मेरा शौक समझो। लेकिन मैं अपना शौक पूरा नहीं कर रही। मैं तो अपनी बदनसीबी पर रोने आई हूं। सुना है कि जो रोने को तैयार हो, उस पर भाग्य मुस्करा दिया करता है।"

comicsmylife.blogspot.in

"देखो, तुम एक समझदार लड़की हो और मेरे लिए बेटी के समान भी हो क्योंकि हमारी उम्र के बीच जो फासला है, वह हमें सिर्फ बाप-बेटी ही बना सकता है। मैंने शादी नहीं की। यह तुम जानती है। क्यों नहीं की, यह मेरा व्यक्तिगत मामला है। लेकिन शादी न करना अलग बात है और ईश्वर की दी हुई भूख को शांत न कर पाना दूसरी बात है। मैंने शारीरिक सुख हासिल किया और बदले में रकम खर्च की। इस बात पर मुझे कोई ग्लानि नहीं है। तुमने मेरे व्यक्तित्व के नंगे फोटोग्राफ्स मेरे सामने रखे। कुछ पलों के लिए मेरी खोपड़ी का फ्यूज उड़ गया। इस कारण नहीं कि वह मेरी गंदी तस्वीरें थी। इस कारण कि उन तस्वीरों को किसके इशारे पर तैयार किया गया। तुम खतरनाक हो। मैं जानना चाहता हूं तुम्हारे बारे में।"

"आपकी बातों से अब समझदारी की महक आ रही है। कहिए, क्या जानना चाहते हैं आप?" उसने सपाट स्वर में कहा।

"यदि तुम्हारे मकसद की कामयाबी के लिए मेरा बुलढाणा से जाना जरूरी है तो ठीक है, मैं चला जाऊंगा। लेकिन मैं तुम्हें यकीन दिलाना चाहता हूं कि शारीरिक भूख के अलावा मुझमें कोई बुराई नहीं। तुम्हें बेटी कह चुका हूं। इस कारण तुम्हारे लिए कतई बुरा नहीं। फिर क्यों चाहती हो कि मैं बुलढाणा में न रहूं?"

"जहां तक मैं जानती हूं। बुलढाणा, विदर्भ (महाराष्ट्र) का एक जिला है। लेकिन आप वहां के एक सम्मानित और जाने-पहचाने किरदार हैं। इस कारण मैं नहीं चाहती कि आप बुलढाणा में रहें, क्योंकि आगे की कथनी को मैं आपके किरदार से प्रभावित नहीं करना चाहती। मैं नहीं चाहती कि जो व्यक्ति बुलढाणा पहुंचने वाला है, वह आपके संपर्क में आए। क्योंकि इससे मेरे प्लान पर गलत असर पड़ सकता है।"

"और यदि मैं भी तुम्हारी तरह नकली हुलिया बना कर बुलढाणा में रहूं तो? मैं यह भी प्रचारित कर दूंगा कि मैं देस जा रहा हूं और मेरे पीछे एक बूढ़ा और उसकी बेटी मेरे नए बंगले में बतौर किराएदार रहेंगे।"

"बूढ़े आप, बेटी मैं!" वह चौंकी।

"हां!" तेजपाल ने जूस का प्याला उठाया फिर खाली कर दिया।

"यदि वाकई आप ऐसा करते हैं तो मुझे कोई भी आपत्ति नहीं।" उसने तेजपाल शर्मा की आंखों में झांकते हुए ठोस स्वर में कहा और फिर चेतावनी दी, "लेकिन खबरदार! मुझे बेटी कहा है तो उस रिश्ते की लक्ष्मण रेखा को पार करने की कभी कोशिश मत करना, वरना वक्त के पहले मारे जाओगे।"

"मैं उम्र को कम नहीं करना चाहता, लेकिन मेरे लिए यह जानना जरूरी है बेटी कि तुम आखिर करना क्या चाहती हो?"

"मैं आज आपसे कुछ विवरण जानना चाहूंगी, क्योंकि मुझे पूरे घटनाक्रम की जानकारी नहीं है। मैं जिन लोगों के विषय में जानना चाहती हूं, उनके विषय में आप बड़ी गहराई से जानते हैं।" पायल ने भी जूस खत्म कर दिया।

"ठीक है। मैं उन लोगों के विषय में बता दूंगा लेकिन बुलढाणा हम कब चलेंगे?"

"कल शाम को आप रवाना होंगे। आपने बुलढाणा में ऐसा माहौल बनाना है कि आप अपने 'देस' रींगस जा रहे हैं। साथ ही आप नए मकान को अजनबी बाप-बेटी के लिए किराए पर उठा चुके हैं।"

"कोई दिक्कत नहीं ऐसा हो जाएगा।"

तभी वेटर आया और उनके सामने रखे फ्रूट जूस के खाली प्याले उठा ले गया। दोनों खामोश हो गए। उनकी तवज्जोह तब नमकीन स्नैक्स की ओर हो गई।

□□

रोहन ने नाश्ता करने के बाद ऑफिस जाने की तैयारी आरम्भ की ही थी कि फोन की घण्टी घनघना उठी। उसने आगे बढ़ कर रिसीवर उठाया।

"रोहन शर्मा स्पीकिंग!"

"कैसे हो रोहन?" एक भर्राया हुआ स्वर उभरा, "मैं तुम्हारा शुभचिन्तक बोल रहा हूं। ऑफिस निकलने वाले थे?"

"शुभचिन्तक आसमान से नहीं टपकते। उनके नाम भी हुआ करते हैं।"

"कुछ लोग नाम गुप्त रखते हैं और पूरा मंदिर बना देते हैं।

comicsmylife.blogspot.in

कुछ ऐसे भी होते हैं जो एक फुट संगमरमर के टुकड़े पर भी अपना नाम दानकर्ता के रूप में लिखा देते हैं।''

''लेकिन मैं मंदिर या उसके फर्श का कोई वर्गाकार संगमरमरी टुकड़ा नहीं हूं।''

''हां, तुम तो एक खण्डहर हो, जिसे पुन: निर्माण की आवश्यकता है। लेकिन अर्थशास्त्र का नियम है कि आवश्यकता की पूर्ति के लिए इच्छा और धन का होना आवश्यक है। तुम्हारे पास धन का अभाव है।''

''जबकि तुम ऐसे आलीशान महल में हो, जिसके आगे ताजमहल का जलवा भी फीका है।''

''नहीं, मेरा ऐसा दावा नहीं है, लेकिन तुम्हारा जीवन खण्डहर इस कारण है, क्योंकि तुम्हारी जिंदगी में पिता का अभाव हो गया है। तुम्हारे पिता को पांच करोड़ की शर्त रख कर जाना पड़ा है।''

सुन कर अचम्भित रह गया था रोहन।

''कैसे जानते हो ?'' फिर उसने सरसराते स्वर में पूछा।

''आम से पूछा नहीं जाता कि भाई इतने मीठे कैसे हो ? मिठास का आनन्द लिया जाता है। स्वाद का लुत्फ उठाया जाता है।''

''घाव हरे करके लुत्फ उठाने की बात कर रहे हो ?'' उसने ठण्डे स्वर में कहा।

''मैं तुम्हें पांच करोड़ रुपया दे सकता हूं।'' भर्राए हुए स्वर ने जैसे उसके कान पर दस्तीब ही दे मारा था। कई क्षणों को वह हतप्रभ रह गया।

''विश्वास नहीं मेरी बात पर ?'' दूसरी ओर से टोका गया तो वह सम्मोहन के जाल से मुक्त हुआ।

''अ...आप मुझे पांच करोड़ रुपया देंगे। वह पांच करोड़ रुपया जो मेरे पिता की वापसी की शर्त भी है !'' उसने मंत्रमुग्ध अंदाज में कहा।

उसे अपना अस्तित्व अंतरिक्ष में विचरण करता हुआ लगा।

''हां, सच यही है।''

''तो फिर नेकी के लिए पूछ क्यों रहे हो ?'' उसने सतर्क अंदाज में पूछा।

''गिव एण्ड टेक। यह जमाने का दस्तूर है।''

''ओह ! बदले में क्या चाहते हो ?''

''मेरा एक व्यक्ति तुम्हारे साथ रहेगा। वह सुनिश्चित करेगा कि पांच करोड़ रुपयों का तुम्हारे पिता द्वारा क्या किया जाना है। समझ रहे हो मेरी बात !''

''मेरे पिता वापिस लौट आएं, यही बहुत है मेरे लिए। वैसे मैं भी यह जानने को कम बेताब नहीं कि मेरे पिता पांच करोड़ रुपयों का क्या करने वाले हैं ?''

''उसकी जानकारी तुम्हें भी हो जाएगी। क्योंकि मैंने एक विश्वासपात्र व्यक्ति को तुम्हारे साथ रखना है, जो कतई भी धोखा न खाए।''

''ओह ! यानी अभी कोई विश्वासपात्र व्यक्ति नहीं मिला है आपको ?'' चौंक उठा रोहन।

''जाहिर है। दिल्ली में मैं नया हूं। कोई पेशेवर व्यक्ति जो विश्वसनीय हो, उसके द्वारा ही सारा कार्य किया जाएगा। कोई रिटायर्ड पुलिस अधिकारी मजिस्ट्रेट या फिर कोई प्राइवेट डिटेक्टिव मेरे काम को कर सकता है।'' भर्राए हुए स्वर में गहरी उलझन थी।

तब रोहन के मस्तिष्क में फौरन ही भागीरथ मदान का नाम गोली की तरह कौंधा था।

''मैं दिल्ली के एक प्राइवेट डिटेक्टिव का नाम बता सकता हूं। भागीरथ मदान है उस व्यक्ति का नाम। भागीरथ मदान के बारे में आप पूछताछ कर लीजिए। यदि आपको उस शख्स पर यकीन आ जाए और वह आपके लिए कार्य करना मंजूर कर ले तो आपकी समस्या समाप्त हो सकती है।''

''भागीरथ मदान ! इसका पता और कांटेक्ट नम्बर ?''

''अवश्य, नोट कीजिए।'' उसने डायरी का पृष्ठ खोलते हुए कहा जो फोन के पास ही रहती थी।

''होल्ड करो।'' कुछ क्षण बाद कहा गया, ''हां, अब नोट कर सकते हो।''

उसने पता नोट करवा दिया। भागीरथ मदान का फोन नम्बर भी।

''क्या यह शख्स तुम्हारा परिचित है ?''

comicsmylife.blogspot.in

"हां!" उसने स्वीकार किया, "परिचित भी और परखा हुआ भी!"

"मैं अपने सोर्स से पता करूंगा कि यह शख्स मेरे प्रति वफादार रहेगा या तुम्हारे प्रति। उसके बाद ही फैसला किया जाएगा।" सतर्क जवाब उभरा।

"यह अपने क्लाइंट के प्रति वफादार रहता है।"

"देखा जाएगा। पांच करोड़ रुपया तुम्हारे पास आ गया है, इस बात की सूचना क्रांतिदूत शर्मा को किस प्रकार से हो सकेगी।"

"मैंने यह सूचना पापा के एक एडवोकेट मित्र को देनी होगी। उनके माध्यम से पापा को खबर हो जाएगी।" उसने भी सतर्क होकर बताया।

"उस एडवोकेट का नाम?"

"पांच करोड़ रुपया देने के बाद ही तुम्हें उसका नाम जानने का हक होगा।"

"ठीक है, कोई परेशानी नहीं। कल शाम तक रुपया तुम्हारे पास पहुंच जाएगा।" कहने के पश्चात दूसरी ओर से संबंध-विच्छेद कर दिया गया था।

कुछ देर सोचने के बाद उसने भागीरथ मदान का फोन नम्बर डायल किया।

फोन बादल के द्वारा अटेण्ड किया गया था।

"मैं रोहन बोल रहा हूं बादल, मदान साहब कब तक आ जाएंगे?"

"निश्चित नहीं बता सकता लेकिन एकाध घण्टे में आएंगे!"

"उनका मोबाइल नम्बर?"

"मोबाइल वह साथ लेकर नहीं गए हैं। क्या कोई जरूरी काम था?"

"हां!" उसने फिर कुछ सोच कर कहा, "जैसे ही वह आएं, मुझे अखबार के दफ्तर पर सूचना देना।"

"मैं उनसे फोन ही करवा दूंगा मिस्टर रोहन।"

"ठीक है, मुझे ही वह स्वयं फोन कर लें तो कहना ही क्या, थैंक्स मिस्टर बादल।" उसने फिर रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया। पंद्रह मिनट पश्चात वह अपनी मोटरसाइकिल पर था।

□□

मुम्बई के होटल सम्राट में सूइट लेने के पश्चात पायल ने तेजपाल शर्मा को रवाना कर दिया था। उसने कॉफी और स्नैक्स मंगाने के पश्चात बैग में से वह लिफाफा निकाला, जिसमें डायरी के पृष्ठों के फोटोग्राफ्स मौजूद थे।

उसने क्रम से लगी फोटो कॉपियों को बेहद ध्यान से पढ़ना आरम्भ कर दिया। जाहिर था कि क्रांतिदूत शर्मा ने लेखक होने के नाते अपने अतीत को इतनी कुशलता के साथ लिखा था कि पायल के सामने चित्रपट जैसे दृश्य आकार लेने लगे थे। पढ़ते हुए वह महसूस कर रही थी कि एक फिल्म उसके सामने चल रही है।

विवरण इस प्रकार था :—

1. मैं स्वयं	:	लेखक क्रांतिदूत शर्मा
2. मेरे पिता	:	कृष्णदूत शर्मा
3. मेरी माता (बाई)	:	श्रीमति गुलाब देवी शर्मा
4. मेरा पुत्र	:	रोहन शर्मा
5. मेरे सगे मामाजी	:	स्व. हनुमान प्रसाद शर्मा
6. मेरे सगे नानाजी	:	स्व. महादेव प्रसाद शर्मा
7. मेरे नानाजी के भाई	:	जगन्नाथ काटजू (स्व.) सगे मामा जी को गोद लिया
8. तीसरे नाना पुत्र	:	तेजपाल शर्मा
9. मेरी मामी जी	:	कल्याणी देवी पत्नी स्व. हनुमान प्रसाद शर्मा
10. मेरी संगमा देवी	:	स्व. हनुमान प्रसाद मामाजी की दूसरी पत्नी
11. किरण (मामाजी की बेटी)	:	अज्ञात सच्चाई तलाश करनी है
12. रुकमणी देवी	:	स्व. हनुमान मामाजी की पुत्री व मेरी ममेरी बहन
13. महेन्द्र कुमार शर्मा	:	रुकमणी देवी का पति
14. अजय व विजय	:	महेन्द्र कुमार व रुकमंणी देवी के दो पुत्र
15. मेरी सगी बहन	:	उषा शर्मा, पत्नी सत्यदेव शर्मा

comicsmylife.blogspot.in

16. मेरी पत्नी : नीलिमा देवी शर्मा

इन सोलहों नामों के पश्चात लिखा था।

प्रिय पुत्र रोहन,

यह डायरी लिखते समय मैं नहीं जानता हूं कि तुम्हें जीवित मिल सकूंगा या नहीं, लेकिन मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ रहेगा। उसके साथ रहेगा एक ऐसा दायित्व भी जो मैं पूरा नहीं कर सका हूं। जिन सोलह पात्रों का परिचय मैंने ऊपर दिया है, उनमें से कुछ को तुमने देखा है या उनका नाम सुना है। जबकि कुछ तुम्हारे लिए एकदम अपरिचित हैं। नाम तक नहीं सुना है तुमने। तुम्हारी मम्मी को भी पूरी सूची के लोगों से मिल पाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है। इस डायरी के द्वारा तुम यह जान पाओगे कि तेजपाल मामाजी के आने के पश्चात मैंने पांच करोड़ की शर्त रख कर वापसी के लिए घर क्यों छोड़ा था। आज मेरी आयु पचपन वर्ष की है और मैं शुरुआत उस स्थान से कर रहा हूं जब मैं दस वर्ष का बालक था...इसे तुम मेरी जीवनी भी कह सकते हो...!

❑❑

सन उन्नीस सौ बीस। मैं जब पैदा भी नहीं हुआ था। (मेरे पिता ने जैसा बताया।) उस वक्त की यह घटना है। पिता की ससुराल चिखली (विदर्भ) से एक पत्र आया था।

परम पूज्य पण्डित कृष्णदूत शर्मा जी एवं बहन समान गुलाब देवी,

नमस्कार! आप लोग मुझे नहीं जानते हैं लेकिन मैं जानता हूं कि आप दोनों सज्जन इंसान हैं। बहन गुलाब देवी के पिता के निधन पर आप दोनों को देखा था। आप दोनों तो निश्चिंत होकर चले गए कि हनुमान की परवरिश आपके सगे-संबंधी मकान के लालच में करने वाले हैं लेकिन आपको जान कर दुख होगा कि आपके रिश्तेदारों ने चिखली का आपका ससुराल आवास बेच दिया है। हनुमान उनके पास नौकर की तरह से कार्य करता है। वह अबोध मात्र पांच वर्ष का है और उस पर

जुल्म किए जा रहे हैं, ताकि चिखली की प्रॉपर्टी का मालिक जीवित ही न रहे। यदि आप हनुमान को जीवित देखना चाहते हैं तो तुरंत चिखली आकर अपने श्वसुर की निशानी को ले जाएं। उसकी सौतेली मां और रिश्तेदार उसे जीवित नहीं छोड़ेंगे। पड़ोसी होने के नाते अपना कर्तव्य निभा रहा हूं। उम्मीद करता हूं कि आप पत्र को तार समझ कर रवाना हो जाएंगे।

आपका शुभचिन्तक

शुभचिन्तक के नीचे नाम नहीं लिखा हुआ था। जाहिर था कि पत्र लिखने वाला सामने नहीं आना चाहता था।

कृष्णदूत शर्मा ने अपनी पत्नी गुलाब देवी को पत्र पढ़ कर सुनाया था। दोनों ही घर में ठेठ मारवाड़ी भाषा में बात कर रहे थे।

''हम अभी चलेंगे नाथ।'' गुलाब देवी ने अधीर स्वर में कहा, ''चिट्ठी तो सुबह ही आ गई थी, पर मैं पढ़ना नहीं जानती। पता नहीं मेरे भाई हनुमान का क्या हाल होगा।''

''देख, सोच-समझ कर फैसला कर पगली। तेरा भाई पांच साल का है। बच्चे को पालने की सारी जिम्मेदारी तेरी रहेगी।''

''तुम चिन्ता मत करो, हम हनुमान को बेटा समझ कर पालेंगे।''

''ठीक है, जैसी तेरी मर्जी। मैं एक बात साफ कर दूं, मुझे तुम्हारे मायके की सम्पत्ति से कोई लेना-देना नहीं है। तेरी दूसरी मां अगर यह बात लिखवा कर लेना चाहेगी तो मैं लिख कर दे दूंगा।''

''मुझे भी भाई से मतलब है। अपने क्या कमी है। क्या पता हनुमान के भाग्य का और मिल जाए।''

''ठीक है, शाम की रेलगाड़ी से चलेंगे। खण्डवा स्टेशन से बस पकड़ कर सीधे ही जाएंगे।''

''रेलवे का पास निकलवा लिया क्या?''

''पास तो पहले का ही रखा हुआ है।'' कृष्णदूत शर्मा ने इत्मीनान से कहा।

वह दिल्ली की नई बस रही कॉलोनी आदर्श नगर में रह रहे थे और रेलवे में फोरमैन के पद पर थे। फोरमैन का पद उस समय काफी बड़ा माना जाता था। वैसे ही ब्रिटिश हुकूमत में बेहद

comicsmylife.blogspot.in

काबिल हिन्दुस्तानी को ही बड़ा ओहदा दिया जाता था। कृष्णदूत और गुलाबदेवी उसी रात चिखली के लिए रवाना हो गए जो तत्कालीन आकोला की तहसील हुआ करती थी।

एक सप्ताह बाद वह बुखार में तपते हुए पांच वर्षीय हनुमान को लेकर दिल्ली आ गए। आते ही हनुमान को नर्सिंग होम में एडमिट करवा दिया गया। दो सप्ताह जिंदगी और मौत का संघर्ष करने के बाद हनुमान को होश आया और उसने आंखें खोली। गुलाब देवी तब अपने भाई के पास ही बैठी थी।

''जी...जीजी, तुम कब आई!'' हनुमान ने कमजोर स्वर में पूछा।

उस अभागे को नहीं मालूम था कि वह चिखली से दिल्ली पहुंच चुका है और उसकी जिन्दगी न जाने किस पुण्य के कारण बच पाई है।

गुलाब देवी ने मासूम हनुमान को अपनी गोद में लेकर उसका मस्तक चूम लिया।

''अरे पगले, तू दिल्ली आ गया है। अब तू मेरे और अपने जीजाजी के साथ ही रहेगा! हम चिखली गए थे तुझे लेने के लिए।''

''मैं दिल्ली आ गया, मुझे तो पता ही नहीं लगा!''

''निमोनिया हो गया था तुझे। पन्द्रह दिन बाद तुझे होश आया है हनुमान!''

यह सुनकर पांच वर्षीय हनुमान की आंखें द्रवित हो उठी थीं। स्वयं को महफूज समझ कर अपनी बहन की गोद में ही फिर से बेहोश हो गया था।

□□

समय का चक्र अबाध गति से चल रहा था। मैं (क्रांतिदूत शर्मा) उस समय तक पैदा हो चुका था और मेरी उम्र तकरीबन चार वर्ष की होगी। मामाजी उस वक्त तीस वर्ष के हो चुके थे और रेलवे में ड्राफ्टमैन के पद पर चार्जमैन की हैसियत से कार्य कर रहे थे। मामाजी की शादी हो चुकी और रुकमणी नाम की उनकी एक बेटी भी हुई थी। मामीजी राजस्थान के गांव भांवता की थी और उनका नाम कल्याणी था। मामाजी और मामीजी दोनों ही हमसे काफी प्रेम करते थे। उनकी शादी सत्रह वर्ष की उम्र में

ही हुई थी और उनकी बेटी रुकमणी शादी के तीन वर्ष बाद हुई थी। वह चौदह वर्ष की थी और उस समय शादी इसी उम्र के आसपास कर दी जाती थी। रुकमणी जीजी के लिए बाई ने जो मेरी मां थी और बचपन से ही मैं उसे बाई ही कहता था, ने रिश्ता ढूंढना आरम्भ कर दिया था। मामाजी ने यह जिम्मेदारी बाई को ही सौंप रखी थी। वैसे भी मामाजी की आदत थी कि हर काम बाई से पूछ कर ही करते थे।

एक दिन मामाजी घर आए, हां, मैं यह बताना भूल गया था कि शादी के पश्चात मामाजी और मामीजी को किराए का मकान दिला दिया गया था। ताकि वह स्वतंत्र रूप से अपनी गृहस्थी चला सकें लेकिन मामाजी का रोज एक चक्कर घर का अवश्य लगता था।

''बाई, रुकमणी के लिए एक रिश्ता आया है। आर्य नगर में प्यारे लाल जी का एक लड़का है। घर का नाम मोती है, बाहर का नाम महेन्द्र कुमार शर्मा है। गोत्र वगैरह आड़े नहीं आ रहे हैं। मैं चाहता हूं कि आप एक बार देख लो बाई!''

''लड़के का बाप क्या करता है?''

''चार्जमैन है कारखाने में बाई।''

''लड़का कितना पढ़ा हुआ है?''

''दसवीं की परीक्षा देगा।''

''तेरे जीजाजी आएंगे तो पूछ कर बताऊंगी। तूने तो लड़के को देखा है न हनुमान?''

''हां!''

''देखने में कैसा है?''

''बाकी सब ठीक है बाई। एक कमी है, लेकिन मामूली कमी है, चश्मे के अंदर ढक जाएंगी।'' हनुमान मामाजी ने झिझक के साथ कहा।

''काना तो नहीं है!''

''नहीं, काना तो नहीं है!''

''फिर चश्मे में क्या ढकता है?''

''भैंगापन है आंखों में।'' मामाजी ने शर्मसारी के साथ कहा।

''मेरी भतीजी के लिए तूने भैंगे लड़के को देखा है! भैंगा, लंगड़ा, गूंगा और गंजा तो बदमाश और चालाक होता है। मैं तो

comicsmylife.blogspot.in

अपनी भतीजी को कॉन्वेन्ट स्कूल में पढ़ाती हूं और तूने उसके लिए भैंगा लड़का देखा है ?'' बाई को तब मैंने क्रोध में कहते हुए सुना था, ''एक मां जिस प्रकार अपनी बेटी की परवाह करती है, वैसे ही तुम्हारी दीदी ने अपनी भतीजी की चिंता की है !''

''घर परिवार अच्छा है बाई !''

''अपनी पत्नी कल्याणी को लड़का दिखाया है ?''

''नहीं, तुम्हें और जीजाजी को दिखाए बिना कल्याणी को दिखाने का सवाल ही पैदा नहीं होता।''

''देख हनुमान, अब तू बड़ा हो गया है। कल को तू लड़की को ब्याहने लायक भी हो रहा है। बहू से पूछ कर भी काम कर। वरना तेरी बहू पता नहीं क्या सोचेगी !'' बाई ने तब भैंस का दूध मलाई के साथ हनुमान की ओर बढ़ाया था।

''इतना दूध मेरे से नहीं पीया जाएगा।''

''नखरे मत कर। घर में गाय-भैंस है इसलिए दूध-दही और घी की कोई कमी नहीं है। बहू आने के बाद तुझे अलग किया है, ताकि गृहस्थी बस जाए। भूल गया कि तुझे पांच साल का लाई थी।'' मीठी फटकार सुन कर मैं हंस पड़ा था।

मामाजी ने फिर कोई विरोध नहीं किया और दूध भरा गिलास खाली कर दिया।

□□

मोती उर्फ महेन्द्र कुमार शर्मा की उम्र तब अट्ठारह वर्ष की थी। घर-परिवार समृद्ध होने की वजह से मामाजी यही चाहते थे कि रिश्ता उसी घर में हो। बाई और बाऊजी की बात से मैंने अनुमान लगा लिया था कि वह हनुमान प्रसाद की इच्छा के विरुद्ध जाकर कोई फैसला नहीं करना चाहते थे।

प्यारेलाल शर्मा की आर्यनगर में अच्छी इज्जत और पैठ थी। बाऊजी के भी वह मित्र थे। इस कारण सगाई की रस्म निभा दी गई।

सगाई के एक वर्ष बाद मेरे मामाजी हनुमान प्रसाद शर्मा की बेटी यानी मेरी ममेरी बहन की शादी महेन्द्र कुमार शर्मा के साथ हो गई। बाई ने अपनी भतीजी को पंद्रह तोला सोना दिया और शादी का भी आधा खर्च उठाया। इस कारण शादी धूमधाम से हुई और हनुमान मामाजी को ज्यादा बोझ भी नहीं आया।

अभी शादी के दो वर्ष ही गुजरे थे। एक दिन घर में टेलीग्राम आया। उन दिनों फोन वगैरह तो आज की तरह हुआ नहीं करते थे। यह बात सन 1956 के आस-पास की है। मैं तब दस-ग्यारह साल का रहा होऊंगा। जिस घर में तार आता था, उस घर में शुभ-अशुभ का कोहराम मच जाता था। बाई और बाऊजी के भी तार का नाम सुन कर हाथ-पांव फूल गए थे। बाऊजी ने फिर लिफाफा फाड़कर तार का संदेश पढ़ा। वह संदेश मुझे ज्यों का त्यों याद है। बाऊजी ने संदेश पढ़ा था।

मेरा घर-कारखाना व व्यापार नीलाम हो जाएगा। पन्द्रह हजार रुपए लेकर सोमवार तक बुलढाणा पहुंच पाए तो मरणोपरांत भी ऋणी रहूंगा।

जगन्नाथ काटजू

मैं नाम सुन कर समझ गया था कि वह मेरे स्वर्गवासी नानाजी के सगे भाई हैं, जो बुलढाणा में रहते थे। दो बार मैं बुलढाणा गया था। इस कारण जगन्नाथ नानाजी और गायत्री नानीजी की याद थी मुझे। सौ कुत्ते पाल रखे थे उन्होंने और बुलढाणा में पक्की हवेली सिर्फ उनकी ही थी। सन् 1956 में पंद्रह हजार रुपयों का मतलब था आज के बीच-पच्चीस लाख रुपए।

''पंद्रह हजार रुपयों का इंतजाम करना पड़ेगा और सोमवार की सुबह तक बुलढाणा भी पहुंचना है !'' बाई ने जैसे अपने आपसे ही बात की थी।

मैं बाऊजी की ओर देख रहा था।

''तेरी क्या इच्छा है ?''

''बस यह समझ लो नाथ कि सुदामा को तो श्रीकृष्ण से मदद मांगनी पड़ती है, पर सुदामा को श्रीकृष्ण ने मदद के लिए पहली बार पुकारा है ! आगे आपकी मर्जी, कर सको तो मदद कर दो। मेरे पिताजी के सगे भाई हैं। लाखों रुपयों में खेले हुए हैं।'' बाई ने फिर ठंडी सांस भरी।

मैं फिर से बाऊजी की ओर देखने लगा था।

''देख ले, कल को रुपया वापिस न मिला तो हम भी सड़क पर आ जाएंगे।''

''ऐसी नौबत तो काकाजी नहीं आने देंगे कि बेटी का घर बर्बाद कर देंगे।'' दृढ़ता थी बाई के स्वर में।

comicsmylife.blogspot.in

''ठीक है मैं इंतजाम करता हूं। आज शाम को ही निकल पड़ेंगे। कार करके ही जाएंगे, तभी हम सोमवार तक पहुंच सकेंगे।''

बाऊजी फिर निर्णय देने के बाद रूखस्त हो गए थे।

''क्रांति!'' बाई ने मुझे संबोधित किया, ''तुझे और उषा को भी साथ ले चलेंगे।''

मैं खुश हो गया था। क्योंकि मेरे ख्याल से इतनी लम्बी यात्रा मैंने कभी भी नहीं की थी। बाद में मालूम हुआ कि बाऊजी ने कोठी गिरवी रख कर पंद्रह हजार रुपया सूद पर उधार लिया था और एक बड़े अधिकारी की शोफर ड्रिवन कार लेकर बुलढाणा के लिए प्रस्थान करने वाले थे।

शाम सात बजे ड्राइवर कार लेकर आ गया था। उसके पास टोपीदार बंदूक थी। पंद्रह हजार रुपयों की जोखिम जो साथ थी।

❏❏

जगन्नाथ काटजू का सब कुछ नीलाम होने वाला है। यह बात पूरे बुलढाणा में जंगल में लगी आग की तरह से फैल चुकी थी। पराई आग में हाथ और आंखें सेंकने वालों की कोई कमी नहीं होती। बाई ने बताया था कि मेरे नानाजी सात भाई थे। सगे नानाजी तो रहे नहीं। इस कारण छः भाई रह गए थे। बाकी पांचों भाई भी बुलढाणा में रहते थे। लेकिन संकट की घड़ी में कोई भी भाई मदद करने को आगे नहीं आया था। इसका कारण था कि जगन्नाथ नानाजी ने निस्संतान होने के पश्चात भी भाइयों में से किसी पुत्र को गोद नहीं लिया था। इसके अलावा वह सातों भाइयों में सबसे ज्यादा सम्पन्न थे। बाद में पता चला कि नीलामी की नौबत जंगलों के बड़े ठेके के कारण आई थी। सागवान के जंगलात का बड़ा ठेका उन्होंने लिया था। जिसके लिए उन्होंने गजानन सेठ से तेरह हजार रुपया कर्ज भी लिया था, लेकिन जंगल में आग लग जाने की वजह से वह भयंकर तबाही हुई थी। गजानन सेठ एक मराठा था और बुलढाणा में उसका एक टाकीज था।

मुझे अच्छी तरह से याद है कि वार्ड नम्बर एक में मुख्य रोड पर जगन्नाथ भवन नाम की हवेली के सामने भारी जमघट लगा हुआ था। उनके बीच में कोर्ट का रिसीवर और पुलिस वाले भी

मौजूद थे।

उस वक्त साढ़े नौ बज रहे थे और ठीक दस बजे से नीलामी होनी थी। कार का हॉर्न बाऊजी ने बजाया था। सभी का ध्यान कार की ओर गया था। बाई और बाऊजी कार से बाहर आए। मुझे अच्छी तरह से याद है कि मैंने और बहन उषा ने बाई का एक-एक हाथ थाम रखा था। बाऊजी के हाथ में लोहे का संदूक था। उस जमाने में संदूक ही होते थे। वी.आई.पी. और सफारी इत्यादी तो बाद में चले थे।

''काकाजी! हम आ गए हैं।'' बाई ने एकाएक बुलंद स्वर में कहा था।

उस बुलंद स्वर के कारण सन्नाटा छा गया था। फिर हवेली के गोल कमरे के ऊपर बने कमरे की एक खिड़की खुली थी। जगन्नाथ नानाजी का चेहरा दमका था। बाऊजी ने हाथ हिलाकर संकेत दिया था कि आने की जरूरत नहीं। हम सभी फिर गोल कमरे में प्रविष्ट हुए, जिसके एक छोटे कमरे में शस्त्रागार था और दूसरे कमरे में लकड़ी का जीना था जो लोहे की एंगिल्स के सहारे ऊपर जाता था। हम चारों ऊपर पहुंचे थे। बाई सबसे आगे थी।

अंदर का दृश्य देख कर बाई की चीख निकल गई थी। जगन्नाथ नानाजी ने फांसी के दो फंदे तैयार कर रखे थे, जिनके ऐन नीचे दो स्टूल भी रखे हुए थे।

''हम पर विश्वास क्यों नहीं रखा काकाजी!'' बाई फिर लिपट गई थी नानाजी से। फिर बाई का रुदन और सिसकियां।

मुझे याद है...खूब याद है...हम सभी सिसक रहे थे। कोई भी बोल नहीं पा रहा था लेकिन इसके बावजूद मुझे लगा था कि छः प्राणी बातचीत कर रहे थे। रूदन और आंसू ही शब्दों का काम कर रहे थे। तब मैंने समझा था कि सिर्फ शब्दों के उच्चारण का नाम ही भाषा नहीं है। आंखों से बड़ी भाषा उसके बाद से आज तक मैंने दूसरी नहीं देखी है। मौन कभी-कभी वाणी से ज्यादा वाचाल होता है तो आंखें और चेहरा भी किसी ग्रंथ से कम नहीं होते। आंखों और चेहरे से रिश्ते जीवित नजर आने लगते हैं। यह मैंने ग्यारह वर्ष की उम्र में सीखा था।

बाऊजी ने फिर दोनों फन्दे निकाल कर फेंक दिए थे और हाथ जोड़े थे।

comicsmylife.blogspot.in

फिर कहा था, ''कृष्णदूत आपका आदेश पढ़कर सीधा आया है काकाजी!''

''कुंवर साहब!'' नानाजी भर्राए कण्ठ में बोले और बाऊजी के गले लग गए थे।

''गुलाबी! रकम लाई है न?'' मोटी नानी ने बाई से पूछा।

''रकम तो ज्यादा थी काकी सा। पर मैं तो आपके आदेश पर पूर्ण सम्मान से लाई हूं!'' फिर जो मोटी तसल्ली मैंने मोटी नानी के चेहरे पर देखी थी, वैसी तसल्ली आज तक किसी की आंखों में भी नहीं देख पाया हूं।

''आप अंदर बैठिए काकाजी, मैं दस मिनट के अंदर-अंदर वापिस आता हूं।'' बाऊजी फिर लोहे की संदूकची को लेकर सीढ़ियों की ओर बढ़े थे। मैं भी पिताजी के साथ हो लिया था।

''यहां पर कोई नीलामी नहीं होगी। मैं रुपया लेकर आया हूं। कोर्ट का रिसीवर और रुपया पाने वाला शख्स मेरे पास आ सकता है।'' बाऊजी की आवाज वैसे ही बुलन्द थी। जबकि अभी तो उन्होंने ऊंचे स्वर में कहा था।

इस कारण वहां एकदम सन्नाटा छा गया था।

गजानन सेठ मराठा को तब मैंने पहली बार देखा था। वही कुर्सी से उठा था।

''कुंवर साहब आ गए हैं तो समझो मेरा रुपया वसूल हो गया है। आप जा सकते हैं।'' गजानन सेठ ने ठेठ मराठी भाषा में कहा था कोर्ट रिसीवर को।

कोर्ट रिसीवर ने आश्चर्य के साथ देखा था।

''सेठ साहब, अपना रुपया चौकस कर लीजिए।'' बाऊजी ने पेटी दिखाई थी।

''रुपया मिल गया समझो कुंवर साहब।'' गजानन सेठ ने फिर अदालत का आदेश पत्र और बंधक का ऋण पत्र जेब से निकाल कर फाड़ दिए थे।

मैं हक्का-बक्का रह गया और बाऊजी भी। मुझमें इतनी समझ भी थी कि उस आदमी ने रुपया देखे बिना ही बाऊजी के तेवरों से रुपया आने का अनुमान लगा लिया था। इसके अलावा मैं यह देख कर भी चकित था कि गजानन सेठ के चेहरे पर नीलामी रद्द होने की निराशा नहीं थी, निराशा के बजाय उसके

चेहरे पर खुशी थी।

भीड़ और भीड़ में खड़े रिश्तेदार वहां से हिलने लगे थे। तमाशे के लिए आए थे और तमाशा होना नहीं था। बर्बादी होनी नहीं थी।

''गजानन साहब आपको तो दुख होना चाहिए कि पच्चीस हजार रुपयों की यह स्टेट आपके हाथ से निकल गई। लेकिन आप तो खुश हो रहे हैं।''

''खुश तो मुझे होना ही है। कुंवर साहब। (दामाद को कुंवर साहब कह कर सम्मान दिया जाता है।) मैं चाहता था कि जगन्नाथ सेठ की आंखें खुल जाएं। वह यह देख समझ लें कि जिन भाइयों की औलाद को गोद लेने के बारे में वह सोचते थे। वह तमाम के तमाम भाई सिर्फ लालच के ही साथी थे। पांच भाई हैं। सब मिल कर पन्द्रह हजार रुपया एकत्र कर सकते थे, लेकिन कोई भी भाई काम नहीं आया। खून सफेद हो गया सबका।'' कठोर था गजानन सेठ का स्वर।

''मैं अगर समय पर न आता तो क्या करते आप?'' बाऊजी ने आश्चर्य से पूछा।

''नीलामी करवाता और उसके बाद खुद रुपया अदा हो जाने की बात कह कर जगन्नाथ सेठ को सबकुछ वापिस लौटा देता कुंवर साहब। लेकिन जगन्नाथ सेठ की आंखें अवश्य ही खोल देना चाहता था।''

''फिर तो आपने काकाजी की खुद्दारी को समझा नहीं गजानन सेठ!'' बाऊजी ने निराशा से गर्दन हिलाई।

''क...क्या मतलब?''

''काकाजी और काकी जी फांसी के फन्दे तैयार कर चुके थे। हमें पांच मिनट की भी देरी होती तो दो जिन्दगियां खत्म हो जाती।''

गजानन सेठ की आंखें फटी-की-फटी रह गईं।

''न...नक्को!'' मराठा गजानन सेठ अस्फुट स्वर में बोला।

''नवाब की ठिठोली में बांदी की जान कुर्बान हुई। यह मुहावरा सच कर रहे थे आप सेठ गजानन। आपने जगन्नाथ काकाजी को समझा ही नहीं। अफसोस! आप अपने बचपन के साथी को ही न समझ पाए। उसकी खुद्दारी को महसूस नहीं कर

comicsmylife.blogspot.in

पाए। ईश्वर के लिए आइन्दा किसी को इस तरह समझाने की कोशिश कभी मत करना। इज्जत अगर नीलाम हो जाए तो खुद्दार तमाशा देखने को जिन्दा नहीं रहते हैं। खुद्दार भी वही होते हैं, जो ईमान के सहारे तरक्की तक पहुंचते हैं। बैंक लूटने वाला पकड़ा जाए तो मौत का दामन नहीं चूमेगा। आपने उस शख्स को नहीं समझा जो आपके कर्जे से ज्यादा तो दान-पुण्य के खाते में खर्च कर चुका है।''

स्याह पड़ गया था गजानन सेठ का चेहरा।

□□

फिर बाऊजी और गजानन सेठ ऊपर पहुंचे थे। बाऊजी ने तेरह हजार मूल और दो हजार रुपया ब्याज का अपने हाथों गजानन सेठ को अदा किया था।

''मैं इन रुपयों को हाथ भी नहीं लगाऊंगा। मैं तो सिर्फ आपको सीख देना चाहता था भाई कि अपने-पराए की पहचान वक्त पर होती है। हां, यह नहीं मालूम था कि आप मौत को गले लगा लेने वाले हैं।'' गजानन सेठ ने फिर रुपए लेने से इंकार कर दिया था।

''अब यह रुपया तो लेना पड़ेगा गजानन सेठ।'' जगन्नाथ नानाजी ने शुष्क स्वर में कहा, ''तू शिवाजी की भूमि का मराठा होकर मारवाड़ी की आन को नहीं समझ सका। फिर यह रुपया मैं रखूं तो क्यों?''

''भाभी!'' वह मोटी नानी को बोला, ''आप समझाओ न भाई साहब को। मैं तो...!''

''मेरे साथ जो मौत को गले लगा रहे थे, वह मेरे पति हैं और पति के खिलाफ मारवाड़ी पत्नी कभी नहीं जाती है।'' मोटी नानी ने तड़ाक से जवाब दिया था।

''हरेक धंधे में नफा-नुकसान हो जाता है गजानन सेठ, लेकिन नीलामी की नौबत किसी पर भी नहीं आनी चाहिए। आपको अगर मेरी आंखें ही खोलनी थीं, तो आप कह सकते थे कि मैं अपने पांचों भाइयों से मदद मांगकर देखूं।'' नानाजी ने क्षुब्ध स्वर में कहा, ''कुंवर साहब के आने के बाद आप समझ गए थे कि आपका रुपया ब्याज सहित अदा हो जाने वाला है। इस कारण आपने फौरन ही पैंतरा बदल लिया गजानन सेठ। यह

नाटक मैं खूब समझता हूं।''

नानाजी की इस बात ने मुझे और बाऊजी दोनों को ही चौंका दिया था।

अलबत्ता गजानन सेठ का चेहरा अवश्य बेनूर हो गया था।

तब बाऊजी बोले, ''गंगा में गिर गए, तो लगे नहाने। बुराई मिलनी थी सो अच्छाई का ढोंग रचा लिया।''

''अरे गजानन सेठ! तू अगर दोस्त था तो तेरह हजार रुपयों का सूद न लिखता और मुझे सूद अदा करने के तेरह मौके भी देता, लेकिन तूने ऐसा कुछ नहीं किया, क्योंकि सच्चाई यही है कि तू सिर्फ सेठ गजानन है...दोस्त गजानन नहीं। तू सिर्फ ब्याजखोर है किसी का भाई और दोस्त नहीं।''

तब सिसक उठा गजानन सेठ। पहली बार सेठ को सवा सेर मिला था। वह नानाजी के चरणों में लोट गया।

''चाहे जान से मार दो जगन्नाथ भाई। मेरे को लालच आ गया था लेकिन अब मैं लालच से नहीं बोल रहा. अपनी गलती सुधार लेना चाहता हूं!''

''सच बोलता है गजानन सेठ!''

''गणपति की सौगंध। एक मराठे के लिए इससे बड़ी क्या सौगंध हो सकती है भाई!'' वह सिसकते हुए बोला।

''हां, अब तू ठीक कह रहा है गजानन सेठ लेकिन जगन्नाथ काटजू की नीलामी का जो बवण्डर बुलढाणा में मचा। उसका खामियाजा तो मैं ही भुगतने वाला हूं। तुम तो शर्मिन्दगी के दो आंसू बहा कर चेहरा धो लोगे। लेकिन अपयश की जो कालिख मेरे चेहरे पर मल दी गई है वह तो शाश्वत रहने वाली है।''

''आप जो सजा देंगे वो कुबूल करूंगा जगन्नाथ भाई।'' अब वाकई उसे प्रायश्चित हो रहा था।

मैं हैरान था कि जो व्यक्ति लालची और नाटककार था, क्या वह वाकई शर्मिन्दा है। उसका स्वभाव मात्र आधे घण्टे में कैसे बदल गया। एक पापी को शर्मिन्दगी का अहसास हो गया।

मैं अपनी नजरें पैनी करके गजानन सेठ की वास्तविकता की थाह पाना चाहता था। बाऊजी ने मेरी भावना को मेरे चेहरे पर ताक पढ़ लिया। तुम्हारे दादा कृष्णदूत बोले, ''क्रांति बेटे। यही सोच रहे हो न कि गजानन साहब को एकाएक अपने आप से

comicsmylife.blogspot.in

ग्लानि हो रही है या नहीं? क्योंकि इस उम्र तक आते-आते इंसान का स्वभाव जड़ पकड़ चुका होता है और यदि उसमें परिवर्तन आता है तो वह विश्वास के काबिल नहीं हो सकता। यही सोच रहे हो न क्रांति?"

बाऊजी के उस स्पष्ट सवाल के सामने स्वीकृति सूचक मुद्रा में सिर हिलाने के सिवा मैं कर भी क्या सकता था।

"बेहतर होगा कि इस सवाल का जवाब भुक्तभोगी ही प्रदान करे।" नानाजी ने गजानन सेठ को स्नेह भरी दृष्टि से देखते हुए कहा।

"जवाब में मैं यही कह सकता हूं कि इंसान में जब तक लालच का दिल होता है, उसे अपने छल का ध्यान नहीं रहता है। लालची व्यक्ति अगर लालच के जुएं में हार जाता है तो वह शर्मिन्दगी का बहाना बनाता है ताकि उसे लालची न समझा जाए। लेकिन उस लालची शख्स को यह बता दिया जाए कि वह अब भी कपट रख कर शर्मिन्दगी का नाटक कर रहा है तो फिर लालच से उपजा कपट समाप्त हो जाता है। तब वह अपने से तेजस्वी व्यक्ति से वाकई दिल से क्षमा मांगता है। इस वक्त गजानन सेठ में न कोई लालच है न कोई कपट।"

गजानन सेठ ने तब बाऊजी के सामने हाथ जोड़े, "कुंवर साहब, आपने मेरे दिल का सही हाल बयान किया है। अब आप ही कोई राह निकालें। आपने काका साहब की धूमिल प्रतिष्ठा को फिर से चमकदार बनाया है।"

सभी की दृष्टि बाऊजी पर टंग गई।

"अब एक काम हो सकता है गजानन सेठ।" बाऊजी ने कुछ देर सोचने के बाद कहा, "आप अखबार में यह खबर प्रकाशित करवाएं कि अपने मित्र को अपने-पराए की पहचान करवाने के लिए ही नीलामी की कार्यवाही कोर्ट से करवाई थी, जबकि तुम्हारा इरादा वास्तव में नीलामी का था ही नहीं। जाहिर है कि कोर्ट के द्वारा आप पर यह मुकदमा कायम किया जा सकता है कि आपने कोर्ट का समय नष्ट किया है लेकिन कोई भी काबिल वकील यह साबित कर देगा कि एक सच्चा मित्र यदि कोर्ट की सहायता से अपने मित्र को गलत निर्णय से रोक सकता है तो उसके इस पुनीत कर्तव्य का आदर किया जाना चाहिए।"

गजानन सेठ ने बिना किसी हील-हुज्जत के उस सुझाव को स्वीकार कर लिया था। काटजू दम्पति का सम्मान उस खबर के बाद बरकरार रह सकता था। इस बात में किसी को संदेह नहीं था। मैं बाऊजी की अक्ल का लोहा मान गया।

□□

बाऊजी के प्रस्ताव को मान कर गजानन सेठ ने समाचार-पत्र में वही खबर प्रकाशित करवा दी थी। कहने की आवश्यकता नहीं कि बुलढाणा वासियों ने उस खबर पर पूरी तरह से विश्वास किया था, क्योंकि उन्हें इस बात का यकीन हो गया था कि लालची व्यक्ति इस प्रकार का स्टेटमेंट नहीं दे सकता।

लेकिन नानाजी के पांचों भाइयों के तन-बदन में उस खबर के कारण आग लग गई। तब पांचों ने हमराय होकर एक वकील को सेठ गजानन के खिलाफ अदालत का कीमती समय नष्ट करने का आरोप लगाया लेकिन विद्वान न्यायाधीश ने उसे खारिज कर दिया। कोर्ट का निर्णय था, 'एक नेक कार्य के लिए यदि कोर्ट का इस्तेमाल किया गया है तो इसे कंडप्ट ऑफ कोर्ट या कोर्ट का समय खराब करना नहीं माना जा सकता। अदालतों का निर्माण इंसान की सहायता के लिए हुआ है। यदि अदालत की सहायता से कोई व्यक्ति नेकी करता है तो उसे कुसूरवार कैसे ठहराया जा सकता है? फिर भी यदि कानून के पेशेवरों को आपत्ति है तो अदालत गजानन सेठ पर न्यायालय का समय खराब करने के लिए इक्यावन रुपये का जुर्माना करती है, जो वह एक माह में ट्रेजेरी में जमा करवा सकते हैं।'

वाकई कोर्ट का यह मानवोचित्त फैसला था।

कहने की आवश्यकता नहीं कि गजानन सेठ के साथ फिर हमारे पारिवारिक रिश्ते हो गए थे जबकि जगन्नाथ नानाजी ने हमें पन्द्रह दिन तक जाने नहीं दिया था। उन पन्द्रह दिनों में मैंने देखा था कि नानाजी की हवेली में लगभग पचास कमरे थे और एक गली छोड़ कर तीन बीघा जमीन पर कारखाना लगा हुआ था। जहां लकड़ी के कारीगर अपना कार्य करते थे। रहने का इंतजाम भी कारखाने में ही किया गया था। उसी कारखाने के एक भाग में गाय-भैंस का बाड़ा भी था। यूं नानाजी का कार्य बिल्डर (भवन निर्माण इत्यादि) का था। उनके द्वारा बुलढाणा में अनेकों कार्य

comicsmylife.blogspot.in

किए गए थे। एक कर्मचारी की हैसियत से तेजपाल शर्मा भी नानाजी के पास ही कार्यरत थे लेकिन उस समय उनकी हैसियत वेतन भोगी व्यक्ति के रूप में ही थी।

जंगलात का ठेका नानाजी ने पहली बार ही लिया था। लेकिन पूर्व ठेकेदारों ने षड्यंत्र करके जंगलों में आग लगा दी थी। नानाजी ने तब तौबा कर ली थी कि स्वयं के कार्य को ही बढ़ाया जाए न कि नया अपरिचित कार्य हाथ में लिया जाए।

खैर, आखिर वह दिन भी आया, जिस दिन हमने बुलढाणा से रवाना होना था। कहने की जरूरत नहीं कि ड्राइवर कार के साथ अगले ही दिन वापिस जा चुका था और उसने रेलवे का पास भी डाक से भिजवा दिया था।

''काकासा, अब हम जाते हैं। गर्मी की छुट्टी में फिर आएंगे।'' बाई ने फिर चरण-स्पर्श किए थे। नानीजी के चरण स्पर्श किए तो वह बिलख उठी थी।

''गुलाबी, तू मेरी बेटी नहीं है, पर फिर भी तूने रिश्ता निभाया है। लेकिन तूने तेरी मां की दूध की लाज रखी है गुलाबी!'' वह प्यार से बाई को 'गुलाबी' कहती थी, ''तू मेरी बेटी नहीं—बेटा बन गई है!''

''काकीसा मैं जानती हूं कि मां के मरने के बाद आपने ही मुझे विदा किया है। आप दोनों ने ही मेरा कन्यादान किया है।'' बाई की आंखें भी झलझला उठी थी।

''लोग यूं ही बेटा-बेटी के लिए रोते हैं। कोख के बिना भी बेटा-बेटी हो सकती है, यह बात तू जमाने के सामने साबित कर रही है गुल्ली!''

''कुंवर साहब, आपका अहसान तो मरने के बाद भी रहेगा। फिर भी मैं आपको विदाई पर एक भेंट देना चाहता हूं!'' जगन्नाथ नानाजी ने फिर गोल कागज जिस पर लाल रिबन बंधा हुआ था, बाऊजी की ओर बढ़ा दिया था।

''यह तो सरकारी कागज है।'' बाऊजी ने कागज की ओर हाथ नहीं बढ़ाया था।

''मैंने तमाम स्टेट गुलाबी के नाम कर दी है।'' (जायदाद को तब स्टेट कहा जाता था।) नानाजी ने स्नेह के साथ कहा, ''मेरे भाई के बच्चे को भी गुलाबी ने पाल पोस कर बड़ा किया है,

उसको लायक बनाया है। मैं सब कुछ जानता हूं कुंवर साहब!''

''भलाई से अगर पुरस्कृत किया जाए तो वह भलाई के बजाय पाने की लालसा में किया कार्य बन जाता है काकासा। आप सिर्फ यह ध्यान रखें कि पंद्रह हजार रुपया मैंने भी कर्ज लिया था। वह कर्ज आप चुका देंगे तो यही बहुत होगा हमारे लिए।''

''मेरी स्टेट को लोग खा जाएंगे कुंवर साहब!''

''अभी मैं कुछ नहीं कहूंगा काकाजी, सिर्फ आपका आशीर्वाद ही लेना चाहता हूं। मैं तो आपसे यह आग्रह करूंगा काकाजी की आप किसी बच्चे को गोद ले लें, ताकि काटजू परिवार का वंश चलता रहे।''

''आपने मेरी मुंह की बात कही है कुंवर साहब!'' मोटी नानी ने शीघ्रता से कहा, ''एक काम तो आप कर ही सकते हैं।''

''क्या काम काकीसा!''

''मेरे देवर के बेटे और गुलाबी के भाई हनुमान को हमें गोद दे दो!''

''काकीसा हनुमान काटजू घराना का खून है। फिर भी मैं बिना हनुमान के वचन जाने, वचन नहीं दे सकूंगी! हनुमान तो अब बेटी का ब्याह भी कर चुका है। आपको तो ऐसा बच्चा गोद लेना चाहिए, जिसके ब्याह की खुशी भी आप पूरी कर सको।''

''खून तो खून की तरफ दौड़ता है कुंवर साहब!'' जगन्नाथ नानाजी ने ठोस स्वर में कहा, ''महादेव का बेटा हनुमान हमारा बेटा ही हुआ। कुंवर साहब आप हनुमान की मर्जी पूछ कर फिर मुझे बताना।''

''ठीक है काकासा।'' बाऊजी ने सिर हिला दिया।

जब हम बुलढाणा से रवाना हुए थे, तो हमारे फर्स्ट क्लास के कूपे में दस कुलियों ने सामान पहुंचाया था। नानाजी और गजानन सेठ ने इतना सामान दिया था कि उसे दिल्ली तक लाना बाऊजी के लिए किसी मुसीबत से कम नहीं था। यह तो गनीमत थी कि बाऊजी रेलवे में और फर्स्ट क्लास का पास होने के कारण रनिंग स्टाफ ने सहयोग किया था। स्टेशन से आदर्श नगर स्थित कोठी तक एक ट्रक से वह सामान ले जाना पड़ा था। लोग हैरत में थे कि इतना सामान लेकर आने की भला क्या तुक है।

comicsmylife.blogspot.in

लेकिन वह तुक उनकी समझ में कैसे आती कि रिश्तों का जो नया द्वार खुला था, उसकी भेंट को अस्वीकार नहीं किया जा सकता था।

□□

मेरे मन में यह कौतुहल बना रहा था कि बाऊजी ने जो पंद्रह हजार रुपये दिए हैं, वह नानाजी कब वापिस कर पाएंगे। लेकिन यह मैं जानता था कि वह रुपया चुका देंगे। एक दूसरा कौतुहल यह भी था कि हनुमान मामाजी उनके दत्तक पुत्र बनने को तैयार होंगे या नहीं? मेरी जिज्ञासा पर दो वर्ष की अवधि ने अपनी गर्द जमा दी और मैं दोनों कौतुहल भूल गया।

फिर एक दिन स्कूल से आया तो जगन्नाथ नानाजी को पलंग पर बैठे पाया।

मैंने बस्ता फेंका और जाकर उनसे लिपट गया। कुछ देर बाद बाऊजी भी कारखाने से आ गए थे।

हमने खाना साथ ही खाया था। हनुमान मामाजी भी हमारे साथ शरीक थे।

''कुंवर साहब।'' शाम को नानाजी ने एक रूमाल में बंधे हुए नोट देते हुए कहा, ''इसमें बीस हजार रुपये हैं, जाहिर है कि बहन-बेटी का रुपया नहीं रखूंगा। ब्याज देकर आपको शर्मिंदा नहीं कर रहा लेकिन दामाद के द्वारा ब्याज दिया जाए। यह स्वीकार नहीं!''

बाऊजी ने तब चार हजार रुपए लौटा दिए।

''कुल सोलह हजार ही देना है। ब्याज का एक हजार रुपया ही हुआ है।''

''गुल्ली यह चार हजार रुपए तू रख!'' नानाजी ने रूमाल बांध कर बाई की ओर बढ़ा दिया, ''ईश्वर की दया है कि मैं बेटी को कुछ देने लायक दुबारा बन पाया हूं।''

''मैं नहीं रखूंगी। आप जब आ ही गए हो तो हनुमान की बेटी के ससुराल चले जाओ। नाना की आस तो वो भी देखती होगी। ये चार हजार रुपये आप रुकमणी को ही दे देना।''

''ठीक है गुलाब!'' फिर नानाजी ने पूछा, ''बाल-बच्चे हैं रुकमा के?'' वह रुकमणी को 'रुकमा' कहते थे।

''यही तो चिंता है। ब्याह के चार साल बाद भी कोई बेटा-

बेटी नहीं है! बहन तो डॉक्टर के पास लेकर घूम रही है, लेकिन भगवान की मर्जी भी तो हो!'' हनुमान मामाजी ने जवाब दिया था।

''तुम्हारी नौकरी कैसी चल रही है?''

''ठीक है!''

''पैसे कितने मिलते हैं?''

''कर-कराकर ढाई सौ रुपए मिल जाते हैं!''

उन दिनों चार्जमैन का वेतन लगभग यही था।

''देख हनुमान, तुम्हारी बेटी के कोई औलाद नहीं, मेरी भी कोई औलाद नहीं। मैं तुम्हारा और तू हमारा दुख समझ सकता है। ऐसी रेलवे की गुलामी से ज्यादा अच्छा काम तो यह है कि तू हमारा बेटा बन जा हनुमान!'' नानाजी ने भारी हृदय से कहा, ''गुलाबी ने तुझे बचपन से पाला है। तुम्हारी खबर लेने के बहाने बुलढाणा तो आया-जाया ही करती थी। दो साल पहले मेरे कर्ज खत्म करने के लिए भी आई थी। तब इसने बोला था कि क्रांति और ऊषा की छुट्टियों में आऊंगी पर छुट्टी तो दो साल में खूब आई, गुलाब ही नहीं आई!''

''मैं क्या कहूं काकासा, बाई जो कह दे, मैं कर लूं!'' हनुमान मामा जी ने पूरी श्रद्धा के साथ कहा था।

''बोल गुलाब, अब तू क्या कहती है!''

''अब तो विवाह हो गया है—बेटी का भी ब्याह कर दिया है। इसकी पत्नी जो कहेगी, उसकी बात को भी तो मानना पड़ेगा!''

''कल्याणी तो हमारी मर्जी से ही चलती है। बाई कह दे तो मैं चल सकता हूं काकासा।'' हनुमान ने नीची नजरें करते हुए कहा।

''मैंने मना कब किया हनुमान!'' बाई ने तब भारी स्वर में कहा था, ''तुझे अगर लाखों की स्टेट मिल रही है, तो मुझे तो खुशी ही होगी।''

''हनुमान को इस भूल में मत रख गुलाब! यह मेरा गोद लिया बेटा भले ही हो जाए, पर मेरी स्टेट को मैं तेरे नाम कर चुका हूं। मेरे मरने के पश्चात तू कुछ भी करना। हां, हनुमान को गोद लेने की सारी बातें कानूनी रूप से लिखी-पढ़ी जाएगी।''

comicsmylife.blogspot.in

"काकासा, मेरी रेलवे की नौकरी का पन्द्रह बरस छः महीना पूरा होने वाला है। मुझे अब पेंशन और रेलवे का पास भी मिलने लग जाएगा। छः महीने बाद मैं बाई को साथ लेकर खुद ही आ जाऊंगा!"

"हनुमान की यह बात ठीक है। अगर इसमें यह शंका करता है तो इसकी दो साल की छुट्टियां मंजूर करवा देता हूं, ताकि इसका मन बुलढाणा में ठेकेदारी के काम में लग जाए तो ठीक है, नहीं तो यह दुबारा रेलवे की सर्विस ज्वाइन कर सकता है।" बाऊजी ने सुझाव दिया था।

"मोटी नानी को क्यों नहीं लाए?" मैंने तब भोलेपन के साथ कहा।

"क्रांति मैं तो ला ही रहा था, पर मैं उसके साथ दो बस में बैठा और दोनों पंचर हो गई। तब वो कहने लगी कि जब बस का ये हाल है तो रेल के टायर का क्या होगा!"

इस पर सभी खिलखिला कर हंस पड़े थे।

नानीजी की काया वाकई विराट थी। यह सोचा भी नहीं जा सकता था कि वह सफर करेंगी।

छः महीने बाद हम सभी मामाजी को साथ लेकर बुलढाणा पहुंचे थे। नानाजी ने शुभ मुहुर्त तय करके हनुमान मामाजी को गोद लेने का धार्मिक और कानूनी कार्य पूर्ण कर दिया था। गोद लेने की रस्म के पश्चात खाने-पीने का भारी आयोजन भी किया गया था। कल्याणी मामी ने पहली बार ही हवेली में कदम रखा था। इस कारण नवेली बहू के रूप में उनका अनोखा स्वागत किया गया था। नानाजी के कराए हवन पर मामा-मामी साथ बैठे थे। कल्याणी मामीजी को मोटी नानी ने पुश्तैनी जेवर पहनाए थे, तो मामीजी सोने में पीली हो गई थी। बाऊजी तो एक सप्ताह बाद अजमेर लौट गए थे। उन्होंने हमें बुलढाणा में सभी जगह पर घुमाया था। इस कारण बाऊजी के जाने के बाद उनकी कमी काफी खली थी। लेकिन नानाजी और नानीजी का प्रेम देख कर वह कमी भूल गए। गर्मियों की छुट्टियां थी और बुलढाणा में हापुस (अलफांसो) आम की आवक शुरू ही हुई थी। नानाजी के आदेश पर नौकर रोज एक टोकरा हापुस आमों का लेकर आता था। जिन्दगी में आम की वैरायटी बुलढाणा में देखी तो हर प्रकार

के आम का एंजाय भी खूब किया। हापुस, मलगोबा, राजा-रानी और अंगूरी आम छक कर खाए थे। यही कारण है कि उत्तरी भारत का दसेरी और लंगड़ा आम दिल्ली में रह कर मैं चख ही लेता हूं और बुलढाणा को याद करने लगता था।

जाहिर था कि मामाजी के गोद लिए जाने की रस्म में रुकमणी जीजी और महेन्द्र जीजाजी भी आए थे। इस कारण उनके साथ रहने का मौका भी खूब मिला था। दोनों को खाने-पीने का शौक था। मैं छोटा था सो भाग-भाग कर उनकी हर फरमाइश पूरी करता था। वह दोनों ऊपर वाले खास गोल कमरे में ज्यादा रहते थे। कारण यही था कि जीजाजी को सिगरेट पीने की बहुत बुरी लत थी। मैं ही उन्हें सीजर्स (कैंची छाप) ब्राण्ड सिगरेट ला-लाकर दिया करता था। एक बात मुझे अजीब लगती थी कि महेन्द्र जीजाजी रात-दिन अपनी आंखों पर स्याह चश्मा लगाए रहते हैं। हवेली में बिजली नहीं थी, लालटेनों का उजाला ही हुआ करता था। उस वक्त भी काला चश्मा उनकी आंखों पर रहता था। वह मुझे इस कारण फिल्मी विलेन ज्यादा लगते थे और मैं उनसे डरता भी बहुत था। तब मैंने ख्वाब में भी नहीं सोचा था कि प्यार से बात करने वाला वह जीजा एक दिन भयानक विलेन (खलनायक) ही साबित होने वाला है।

खैर, अब हर वर्ष नियम हो गया था कि हम गर्मी की छुट्टियों में बुलढाणा जाते और दो महीने जम कर आम खाते और श्याम तथा गजानन टाकिज में लगने वाली हर पिक्चर भी देखते। उस जमाने में पांच पैसे टिकट के लगते थे और बैंच वाली क्लास हुआ करती थी।

मैं तेरह वर्ष का था और ऊषा मेरी बहन सत्रह की। वह हायर सेकेण्डरी में थी और मैं सातवीं क्लास का छात्र था। अचानक जनवरी महीने में एक दिन तार आया।

उस तार की खबर ने मुझे खूब रूलाया था। नानाजी की मौत की खबर आई थी तार में। तुरंत-फुरंत रात की ट्रेन से बुलढाणा कूच करने की तैयारियां होने लगी। रुकमणी जीजी को भी साथ में लिया गया और हम सपरिवार बुलढाणा पहुंच गए। मोटी नानी भण्डारे के खास हिस्से पर बने डीवान पर रहती थी। बाई और रुकमणी जीजी रोती-बिलखती अंदर घुसी थी। मौत का रूदन

comicsmylife.blogspot.in

तब मैंने पहली बार ही देखा था रोहन। मोटी नानी की प्रफुल्ल मुद्रा को नानाजी की मौत से जैसे ग्रहण लग गया था। दोपहर का प्रकाश, शाम को जैसे मटमैला हो जाता है; ठीक वैसा ही आभास उनके व्यक्तित्व से हो रहा था। मैं नानी मां के पास गया तो नानी मां ने मुझे अपने कलजे से लगा लिया था। उनके मोटे-मोटे आंसू मैं अपने चेहरे पर आज भी महसूस करता हूं रोहन। तुम उन आंसुओं की कीमत क्या जानो रोहन। तुमने तो बुलढाणा ही नहीं देखा है।

खैर, बाद में मोटी नानी ने बताया कि नानाजी का खास काला कुत्ता 'टॉमी' नानाजी की अर्थी के साथ-साथ श्मशाम तक गया था और तीन दिन तक वहीं रहा था। जब तक कि श्मशान से अस्थि पुष्प नहीं चुन लिए गए थे। मालूम हुआ कि आज ही तीसरा दिन था। हनुमान मामाजी हरिद्वार जा चुके थे।

"नानी, टॉमी कहां है ?" एकांत में रोते हुए मैंने नानी जी से पूछा।

"वहीं, तेरे नाना की गद्दी के पास बैठा होगा कर्मजला!" नानी ने आहत स्वर में कहा, "कितनी बार रोटी के लिए पूछा। पर रोटी नहीं खाई है!"

"मैं रोटी खिला दूं नानी!"

"ले जा, शायद तेरे हाथ से खा ले!" नानी ने गोद से मुक्त कर दिया।

मैं रसोई के ऊंचे भाग में घुस कर कटोरदान में से ज्वार की रोटी (भाखरी) निकालने लगा था।

"कौन है ?" तभी एक रोबदार आवाज आई।

डर के कारण कटोरदान हाथ से छूट गया।

कल्याणी मामी और रुकमणी जीजी फिर अंधेरे वाले कमरे से बाहर आए। वह तिजोरी वाला कमरा कहलाता था। उसमें जमीन में गड़ी हुई तिजोरी थी।

सारी रोटियां फर्श पर बिखर गई थीं। मैं अपराधी की तरह से सिर झुकाए खड़ा था। कल्याणी मामी ने आव देखा न ताव मेरे गाल पर तमाचा मार दिया।

वही पहला और आखिरी तमाचा मारा था कल्याणी मामी ने। तमाचे की आवाज और दर्द के साथ मेरी रूलाई फूट पड़ी।

"क्या हुआ क्रांति ?" नानी ने तड़पती आवाज में पूछा।

मेरे मुख से बोल नहीं फूटा।

रुकमणी जीजी ने तब नानी को जाकर कहा, "क्रांति ने रोटी का कटोरदान गिरा दिया है, इसलिए मां ने थप्पड़ मारा है।"

"थप्पड़ मारा...क्रांति को थप्पड़ मारा! अरी ओ डायन, इधर आ जरा।" नानी का वैसा क्रोध में जलता स्वर भी कभी नहीं सुना था।

कल्याणी मामी को भी जैसे काठ मार गया लेकिन नानी ने आवाज लगाई थी—जाना भी था। फिर कल्याणी मामी ने मुझे घूर कर देखा। मैं ज्वार की आधी रोटी का टुकड़ा लेकर नानी के पास भागा और उनकी गोद में दुबक गया। मेरा जिस्म कांप रहा था। पहले न तो कभी थप्पड़ खाया था और न ही किसी घर वाले ने यूं आंखें तरेर कर मेरी ओर देखा था।

"अरी खसम खावनी! बच्चे पर तूने हाथ उठाया है...राण्ड! यह मेरे कलेजे का टुकड़ा है। इस पर आइन्दा हाथ उठाया तो डायन हाथ तोड़ दूंगी।" नानी का गरजता हुआ स्वर पूरी हवेली में गुंजायमान हो उठा। बाई भी भागती हुई आई।

"क्या हुआ काकीसा ?" बाई ने धीमे से पूछा।

"इसने, तुम्हारे भाई की जोरू ने क्रांति को थप्पड़ मारा गुलाबी। तुम अपने भाई हनुमान से कह देना कि ये थप्पड़ इस राण्ड ने मेरी ममता पर मारा है। आज तू भी जान ले गुलाबी कि मैं तेरे बेटे को गोद लेना चाहती थी, पर हनुमान के प्रति तेरे प्रेम को देखकर मैंने अपनी मन की बात नहीं बताई! मैं तुम्हें अब भी कह रही हूं गुलाबी कि क्रांति के नाम आधी स्टेट करवा देती हूं!"

"इसने कटोरदान गिरा दिया था बुआजी!" रुकमणी ने अपनी मां की तरफदारी की थी।

बाई बोली, "इसने गलती की थी काकीसा, इसी कारण पिटा, और कल्याणी कोई गैर थोड़े ही है!"

"अरे गुलाबी, तुम्हारी अक्ल पर पत्थर पड़ गया है। क्रांति तो रोटी लेने गया था टॉमी के लिए, जो कि तुम्हारे काकाजी के गुजर जाने के बाद रोटी को मुंह भी नहीं लगा रहा है। यह तो कुत्ते के लिए रोटी ले रहा था। तुम्हारी भौजाई चिल्लाई तो हाथ से कटोरदान छूट गया। आज के दिन तो मैं कलेजे पर पत्थर रख

comicsmylife.blogspot.in

लेती हूं, पर याद रख कल्याणी, तूने फिर कभी इसे थप्पड़ मारा तो मैं भूतनी बन कर तुम्हारा पीछा करूंगी!'' मोटी नानी ने यह बात इतने विश्वास से कही थी कि मैंने उस बात को पत्थर की लकीर मान लिया था।

तब मुझे अहसास हुआ था कि क्यों मोटी नानी की ममता में मुझे प्रेम की वह धारा महसूस होती थी, जो एक नाती और नानी ही समझ सकती है। मैंने तब उस रिश्ते को समझा था रोहन। तू दुर्भाग्यशाली था रोहन। तेरी दादी तेरी किलकारियां भी नहीं सुन पाई थी। वरना तू दादी और नानी दोनों का स्नेह प्राप्त करता मेरे बच्चे।

हां, फिर मैं भटक गया हूं कहते-कहते। नानी की उस खुली चेतावनी ने मेरे अंदर के गीदड़ को शेर बना दिया था। मैं बड़ी शान और अकड़ के साथ मुट्ठी में रोटी का टुकड़ा दबा कर नानी की गोदी से निकला। जैसे शेर की मांद से निकला हुआ शावक।

❑❑

रोटी का आधा टुकड़ा लेकर मैं टॉमी के पास बैठ गया। टॉमी ने अपना मुंह जमीन पर टिका रखा था और सूनी आंखों से एकटक शून्य में देखे जा रहा था, ''टॉमी! टॉमी मेरा बच्चा!'' मैंने उसकी आंखों से बहे आंसुओं की लकीरें देख कर भावुकता के साथ कहा था, ''ले, रोटी खा ले अच्छे बच्चे!''

उसने तब मुंह उठाया और निचला जबड़ा मेरी गोद पर रख लिया और टेढ़ा होकर लेट गया।

''टॉमी, रोटी खा ले राजा!'' मैंने रोटी का टुकड़ा उसके मुख के पास रखा।

बेजुबान प्राणी क्या बोलता। उसने आंसू बहाने प्रारम्भ कर दिए। आंसू और दर्द की भाषा हर जानवर समझता है और समझा भी सकता है।

वह एकटक मेरी आंखों में देख रहा था और मैं उसकी आंखों में देख रहा था।

तभी रुकमणी जीजी आई।

''क्यों नहाया-धोया खराब हो रहा है। हटा गोद से इस कुत्ते के चेहरे को।'' रुकमणी ने फिर लकड़ी के एक छोटे डंडे से उसे भगाने की कोशिश की थी।

उसकी तो यह कोशिश ही थी, टॉमी तड़प कर उठा और उसने लकड़ी को मुंह से छीन लिया और फिर दोनों पंजों से गुर्रा कर रुकमणी जीजी को धक्का दिया। वह पीठ के बल जाकर गिरी।

तब उसका क्रोध भयानक था। जीजी की सिट्टी-पिट्टी गुम हो गई थी। गुर्राया हुआ टॉमी स्वयं को काफी नियंत्रित कर रहा था, क्योंकि उसकी आंखों में तब भयानक क्रोध था।

''टॉमी नहीं!'' मैंने पुचकारा, ''आजा मेरे पास। जीजी नहीं मारेगी तेरे को।''

टॉमी ने फिर पंजे से जीजी का पांव हटाया। जैसे कहना चाहता हो, ''दफा हो जा यहां से!''

जीजी भी शायद समझ गई थी। वह सिर पर पैर रख कर भाग छूटी।

''कोई बात नहीं टॉमी, जीजी है यार!'' मैंने उसे स्नेह से पुचकारा।

जवाब में उसने सिर को नकारात्मक अंदाज में हिलाया था। मैं तब नहीं समझा था उसके इन्कार को...कतई नहीं समझा था मैं। कैसे समझता? हर राखी पर उस ममेरी बहन से राखी बंधवाता था। शायद टॉमी समझ गया था कि बहन का वह प्रेम कितना बड़ा दिखावा है। इंसान और जानवर दोनों ही प्रेम और नफरत को समझ लेते हैं। काश! मैं उस समय समझ जाता तो इतना बड़ा अनर्थ न होता।

रोहन, उस अनर्थ की तुम अभी कल्पना भी नहीं कर रहे हो। इस कारण टॉमी की हैसियत तुम्हारे लिए वफादार कुत्ते से ज्यादा नहीं है लेकिन वह जानवर भविष्य में झांकने की सलाहियत रखता था। बेशक वह बोल नहीं पाया था।

उसने फिर पानी की हाण्डी की ओर देखा। हाण्डी खाली पड़ी हुई थी। मोटी नानी वहां आती नहीं थी। इस कारण उन्हें टॉमी की देख-रेख के विषय में मालूम नहीं था।

तभी मैंने घर की पुरानी नौकरानी राधाम्मा को जाते हुए देखा।

''राधाम्मा!'' मैं चिल्लाया।

वह दौड़कर पास आई। पूरी मराठन थी राधाम्मा।

''क्या हुआ मालिक?''

comicsmylife.blogspot.in

''टॉमी के बर्तन में पानी ले आओ राधाम्मा!''

''बप्पा...रे बप्पा!'' राधाम्मा ने दोनों कानों को हाथ लगाया था, ''पानी नहीं है बर्तन में!''

''पानी लाओ।''

''अब्बी आती लेकर मालिक!'' उसके फिर जैसे पंख उग आए हों। इस प्रकार भागी थी राधाम्मा।

वह ठण्डा पानी लेकर आई और उसे बर्तन में डाल दिया।

''चल टॉमी, पानी पी ले।''

टॉमी ने आहिस्ता से मेरा हाथ जबड़ों में थामा और मूक दृष्टि से देखने लगा। मैं देर से समझा कि वह मुझे हाथ से पानी पिलाने को कह रहा है। मैंने दूसरे हाथ से हाण्डी उठाई और उसके मुख के करीब कर दी। उसने पानी का एक घूंट भरा। सिर्फ एक घूंट...फिर उसने मेरी गोद में सिर रखा और अपनी दृष्टि स्वर्गीय नानाजी की माला चढ़ी फ्रेमयुक्त फोटो पर टिका दी थी।

''नानाजी को याद कर रहा है टॉमी!'' मेरा स्वर भी भर्रा उठा था तब। लेकिन उसने शरीर को ढीला छोड़ दिया। मैं काफी देर तक उसी मुद्रा में बैठा रहा। तभी बाऊजी आए थे, ''अरे क्रांति बेटा! टॉमी को क्या हुआ है?'' उन्होंने पूछा।

''कुछ नहीं बाऊजी, अपना दुख बांट रहा है!'' मैंने बेहद सहजता के साथ कहा था।

लेकिन बाऊजी समझ गए थे। टॉमी मेरी गोद में सिर रख कर मालिक की फोटो को देखता हुआ वफादारी की मिसाल बन कर जीवन त्याग चुका था।

बाऊजी ने टॉमी को मुझसे अलग किया तो उनकी आंखों में आंसू देखे मैंने।

''टॉमी चला गया बेटे।'' बाऊजी ने फिर टॉमी की लाश को मुझसे अलग कर दिया था।

शीघ्र ही सभी को मालूम हुआ कि टॉमी ने देह-त्याग दी है।

मैं रोता-बिसुरता नानी के पास चल दिया। नानी उस वक्त पीढ़े पर बैठी थी।

''क्यूं रो रहा है क्रांति!'' नानी ने चौंक कर पूछा।

''टॉमी...टॉमी...!'' फिर मैं हिचकियां भरने लगा।

नानी इतने में ही समझ गई।

''मुझे मालूम हो गया था कि टॉमी अब रोटी-पानी को मुंह नहीं लगायेगा!''

तब मैंने बताया, ''नानी उसने मेरे हाथ से पानी पिया था और फिर नानाजी की फोटो को देखता हुआ मेरी गोद में लेटा रहा था।''

रूकमणी जीजी ने आकर कहा, ''क्यों रे क्रांति! कुत्ता तुम्हारी गोद में मर गया था, तू नहा तो ले—कुत्ते की बदबू आ रही है तुम्हारी देह से!''

मेरी मुट्ठियां रोष में भिंच गई। संस्कार थे, जो कुछ गलत बोलने से रोक रहे थे लेकिन नानी को कौन रोकने वाला था।

''ओ छोकरी! जो मरा है न, वो कुत्ता होकर भी तुझसे ज्यादा समझ रखता है। उसने तो मालिक के लिए मर कर दिखा दिया है, लेकिन तुम तो लाश पर रोती रहती है और जिन्दा भी रहती है।'' मोटी नानी ने जैसे श्राप दिया था।

''नानी! टॉमी का अंतिम संस्कार होना चाहिए!'' मैंने ठोस स्वर में कहा।

''जरूर होगा क्रांति। तू ही टॉमी की चिता को आग देगा और तू ही सारे संस्कार पूर्ण करेगा।'' फिर नानी ने चाबी का गुच्छा मेरी ओर फेंक दिया, ''जा, तिजोरी में से रुपया निकाल ला।'' मैं चाबी उठा कर अधिकार के साथ तिजोरी वाले कमरे में पहुंच गया। कल्याणी मामी वहां बैठी हुई थी। मैंने तिजोरी खोल कर नोटों की गड्डी उठा ली। तब सौ का नोट आकार में बहुत बड़ा होता था। मैंने गड्डी निकाली और तिजोरी को ताला लगा कर नानी के पास पहुंच गया।

नानी ने दस हजार की गड्डी देखी। चेहरे पर शिकन तक नहीं आई थी।

''कुंवर साहब,'' वह बाऊजी से बोली, ''क्रांति जितने रुपए लाया है, सब पुण्य के काम में खर्च कर दो। मैं जानती हूं कि आपने जाति के लिए बैंक कॉलोनी और आश्रम भी बनवाए हैं।''

''पर इस दस हजार रुपये पर हनुमान का हक है काकीसा!'' बाई ने प्रतिरोध किया, ''बच्चे के साथ-साथ आप भी बच्चे की सी जिद्द करते हो!''

''दान-धर्म में पैसे लगेंगे तो हमारा भी परलोक सुधर जाएगा

comicsmylife.blogspot.in

गुलाबी ! कमा कर खाना और हगना तो सभी को है। कमाई को पुण्य की खातिर भी तो लगाना चाहिए कि नहीं।''

सब निरुत्तर रह गए।

बाऊजी ने दस हजार रुपयों की गड्डी मुझसे ले ली और आश्वासन दिया कि रुपया अच्छे कामों पर ही खर्च किया जाएगा।

□□

फिर टॉमी को बाड़े में ही लकड़ियां चुन कर मेरे द्वारा अग्नि दिलवाई गई थी। यह मेरी जिन्दगी का पहला दाह-संस्कार था, जो पूरे विधि-विधान के साथ किया गया था। मराठे पण्डित ने स्पष्ट कहा था कि टॉमी एक पुण्यात्मा है। इस कारण वह ब्राह्मण होकर भी कुत्ते का क्रियाकर्म कराने में संकोच नहीं कर रहा है।

''वाह ! पण्डितजी, दक्षिणा के लिए कुत्ते का भी संस्कार करा दिया।'' महेन्द्र जीजाजी ने पण्डित को व्यंग्यपूर्ण स्वर में कहा था।

''मुझे तो मनुष्यों में भी कुत्ते और सूअर नजर आते हैं दामाद साहब। जब उनका संस्कार करवाता हूं तो फिर यह कुत्ता तो पुण्यात्मा था। मालिक के गम में बिना खाए-पीए जान छोड़ गया। आप अपने पिताजी की मौत पर खाना-पीना छोड़ने की कोशिश करना, तब आपको टॉमी और अपने बीच कोई फर्क नजर आ जाएगा कुत्ते और सूअर का फर्क !'' मराठा पण्डित ने कठोर स्वर में जवाब दिया था।

तीसरे दिन बाकायदा उसका उठावना किया गया और मैंने उसकी अस्थियों को चुन कर एक हाण्डी में लाल कपड़ा लपेट कर बाड़े के जामुन वाले पेड़ पर टांग दिया था। मैं चाहता था कि दिल्ली जाकर मैं उसकी अस्थियां यमुनाजी में प्रवाहित कर दूंगा। वापिस जब मैं हवेली पहुंचा तो हनुमान मामाजी के आने की बात मालूम हुई। वह हरिद्वार से आ गए थे और मोटी नानी के पीठे के पास चटाई पर बैठे थे। मुझे देखते ही मामाजी ने बांहें फैला दी थीं। मैं मामाजी के सीने से जा लगा। घुटे हुए सिर के कारण मामाजी मुझे गमजदा लगे थे।

मामाजी और मामीजी में कितना बड़ा फर्क था।

वजह ? वजह एकदम साफ थी। मामा जी जानते थे कि मैं

उस परिवार से संबंध रखता हूं, जिसके कारण आज वह जीवित हैं और लाखों के मालिक भी। मैंने तिजोरी की चाबी निकालकर मामाजी की ओर बढ़ा दी।

''नानी ने दी थी।''

''तो फिर रख न क्रांति !'' मामाजी सहजता के साथ बोले थे। जैसे खिलौना रखने को कह रहे हों।

''तू भी बावलों जैसी बात करता है हनुमान !'' बाई ने मेरे हाथ से चाबी लेकर नानीजी को दे दी थी, ''काकीसा, जब तक आप हो, तिजोरी पर आपका ही हक है।''

''नहीं गुलाब, अब वक्त आ गया है कि मैं चाबी धर्म के बेटे को सौंप दूं।''

''हनुमान, अब तू चाबी रख !'' नानी ने फ़िर चाबी मामाजी को सौंप दी थी, ''हनुमान मुझे एक वचन दे...रे !''

''मेरी जान भी मांग लो काकीसा !''

''नहीं रे, तुम्हारी जिन्दगी में मेरी जिन्दगी भी जुड़ जाए। बस, मैं चाहती हूं कि तू गुलाब का ध्यान रखना। गुलाब तेरी बहन है, पर तुझे मां बन कर पाला है। मैं जानती हूं कि तू गुलाब की हर बात मान लेता है। बस, बहन के परिवार को कभी मत भूलना।''

''तुमने मेरे हृदय की बात कह दी काकीसा !''

तभी रुकमणी जीजी चाय लेकर आई।

मामाजी को तब मैंने टॉमी के विषय में सब कुछ बताया था। मामाजी की आंखें भी छलक उठी थीं।

□□

उस रात मामाजी ने खुद पहली बार ही तिजोरी खोली थी। वरना चाबी नानीजी के पास ही रहा करती थी। मैं और बाऊजी भी वहां पर मौजूद थे। जबकि महेंद्र जीजाजी बिन बुलाए ही आए थे।

लैम्पों की रोशनी में तिजोरी खुली। उसमें लक्ष्मी का अटूट वास छिपा हुआ था। तीन खण्ड थे, ऊपरी खण्ड में गणेश और मां लक्ष्मी की चांदी की मूर्तियां थीं और उस खाने में प्रापर्टी के कागजात भी थे। दूसरे खाने में नोटों के बण्डल जमा थे। तीसरे खाने में काटजू परिवार के तीन सौ वर्ष पुराने जेवरात रखे हुए थे।

comicsmylife.blogspot.in

मामाजी ने हर चीज की एक लिस्ट बनाई थी।

फिर वह लिस्ट मामाजी ने बाऊजी को दे दी थी।

''हनुमान! मैं इस लिस्ट का भला क्या करूंगा।'' बाऊजी ने लिस्ट को हाथ भी नहीं लगाया।

''जीजाजी, मैं एक नेक पुत्र की तरह से लिस्ट में इजाफा करूंगा, इसमें कमी कभी नहीं करूंगा।''

बाऊजी ने तब मामाजी का कंधा स्नेह से थपथपा दिया था। फिर पंद्रह दिन गुजार कर हम सपरिवार दिल्ली के लिए रवाना हो गए। लेकिन मेरा मन नानी और बुलढाणा में ही रमा रह गया था। आज सोचता हूं तो लगता है कि बचपन का समय ही इंसान का सर्वश्रेष्ठ समय होता है। न कोई चिन्ता न कोई फिक्र!

❏❏

एक माह बाद बाऊजी सीनियर फोरमैन की नौकरी से रिटायर हुए। यह बात है उन्नीस सौ छियासठ के आस-पास की। सत्तानवे हजार रुपया बाऊजी को ग्रेच्युटी मिली थी और उन्होंने पेंशन नहीं करवाई। वह यही समझ रहे थे कि उनका बेटा, यानी की क्रांतिदूत शर्मा परिवार की जिम्मेदारी संभाल ही लेगा। मेरा स्वभाव अंतर्मुखी था और मैं कविता, कहानियां और डायरी लिखा करता था। एक दिन बाऊजी ने मेरी एक कहानी पढ़ी और मुझे शाबाशी दी और कहा कि सरस्वती देवी की तुझ पर कृपा रहेगी बेटे। लेकिन सरस्वती को रोजगार का साधन मत बनाना। सरस्वती की पूजा बिना स्वार्थ के ही सफल होती है। मई का अंतिम सप्ताह था। ऊषा दीदी के पेपर हो चुके थे। मेरे तीन पेपर रह रहे थे।

स्कूल से इम्तहान देकर घर आया तो घर में मातम जैसा माहौल था। मालूम हुआ कि बुलढाणा में नानी को पक्षाघात (लकवा) हो गया है और अब वह बिस्तर के हवाले ही चुकी हैं।

मेरा दिल चीखा कि मैं उसी वक्त नानी के पास पहुंच जाऊं लेकिन बाऊजी ने समझाया कि दो दिन में पेपर खत्म हो जाएंगे और तब, मैं बाई और ऊषा दीदी बुलढाणा जाएंगे। मैं ही जानता हूं कि दो दिन मैंने कैसे गुजारे? नानी की आकृति स्वप्नों में आकर खड़ी हो जाती थी। अचानक नींद खुलती तो मेरी आंखों में आंसू

होते।

दिल्ली से खण्डवा, खण्डवा से भुसावल और भुसावल से मलिकापुर ट्रेन से और उसके बाद बाकी सफर बस के द्वारा था, जो पहाड़ी चढ़ाई का था। बुलढाणा ऊंचाई पर होने के कारण खुशगवार मौसम रखता था। वहां गर्मियों में भी पंखे की आवश्यकता अनुभव नहीं होती थी। हवेली में उस वक्त भी लाइट नहीं लगवाई गई थी, जबकि बाकी बुलढाणा रोशनी में जगमग हो चुका था। शायद इसका कारण वह चालीस किरायेदार थे, जो हवेली के पचपन कमरों में रहते थे। बिजली के बिल की हिस्सेदारी को लेकर हायतौबा रहती थी। चालीस किरायेदारों के लिए अलग-अलग कनेक्शन लेना संभव नहीं था।

नानी की तबीयत ज्यादा खराब हो चुकी थी। हम जब पहुंचे तो उन्हें हॉस्पीटल का एक प्राइवेट कमरा लेकर रखा गया था। नानी को ग्लूकोज और ऑक्सीजन दी जा रही थी। नानी को शाम को थोड़ा होश आया। सबको पहचान कर उनकी आंखें नम हुईं। मैंने तब नानी का मस्तक चूम लिया।

तब नानी ने बड़ी कशिश भरी दृष्टि से देखा। कुछ कहना चाहा लेकिन जुबान लड़खड़ा कर रह गई। मुख से विचित्र ध्वनि निकली, जिसका कोई भी अर्थ नहीं लगाया जा सकता था।

''काकीसा क्या कहना चाहती हो!'' बाई ने उनका मस्तक सहलाते हुए पूछा।

नानी ने फिर हाथ की उंगलियों से अंगूठे रगड़कर रुपये-पैसे का संकेत दिया था।

''रुपयों की बात कर रही हो!'' बाई ने पूछा।

जवाब में सिर हिला फिर उन्होंने बाई की ओर उंगली से इशारा किया और फिर मुट्ठी उल्टी करने का संकेत दिया।

''मुझे रुपया देना चाहती हो काकीसा!'' बाई ने भर्राए स्वर में पूछा।

संकेत फिर से 'हां' में दिया गया।

किस प्रकार से संकेत भाषा का काम करते हैं, यह मैंने पहली बार देखा था।

''मुझे कुछ नहीं चाहिए काकीसा!'' बाई ने उनका हाथ सहलाते हुए कहा। तब नानी ने मेरी तथा ऊषा की ओर उंगली से

comicsmylife.blogspot.in

इशारा किया।

"क्रांति और ऊषा की खातिर ले लूं!" बाई ने अर्थ समझा।

फिर से 'हां' में संकेत दिया गया।

"नहीं काकीसा, हनुमान आपका बेटा और मेरा भाई है। जरूरत हुई तो हनुमान दे देगा। उसका खून सफेद नहीं हो सकता!" बाई ने दृढ़ता से कहा।

तब नानी ने यूं ठण्डी सांसें भरी थीं, जैसे उन्हें बाई के निर्णय पर गहरा अफसोस हो रहा हो। कल्याणी मामी तब विषाक्त नजरों से नानी को देख रही थी। बड़ा आश्चर्य हुआ था मुझे। मैंने सदा यही समझा था कि कल्याणी मामी तो मोटी नानी की अहसानमंद रही होंगी। लाखों की स्टेट उनसे ही तो मिली थी।

लेकिन आज मैं जानता हूं कि नानाजी और नानीजी दोनों कितने सही थे। काश! बाई ने उनका अनुरोध स्वीकार कर लिया होता, क्योंकि उसका परिणाम बहुत भयानक निकला था रोहन बेटे। जिसे तुम अगले पृष्ठों पर स्वयं पढ़ोगे।

एक सप्ताह भी नहीं गुजरा था कि रुकमणी जीजी और महेंद्र जीजाजी भी बुलढाणा आ धमके थे। मामाजी का डर था दोनों को, इस कारण वह बड़े प्यार से पेश आने का दिखावा कर रहे थे। तिजोरी की चाबी अब मामाजी के पास पहुंच चुकी थी। नानी के इलाज के लिए मामाजी ने रुपया पानी की तरह बहाया था।

मैं नियम से बारह घण्टे हॉस्पिटल में नानी के पास बैठा रहता था और नानी के पांव दबाता या सिर दबाता रहता था। नानी प्रेम की जो निगाह होश आने पर डाल देती थी, वही मेरी सेवा का रिवॉर्ड होती थी। फिर डॉक्टरों को एक दिन मामाजी से कहते सुना था।

"अब दो-चार दिन से ज्यादा नहीं निकाल सकेंगी शर्मा साहब! आप जिन्हें अंतिम समय में बुलाना चाहो, बुला सकते हैं।"

"डॉक्टर साहब, कैसे भी मां को बचा लीजिए!" मामाजी बड़ी दीनता से गिड़गिड़ाए थे, "दौलत की आप चिंता मत कीजिए। लेकिन इनका जीवन बचना चाहिए।"

"शर्मा साहब, ईश्वर की मर्जी के सामने हम विवश हैं। कोई चमत्कार ही हो जाए तो बात अलग है।" डॉक्टर फिर मामाजी

का कंधा थपथपा कर चले गए।

मामाजी फिर सिर थाम कर रोने लगे थे। मैंने मामाजी के आंसू पोंछे तो उन्होंने मुझे गले से लगा लिया। मैं उनकी पीठ सहलाने लगा था।

❐❐

दो दिन बाद मैं सुबह की चाय लेकर हॉस्पिटल पहुंचा था। डॉक्टर कमरे में थे, मामीजी थीं और महेंद्र जीजाजी भी वहीं थे।

नानी की सांसें अस्त-व्यस्त चल रही थीं और आंखों की पुतलियां तेजी से घूम रही थीं। उनकी यह स्थिति देखकर न जाने क्यों मुझे भावी अनष्टि की उपस्थिति का तीव्र अहसास हुआ था।

"दीपक की आखिरी ज्योति है।" डॉक्टर भारी स्वर में बोला था।

"नानी... मोटी नानी! मेरी तरफ देखो।" मैं चाय का थर्मस फेंककर नानी की ओर बढ़ा था। जैसे मैं अपने होश में नहीं रह गया था।

नानी की बांहें फैली थीं और मैं उन बांहों में जा समाया था। लगाव की सूचना बनी वह बांहें आज भी याद हैं मुझे! कभी नहीं भूल सकता मैं।

फिर एक गहरी हिचकी के साथ नानी के हाथों का कसाव ढीला पड़ गया। टॉमी की मौत को देखा था। इस कारण मोटी नानी की मौत का तीव्र अहसास हुआ था।

तभी किसी ने कॉलर से पकड़ कर खींचा था। मैं पलंग से फिसल कर नीचे गिर गया। मेरी कॉलर महेंद्र जीजाजी ने थाम रखी थी।

"खेल खत्म हो गया क्रांति। जा, भाग कर अपनी बाई को भी बता आ!"

मैं रोता-बिलखता रहा। मुझे कमरे से बाहर निकाल दिया गया। मैं रोता हुआ घर पहुंचा। बाऊजी भी मामाजी के तार के कारण आ चुके थे।

"क्या हुआ क्रांति!" मामाजी ने चौंक कर पूछा।

"नानी... नानी अब... नहीं रही!" मैंने रोते हुए जवाब दिया।

मामाजी धम से कुर्सी पर गिर पड़े। बाऊजी ने तब उन्हें सांत्वना दी।

comicsmylife.blogspot.in

"हिम्मत रख हनुमान। अब तमाम जिम्मेदारी तूने ही संभालनी है। चलो, काकीसा की मृत देह को ले आएं!"

दस मिनट में ही खबर पूरे बुलढाणा में फैल गई थी। पूरा बुलढाणा ही जैसे वार्ड नंबर एक में सिमट आया था। बुलढाणा की तमाम हस्तियां उस शोक में हमारे साथ थीं। गजानन सेठ भी अपने परिवार के साथ आ गए थे।

बुलढाणा का प्रत्येक शख्स जैसे शोक की उस अंतिम यात्रा में एकत्र होने को आतुर था।

नारियों के भारी रूदन के बीच नानी की अर्थी उठने से पहले मामाजी और मेरे सिर पर उस्तरा चलाया गया। मैं अग्नि लेकर अर्थी के आगे नंगे पैर चल रहा था। लेकिन दिल की अग्नि हाथ में थमी अग्नि से ज्यादा दहक रही थी।

हृदय में अपार दुख और पांवों में कंकरों की चुभन से होती वेदना! आधे रास्ते खून रिसने लगा मेरे तलुओं से।

"क्रांति! तू रिक्शा में बैठ जा। कई बुजुर्ग रिक्शा में बैठ कर ही आ रहे हैं।" महेन्द्र जीजाजी ने खिल्ली उड़ाने वाले अंदाज में मुझे टोका था।

"नहीं, मैं पैदल चलूंगा।" मैंने दृढ़ता से कहा।

बाऊजी ने तब अपने और मामाजी के रूमाल से मेरे तलवों पर पट्टी-सी बांध दी थी। दर्द को पीता हुआ मैं राम धुन के साथ श्मशान तक पहुंच गया। मेरे पांवों में बंधे रूमाल खून से तर-बतर हो गए थे।

"कमाल का लड़का है!" एक पुलिस अधिकारी ने प्रशंसा भरे स्वर में कहा था, "शरीर की पीड़ा वही भूल सकता है, जिसके हृदय की पीड़ा ज्यादा हो!"

"उफ! इसकी पीड़ा देखकर मेरे प्राण सूख रहे हैं, लेकिन यह कराह भी नहीं रहा।" कारखाने में काम करने वाले कन्हैया मामा ने कहा।

फिर चिता सजाई गई थी।

"अरे! चांदी के कड़े तो निकाले ही नहीं।" किसी ने चौंक कर कहा था।

"कड़े निकालना जरूरी है?" मामाजी ने शुष्क स्वर में पूछा, "जो कड़े काकीसा के व्यक्तित्व हैं। उन्हें मैं नहीं उतारना चाहता।"

"शास्त्र तो यही कहता है!" पण्डित ने धीमे से कहा, "स्नान करवाने वाली महिलाओं को ध्यान रखना था। कड़े उन्हें ही उतार लेने चाहिए थे!"

फिर कड़े उतारने का प्रयास किया जाने लगा। महेंद्र जीजाजी कड़े उतारने के लिए ताकत लगा रहे थे। एक-एक किलो के चांदी के कड़े थे, जो पांवों में सूजन होने के कारण निकाले से नहीं निकल रहे थे।

"यह तो छैनी-हथौड़े से काटने पड़ेंगे!" महेन्द्र जीजाजी ने हांफते हुए घोषणा की।

मामाजी बोले, "छैनी-हथौड़े यहां कहां रखे हैं। यूं ही दाग हो जाएगा!"

"लकड़ी की टाल पर मिल जाएगी छैनी-हथौड़ी।" महेन्द्र जीजाजी का दिमाग 'फर्टाइल' (उर्वरक शक्ति सम्पन्न) था।

मामाजी ने तब क्रोध से अपने लालची दामाद की ओर देखा था।

फिर पांच मिनट में ही वह दामाद घन और छैनी के साथ मजदूर को भी बुला लाया था। दो किलो चांदी का मोह महेन्द्र जीजा से मेहनत करवा रहा था। मेरा दिल वितृष्णा से भर उठा।

मजदूर ने छैनी को कड़े की नोक पर रखा और महेन्द्र जीजाजी ने घन चलाना आरम्भ किया।

घन की हर चोट मेरे कलेजे पर लग रही थी। हर चोट के साथ मैं चीखता था। जैसे वह चोट मोटी नानी के मृत जिस्म पर न होकर मेरे हृदय पर की जा रही थी।

बाऊजी ने मुझे कस कर पकड़ रखा था। वरना मैं पत्थर उठा कर महेन्द्र जीजाजी के सिर पर दे मारता। मेरी मुट्ठियां भिंच गई थी। मैंने बाऊजी की पकड़ से आजाद होने का प्रयास किया, तब बाऊजी मेरे कान में बोले, "क्रांति! इस दुनिया में तू अच्छा-अच्छा ही नहीं देखेगा बेटे। तुझे जुल्म और नीचता भी देखनी होगी। एक चाण्डाल को तो देख ही रहा है। भैंगा आदमी कभी अच्छा नहीं होता। इसने भी शास्त्र में लिखी बात को सच साबित किया है। लेकिन हर जुल्मी और नीच का हिसाब ईश्वर द्वारा रखा जाता है क्रांति बेटे! यह उसका अधिकार क्षेत्र है।"

comicsmylife.blogspot.in

मैं खूनी नजरों से घूरता रह गया था उस चश्मेधारी भैंगे को।

कड़े जब निकले और पांव उजागर हुए तो उन पर कई चोटों के कारण कट लग गए थे। महेन्द्र जीजाजी ने कड़ों को राधाम्मा के पति के सुपुर्द कर दिए।

''यह नानीसा की याद है। इसे अपनी मालकिन को ले जाकर दे देना।'' महेन्द्र जीजाजी ने उसे हिदायत दी थी।

''हां!'' उसने धीमे से गर्दन हिला दी।

नानाजी की चिता को मामाजी ने अग्नि दी थी। इस कारण नानी को भी उन्होंने ही अग्नि देनी थी।

लेकिन महेन्द्र जीजाजी ने अग्नि प्रज्वलित करके मामाजी को बुलाया।

''आप धर्म पुत्र हैं। अग्नि आप ही देंगे बाऊसा।'' उसने ऊंचे स्वर में कहा था।

''नहीं, क्रांति का अपनी नानी से बेहद प्रेम था। मां कहती थी कि मैं मरूं तो क्रांति ही मेरी लाश को अग्नि देगा। चाहे मेरी लाश को उसके आने का इंतजार ही करना पड़े। मैं मां की अंतिम इच्छा का सम्मान करना चाहता हूं। आ बेटा क्रांति! मेरे पास आ।''

मामाजी ने फिर मुझे गोद में उठा लिया था। अग्नि के जलते तृण मेरे द्वारा चिता की परिक्रमा करते हुए धीरे-धीरे छोड़े गए थे। साथ-साथ मैं रो भी रहा था। कुछ देर बाद चिता ने आग पकड़ ली थी।

जाने तब क्यों जलती चिता देख कर टॉमी की चिता भी याद आ गई थी मुझे।

❐❐

हनुमान मामाजी अगर बेटे की तरह से किसी को चाहते थे तो वह मैं ही था। मोटी नानी की मौत के बाद तो उन्होंने मेरा विशेष ख्याल रखा। वह जानते थे कि मुझे लिखने का शौक है। इस कारण उन्होंने मुझे बुलढाणा लायब्रेरी का मेम्बर भी बनवा दिया था। वहां हिन्दी की महज दो सौ किताबे थीं, जिन्हें मैंने महज एक महीने में पढ़ डाला। जुनून की हद तक शौक था पढ़ने का। हिन्दी की किताबें पढ़ ली थी तो फिर मराठी की किताबें पढ़नी भी आरम्भ कर दी। मराठी भाषा हिन्दी से ज्यादा अलग नहीं है। वह हिन्दी की तरह ही लिखी जाती है। जिनमें सहायक शब्द तो

हिन्दी के हैं ही, पचास प्रतिशत वस्तुओं के नाम भी हिन्दी वाले ही हैं। कहीं-कहीं अटकता था तो मामाजी उस शब्द का अर्थ बता देते थे। अगले एक माह में तो मैं खुद मराठी भाषा बोलने लगा था।

मोटी नानी के बारहवें के दिन बाऊजी ने दस हजार रुपयों की गड्डी मामाजी को थमा दी थी।

''क्रांति की नानी ने यह रुपये क्रांति को पुण्य कार्यों के लिए दिए थे। अब नानी के लिए इन दस हजार रुपयों से कुछ पुण्य तुम ही करना हनुमान!'' बाऊजी ने बेहद गंभीरता से कहा था।

यह देखकर मामाजी के चेहरे पर रौनक आ गई थी। मैं चकित था कि मामाजी रुपयों को देखकर क्यों खुश हो रहे हैं। उन्हें तो रुपयों से ऐसा कोई लगाव कभी नहीं था। फिर मामाजी ने कल्याणी मामी को घूर कर देखा था। कल्याणी मामी ने सकपका कर नजरें झुका ली थीं। मैं इतना छोटा भी नहीं था कि उस मौन व्यवहार को न समझ पाता। कल्याणी मामी ने अवश्य ही उन्हें ताना दिया होगा कि बाऊजी ने वह दस हजार रुपये दबा लिए हैं, जो टॉमी के निधन के बाद नानी ने क्रांति को दिए थे। इस कारण आज वह उस ताने का जवाब कल्याणी मामी को घूर कर दे रहे थे।

मामाजी घूर कर मामीजी को यही बताना चाह रहे थे कि तूने मेरे बहनोई पर गलत इल्जाम लगाया था। लगभग यही हाल महेन्द्र जीजाजी और रुकमणी जीजी का भी था। यानी उनकी तिकड़ी हम लोगों के विरुद्ध कार्य कर रही थी। यह बात मामाजी से भी छिपी नहीं रह सकी थी, न ही मैं इस बात को महसूस किए बिना रह सका था।

अगले दिन बाऊजी जाने वाले थे क्योंकि दिल्ली में उन्हें समाज सेवा के कार्य भी करने थे।

तब हॉल में घर के लोग ही थे।

''जीजाजी मेरे लिए पिता के समान हैं!'' हनुमान मामाजी ने कल्याणी, रुकमणी व महेन्द्र कुमार को संबोधित किया था, ''मैं आज जो कुछ भी हूं, इनकी बदौलत हूं। तुम तीनों ने उन दस हजार रुपयों के लिए बहुत जहर उगला था। वह दस हजार रुपए जीजाजी और बाई ने डकारे नहीं थे। सही वक्त पर वापिस करना

comicsmylife.blogspot.in

चाहते थे। इस कारण आज आगाह कर रहा हूं कि तुम तीनों ने अगर भूल कर भी जीजाजी का अपमान किया तो वह मेरे लिए मरे बराबर... !''

तीनों भीगी बिल्ली बन कर आंखें झुकाये रहे थे।

बाई ही बोली, ''तू भी हनुमान छोटी-छोटी बातों को हृदय से लगा लेता है। नादानी में गलती हो ही जाती है!''

''मैं पुनः बता देना चाहता हूं कि आज अगर मैं जीवित खड़ा हूं तो बहन और बहनोई के कारण, नहीं तो पांच साल की उम्र में मैं मर गया होता!''

''बस कर हनुमान!'' बाऊजी ने डपट दिया था, ''मैंने कर्तव्य पूरा किया था। यह कोई अहसान नहीं किया था तुम पर।''

फिर बात आगे नहीं बढ़ पाई थी।

लेकिन वह तीनों ही शातिर थे। वे जानते थे कि स्थिति प्रतिकूल है, अतः झुक जाने में ही भलाई है।

तीनों ने बाऊजी के चरण-स्पर्श किए थे और माफी भी मांगी थी। मैं जानता था कि यह दिखावा है लेकिन बाई इस बात को नहीं समझती थी। वह कल्याणी मामी, रुकमणी और महेन्द्र जीजाजी को पूरा मान-सम्मान देती थी। कारण यही था कि वह हनुमान मामाजी से स्नेह रखती थी। वह उनकी पत्नी, बेटी और दामाद को भी वही सम्मान देना चाहती थी, लेकिन कुपात्र को सम्मान नहीं देना चाहिए। यह बात बाई ने अनुभव की पाठशाला से सीखनी थी।

❒❒

अगले दिन मामीजी के पेट में तेज दर्द उठा था। उन्हें तुरंत हॉस्पिटल ले जाया गया। मामाजी ने तब पहली बार बताया था।

''बाई, रुकमणी की मां को तीन साल से पेट में दर्द रहता है। मछली के समान तड़पती है ये। पिछले तीन साल से मैं और कल्याणी एक बिस्तर पर... !'' मामाजी ने फिर वाक्य अधूरा छोड़कर सिर झुका लिया।

''अरे बावले, यह बात तू आज मुझे बता रहा है! कल्याणी का पूरा चैकअप करवा। मैं तो यह चाहती हूं कि तुझे एक बेटा हो जाए तो काकाजी का वंश भी आगे चल सकता है, पर तू तो बात

ही दूसरी करता है। गरीब घर की बेटी को ब्याह कर लाए हो तो फिर पूरा ध्यान भी रखना चाहिए।''

बात आई गई अवश्य हो गई थी लेकिन तीन दिन बाद डॉक्टर ने बताया था कि मामीजी को वैजाइनल और यूटरस कैंसर है। इस खबर ने मामाजी और बाई के होश उड़ा दिए थे। जीजी और जीजाजी भी स्तब्ध रह गए। उस समय कैंसर का नाम मौत का पर्यायवाची शब्द माना जाता था। स्तन कैंसर कीमियोथैरेपी और ऑपरेशन से कामयाब हो रहा था। लेकिन गुप्तांगों का कैंसर तो मौत की गारण्टी थी।

अगले ही दिन मामाजी और बाई कल्याणी मामी को मुम्बई (तब बम्बई) ले गए। कैंसर हॉस्पिटल में फिर से जांच हुई। रिपोर्ट आने के बाद शक की कोई गुंजाइश बाकी नहीं रह गई थी। मामीजी को कैंसर था।

जीजाजी और जीजी के साथ मैं और ऊषा दीदी दिल्ली लौट आये थे। बाई दो महीने बाद मुम्बई से आई थी। तब रुकमणी बाई से लिपट कर रोने लगी थी। मुझे तब रुकमणी जीजी से काफी सहानुभूति हुई थी क्योंकि मैं उस बेटी का दर्द समझ सकता था, जिसकी मां मृत्यु शैय्या पर पहुंच चुकी थी।

इस दरम्यान प्रसन्नता की बात थी कि रुकमणी जीजी के बच्चा होने की उम्मीद हो गई थी। बाई ने अपनी भतीजी की पूरी-पूरी जिम्मेदारी ले ली थी। मामीजी का तब पूरा इलाज जारी रहा था। दो वर्ष गुजर गए और मामीजी सूख कर पिंजर मात्र रह गई थी। इसी अवधि में रुकमणी जीजी ने अजय और विजय दो पुत्रों को जन्म दिया था।

मामीजी के कारण हुनमान मामाजी भी ठेकेदारी पर ध्यान नहीं दे पा रहे थे। इस कारण तेजपाल मामाजी को ठेकेदारी का पूरा काम संभलवा दिया गया था। तेजपाल मामाजी यूं तो अंगूठा छाप थे लेकिन ठेकेदारी के गुण उनके खून में रचे बसे थे। काम को उन्होंने परवान चढ़ा दिया था। इसके अलावा ईमानदारी से मामाजी को आधा प्रॉफिट भी देते रहे थे।

रुकमणी जीजी की दोनों डिलेवरी प्राइवेट नर्सिंग होम में बाई के द्वारा ही करवाई गई थी। विजय बड़ा था और अजय छोटा। मैं दोनों को साइकिल पर खूब घुमाता था। इधर मैंने नोट

comicsmylife.blogspot.in

किया था कि रुकमणी जीजी का व्यवहार मेरे प्रति अब उतना कटु नहीं रह गया था। इस कारण मैंने भी रुकमणी जीजी के पूर्व व्यवहार को भूल जाना ही ठीक समझा था। फिर बाई का अपनी भतीजी के प्रति निस्वार्थ प्रेम स्वयं एक मिसाल था। मैं भी यही चाहता था कि बाई को मेरे आचरण से किसी भी प्रकार का दुख न हो।

इस बीच कभी-कभार महेन्द्र जीजाजी बुलढाणा का चक्कर लगा जाते थे। मामाजी ने उन्हें लाख समझाया था कि प्राइमरी स्कूल की क्लर्की छोड़कर वह बुलढाणा में ही आकर बस जाएं। लेकिन महेन्द्र जीजाजी को उस वक्त शराब का नया-नया शौक लग चुका था। फिर वह सरकारी नौकरी नहीं छोड़ना चाहते थे और स्वयं के परिवार से भी मोह था। नौकरी गुड़गांव में लगी थी, इस कारण वह गुड़गांव में ही रहने लगे थे।

❐❐

इधर हमारे परिवार की खुशहाली को दीमक लगना आरम्भ हो गई थी। पिताजी (बाऊजी) की समाजसेवा के कारण धन तेजी से खर्च होता जा रहा था। बाऊजी रिटायर हो चुके थे। धन के आगमन का स्रोत सूख चुका था और जमा पूंजी समाजसेवा और मदद मांगने वालों पर स्वाहा हो चुकी थी।

नौबत यहां तक आ गई कि घर की चीजें बिकनी आरम्भ हो गईं। बाऊजी ने कार बेची, घोड़ा बग्घी भी बेच दी। दुकानों की जमीनें भी बेच दी। हमारे फिक्स डिपॉजिट भी टूट चुके थे। समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर पैसा जा कहां रहा है। मैं कॉलेज के फर्स्ट इयर में आ चुका था। एक दिन बाई के हृदय की तड़प मेरे दिल में कौंध गई। मैंने तय किया कि बाऊजी से साफ बात करूंगा कि आखिर इतना रुपया गया कहां?

बाऊजी समाज की बैंक से आए और खाना खाकर उन्होंने मुझे आवाज दी।

मैं बाऊजी के कमरे में गया। बाऊजी ने शतरंज के मोहरे जमात पर बिछा रखे थे। मैं ताजा-ताजा शतरंज खेलना सीखा था और मुझे खेल में काफी आनन्द भी आता था। लेकिन बाऊजी को उस समय तक कभी हरा नहीं पाया था।

मैं खामोशी से दूसरे सिरे पर बैठ गया। कैवेंडर सिगरेट पीने

वाले बाऊजी अब बीड़ी पीने लगे थे। खादी तो उन्होंने आरम्भ से ही पहनी थी।

"बाऊजी, आज शतरंज नहीं, आज मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूं।" मेरा स्वर गंभीर था। तब बाऊजी ने आश्चर्य से मेरी ओर देखा।

"बोल क्या बात करना चाहता है?" बाऊजी ने बिना चौंके हुए कहा, "तू बगीया का एक पौधा है। तू माली से यह पूछना चाहता है कि बगीचा उजड़ क्यों रहा है!" बेहद दर्द था बाऊजी के स्वर में।

"आपको लाख रुपया मिला था बाऊजी। दुकानों के प्लाट और दादाजी का हवेली हैदर कुली का मकान और कीमती आभूषण वगैरह सब कहां चले गए? घर में रोटी का भी तोड़ा पड़ रहा है!" मैं जब भावुक होता था तो मारवाड़ी के बजाय हिन्दी में बात करने लग जाता था।

"तू जब पैदा हुआ था रोहन तो मारवाड़ी में बात करने वाला हर रिश्ता मौत का ग्रास बन चुका था या फिर उन रिश्तों का खून सफेद हो चुका था।" बाऊजी बीड़ी के कश लगाते हुए खामोश रहे। बीड़ी पीने के पश्चात बाऊजी ने मेरी ओर देखा। गोल फ्रेम के मोटे लैंस का चश्मा उतारा और अपने आंसू साफ किए।

"मेरे यह आंसू देख कर भी तेरे को सवाल करने की जरूरत है क्रांति?" बाऊजी ने फिर भारी स्वर में कहा।

"नहीं बाऊजी, कोई जरूरत नहीं लेकिन समझ नहीं पा रहा कि लक्ष्मी रूठी तो क्यों?" मैंने हमदर्दी के साथ पूछा।

"मेरी समाजसेवा की आदत में पैसा फूंका। कुछ लोगों को रुपया उधार दिया और अब वह शक्ल भी नहीं दिखाते, यह इस कारण है बेटा कि लक्ष्मी हमसे रूठ गई है। मैं एक बीड़ी तो जरूर पीता हूं। शराब, मांस, जुआ और पर स्त्रीगमन जैसे शौक नहीं रखे। भावुक इंसान के पास रुपया कभी नहीं ठहरता बेटा। यूं भी कह सकते हो कि मूर्ख और उसका धन शीघ्र ही बिछुड़ जाते हैं। मैं स्वयं को विद्वान समझता था लेकिन इस दुनिया में विद्वान वही है जो रुपयों को दांतों से पकड़ कर रखना जानता है।"

बाऊजी की उस स्पष्ट बातों ने मुझे काफी प्रभावित किया था। मैं बोला, "जाने दो बाऊजी, मैं नौकरी पर लगूंगा तभी तक

comicsmylife.blogspot.in

का संकट है। चलो, सफेद मोहरे आपके हैं बाऊजी, खेल खेलते हैं।''

बाऊजी फिर खेल में मशगूल हो गए थे। आज मैंने उन्हें हराया था। यह नहीं जानता था कि वह खुद हारे थे या मुझे जीतते देखना चाहते थे।

आज जानता हूं कि मेरे सवालों की पीड़ा ने ही हराया था उन्हें।

□□

बाई ने तीन कमरे किराए पर उठा दिए थे। उस किराए से रसोई का राशन आ जाता था। बाऊजी फिर सीकर गए। वहां एक विद्यापीठ में उन्होंने व्यवस्थापक की नौकरी कर ली और पांच सौ रुपया महीना वह भी भेजने लग गए थे। बाऊजी को बुढ़ापे में हड्डियां गलानी पड़ रही थीं।

अगली गर्मी की छुट्टियों में हम फिर से बुलढाणा गए थे। मामीजी की हालत काफी जर्जर थी। कैंसर अपनी भयानकता की गवाही दे रहा था।

''मोटी नानी जान लेकर ही मानेगी रे क्रांति!'' कभी-कभी वह मुझसे कहती थी, ''मैंने तुम्हारे साथ बदसलूकी की थी। नहीं जानती थी कि जिस धन, दौलत पर इतरा रही हूं, वह वास्तव में ननदोई जी ने ही हमें दान में दी है। देवी जैसी ननद को न पहचान पाई। वही सेवा कर रही है। मेरा दामाद तो तिजोरी साफ करके चम्पत हो गया। बाकी सब मेरी बीमारी में खर्च हो गया। गहने-गांठी मैंने बेटी रुकमणी को दे दिए थे। अब बुलाती हूं तो जवाब आता है कि मां, तेरी बीमारी मेरे को हो गई तो मेरे बच्चों को कौन संभालेगा।''

मैं तब मामी की वैसी ही सेवा करता, जैसे मैंने नानी की भी की थी। मुझे कैंसर का डर नहीं लगा था। अब मामी के मुख से आशीष बरसती और दुआएं ही निकलती थी। जो उनके पश्चाताप के हाहाकार से पैदा होती थीं।

मामाजी का ध्यान काम-धंधे से हट कर अपनी मृत्युगामी पत्नी पर केन्द्रित हो गया था। उस स्थिति का खूब फायदा उठाया तेजपाल मामाजी ने और खुद अलग से ठेकेदारी करना आरम्भ कर दिया और लाखों का ठेकेदारी वाला सामान पर भी कब्जा कर

लिया। उसके बाद भी हवेली में उसका आना-जाना था। डांट-डपट सुन कर भी बेचारगी के साथ मीठा ही बोलने का नायाब गुण था उनमें। न जाने किस राजनेता की आत्मा ने मामा के जिस्म में अपना घर बनाया था। एकदम चिकने घड़े थे और किसी भी ताने से उनके कान पर जूं तक भी नहीं रेंगती थी।

बुलढाणा में एक माह रह कर ही हमें रवाना होना पड़ा था। मामीजी को कीमियोथैरेपी के लिए फिर से मुम्बई और बीकानेर जाना था। बाई उनके साथ ही गई थीं और बाऊजी हमें लेने आ गए थे।

अभी पन्द्रह दिन ही गुजरे थे दिल्ली आए। एक दिन कोठी के सामने टैक्सी आकर रुकी। मामाजी, मामीजी और बाई बाहर आए थे।

बाद में पता चला कि डॉक्टरों ने जवाब दे दिया था। मामी की इच्छा थी कि अंतिम सांस वह दिल्ली में उस कोठी की छत के नीचे लें, जहां उन्हें दुल्हन बना कर लाया गया था। मां के आने की खबर सुन कर रुकमणी जीजी भी आ गई थी। अपनी मां में परिवर्तन देख कर उसने भी ढंग से व्यवहार करना आरम्भ कर दिया था। लेकिन मामीजी के पास जीजी बहुत कम टिकती थी। जबकि गू-मूत उठाने का सारा काम बाई ही करती थी। बाई को बहुत कहा था मामाजी ने कि एक नर्स को रख लेते हैं लेकिन बाई हमेशा इन्कार कर देती।

''आखिरी समय है हमारी भौजाई का। इनकी सेवा करने का काम मैं ही क्यों न करूं!'' बाई हमेशा सीधा जवाब देती और मामाजी निरुत्तर हो जाते।

फिर एक दिन महेन्द्र जीजाजी और मामाजी की आवाजें सुनी थीं।

''कुंवर साहब, शर्म आनी चाहिए तुम्हें। इस समय भी शराब पीकर आए हो!'' मामाजी का दबा हुआ क्रुद्ध स्वर था।

''शराब को देवता भी सोमरस के नाम से पीता है।'' अक्खड़ जवाब उभरा।

''मेरी अक्ल पर ही पत्थर पड़ गए थे जो तुम जैसे भैंगे व्यक्ति को मैंने दामाद के रूप में चुना था!''

''दामाद को भैंगा कह रहे हो!''

comicsmylife.blogspot.in

"तू बिन आंख का होता पर तुम्हारी नीयत साफ होती तो मैं गर्व करता। सारा गहना-जेवर बेच कर शराब पी गए। तिजोरी में से पचास हजार रुपया गायब कर लिया। कितनी बार मुझसे रुपया लेकर गए कि क्लर्की के अलावा एक और धंधा करना चाहता हूं। पर तुम्हारे धंधे तो शराब के रास्ते मुंह में जाकर पेशाब के रास्ते बाहर निकल जाते हैं महेन्द्र!"

"तुम मेरा अपमान कर रहे हो!"

"तुम मान लायक होते तो अवश्य सम्मान करता! खुद के मां-बाप से ही जब नहीं निबही तुम्हारी। एक कुत्ता भी वफादार होता है और तुम जंवाई होकर बेईमानी करते हो। बाई तो बात छिपा कर रखती है, पर मेरी भांजी ऊषा ने बताया है कि तुम बाई से भी बीस तोला सोना ले जा चुके हो।"

"तेरी तो बहन है, ले लिया तो क्या हुआ!" वही अभिमान भरा उत्तर था।

"ये तुम्हारी शराब बोल रही है कुंवर साहब, पर एक दिन तुम अवश्य पछताओगे!" मामाजी फिर बाहर आ गए थे।

मैं बाहर ही था। मामाजी सकपका गए। फिर वे मामीजी के कमरे में प्रविष्ट हो गए।

मामीजी की जिन्दगी के दिन एक माह से ज्यादा न थे। दर्द का दौरा जब पड़ता था तो डॉक्टर की हिदायत के अनुसार मामाजी ही मार्फीन के इंजेक्शन दिया करते थे। मामीजी के अंतिम दो दिन बहुत ही पीड़ादायक गुजरे थे। वह चीख-चीखकर मौत मांगती थी। मार्फीन के इंजेक्शन की ताकत को कैंसर का दर्द मात दे चुका था। दो दिन तक वह निरंतर कराहती रही थी।

"रे क्रांति की मोटी नानी! मुझे जल्दी से अपने साथ ले चल मेरी माता। मेरे से तो एक ही भूल हुई थी, जिसे भी तू जल्दी से माफ क्यों नहीं कर रही है। अरे बाऽरे...अरे बाप रे।" फिर दर्द से कराहने लग जाती थी।

मैं मन ही मन मोटी नानी से प्रार्थना करता, "नानी। मेरी खातिर मामी को छोड़ दो। क्यों दुख दे रही हो मरने के द्वार पर।"

और फिर चला-चली की बेला आ गई। शाम पांच बजे मामी की सांसें उखड़ने लगी थीं। मुझसे गंगाजल मंगा कर पिलाया

गया था।

एक चम्मच गंगाजल और तुलसी का पत्ता देकर मैंने गीता पढ़ी थी। गीता सुनते-सुनते ही मामी सिधार गई।

हमारे घर पर यह पहली मौत मैंने देखी थी। मौत—जो रुदन के आंसुओं से खिलवाड़ करने का हक रखती थी। हर मौत पर कुछ आंखें अवश्य रोती हैं!

❏❏

बारहवें के दिन मामाजी ने बाऊजी के विरोध के बाद भी मृत्युभोज करवाया था। बाऊजी सामाजिक रूढ़ियों के खिलाफ थे। लेकिन मामाजी शास्त्र-विधि से हर विधान पूर्ण करना चाहते थे। ब्राह्मण को गाय और अन्न तथा अन्य दान भी दिए गए। इस बार मामाजी के साथ मैं भी हरिद्वार गया था। हरिद्वार पहली बार देखा था मैंने।

मैं अगर न रहूं तो मुझे हरिद्वार अवश्य ले जाना बेटे। मौत की खबर तो तेरे पास आएगी ही। परिवार के सब सदस्यों के साथ मैं भी गंगा मां की गोद में परम शांति पाना चाहता हूं रोहन बेटे।

पन्द्रह दिन के बाद मामाजी, महेन्द्र जीजाजी और रुकमणी जीजी को बाई ने अपने कमरे में बुलवाया था।

"देखो कुंवर साहब, जगन्नाथजी मेरे काकाजी थे। अब काकाजी का गोद लिया बेटा हनुमान है। जगन्नाथजी के वंश का आगे चलना जरूरी है। तुम्हारी मामूली नौकरी है। रुकमा और बच्चे को साथ लेकर बुलढाणा ही क्यों नहीं चले जाते!" बाई ने गंभीरता से समझाया, "मेरे भाई को भी ढंग से दोनों टाइम की रोटी मिल जाएगी!"

"मैं तो सरकारी नौकरी छोड़ कर नहीं जाऊंगा।" महेन्द्र जीजाजी ने स्पष्ट इंकार कर दिया।

"तुम नहीं जाओगे तो रुकमा को ही भेज दो!"

"फिर मेरी रोटी का क्या होगा, मेरे को भी तो रोटी खानी है बुआजी!"

"तुम्हारे दो बेटे हैं, एक बेटे को तुम हनुमान को गोद दे सकते हो। इस प्रकार जगन्नाथ काकाजी का वंश भी चल जाएगा कुंवर साहब!"

"जगन्नाथजी का वंश देखूं या अपना परिवार देखूं। मैं तो

comicsmylife.blogspot.in

अपना कोई बेटा नहीं दे सकता हूं!''

''ठीक है, जैसी तुम्हारी मर्जी। अब तुम जा सकते हो, मैं बाई के साथ बात करूंगा।''मामाजी ने कठोर स्वर में कहा था।

रुकमणी जीजी और महेन्द्र जीजाजी बाहर निकल गए थे। मैं प्रस्तर स्तम्भ की ओट में हो गया। उनके जाने के बाद मैं वापिस द्वार के पास खड़ा हो गया। मेरे कान बातचीत पर लग गए थे।

''बाई मेरी उम्र अड़तीस साल की थी, जब बहू को कैंसर हुआ था। अब मैं चालीस साल का हूं। काकासा का बेटा हूं मैं। हमारा धर्म यही है न कि काकाजी का वंश चलता रहे!'' मामाजी ने बेहद भावुक स्वर में पूछा।

''हां, यदि अगर यह बात मेरे दिल में न होती हनुमान तो मैं तुझे अपने से दूर ही क्यों करती। काकाजी का वंश तो अवश्य ही चलना चाहिए। कुंवर साहब पता नहीं क्यूं नहीं अपने बेटे को गोद देना चाहते हैं!''बाई के स्वर में हैरानगी थी।

''बाई, मेरी आत्मा जानती है कि कुंवर साहब ऐसा क्यों नहीं चाहते हैं!''

''क...क्यों नहीं ऐसा चाहता है ?''बाई ने आश्चर्य से पूछा।

मैं भी काफी उत्सुक होकर सुनने लगा था। मुहावरे के हिसाब से मेरे कान कुत्ते के कानों की तरह खड़े हो गए थे।

''मेरी बेटी-दामाद चाहते हैं कि मैं मिल्कियत बेच कर उनके साथ रहने लगूं!''

''हे राम! काकाजी की स्टेट बेचना चाहते हैं!'' रूदन था बाई के स्वर में। स्वर की कंपकंपाहट से अनुमान लगा लिया था मैंने। सुन कर मेरा दिल भी धक्क से रह गया था।

''मेरा दामाद मुझे धमकी दे चुका है कि स्टेट तो बेचनी ही पड़ेगी। और रुकमणी कहती है कि जो बुलढाणा मेरी मां को मार कर खा गया, उस बुलढाणा में मैं नहीं रहूंगी!''

''हूं!''बाई ने दीर्घ हुंकार भरी, ''तूने कोई फैसला किया है हनुमान ?''

''मैं तुमसे भी जवाब जानना चाहता हूं!''मामाजी ने भावुक स्वर में कहा।

''मेरा जवाब!''

''हां।''

''कुछ बोल तो सही कि तू क्या चाहता है ?''

''मैं जानता हूं कि काका-काकीसा ने तुम्हारी जिद्द के कारण ही मुझे गोद लिया था, परंतु वे दोनों तो क्रांति को ही अपना वारिस बनाना चाहते थे। लेकिन तुमने मेरे विषय में सोचा...अब भी वक्त है मैं क्रांति के नाम जायदाद करना चाहता हूं!'' ठोस स्वर था मामाजी का।

मेरी धड़कने तेज हो गईं। मैं तेरी दादी और अपनी मां का जवाब सुनने को बेताब हो गया था।

''बाई तुम चुप क्यों हो ?''मामाजी ने टोका था।

''नहीं हनुमान, ऐसा नहीं हो सकता! लोग यही कहेंगे कि मैं बिन मां की भतीजी का हक खा गई। तू क्रांति को चाहे तो अपना बेटा बना ले, पर काकाजी की स्टेट पर तुम्हारी सगी बेटी का ही हक है हनुमान।''

''देख बाई, हमारा फर्ज है कि जगन्नाथ काकाजी के नाम से स्टेट दुनिया रहने तक कायम रहे। मैंने वादा किया था अपनी मोटी मां से कि धर्मबाप की तिजोरी की साख कम न होने दूंगा। पर क्या हुआ...तिजोरी साफ हो गई बाई! वो मेरा भैंगा दामाद सब साफ कर गया।'' फिर मामाजी की सिसकियां उभरने लगी थीं।

मेरा कलेजा भी उछलकर हलक में आ अटका था।

बुलढाणा मेरा प्रिय स्थान था। वहां के चप्पे-चप्पे को मैं याद करता था। वह स्थान अगर बिक गया, तो मेरे हिस्से की आधी दुनिया तो यूं ही समाप्त हो जाएगी। बुलढाणा मेरे लिए उस विभाजन रेखा की भांति थी, जिसमें मेरा व्यक्तित्व बंटा हुआ था।

मैं यही सोच रहा था कि बाई मुझे गोद देने को तैयार हो जाए!

''रो मत हनुमान!'' बाई का घायल स्वर था, ''मैं तुम्हारी भावना की कद्र करती हूं!''

''तो फिर क्रांति को मेरे साथ भेज दे। मैं काकाजी के नाम की पगड़ी क्रांति के माथे पर रखकर वापिस आ जाऊं! इस प्रकार स्टेट बिकने से बच जाएगी।''

''नहीं हनुमान दुनिया के सामने मैं क्रांति के बाऊजी का नाम खराब नहीं कर सकती हूं! लोग तो यही कहेंगे न कि फोरमैन साहब साले का हक खा गए।''

comicsmylife.blogspot.in

"तब एक ही रास्ता बचता है!"

"क्या?"

"मैं दूसरा ब्याह कर लूं! क्या पता बेटा हो ही जाए।" मामाजी ने बेहद धीमे से कहा था।

"पागल हुए हो हनुमान! इस उम्र में शादी करने की बात भी नहीं सोचनी चाहिए तुझे।" बाई ने कठोर स्वर में कहा था।

"मैं कोई विधवा या तलाकशुदा के साथ ब्याह करूंगा! ये तो पुण्य का काम है, अगर हमरी कोई औलाद हो गई तो काकासा का घराना भी चल सकता है बाई।"

"तुम्हारी बेटी का बेटा हो चुका है। अब तू ब्याह कर लेगा तो जमाना तुम्हारी बेटी की हंसी उड़ाएगा।"

"बेटी भी तो बेटा होने का फर्ज नहीं निभा रही है बाई! हमारी इतनी बड़ी मिल्कियत को क्यूं नहीं संभाल रहे हैं। दोनों पति-पत्नी, दामाद और बेटी तो खुद के घर के लिए रोते हैं। काकासा का ध्यान तो किसी को भी नहीं है। उनके विश्वास का क्या होगा। काकाजी को विश्वास था कि कटाजू वंश जरूर कायम रहेगा।"

"मैं रुकमणी से बात करने के बाद बताऊंगी!"

"बेटी से मैं बात कर चुका हूं बाई। जैसे तू जीजाजी की मर्जी से सोचती है, मेरी बेटी भी खुद के पति की मर्जी से सोचती है।"

"लेकिन तुम्हारी बेटी में स्वार्थ घुस गए हैं लेकिन मैं अपने पति के ईमान की बात सोच रही हूं हनुमान। मेरा पति अपनी भतीजी के हक लूटने के इल्जाम को सहन नहीं कर सकता है हनुमान।"

"बाई, तो क्या ये बात सहन कर लेंगे कि जगन्नाथ काकाजी का नामोनिशान भी बुलढाणा में न रहे!"

"काकाजी की पगड़ी तुम्हारे सिर पर बांधी है हनुमान। अब तो तुझे ही उनकी चिन्ता करनी है। मैं क्रांति को तुम्हें गोद नहीं दे सकती। क्योंकि एक बहन अपने माथे पर यह इल्जाम नहीं ले सकती कि उसने अपनी भतीजी का हक लूट लिया है।"

"मैंने काकाजी के नाम की पगड़ी बांधी थी। अब उस पगड़ी की इज्जत की खातिर मुझे अपने माथे पर सेहरा भी बांधना होगा!"

"हनुमान!" बाई की आवाज में दर्द था।

"अपनी बेटी को तो मैंने धोखा दिया, पर मैं पगड़ी को धोखा नहीं दे सकता हूं बाई। तुम्हारी भाभी की मौत के साल भर होते ही मैं शादी कर लूंगा बाई, ये हमारा वादा है! जो बेटी बाप की भावना को नहीं समझती, उस बेटी की भावना को मैं दयूं समझूं बाई। यदि बेटा हो गया तो ठीक है, वरना फिर तुम्हारी दूसरी भौजाई को भी तुझे ही संभालना पड़ेगा बहन।"

"तू गुस्से में है हनुमान!"

"नहीं, पहली बार सच्ची बात कही है बाई! मुझे मालूम है कि तुम्हारी हालत भी खराब है, तुम्हारा गहना भी हमारा दामाद खा गया है। ऊषा का रिश्ता भी करना है लेकिन अब तुम्हारे और बहनोई जी का लक्ष्मी से साथ छूट गया है। पर तू चिन्ता मत कर। ऊषा की शादी मेरी जिम्मेदारी है।"

"तुम्हारी भांजी है। कन्यादान करने से तुझे रोक नहीं सकती हूं हनुमान। पर फिर भी अपनी बेटी से पूछ लो!"

"मेरी बेटी! बेटी की जब शादी हो जाती है तो उसकी सारी सोच लेने की होती है, देने की नहीं।"

"मैं तो ब्याह के बाद भी तुम्हारा ख्याल रखती हूं हनुमान!"

"तू देवी है बाई! हर नारी देवी नहीं हो सकती है। मेरा ईरादा पक्का है बाई। बाई तू ऊषा की खातिर लड़का देख ले। ब्याह की चिन्ता मेरी है।"

फिर बाई की सिसकियां उभरी थीं।

मैं तड़प कर अंदर गया। बाई के सीने से जा लगा था। वह मेरी मां थी रोहन...तेरी वह बदनसीब दादी, जिसने पोते का मुंह नहीं देखा।

"क्रांति, तू सब कुछ सुन रहा था न?" मामाजी ने सपाट अंदाज में पूछा।

"हां!" मैंने स्वीकार किया।

"इस बात का जिक्र मेरी बेटी दामाद से मत करना।"

"नहीं करूंगा!"

"मेरा समझदार भांजा!"

"मामाजी बाई को चुप कराओ न!"

"जो भगवान का काम है, वो भगवान को ही करना चाहिए

comicsmylife.blogspot.in

क्रांति! मेरी बात आज ध्यान से सुन लो क्रांति। एक दिन तू जवान होगा—मर्द बन कर रहना है तुझे। मर्द बने बिना इस संसार में गुजारा नहीं हो सकता। डर नाम की कोई चीज अपने मन में नहीं रखना।''

''हां मामाजी!'' मैंने सिर हिलाया।

''अपनी मोटी नानी का भार संभाल लो क्रांति! जगन्नाथ जी का नाम बाकी रहना चाहिए।'' मामाजी के स्वर में दर्द था, ''खुद को कभी भी कमजोर मत बनाना मेरे भान्जे। इस दुनिया में कमजोर को एक कौए भी खा जाते हैं। शेर बन कर रहोगे तो राज करोगे। अपने हक पर अधिकार करो। जो अपने हक के लिए भी गिड़गिड़ाते हैं, उन्हें लोग कमजोर समझा करते हैं, क्रांति बेटे! क्या तू नहीं चाहता कि मोटी नानी की यादें उसकी स्टेट के रूप में सुरक्षित रहें?''

''जी! मैं भी यही चाहता हूं कि स्टेट कयामत तक कायम रहे।''

''मेरी बेटी को तू जीजी-जीजी कहता हुआ पागल हो जाता है न। अब वो रुकमणी न बाप की अपनी है, न भाई की, यह याद रखना!''

''मैंने तो उससे राखी बंधवा रखी है मामाजी! मेरी तो बहन है जीजी।''

''तुम्हारे अंदर भी अपने खानदान का संस्कार है क्रांति। बस मुझे एक वचन दे दे कि तुम्हारे और तुम्हारे आगे आने वाली तुम्हारी पुश्तों का संबंध बुलढाणा के साथ कभी न टूटे।'' स्वर भर्रा उठा था मामाजी का।

''मैं वचन देता हूं मामाजी!'' मैंने सिर हिलाया, ''बुलढाणा से हमारा रिश्ता रहेगा!''

''शाबाश क्रांति! अब मेरे दिल में कुछ ठण्डक पड़ी है।''

''अब क्या बातें हो रही हैं, सोना नहीं है क्या? रात के बारह बज रहे हैं!'' बाऊजी ने आकर चौंका दिया। फिर बातें वहीं खत्म हो गई थीं।

हम सभी उठ खड़े हुए थे। उस दिन मैं बहुत दिनों बाद बाई के पास सोया था। रात के दो बजे बाई उठ कर बाऊजी के कमरे में गई थी। मैं समझ गया कि बाई को बाऊजी से हनुमान मामाजी के

बारे में बात करनी है।

ओह! मैं भूल जाता हूं रोहन कि यह डायरी एक न एक दिन तुझे पढ़नी है और मारवाड़ी तू ज्यादा जानता नहीं है बेटे, इस कारण अब आगे की तमाम बातें हिन्दी में ही लिखने वाला हूं।

□□

छः माह गुजरे थे कि ऊषा का रिश्ता जोधपुर में सत्यदेव जी के साथ तय हो गया। वह विवाह जल्दी करना चाहते थे। एक माह में शादी करनी थी। बाई तब मेरे साथ बुलढाणा गई।

अब मामाजी खुद ही खाना बनाते थे। वह मामाजी, जिन्होंने पानी का गिलास खुद भर कर नहीं पिया था। वह शख्स हर काम करने पर मजबूर था। राधाम्मा बर्तन मांजने और झाड़ू-पोंछा करने अवश्य आती थी। लेकिन चौके में उसके पांव कभी नहीं पड़ पाए थे।

चाय हमें मामाजी ने ही स्टोव पर बना कर पिलाई थी। चूल्हे के बजाय स्टोव आ गया था। मामाजी ने बस यही एक तरक्की की थी। बाकी हवेली में अभी भी लाइट नहीं थी। बाई की आंखों में भाई के प्रति दुख के बादल स्पष्ट देखे जा सकते थे।

''हां, अब बोल बाई। क्या बात है?'' मामाजी ने चाय के बाद पूछा, ''बिना चिट्ठी-पत्री दिये क्रांति के साथ आई है, जरूर कोई खास बात है। वरना इतनी गंभीरता तो तुम्हारे चेहरे पर नहीं होती है।''

''ऊषा की शादी एक महीने बाद होने वाली है। तुमने वचन दिया था कि भानजी की शादी में कन्यादान करने की इच्छा रखते हो हनुमान!'' बाई ने उस वचन को याद दिलाया था।

''बहुत बढ़िया खबर है बहन! रिश्ता कहां तय किया है?''

''राजस्थान में।'' बाई ने बताया।

''जोधपुर में।'' मैंने बताया।

''बहुत बढ़िया। कितने सालों के बाद सही खुशखबरी मिली है बहन, नहीं?''

''हां रे हनुमान!''

''ऊषा की शादी हो जाने के बाद मैं भी आजाद हो जाने वाला हूं! अभी तक खामोश था कि कोई यह न कह दे कि भानजी के मामा ने इक्तालीस साल की उमर में दूसरी शादी की है।''

comicsmylife.blogspot.in

बाई ने चौंक कर मामाजी की ओर देखा। उनकी आंखों में पक्का इरादा था।

''मैं रुपयों के लिए आई हूं हनुमान! ऊषा के शादी के लिए कोई खास नहीं जोड़ रखा हमने।'' बाई ने हमेशा दिया था भाई को। इस कारण मांगते समय संकोच का अनुभव हो रहा था।

''जो दुनिया पर लुटा देते हैं, उनके पास फिर कुछ नहीं बचता बहन! जो लोग मंदिर बनाते हैं, उनके घरों को मैंने बिकते हुए ही देखा है।'' मामाजी ने दार्शनिक अंदाज में कहा, ''मेरी ही बीवी ने मेरे साथ धोखा करके तमाम गहने बेटी-दामाद को दे दिए थे लेकिन अंतिम समय में सेवा करने को बेटी नहीं आई तो दिल फट गया था उसका भी। मां को नफरत हो गई थी उस बेटी से!''

''हां, मुझे भी बताया था कल्याणी ने।'' बाई ने स्वीकारा।

''कितने रुपये चाहिए बाई?'' हनुमान मामाजी ने सोचपूर्ण अंदाज में पूछा।

''पचास हजार रुपये!''

''कब?''

''जितनी जल्दी हो सके। शादी की तैयारियां भी करनी हैं और तैयारियों की शुरुआत के लिए रुपया चाहिए होता है, वह है नहीं!''

''रुपया आज ही मिल जाएगा।''

''कहां से, तेरे पास तो है नहीं भाई!'' बाई का चेहरा गंभीर था।

''काकाजी ने गजानन सेठ से कर्ज लिया था बाई, गजानन सेठ आज भी जिन्दा हैं। मैं उनसे उधार लूंगा बाई। इतिहास स्वयं को दोहराना चाहता है।''

''ब्याज पर रुपया लोगे?''

''रिश्तों की खातिर कुछ भी किया जा सकता है!'' मामाजी फिर उठ गए, ''आज की रोटी की फिक्र नहीं रहेगी बाई, बहन के हाथ का पका-पकाया मिल जाएगा!''

''काश! भाभी आज जिन्दा होती!'' बाई बोली।

''बाई तुम्हारे सोचने से ऐसा होता, तो आज नानाजी और नानीजी भी जीवित होते!'' मैं बोल उठा।

''लेकिन है नहीं, न जिन्दा हो सकते हैं लेकिन दूसरी भाभी जरूर आ सकती है।'' मामाजी ने फिर मेरा हाथ पकड़ा, ''चल क्रांति, गजानन सेठ से मिल कर आते हैं!''

मैं फौरन खड़ा हो गया। लेकिन रुपया उधार लेने जा रहा था, इस बात का संकोच भी था।

□□

मराठा गजानन सेठ आज भी ज्यों का त्यों नजर आया था। गुजरे हुए सालों ने उसकी शक्ल में कोई विशेष छेड़छाड़ नहीं की थी।

''हनुमान, साथ में कौन है यह किशोर?''

''क्रांतिदूत...मेरा भांजा!'' मामाजी ने गर्व से बताया, ''मेरी बहन का बेटा।''

''अरे! इतना बड़ा हो गया बेटा।'' गजानन सेठ ने स्नेह से मेरे सिर पर हाथ रखा, ''क्या करते हो?''

''पढ़ रहा है और हां—साथ में लिखता भी है!'' मामाजी ने गर्व से बताया।

''अब अगर पढ़ता है तो लिखता तो होगा ही। पढ़ाई-लिखाई साथ ही होती है।''

''आप भी गजानन सेठ—बस! हर बात का सीधा-सादा मतलब निकालते हैं।''

''क्यों, मैं गलत बोला कुछ?''

''पढ़ने वाला लिखना नहीं। लिखने वाला लिखना, वह लिखना जो प्रेस में छपता है। लेखक है मेरा भान्जा—नाम करेगा!'' मामाजी ने बेहद गर्व के साथ कहा था।

क्या खाक नाम कमाया मैंने? अपने घर से मुंह छुपा कर भागना पड़ा है और वह भी पांच करोड़ रुपयों की शर्त के साथ रोहन! और...खैर विषय पर आता हूं।

गजानन सेठ ने मेरी पीठ थपथपाई, ''मेरा आशीर्वाद है तेरे साथ।''

''धन्यवाद नानाजी!''

''नानाजी! तूने मुझे नानाजी कहा क्रांति।'' स्वर भर्रा उठा गजानन सेठ का, ''तुमने तो मेरे यार जगन्नाथ की याद ताजा कर दी रे! जगन्नाथ चाहता था कि तेरे को गोद ले, पर तेरी मां का भाई

comicsmylife.blogspot.in

के प्रति प्रेम आड़े आ गया था।'' गजानन सेठ ने फिर आंसू पोंछे थे।

''गजानन सेठ, मैं एक काम से आया हूं!'' मामाजी ने फिर धीमे से कहा था।

''मेरे नाती को मिलाया है हनुमान, इससे बड़ा भी कोई काम हो सकता है, हुंह। अभी तो नाती से बातें करनी हैं—तेरी बात का नम्बर शाम तक तो क्या एक सप्ताह तक भी नहीं आएगा।'' गजानन सेठ ने मुझे कस कर हृदय से लगा लिया था।

''बात नाती से ज्यादा कीमती है सेठ साहब!''

''मजाक कर रहा है मेरे साथ?'' गजानन सेठ ने चांदी की मूठ वाली छड़ी से मारने का नाटक किया, ''अपने बाप की उम्र वाले से मजाक करता है हनुमान। नाती से ज्यादा कीमती चीज क्या हो सकती है। यह तू मेरे को इस बुढ़ापे में बताने को आया है!''

''क्या यह मजाक है कि मैं अपनी भांजी और आपकी नाती की शादी का न्यौता देने आया हूं?'' मामाजी का स्वर भी भर्रा उठा था।

''ले पिट!'' गजानन सेठ ने छड़ी से पीठ को छू भर दिया, ''पहले यह बात बोलनी थी न तेरे को। नाती की शादी का न्यौता। भई वाह! मैं भी दिल्ली चलूंगा नाती की शादी में।'' फिर वह ज़ोर से चिल्ला उठे, ''अरे कम्बख्तों! कहां मर गए सारे के सारे। मेरी नाती की शादी तय होने की खबर है। नालायकों मुंह मीठा कराने के लिए सब प्रकार की मिठाई ले आओ।''

नौकर फिर भागते-दौड़ते आए थे। दस मिनट पश्चात पचासों प्रकार की मिठाइयां दीवान पर सजा दी गई थीं।

मैं हैरानी से उस मुंहबोले नाना को देखता रह गया। यह तो याद था कि मैं जब भी बुलढाणा आता था, तो मेरे से दोनों ही टाकिजों में पैसा नहीं लिया जाता था। साथ में ठण्डा अलग से भिजवाया जाता था।

उस अनोखे नाना ने हर मिठाई का छोटा-छोटा पीस मुझे खिलाया था, अपने हाथों से। मेरी आंखें भर आईं और मामाजी की भी।

''रोते क्यों हो पगले!'' वह हैरत से चिल्लाया।

''सोच रहा हूं कि इस दुनिया में आप जैसे इंसान अभी भी मौजूद हैं। शायद इसी कारण विधाता ने बच्चे पैदा करने बंद नहीं किए हैं। शायद इसी कारण डालियों पर फल-फूल खिलते हैं। शायद इसी कारण आज भी खेतों में सोना उगता है!''

''वाह! बहुत समझदार है मेरा नाती। वाकई तू एक बहुत बड़ा लेखक है क्रांति। नाम...खूब नाम करना। ताकि मैं सीना ठोक कर कह सकूं कि मेरे क्रांति ने यह लिखा है—वह लिखा है। तेरे लिखे की पिक्चरें भी बनेंगी और वह भी हिट होगी। मैं उस दिन के लिए जीवित रहना चाहता हूं क्रांति, जिस दिन तेरी लिखी स्क्रिप्ट की फिल्म मेरे टाकीज पर रिलीज होगी।''

रोहन! वह दिन कभी नहीं आया और न ही आ सकता है, क्योंकि मैं जो लिखता हूं बेटे। उस पर फिल्म कौन बनाएगा।

''नानाजी कमाल हैं आप भी! बस, जवाब नहीं आपका!'' मैं शर्मिन्दगी के साथ बोला।

''ऊंचे...बहुत ऊंचे ख्वाब देखा कर क्रांति। छोटे ख्वाबों से तकदीरें नहीं बदली जाती हैं। हां हनुमान, तू क्यों रोने लगा!''

''मैं पचास हजार रुपया कर्ज लेने आया हूं! बाई क्रांति के साथ आई है। मैं अपनी स्टेट गिरवी रखने के लिए कागजात साथ लाया हूं। मेरी भांजी की शादी के लिए वह रुपया चाहिए।'' मामाजी ने छलछलाती आंखों को पोंछ कर जानकारी दी, जिसकी प्रतिक्रिया खतरनाक हुई थी।

तुम भी हैरान रह जाओगे रोहन!

यह सुनना था कि गजानन सेठ की आंखों से अंगारे बरसने लगे थे। जबड़ा सख्ती से कस गया। उन्होंने आव देखा न ताव मामाजी की पीठ पर छड़ियों से प्रहार करने आरंभ कर दिए। मामाजी खामोशी से उन वारों को सहन कर रहे थे। मैंने ही फिर गजानन सेठ का हाथ रोका था।

''यह...यह क्या कर रहे हैं आप?'' मैं चीख उठा।

''वही, जो मुझे करना चाहिए! पूछ तेरे मामा से कि इसकी हिम्मत कैसे हुई यह कहने की कि मेरी नातिन की शादी यह कर्जे से करेगा। मेरे...मेरे यार की स्टेट को गिरवी रखेगा नालायक! घाव हरा कर दिया इसने, वह घाव...जब मैंने यार से धोखा किया था। कृष्णदूत साहब ने तब मेरे को सही शिक्षा दी थी। तब मेरी

comicsmylife.blogspot.in

आंखें खुली थी कि यार के घर आबाद किए जाते हैं, नीलाम और बर्बाद नहीं किए जाते। इसने...इसने फिर से अपनी ही नजरों में गिरा दिया मुझे। अरे! गजानन सेठ अगर एक बार गिर क्या गया, उसे यह समझ लिया कि फिर कभी उठ ही नहीं सकेगा। मेरी ही नाती की शादी के लिए तू मेरे पास कागजात लाया है हनुमान। वह भी मेरे दोस्त की स्टेट के कागजात। अरे! यूं ही कर्जा मांगना था तो खुद की कोई चीज लाता। क्या...क्या है तेरे पास खुद का? अरे! तू तो खुद को भी गिरवी नहीं रख सकता हनुमान!''

''मेरी खता हो गई सेठ सा...!''

''चुप कर!'' गजानन सेठ ने फटकारा, ''तेरा भांजा मेरे को नाना बोला...बोला ना...बरोबर बोला ना?''

''हां!''

''फिर मेरे को काका बोलने में तेरी जुबान को क्या चक्कर आ रहे थे?''

''ग...गलती हो गई काकासा!'' मामाजी ने फिर गजानन के पांव पकड़ लिए थे और फूट-फूट कर रोने लगे थे। सिर पर हाथ रखने वाला शख्स मुश्किल से मिलता है। मैंने तो महसूस किया था रोहन। मेरे जाने के बाद तू भी महसूस कर रहा होगा।

❒❒

ऊषा की शादी धूमधाम से हुई थी। गजानन नानाजी और मामाजी दोनों ही शादी में आए थे। गजानन नानाजी ने बाई और बाऊजी के हाथों ही शादी करवाई थी। लोग चकित थे कि खाली घड़े से झरना कैसे फूटा!

जाहिर था कि तब हमारे परिवार की माली हालत को देखते हुए वह शादी शानदार ढंग से हुई थी। गजानन नानाजी ने अपनी शान के अनुरूप ही शादी की थी। अरे हां! शादी के चार रोज पहले की खास बात भूल रहा था।

बाऊजी कार्ड देने के लिए तब रुकमणी जीजी की ससुराल गए थे। मैं भी साथ था। बाऊजी ने महेंद्र जीजाजी के पिता प्यारेलाल जी को कार्ड दिया था। बीस साल बाद हमारे घर में कोई शादी होनी थी। इस कारण उम्मीद थी कि सभी को खुशी होगी! लेकिन मैं भूल गया था कि सपेरे का बाप भी बीन ही बजाता है।

''अपने साले से भीख मांगकर शादी कर रहा है फोरमैन।'' प्यारेलाल अभद्र भाषा में बोला।

सुन कर मेरा खून खौल उठा। इच्छा हुई थी कि हरामजादे का थोबड़ा ही तोड़ दूं। लेकिन बाऊजी के कारण खून का घूंट पीकर रह गया।

उसकी बीवी चांद भी पीछे नहीं रही थी, ''अपनी भतीजी के हक पर डाका मारा है इसने। यूं बनते हैं समाज-सेवक! घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने!''

बाऊजी की आंखों में रोष उभरा। लेकिन बेटी के बाप को बहुत कुछ सहना पड़ता है।

''जो कुछ हुआ, उसे भूल जाओ। बाप, बेटी और दामाद में अगर नहीं बनती है तो मैं क्या कर सकता हूं!''

''क्यों...क्यों नहीं बन सकती?'' चांद बाई ने हाथ नचाते हुए कहा, ''उसे अपनी स्टेट बेचने के लिए नहीं कह सकता है फोरमैन! अपनी बेटी ब्याहने के लिए भी तो तूने स्टेट को बिकवाया या गिरवी रखवाया होगा।''

''मैं यहां शादी का कार्ड देने आया हूं!''

तभी अंदर से महेंद्र जीजा निकल कर आया, ''बेटी की शादी रचा रहा है न रचा। लेकिन उसके पहले तेरे साले से तमाम स्टेट मेरे नाम करवा दे। वरना तेरी बेटी की शादी में ऐसा तमाशा करूंगा कि तेरी समाज सेवा से कमाई इज्जत पर कोई थूकने वाला भी नहीं होगा। बेवकूफ बना रखा है मेरे श्वसुर को!''

''जीजाजी...!'' मैं चिल्लाया।

''तू...तू भी संपोला निकला रे क्रांति! राखी बंधाने के लिए दिल्ली से गुड़गांव तक साइकिल पर आया था। अब उसी बहन को भूल गया। किताबों के पैसे मांग-मांग कर तो हमसे ही पढ़ा है। सांप की औलाद तो आखिर संपोली ही रहेगी। कद-बुत क्या निकल आया है, खुद को दादा समझ रहा है बे!''

बाऊजी ने मेरा कंधा दबाया। मैं खामोश रह गया।

''देख फोरमैन, तू चाहता है कि शादी में बावेला ना मचे तो तेरे साले से स्टेट मेरे नाम करने का प्रोनोट लिखवा लाना। वरना तेरी बेटी की शादी नहीं, जग-हंसाई होगी—जग हंसाई!'' फिर जीजाजी मेरी ओर घूमा, ''तू क्या आंखें फाड़-फाड़कर देख

comicsmylife.blogspot.in

रहा है। जो तेरी बहन की शादी खराब न कर दी तो मेरे मुंह पर थूक देना।''

''हराम की औलाद! तेरा मुंह तो इस लायक भी नहीं कि कोई शरीफ इंसान अपने थूक को तेरे मुख पर फेंककर थूक की बेइज्जती करे।'' जवानी का खून आखिर जोश मार ही गया। मैं भूल गया कि बाऊजी मेरे साथ हैं।

वह मुझे मारने के लिए लपका। संयोग से पास ही लोहे की छड़ रखी थी। मैंने छड़ उठा ली।

''मां का दूध पीया है तो आगे बढ़ साले। तेरी खोपड़ी फोड़ कर फांसी चढ़ जाऊंगा! बढ़ साले! वरना समझूंगा कि किसी सूअड़ी का दूध पीया है तुमने!''

मेरे सिर पर क्रोध सवार था। मैंने एक बार छड़ घुमा भी दी, जो महेंद्र जीजा के हाथ पर पड़ी। प्रहार मजबूत था। चीख उठा वह सपेरा।

मेरी मुद्रा देख कर सब सहम कर पीछे हट गए।

उसी दिन फिर शाम को मैं अशोक शर्मा नाम के अपने मित्र के पास गया। उसके पिता ओमदत्त शर्मा दिल्ली में डी.सी.पी. थे। वह बाऊजी के सामाजिक सेवा कार्यों से बहुत प्रभावित थे।

अशोक ने फौरन ही अपने पिताजी से बात करवाई थी।

''ऊषा की शादी में गड़बड़ मचाएगा! मैं भी देखूं कि बाऊजी कृष्णदूत साहब के घर को धमकी देने वाला वो गुण्डा है कौन? चल, जीप में बैठ बेटा—मैं दो मिनट में आता हूं।''

डी.सी.पी. शर्मा साहब के साथ मैं आर्य नगर स्थित प्यारेलाल शर्मा के मकान पर पहुंचा।

''बाहर निकलो सालों! तुम लोगों ने क्या समझ रखा है। शरीफ आदमी का कोई नहीं?'' तब कांपता-खांपता महेंद्र जीजा बाहर आया था।

''यही है, इसने ही धमकी दी थी अंकल!'' मैंने धीमे से कहा।

''अबे ओए काले चश्मे की औलाद। मेरी बात को ध्यान से सुन ले। कृष्ण बाऊजी की बेटी के ब्याह वाले रोज तू आदर्श नगर में दिख भी गया तो इतने डंडे पड़ेंगे कि सात जन्म याद रखेगा। कान का बहरा न हो तो जान ले। ओमदत्त शर्मा कहते हैं मेरे को।

डी.सी.पी. ओमदत्त शर्मा। बोल, साले क्या बोलता है?''

''म...मेरी तौबा...मेरे बाप की तौबा साहब! मैं तो यूं ही धमकी दे रहा था।''

''बिरादरी का समझ कर छोड़ रहा हूं तनै।'' वह मूल रूप से हरियाणा के थे। इस कारण हरियाणा का टच था उनके बोलने में, ''प्राइमरी स्कूल की तेरी नौकरी भी जाती रहेगी, समझा क्या?''

''गलती हो गई सरकार!''

''तो क्या याद रखना है?''

''यही कि दिल्ली में आदर्श नगर नाम की कोई जगह नहीं है!''

''अब सुर में बोल्या है तू। चल, अंदर भाग।''

महेन्द्र जीजा भाग कर अंदर घुस गया।

फिर वह मेरे साथ घर आए और बाऊजी से कहा कि वह निश्चिंत रहें। शादी के दिन थाने के आधे सिपाही कोठी के आस-पास ही रहेंगे।

शर्माजी ने अपना वायदा निभाया भी था।

किसी भी गुण्डे की हिम्मत नहीं हुई कि वह कोठी के आस-पास फटक भी जाए। जबकि आदर्श नगर में ही महेन्द्र जीजा के मौसेरे भाई रहते थे और सारे प्लान वहीं पर बनाए जाते थे।

यह बात जीजा के मौसेरे भाइयों के हैडमास्टर चाचाजी ने बताई थी, जिन्हें मैं भी चाचाजी कहता रहा हूं। तू तो जानता है उन्हें रोहन!

❒❒

मेरे रिश्ते के नाना बन चुके गजानन नानाजी और हनुमान मामाजी शादी के एक सप्ताह पश्चात बुलढाणा के लिए रवाना हो गए थे। ऊषा की शादी के बाद बाई-बाऊजी काफी रिलेक्स महसूस कर रहे थे। मैं भी तब तक एक पॉकेट बुक्स से जुड़ चुका था और मेरे उपन्यास प्रकाशित होने लगे थे। इस कारण घर की गाड़ी भी पटरी पर आ गई थी।

एक महीने के पश्चात मामाजी बिना किसी सूचना के सुबह-सुबह ऑटो से कोठी के बाहर उतरे। उनके साथ घूंघट किए हुए एक युवती भी थी।

comicsmylife.blogspot.in

मैंने लपक कर सामान उठाया और फिर अंदर खबर कर दी कि मामाजी आए हैं। जब ड्राइंग रूम में सब बैठ गए थे, तब हम घूंघट वाली युवती के बारे में ही सोच रहे थे।

''हनुमान, यह साथ में कौन है ?'' बाई ने धीमे से पूछा था।

''यह भी हालात की मारी है। सौतेली मां इसे पति के मरने के बाद कोठे पर बेच चुकी थी। मैंने एक लाख रुपया देकर इसे रिहा करवाया और अब इसकी मांग में मेरे नाम का सिंदूर है बाई। मैं नहीं जानता कि मैंने गलत किया या सही किया। मैं चाहता हूं कि जगन्नाथ काकाजी का वंश चलता रहे।'' जुनून था मामाजी की आंखों में। वैसा ही जुनून जैसा घायल शेर की आंखों में उतर आता है।

हमारी हालत तो ऐसी हो गई कि काटो तो खून नहीं। बाई और बाऊजी कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। एक तरफ मामाजी का नैतिक पक्ष ठीक लग रहा था तो दूसरी ओर मामाजी का चालीस की उम्र में शादी करने की बात हजम भी नहीं हो रही थी।

''मैंने गलत किया बाई ?'' मामाजी ने तब भर्राए हुए कण्ठ स्वर में पूछा।

''नहीं, ठीक किया है तुमने हनुमान !'' बाई ने फिर बुलन्दगी के साथ कहा, ''एक नारी को वेश्या बनने से रोक कर तुमने इसे पत्नी का दर्जा दिया है। यह काम कतई भी गलत नहीं हो सकता है। लेकिन यह किस जाति की है ?''

''यह कलाल जाति की है, जो शराब बनाने का काम करते हैं !'' मामाजी ने बिना किसी झिझक के कहा, ''लेकिन अब इसकी जाति ब्राह्मण है, क्योंकि यह मेरी पत्नी बन चुकी है !'' फिर मामाजी ने बाऊजी की ओर देखा, ''जीजाजी, क्या गलती की है ?''

''नहीं, किसी की आबरू को कोठे से बचाना और फिर उससे विवाह करना एक साहस का काम है लेकिन मुझे यह तो पता लगे कि शादी के लिए लड़की ने भी रजामंदी दी थी या तूने खरीदा है, इस कारण शादी के लिए विवश कर दिया था।'' सधा हुआ स्वर था बाऊजी का, ''वह पुण्य जो स्वार्थ के लिए किया जाता है, वह अपनी मर्यादा खोकर पाप बन जाता है। बहेलियों से

पक्षी को खरीद कर उन्हें अपनी गुलामी में डाल देना बहादुरी नहीं हनुमान। बहादुरी इसमें है कि उस पक्षी को ही फैसला करने के लिए आजाद छोड़ दिया जाए।''

''मैं जानता था कि जीजाजी आप यही कहेंगे। आप संगमा से स्वयं पूछ लीजिए !''

''तो संगमा नाम है इसका—अच्छा संगमा बेटी, क्या तुमने अपनी मर्जी से शादी की है ?''

''नहीं जीजाजी, अभी हमारी शादी नहीं हुई है। मैं तो शादी के लिए रजामंद थी लेकिन इन्होंने साफ कहा कि मेरी बहन की इजाजत के बिना मैं विवाह नहीं करूंगा और करूंगा तो तुम दुल्हन बन कर उस कोठी में जाओगी, जहां मेरी स्वर्गवासी दीदी यानी की इनकी पहली धर्मपत्नी आई थी।'' घूंघट में से ही जवाब दिया था संगमा ने।

''यह क्रांति है, तुम्हारा होने वाला भान्जा।'' मामाजी ने मेरी ओर इशारा किया था, ''बहुत शरारती और भावुक भी है।''

''मामीजी का मुंह सबसे पहले मैं देखूंगा।'' मैंने हर्ष के साथ कहा।

''अभी से मामी मत बना। जीजी-जीजाजी की स्वीकृति के बिना यह रिश्ता नहीं होगा।'' मामाजी ने बेहद गंभीर स्वर में कहा था, ''जीजी, इसकी उम्र महज बीस वर्ष की है और यह मेरी बेटी से भी छोटी उम्र की है। अब सोच-विचार कर आप जो फैसला करें।''

''मैं उम्र का महत्व नहीं मानती। इंसान बेहतर होना चाहिए। सच्चा होना चाहिए, फिर मौत का क्या भरोसा है। वह मेरे को आपसे भी पहले आ सकती है। फिर शरीर का मिलन ही तो शादी नहीं होता। वह तो आत्माओं का मिलन होता है।'' संगमा का मृदुल स्वर था।

''इस शादी को तो अब विधाता भी नहीं रोक सकता। तुम आज से दुल्हन हो और अभी से। मैं आज ही आर्य समाज में तुम्हारी शादी करवाऊंगा !''

फिर बाऊजी ने अपने वचन को पूरा भी किया था।

आर्य समाज में विधिवत शादी हो गई थी। तब भी मुझे यह सोच कर बुरा लग रहा था कि रुकमणी जीजी ने सहयोग किया

comicsmylife.blogspot.in

होता तो एक पिता को इतना बड़ा कदम नहीं उठाना पड़ता।

लेकिन मामाजी का कहना भी सही था, ''यदि बात खुद मेरे हनुमान प्रसाद शर्मा के खानदान की होती तो मुझे परवाह नहीं थी, लेकिन जिस काटजू घराने ने उन्हें गोद लिया था। वह उस घराने को लावारिस नहीं कर सकते थे। विशेषकर ऐसी स्थिति में जबकि जगन्नाथ नानाजी के भाइयों द्वारा कहा जा रहा था कि जगन्नाथ काटजू की वंशबेल अब आगे नहीं चलने वाली।''

मामाजी एक माह रुके थे। उस एक माह में मैंने संगमा मामी का चेहरा कई बार देखा था। वह सुंदर थी और वाकई बीस वर्ष की ही रही होगी। लेकिन मामाजी के प्रति उनका प्रेम लाजवाब था।

मैं इतना बड़ा तो था ही कि यह समझ सकूं कि जो व्यक्ति पैंतीस वर्ष की उम्र से ही स्त्री संसर्ग से वंचित रहा हो। उस शख्स के लिए यौन आकर्षण पूरी तरह से मर नहीं गया था। वैसे भी प्राप्त के बजाय मन अप्राप्ति की ओर ज्यादा भागता है। ठीक वैसे ही जैसे कैरम में आसान गोटी से पहले कठिन गोटी पर स्ट्राइक किया जाता है।

इस बीच एक घटना हुई थी, जो मामाजी से छिपाकर रखी गई थी। बुलढाणा से गजानन नानाजी की मृत्यु की खबर आई थी। दिल का पहला दौरा पड़ा था और वही उनके लिए जानलेवा भी साबित हुआ था। तब बाऊजी बुलढाणा के लिए रवाना हो गए थे।

इस बीच रुकमणी और उसके ससुराल वालों को यह जानकारी हो गई थी कि रुकमणी के पिता ने दूसरी शादी बीस वर्षीय लड़की से कर ली है तो उनके आक्रोश का कोई ठिकाना नहीं रह गया था। उनकी ओर से हम सजग थे। लेकिन डी.सी.पी. ओमदत्त जी शर्मा के कारण कुछ कर पाने की उनकी हिम्मत नहीं थी।

लेकिन बहुत गलत सोच रहा था मैं। क्योंकि वह एक खतरनाक प्लान बना चुके थे और उस प्लान में कई ऐसे लोग शरीक हो चुके थे, जिन्हें गजानन नानाजी की मौत के बाद खतरा नहीं रह गया था। वह सभी बेखौफ और बेख्तर हो चुके थे लेकिन भावी अनहोनी की सूंघ हमें नहीं मिल पाई थी। और जब

मिली, तब तक काफी देर हो चुकी थी।

नागिन ने अपना कमाल दिखा दिया था।

❑❑

मामाजी एक माह दिल्ली में गुजारने के पश्चात दो माह के लिए काश्मीर गए थे और फिर वापसी में दो दिन रहने के पश्चात बुलढाणा के लिए हो गए थे। कम उम्र मामी ने बताया था कि उसके पांव भारी हैं। यानी संगमा मामी के पेट में काटजू परिवार का वारिस आ चुका था। मैंने ईश्वर से प्रार्थना की थी कि वह बेटा ही हो। उस समय तक ईश्वर से मैं कुछ नहीं मांगता था। ईश्वर से क्यों मांगा जाए? वह तो जानता है कि किसको क्या चाहिए?

पंद्रह दिन शांति के साथ गुजर गए। लेकिन इन पंद्रह दिनों में मैंने एक अनोखी बात यह होते देखी थी कि आदर्श नगर में रहने वाले महेन्द्र जीजा के मौसेरे भाई से जब भी कभी मेरा सामना होता था, वे गर्व और रहस्यभरी मुस्कान के साथ मुझे देखते थे। फिर मामाजी की कुशलता का कोई समाचार नहीं आया था।

''बाई, मैं बुलढाणा जाकर आता हूं। मामाजी का एक भी खत नहीं आया है। वह ऐसे शख्स तो नहीं हैं कि नई पत्नी के आकर्षण में सभी कुछ भूल जाएं!'' मैंने गंभीर स्वर में कहा।

मैं अकेला यात्रा कर सकता था। इस दरम्यान बाई को यूटरस ऑपरेट करवाना पड़ा था। वह बुलढाणा जाने की स्थिति में नहीं थीं।

बाई और बाऊजी ने स्वीकृति दे दी थी।

मैं अकेला ही रवाना हुआ और दो दिन पश्चात सुबह ग्यारह बजे बुलढाणा पहुंच गया। हवेली को देखते ही मेरा माथा ठनका था। हवेली का कुछ हद तक कायाकल्प हो चुका था, जिन व्यक्तियों को मैं जानता था, वह कन्नी काट रहे थे और आंखें नहीं मिला पा रहे थे।

तभी जगन्नाथ नानाजी के भाई प्रताप नानाजी का बेटा देवनारायण सामने आ गया। जाहिर था कि मेरे आगमन की खबर किसी ने उसे दी थी।

''क्रांति भाई, यहां कैसे?'' उसने भारी आश्चर्य के साथ पूछा।

''मामाजी के पास आया हूं मिलने वास्ते।'' मैंने उसके

comicsmylife.blogspot.in

आश्चर्य का नोटिस न लेते हुए कहा लेकिन सच्चाई यही थी कि मेरे दिल में अनेकों दुश्चिन्ताएं जागृत हो चुकी थीं।

"भाई साहब अब यहां कहां हैं?" देवनारायण रहस्यमय ढंग से हंसा, "वह तो चले गए।"

"चले गए! कहां?"

"गुड़गांव, बेटी और दामाद के साथ।" उसने बड़ी धूर्तता के साथ बताया था मुझे, "वह दोनों चार और व्यक्तियों के साथ यहां आए थे। सबसे पहले तो थाने में गए थे। थाने में उन्होंने रुपया खिलाया और फिर अपनी औकात पर उतर आए। पुलिस की मुट्ठी गर्म करने के बाद कोई खतरा नहीं रह गया था।"

"लेकिन तुम तो थे देवनारायण! तुम लोगों ने विरोध क्यों नहीं किया?"

"जगन्नाथ काकाजी ने हमसे संबंध ही कहां रखे थे?" वह दुश्मनी के अंदाज में बोला, "हमें पराई आग में कूदने की जरूरत ही क्या थी?"

"लेकिन हुआ क्या?"

"हवेली और कारखाना बीस लाख रुपयों में बिक चुका है। लोग विरोध न करें, इसके लिए बेटी दामाद ने भरी पूरी हवेली का सामान लोगों में बांट दिया था। कइयों को बर्तन मिले, कइयों को संदूक मिले, कइयों को रजाई गद्दे मिले और कइयों को फर्नीचर भी मिला। जिसे जो पसंद था दे दिया। उसके बाद बाकी बचा सामान दो ट्रकों में लाद कर हनुमान जी को भी वह साथ ही ले गए।"

मुझे काटो तो खून नहीं।

"नई मामी कहां हैं?"

"नई मामी काहे की। कोठे की राण्ड थी वह तो!" देवनारायण निर्दयता और अश्लीलता की सीमा पार कर गया।

सुन कर मेरा खून खौल उठा। लेकिन मौके की नजाकत को देख कर मैं शांत ही रहा था क्योंकि अभी उनसे पूरी पूछताछ करनी थी।

"लेकिन वो है कहां?" मैंने व्याकुलता से पूछा।

मैं जानता जो था कि उसका इस दुनिया में कोई हितैषी नहीं था। फिर उनकी उम्र महज बीस वर्ष थी! उम्र और रूप तो गरीब

का यूं भी सबसे बड़ा दुश्मन होता है।

"क्या मालूम कहां है? पर बुलढाणा में तो नहीं है। उसे पच्चीस हजार रुपया देकर पुलिस ने डांट-डपट कर भगा दिया था और विवाह के कागजात भी जला दिए गए थे। दामाद बाबू ने हनुमान के विरोध करने पर उसकी जम कर पिटाई भी की थी।" वह मजे लेने वाले अंदाज में ही बोल रहा था।

"यहां इतने लोग तमाशा देखते रहे!"

"बरगद जब गिरता है तो ही वह तमाशा बनता है। खड़े बरगद को ही पूजा जाता है।"

"हां, उसकी ठण्डी छाया को भी लोग भूल जाते हैं देबू!" मैंने क्रोध को दबाते हुए कहा।

"हराम का माल ऐसे ही जाया करता है।" वह व्यंग्यपूर्ण ढंग से हंसा, "जिसे नई मामी कह रहे हो, उसे तो महेन्द्र जीजा ने बाल पकड़ कर मारा था। सरेआम उसे 'रण्डी' कह कर बेइज्जत भी किया था। पूरा बुलढाणा खड़ा तमाशा देख रहा था।"

"बंदरबांट के कारण खामोश था। वैसे तुम्हारे हिस्से में क्या आया?" मैंने भी व्यंग्य किया, "स्वभाव तो तुम्हारा भी बंदर का है, लूट-खसोट वाला!"

"मैं तो भाई समझ कर आया था!" वह गुर्राया।

"बाप का बेटा ही भाई नहीं हुआ तो मैं भला किस गिनती में हूं देवनारायण। खैर, पच्चीस हजार रुपया लेकर संगमा मामी गई कहां है?"

"बताया न कि मुम्बई की ट्रेन में बैठते हुए देखा था। वहां से कहां गई। कोई नहीं जानता!"

उफ! बेचारी संगमा मामी। वह गर्भवती थी। ऐसी स्थिति में मुम्बई में उन्हें सहारा देने वाला कौन होगा भला। मेरे दिल में हुक-सी उठी थी।

इतना तो मैं समझ ही रहा था कि पचास लाख की प्रॉपर्टी को बीस लाख में यानी औने-पौने दाम में बेचा गया था। खुद की मेहनत से अर्जित की गई सम्पत्ति को अव्वल तो कोई बेचता नहीं। यदि बेचता भी है, तो यूं रस्ते का माल सस्ते में। इस स्टाइल में नहीं। जाहिर है कि मामाजी के दामाद ने पांच लाख रुपया तो बुलढाणा में खर्च किया होगा, ताकि लोग लालच के

comicsmylife.blogspot.in

कारण चुप रहें। मुफ्त-ए-माल, दिल-ए-बेरहम। पराया माल कब्जाने को थोड़ा अगर लुटा भी दिया था तो क्यों दर्द आना था उसे!

"महेन्द्र जीजा को पन्द्रह लाख और दो ट्रकों का माल मिल गया। उसे भला क्या चिन्ता होनी थी।"

"मामाजी के पास नानाजी का पूरा शस्त्रागार था। डबल बोर की बंदूक थी। कुछ नहीं कर पाए मामाजी?" मैंने आह सी भरी।

"उन्हें मौका ही कहां मिला था। पागलखाने का सर्टिफिकेट भी बनवा लिया था उन्होंने! दामाद ने सरेराह इतना बेइज्जत किया था कि आंख उठाने लायक न रहे। बंदूक उठाने की तो बात ही क्या है। अपने दामाद के सामने थर-थर कांप रहे थे।"

"वो थानेदार अभी है?" मैंने जानना चाहा।

"हां, वार्ड नम्बर एक के थाने का है। उसने भी तगड़ा माल बनाया था।" वह ढीढता भरी हंसी हंसा था।

"क्या नाम है थानेदार का?"

"अमोल तारकुण्डे!"

"हूं, तेजपाल मामाजी ने कुछ नहीं किया?"

"वह दो दिन पूर्व ही देस (रींगस) चले गए थे। अभी वापस नहीं लौटे हैं।"

मैंने रिक्शे वाले को कहा, "चल भाई, जरा एक नम्बर वार्ड के थाने पर छोड़ देना।"

संयोग से थानेदार अमोल तारकुण्डे थाने पर ही मिल गया था। मैंने अपना परिचय दिया। वह बिना किसी शर्मिन्दगी के परिचय सुनता रहा।

फिर बोला, "यानी वह बेमेल शादी आपके पिता ने ही करवाई थी क्रांति बाबू?"

"वह बेमेल शादी नहीं थी। दोनों ही राजी थे।" मैंने विरोध किया, "इसके अलावा वह गर्भ से भी थी!"

"क्या पता वह किसका गर्भ रहा होगा!" उसने लापरवाही से कंधे उचकाए।

"मैं जानता हूं कि वह मामाजी का गर्भ था तारकुण्डे साहब, आप पहले एक इंसान हैं, वर्दी तो उसके बाद ही बदन पर आती है। हनुमान मामाजी का आपने कोई भी ख्याल नहीं किया?"

"देखिए क्रांति बाबू, कुल सौदा हुआ था बीस लाख का—दो लाख मैंने ले लिए थे और तीन लाख रुपए विरोध न हो इस कारण बांटे गए थे। अब बाकी रहे पन्द्रह लाख। मैं साफ बता देता हूं कि महेन्द्र कुमार को तीन लाख रुपए ही दिए गए थे।"

"बाकी के बारह लाख रुपए?" मैंने चौंकते हुए पूछा था।

"उनका ड्राफ्ट हनुमान प्रसाद शर्मा के नाम पर गुड़गांव का बनाया गया था। मैंने अपनी ओर से सुरक्षित ही रखा था। वैसे, तुम्हें बता दूं कि तुम्हारे मामा दूध के धूले नहीं थे, कई औरतों के साथ उनके अवैध संबंध थे।"

"जो शख्स पैंतीस वर्ष के बाद सैक्स कर पाने में असमर्थ हो, वह कोई जरिया तो ढूंढेगा ही थानेदार साहब!"

"ढूंढेगा, बेशक ढूंढेगा। पेट और पेट से नीचे की भूख भला कौन त्याग सकता है। मैं होता उसके स्थान पर तो मैंने भी यही करना था!"

संतोष की एक बात कही गई थी कि बारह लाख रुपयों का मामाजी के नाम का ड्रॉफ्ट बनवाया गया था। रुपयों के लालची दामाद-बेटी उन रुपयों की खातिर उनका ख्याल करने वाले थे लेकिन मेरी सारी चिन्ता उस नारी के प्रति थी। जिसका विवाह बाऊजी ने करवाया था। वह हमारे पास भी आ सकती थी, फिर आई क्यों नहीं? यह गुत्थी मुझे चकरा रही थी।

"और कुछ शर्मा साहब?" उसने पूछा, "हम तो सेवा करते हैं, बस मेवा मिलना चाहिए। आप मेवा खिला दीजिए, हम आपके लिए भी सेवादारी करेंगे।"

"हां, एक गुजारिश है!"

"कहिए।"

"यदि वह अभागिन नारी आपको नजर आए तो उसे रोक लेना और इस पते पर तार कर देना।" मैंने पता लिख कर सौ रुपए भी मेज पर रख दिए।

"रुपयों की जरूरत नहीं। दो लाख रुपया लिया था, उनमें से ही तार कर दूंगा।"

"नहीं, वह रुपया हराम का था, यह हलाल का रुपया है। आप इससे ही टेलीग्राम करें। मुझे गारण्टी से मिल जाएगा।"

"तुम्हारी मर्जी, वैसे मैं लक्ष्मी का निरादर नहीं करता हूं।"

comicsmylife.blogspot.in

उसने सौ का नोट जेब में डाल लिया था।

अब बुलढाणा में रहने की कोई तुक नहीं थी। घटनाओं का पोस्टमार्टम करने से होना भी क्या था।

मैं बस स्टैण्ड की ओर रवाना हो गया। लेकिन जगन्नाथ नानाजी और मोटी नानी की यादों का महल बिक गया था। यह बात मेरे कलेजे को चीर रही थी। बस स्टैण्ड की ओर कदम बढ़ाते हुए मैंने महसूस किया था कि कई बार कदम उठाने में भी शक्ति लगानी पड़ती है।

❑❑

मैं सीधा दिल्ली नहीं गया, बल्कि गुड़गांव ही गया था। मैं भांजे का फर्ज निभाना चाहता था। मैं अब पूरा मर्द हो चुका था।

किराए के मकान की मुझे जानकारी थी। इतवार होने के कारण महेन्द्र जीजा वहीं था। दरवाजा खुला था और मैं अधिकार के साथ अंदर घुसा था। इस कारण महेन्द्र दम्पति हक्के-बक्के रह गए। मामाजी एक कुर्सी पर बैठे हुए थे। वह पलकें झपका कर मेरे को देख रहे थे।

''क्या करने आया है यहां क्रांति?'' महेन्द्र गुर्राया। रुपयों की ताकत उसे गुर्राने की हिम्मत दे रही थी।

''तेरे पास नहीं आया कुत्ते। अपने मामाजी के पास आया हूं। सिर्फ यह जानना चाहता हूं कि जगन्नाथ काटजू के भरोसे का खून करने के बजाय संघर्ष क्यों नहीं किया?'' मैं मामाजी के ऐन सामने पहुंच गया, ''एक मासूम नारी को सिन्दूर सजा कर जालिम भेड़ियों के हवाले करने का क्या हक था आपको?''

मामाजी थर-थर कांप रहे थे। आंखों में विवशता की नमी थी।

''किसी भी राह चलती औरत की मांग में सिंदूर डाल देने से वह बीवी नहीं हो जाती।'' महेन्द्र बोला था।

''इंसान को मैं भी समझता हूं जीजे। वह राह चलती किस्म की नारी नहीं थी।'' फिर मैं मामाजी की ओर आकृष्ट हुआ, ''देखिए मामाजी बुलढाणा में आपका साथ न देने वाले हिजड़े थे और आपके दुश्मन भी लेकिन मैं हिजड़ा नहीं हूं। मैं डंके की चोट पर आपको यहां से ले जा सकता हूं।''

''रुपया लूटने के चक्कर में?'' जीजा गुर्राया था।

''जीजे, तेरी औकात इससे ज्यादा सोचने की भी नहीं है। तू पैदाइशी भैंगा था न। ईश्वर ने साइन-बोर्ड लगाया था कि इस इंसान पर विश्वास न किया जाए लेकिन तेरे भैंगेपन की अनदेखी कर दी थी मामाजी ने। मुझे फूटी कौड़ी भी नहीं चाहिए उस बारह लाख रुपयों में से—तुम वो भी लेकर रख सकते हो। मैं इन्हें अपने खरीदवाए कपड़ों में दिल्ली ले जाऊंगा। इनकी रोटी हम पर भार नहीं, बल्कि वह हमारा कर्तव्य है।'' मैं सीना ठोक कर बोला, ''मामाजी, आप चल रहे हैं न मेरे साथ। मैं आपको लेने आया हूं!''

''क्रांति! मैं यहां ठीक हूं।'' मामाजी ने धीमे से कहा।

''डरने की कोई जरूरत नहीं मामाजी। मैं बुलढाणा से आया हूं, जानता हूं कि आप पर कितने जुल्म किए गए थे।''

तब मामाजी ने विवशता भरी नजरों से देखा। मैं समझ गया था कि किसी कारण वह मजबूर हैं। मेरी बात मानने से लाचार।

''नहीं क्रांति, तू चला जा यह बेटी दामाद ही हैं आखिर, कोई कसाई तो नहीं है। अब बाकी जिन्दगी यहीं गुजार लूंगा!''

''मामाजी, मैं नहीं जानता कि आपने किस कारण जगन्नाथ नानाजी के विश्वास को खण्डित करने का अपराध किया है, लेकिन जाने से पहले एक बात अवश्य ही कहूंगा कि मेरे घर के दरवाजे आपके लिए खुले हैं। साथ में एक परामर्श भी दूंगा। इस नाग-नागिन के जोड़े को निरापद रखना है तो बारह लाख रुपया अपने कब्जे में ही रखना। तभी यह आपकी इज्जत करेंगे। यदि यह आपको पिता और श्वसुर का ओहदा देकर आपका सम्मान करते हैं तो मुझे कोई भी आपत्ति नहीं है, बल्कि मेरे लिए यह खुशी की बात है। रही बात जगन्नाथ नानाजी और मोटी नानी की प्रॉपर्टी की, तो एक दिन मैं वह वापिस खरीद लूंगा। किले हार कर जीते भी जाते हैं। मेरे उपन्यास जब धूम मचाएंगे और मैं रुपया कमाऊंगा...ढेर सारा रुपया...जिससे स्टेट को वापिस खरीदा जा सकेगा। यह मेरा, एक मर्द का चैलेंज है मामाजी।''

फिर मैं रुका नहीं था। पलट कर द्वार की ओर बढ़ गया, जहां ऑटो रिक्शा वाला मेरी वापसी के लिए इंतजार कर रहा था।

❑❑

भाई के विछोह ने बाई की जीवन शक्ति को प्रभावित किया

comicsmylife.blogspot.in

...लेकिन बाऊजी की जिद्द के कारण मुझे भी शादी करनी पड़ी थी रोहन बेटे। मेरी शादी के एक वर्ष बाद ही तेरी दादी और मेरी मां की मृत्यु हो गई।

दो सरकारी नौकरियां छोड़ कर मैं उपन्यास लेखन को ही वह हथियार बनाना चाहता था, जिसकी सहायता और चमक से मैं नानाजी की स्टेट वापिस खरीद सकूं। बाई की मौत के एक माह बाद तू पैदा हुआ था रोहन। तेरे पैदा होने के दो वर्ष बाद बाऊजी यानी तेरे दादाजी भी इस दुनिया में नहीं रहे थे।

इस दरम्यान मैंने अपने लेखन से यह चमत्कारिक उम्मीद बांध रखी थी कि एक दिन मैं जगन्नाथ नानाजी की स्टेट फिर से खरीदने में कामयाब हो जाऊंगा लेकिन सरस्वती के इस उपासक पर मां लक्ष्मी की मेहरबानी कभी नहीं हुई। मैं जो कार्य बीस वर्ष में नहीं कर पाया, वह कार्य तुम्हारे द्वारा होते देखना चाहता हूं। जिंदगी की लड़ाई में हारे हुए किले जीते जाते हैं लेकिन तेरा यह बाप कितना बदनसीब है रे रोहन। इसने बुलढाणा के जो किले हारे वह भी हासिल नहीं कर सका और खुद की कोठी का आउट हाउस बेचने और फ्रण्ट में दुकाने बनाने को मजबूर हो गया। मैंने तो किले हारे ही हारे हैं। मेरे दादाजी का मकान हारा था बाऊजी ने। जमीनों के अलावा तीन प्लॉट थे, तेरे दादा जी वह भी जिन्दगी की लड़ाई में हार गए। हमने पाया कुछ नहीं ? फिर उद्धार होता तो कैसे ? दिनमान खराब थे। हर कोशिश, हर अवसर हाथ से फिसल जाता था।

मैं तुम पर पांच करोड़ की शर्त क्यों रख कर आया हूं ? इसका एक कारण है बेटे। वह कारण यही है कि जगन्नाथ काटजू का वंश सांसें ले रहा है। मुझे उन दो चिरागों को ढूंढना है। इसी कारण जा रहा हूं। जब पांच करोड़ कमा लो तो मेरे एडवोकेट को फोन कर देना, बाकी निर्देश मैं दे दूंगा। लेकिन मेरा एडवोकेट यह तसल्ली भी करेगा कि पांच करोड़ रुपया ईमानदारी का है और तुमने कमाया है।

❐❐

बाई की मौत पर मैंने मामाजी को टेलीग्राम भेजा था। सोचा था कि जिस बहन ने अपने भाई को बचपन में ही मौत के मुंह में

जाने से बचाया और जिसकी परवरिश में कोई कसर नहीं रखी, वह उस बहन की मौत पर सिर के बल दौड़ा आएगा लेकिन इंतजार करते-करते मेरी आंखें पथरा गईं रोहन। लेकिन मामाजी नहीं आए। महेन्द्र जीजा के मौसेरे लड़कों को कहा कि गमी का मामला है।

''अब संबंध ही क्या है !'' उन लुच्चों ने भी पंजे झाड़ लिए थे।

बाई की चिता फिर भाई की राह तकने के पश्चात अग्नि के सुपुर्द कर दी गई। उफ ! मां के न हरने का दुख। यह संतान ही समझ सकती है रे बेटे ! बहन ऊषा पूरे गर्भ से थी। मैं नहीं जानता था यह बात। जोधपुर समाचार दे दिया। ऊषा को ऐसा शॉक लगा कि बच्चा पेट में ही खत्म हो गया। फिर बारहवें पर ही आ पाई थी तेरी बुआ। उस बच्चे की मौत भी कर्ज है उस सपेरे पर—उस नागिन पर।

गुड़गांव के समाचार मिलते थे कि मामाजी को टॉर्चर किया जा रहा है। उन पर ऐसी बंदिशें हैं, जो नौकरों पर भी नहीं लगाई जा सकती, उनसे बारह लाख रुपयों की एफ.डी. हासिल करने के लिए बेटी-दामाद जैसे शैतान ही बन गए थे क्योंकि जो उनके पास था वह अय्याशी में उड़ चुका था।

गुड़गांव में रहने वाला एक शख्स मेरे पास आया था जो महेन्द्र जीजा के पड़ोस में रहता था। उसने अपना परिचय दिया था।

''शर्मा जी, मैं गुड़गांव से आया हूं। महेंद्र के किराए वाले मकान के ऐन सामने मेरा खुद का मकान है। गुड़गांव में मैं ओवरसीयर हूं। आपके मामा पर जुल्म हो रहे हैं, उन्हें रोज पीटा जाता है !''

''तो लोग विरोध नहीं करते ?''

''वहां का एक थानेदार महेन्द्र के साथ ही खाता-पीता है। बेटी ने अपने बाप को पागल करार दिला रखा है। इस कारण डॉक्टरों को पैसा देकर उस इंसान को इलैक्ट्रिक के शॉक दिए जा रहे हैं।''

''उफ ! मोह में पड़ा आदमी दुर्गति को ही पाता है।'' मैंने आह भरी।

comicsmylife.blogspot.in

"आपकी माताजी के निधन का समाचार मिला था जिस रोज। उस दिन तो बेटी-दामाद ने जुल्म की इन्तहां ही कर दी थी। उस समय की एक-एक घटना मुझे याद है। क्योंकि टेलीग्राम मेरे सामने ही आया था और फिर तुम्हारे मामाजी की चीखें भी सुनी थी। मैं द्वार खुला देख कर अंदर गया। वहां... !"

□□

"मर गई तेरी बेईमान बहन—अब पड़ी है हमारे कलेजे को ठण्डक। तेरे भांजे की शादी में भी नहीं जाने दिया था तुझे। अब तू बहन की चिता पर भी नहीं जाएगा, लकड़ी का टुकड़ा डालने को।" महेन्द्र बोला था।

जैसा ओवरसीयर ने बताया, उसकी बातों के आधार पर तस्वीर पेश कर रहा हूं रोहन।

"झूठ...झूठ बोलते हो तुम! तूने अभी जलती सिगरेट मेरी गर्दन पर लगाई थी। मैं चीखा था, इस कारण झूठ बोल रहा है तू। मेरी बहन जीवित है।"

"नहीं, झपकी ले रहा था तू। इस कारण सिगरेट से दागा था तुझे। ताकि गुलाब नाम की तेरी बहन के टहनी से टूटने की खबर तुझे दूं। ले, यह पत्र ले।" महेन्द्र ने टेलीग्राम को मुट्ठी में भींच कर मामाजी पर उछाला था।

मामाजी ने कांपते हाथों और बरसती आंखों के साथ तार के कागज को सीधा किया था।

मामाजी,

बाई नहीं रही। आपका सूर्य डूबने से पांच मिनट पहले तक इंतजार रहेगा। उसी श्मशान में, जहां कल्याणी मामी पंचतत्व में विलीन हुई थी।

क्रांतिदूत शर्मा

"रूकमणी! यही गमी का मौका है मेरी बेटी। मेरी बहन तेरी बुआ थी। उसके अहसानों की फहरिस्त को याद कर, अपने पति के साथ मुझे भी ले चल। चिता की आग में दुश्मनी जला। फिर मैं तुम्हें बारह लाख रुपया भी दे दूंगा।" मामाजी ने गिड़गिड़ाकर हाथ जोड़े थे।

बेटी खामोश रही थी।

बाप ने बेटी के कदमों पर सिर रख दिया, "बेटी! यही मौका

है प्रायश्चित का। वरना लोग यही कहेंगे कि हनुमान ने बेटी नहीं नागिन को जन्म दिया था। अपनी मां की कोख की गाली मत बन।"

'धड़ाक!' ठोकर पड़ी थी पसलियों पर।

मामाजी दो फीट दूर जाकर गिरे थे।

"बहन की मौत हो गई ससुरे। अपनी ही बेटी को नागिन बता रहा है! बारह लाख रुपयों पर साइन कर दे, फिर चलेंगे। बोल क्या कहता है?"

"कर देता हूं साइन! ला, कागजात ला बैंक के।"

"वह तो कब से तैयार पड़े हैं। रुकमणी वह कागजात तो लेकर आ।"

वफादार बीवी। लेकिन बेटी के रूप में नागिन बनी हुई रुकमणी अंदर से कागजात ले आई थी।

तभी सुबह की शिफ्ट पर कॉलेज गए विजय और अजय भी आ गए थे।

शीघ्र ही तमाशा उन्होंने भी समझ लिया था। बाप चाण्डाल था तो वह दोनों महाचाण्डाल।

"जल्दी आ गए विजय?" बाप ने पूछा।

"शनिवार था न पापा। बारह बजे छुट्टी होती है।" विजय ने अपने जूते को नाना के सीने पर रख दिया, "जरा साफ कर दे रे नाना!"

तभी रुकमणी कागजात ले आई थी।

"हमारी तो लॉटरी लग गई पापा, इसकी बहन के मरने से। अब खुद ही साइन कर रहा है।" अजय ने गिलास का बचा हुआ झूठा पानी अपने नाना के चेहरे पर फेंक दिया।

"चल—उठ कर साइन कर।" महेन्द्र जीजा ने बाल पकड़ कर उठाया था।

"आज साइन नहीं करूंगा। शनिवार है, बारह बज चुके हैं—बैंक भी बंद हो गया है। मेरे साइन करने के बाद तुम मुझे बहन की चिता पर नहीं जाने दोगे। मेरी बहन का मुंह भी देखने न दोगे!" हनुमान मामाजी ने स्पष्ट इंकार कर दिया।

"बहुत स्मार्ट है हमारा नाना!" विजय हंसते हुए बोला।

"कागजात ले चलो। बहन की सूरत देखने के पश्चात साइन

comicsmylife.blogspot.in

कर दूंगा।'' हनुमान मामाजी ने कहा, ''श्मशान तक तुम भी चल सकते हो। लोग यही समझेंगे कि चिता की आग में दुश्मनी जलाने आए हैं।''

''वहां जाकर तू समाज के लोगों के सामने सच्चाई बयान करके अपने भांजे के पीछे खड़ा हो जायेगा। सुना है कि वज्र का सीना है उनके पास। बड़ा समझदार हो गया है तू ससुरे! एक तीर से दो शिकार। साइन भी नहीं करेगा और हमारी पकड़ से भी आजाद हो जाएगा।''

''मारो हरामी को!'' विजय गुर्राया।

फिर अजय और विजय की लातें चलने लगी थीं।

''बचाऽऽऽओ!'' मामाजी की चीखें थीं रोहन बेटे।

महेन्द्र बोला, ''तुझे पागल करार दिला चुका हूं ससुरे। खूब चीख-चिल्ला—लोग यही समझेंगे कि पागल पर दौरा पड़ा होगा!''

''मम्मी आप अंदर जाओ।'' अजय बोला।

फटी-फटी दृष्टि से देखते हुए रुकमणी अंदर प्रविष्ट हो गई थी।

''मम्मी को क्यों भेज दिया।'' चौंका था महेन्द्र।

''जाने दो न पापा। बहन मरी है बेचारे की। अब बहन भी एक ही थी। आठ-दस होती तो सोचते कि चलो आखिरी वाली मौत पर भेज देंगे। भेज दो पापा, भेज ही दो।'' अजय गंभीरता से बोला, जैसे नाना का पक्ष ले रहा हो।

''अजय! दिमाग तो ठिकाने है या पापा की दारू चढ़ा कर कॉलेज गया था।'' विजय झल्लाया।

''बाप शराबी तो बेटे महाशराबी।'' अजय हंसा, ''मेरी बात मानो पापा, इनके जाने में हमारी भलाई है।''

''वो कैसे?'' महेन्द्र चौंका।

''यह भी साबित हो जाएगा कि यह बहन को कितना चाहता है। फिर साइन श्मशान में ले लेंगे।''

''साफ बोल!''

''करके दिखाता हूं न पापा साफ-साफ।'' अजय ने फिर मामाजी के बदन से कपड़े उतारने आरम्भ कर दिए थे। विजय ने भी सहयोग दिया।

पांच मिनट बाद हनुमान मामाजी की वैसी स्थिति थी—जैसी पैदा हुए बच्चे की होती है। एकदम नग्न।

जिस्म पर एक रेशा तक नहीं छोड़ा गया था।

''अब क्या?'' विजय ने पूछा।

''पापा। एक दस का नोट, गुड़गांव से दिल्ली तक जो जाना है नंगे नाना को।''

''वाह! वाह बेटा! मान गए तेरे को।'' महेन्द्र ने शैतानी कहकहा लगा कर दस का नोट मामाजी पर फेंक दिया, ''ले ससुरे, बहुत शौक है न बहन का मरा चेहरा देखने का। जा, यूं ही जा—नंगा! देखते हैं कि बहन का प्रेम तेरे लिए ज्यादा है या नंगेपन की शरम।''

हनुमान मामाजी ने दस का नोट उठाया और उन्हें जलती दृष्टि से देखा।

''मैं पांच साल का था, जब मेरी बहन मेरे आधे जिन्दा जिस्म को लेकर आई थी! उसने तब मेरी सेवा की थी और मुझे नंगा देखा था। अब तो बहन की आंखें बंद हैं, वह मेरा नंगापन तो नहीं देखेगी—लेकिन आज सारी दुनिया तुम्हारा कमीनापन जरूर देखेगी।'' हनुमान मामाजी द्वार की ओर झपटे।

अजय ने टांग अड़ा दी। वह मुंह के बल गिरे। सिर फट गया और खून रिसने लगा। वह तड़प कर उठे।

''सॉरी नानाजी, गंगाजल लेकर जाओ, इस कारण रोका था।'' फिर अजय शराब की बोतल लाया और घाव से रिसते हुए खून के स्थान पर उलट दी। फिर बची हुई शराब मामाजी के हलक में जबर्दस्ती ठूंस दी गई। सांस लेने को बेताब मामाजी को शराब पीनी पड़ी थी।

''अब तू तैयार हो गया नाना, जा, अब निकल ले पतली गली से!''

मामाजी उठे और दस का नोट मुट्ठी में लेकर भागते चले गए थे।

''अरे! यह तो गया अजय बेटे।'' महेन्द्र चौंका।

''जाने दो पापा, अभी आ जाएगा वापिस। आप थानेदार को फोन घुमा कर बताएं कि आपका ससुरा नंगा होकर भाग गया है। ट्रेन का टाइम नहीं है—बस अड्डे ही जाएगा। वहां से थानेदार

comicsmylife.blogspot.in

कूटता हुआ लाएगा।''

''इससे फायदा!''

''यहां रहने वाले कई लोगों का विचार है कि आपने अपने ससुर को जबर्दस्ती पागल घोषित किया हुआ है, जो आदमी नंगा भागता जाए, उसे पागल मानने में फिर किसी को परेशानी नहीं होगी। थानेदार को भी आपकी मदद करते रहने में आसानी हो जाएगी। वह साइन तो करेगा नहीं लेकिन मर तो सकेगा। फिर मरने के बाद तो मम्मी के नाम पर ही सारा रुपया है—दामाद के नाम पर थोड़े ही है। साले को जिन्दा ही जलायेंगे। फिर कह देंगे कि पागल था आत्महत्या कर ली थी।'' उसने अंतिम जुमले राजकपूराना स्टाइल में बोले थे। समवेत ठहाका लगाया था सबने।

...ओवरसीयर ने जो नक्शा मेरे सामने खींचा था, उसे सुनकर तन बदन में आग लग गई।

''अपने मामाजी को बचा लो क्रांति बाबू!''

''ठीक है, तुम जाओ। कल मैं अदालत से कार्यवाही कर उन्हें पागलखाने भिजवा दूंगा, जहां उन्हें सामान्य शख्स करार दिया जाएगा।'' मैंने ओवरसीयर को आश्वस्त करके भेज दिया।

मैंने फिर फोन उठा कर नम्बर डायल किया। बेटे दोस्तों के नम्बर बेशक याद न हो, दुश्मनों के चेहरे और उनके हर नम्बर याद रहने चाहिए। मुझे याद था नम्बर।

''महेन्द्र कुमार शर्मा!'' जीजे का स्वर स्पष्ट पहचाना मैंने।

''मां के फोड़े! मैं क्रांति बोल रहा हूं। कल नौ बजे तक मामाजी को मेरे पास कोठी पर आदर से भेज देना, वरना मैं तेरी मां-बहन को खोद दूंगा।'' इस साहित्यकार को असाहित्यिक भाषा बोलनी पड़ी थी।

उधर से रिसीवर रख दिया गया।

मैंने समझा कि डर गया है लेकिन यह मेरे जीवन की बहुत बड़ी भूल थी। दुश्मन को उसके अंजाम से आगाह करने की भूल। उसे सावधान करने की भूल।

अगले दिन मैंने पुलिस कमिश्नर के पास जाने की तैयारी की ही थी कि बाऊजी अखबार लेकर आए।

''कहीं जा रहे हो बेटे?''

''हां, एक दरिन्दे को अपना क्रियाकर्म करवाने का शौक चर्राया है।''

''ओवरसीयर ने जो कहा था, मैंने भी सुना था बेटे। यह समाचार पढ़ ले।'' बाऊजी ने समाचार पत्र मेरी ओर बढ़ा दिया था।

मैंने निर्दिष्ट समाचार पढ़ा।

पागल द्वारा आत्महत्या

गुड़गांव में हनुमान प्रसाद शर्मा नामक व्यक्ति ने रात को अपने जिस्म पर पेट्रोल डाल कर आत्महत्या कर ली। मृतक काफी अर्से से बीमार और विक्षिप्त था। अपनी बेटी-दामाद के पास रहने वाले हनुमान प्रसाद शर्मा ने एक बार नंगी स्थिति में बस-स्टैण्ड तक दौड़ लगाई थी। पुलिस द्वारा तब उसे गिरफ्तार किया गया था और प्रथम दृष्ट्या रिपोर्ट भी दर्ज की गई थी, जिसका मुकदमा अदालत में विचाराधीन है। शव का पोस्टमार्टम करके लाश परिजनों को सौंप दी गई।

फिर दूसरा शोक संदेश का बॉक्स (इश्तहार) था:—

मेरे पिता श्री हनुमान प्रसाद शर्मा का असामयिक निधन हो गया है। चितागिन शाम पांच बजे दी जाएगी। मैं क्रांति भइया से कहना चाहती हूं कि दुश्मनी को भूल कर श्मशान में मामाजी के दर्शन करने अवश्य आएं। आपको राखी का वास्ता।

महेन्द्र कुमार शर्मा (दामाद)

शोकाकुल	*निवेदिका*
अजय-विजय (नाती) तथा परिवार गण	*रुकमणी देवी (बेटी)*

मैंने अखबार फेंक दिया।

''क्या सोचा बेटा, चलना चाहिए?''

''हां, चलेंगे बाऊजी! ममेरी बहन ने राखी का वास्ता देकर बुलाया है।''

''झगड़ा तो नहीं करेगा?'' बाऊजी ने मेरा हाथ अपने सिर पर रखते हुए पूछा।

''नहीं, वचन नहीं दूंगा!''

''मैं भी साथ चलूंगा, ताकि तू बखेड़ा न करे। मरने वाला तेरी

comicsmylife.blogspot.in

मां का भाई था रे! उसे शांति के साथ चिता पर सोने देना बेटे।''

आंसू डबडबा आए थे मेरी आंखों में।

हां...हम गए थे। तू पैदा हो चुका था...तुझे भी साथ लेकर गए थे।

छ: माह का ही था तू रोहन। तेरे को हमने वहां चिता पर लेटे मामाजी का चेहरा दिखाया था। फोपले की तरह से जला हुआ चेहरा। फिर अग्नि के बाद तेरे हाथ से लकड़ी श्रद्धांजलि के रूप में चिता पर अर्पित भी की गई थी रोहन।

❑❑

याद है न तुझे वो दिन जब तेरे तेजपाल नानाजी आदर्श नगर की कोठी पर आए थे और मैंने उसी दिन घर त्यागने का फैसला कर लिया था। वही राज जानने के लिए तू डायरी पढ़ रहा है न। मैं यह तो नहीं जानता कि तू पांच करोड़ रुपया कमाने के बाद डायरी पढ़ रहा है या फिर निराश होकर लेकिन तू अगर पांच करोड़ रुपया कमा चुका है तो दिल्ली के बैरिस्टर क्षेत्रपाल क्षितिज के पास पहुंच जाना। बाकी सब काम उन्हीं के द्वारा किया जाने वाला है।

मामाजी से जुड़ी हमारी खानदानी हकीकत के बारे में तेरी मम्मी को भी ज्यादा नहीं बताया गया था बेटे। अपनी मम्मी से आशीर्वाद लेना। मां के आशीर्वाद से हर काम सहज हो जाते हैं।

आगे की डायरी खाली रही होगी, क्योंकि तमाम फोटोग्राफ पेज पढ़े जा चुके थे।

❑❑

पायल की आंखें जैसे दहकते हुए अंगारे बन गई थीं। कॉलबेल बजी थी। रूम अटेण्डेण्ट शायद खाली बर्तन लेने आया था।

पायल ने उन डायरी के फोटोग्राफ्स को सहेज कर बैग में रखा और फिर प्रणाम किया था उस अतीत के हाहाकारी इतिहास को। फिर वह द्वार की ओर पलटी। स्वयं को संयत रखने के लिए वह पूरा प्रयास कर रही थी। अटेण्डेण्ट ही था। द्वार खुलने पर उसने लेडी कस्टमर की पीठ अपनी ओर पाई थी। उसने बर्तन समेटे और फिर घूम गया। अकस्मात उसकी दृष्टि पायल के चेहरे पर पड़ी।

घुटी-घुटी चीख के साथ बर्तन उसके हाथ से फिसल गए।

''क्या बात है ?'' पायल ने कठोर स्वर में कहा, ''देख कर काम नहीं करते!''

''अ...आप...आप की आंखें!''

''क्या हुआ मेरी आंखों को ?'' वह चौंकी।

''ख...खुद देख लीजिए मैडम शीशे में!'' वह कंपकंपाते हुए स्वर में बोला था।

पायल ने अपनी आंखें देखीं।

ऐसा लग रहा था कि आंखों में खून की लालिमा थी। गाल पर चिपचिपाहट थी। वह खून के आंसुओं की चिपचिपाहट थी।

खुद को देख कर ही डर लगा था तब पायल को।

फिर उसने ठहाका लगाया, ''डर गए ना तुम ? मैं देखना चाहती थी कि तुम पर हॉरर फिल्म के लिए यह मेरा नया गेटअप क्या इफेक्ट डालता है।'' उसने फौरन ही बात संभाली थी।

''मैडम, मैं तो बेहद जीवट वाला और मजबूत दिल-गुर्दे का मालिक हूं। कोई दूसरा होता तो शर्तिया टें बोल जाता!'' उसने पथराए स्वर में कहा।

तब उसने वेटर को पहली बार देखा। लगभग बीस वर्ष का गोरा-चिट्टा युवक था। गरीबी और संघर्ष की जिन्दगी उसके चेहरे पर छपी हुई थी।

''कौन हो तुम ? जो स्वयं को दिल-गुर्दे वाला बता रहे हो!'' उसने व्यंग्यपूर्ण स्वर में पूछा।

''वह मेरा राज है मैडम। घायल दिल के घाव हर शख्स को नहीं दिखाए जाते।'' उसने टूटी क्रॉकरी समेट कर ट्रे में डाली थी।

''सुनो, यह नुकसान मेरे बिल में शामिल करवा देना।''

''ठीक है मैडम, शुक्रिया।'' उसने कृतज्ञता से कहा।

''तुम मुम्बई के तो नहीं लगते!''

''कैसे जाना मैडम, मेरे चेहरे पर तो नहीं लिखा है कि मैं मुम्बई का हूं या नहीं ?''

''तुम्हारी जुबान पर लिखा है। तुम्हारी जुबान पर मुम्बइयां टच नहीं है। क्या हीरो बनने आए थे मुम्बई में ?''

''नहीं!'' वह हंसा, ''जिन्दगी की कटु सच्चाइयां देखने

comicsmylife.blogspot.in

वाला शख्स फिल्मी परदे पर नकली काम नहीं कर सकता।''

''फिर मुम्बई में क्या वेटर बनने ही आए थे?''

''एक घाव लेकर आया हूं। जहां पहले रहता था—वहां रुपया कमाने का मौका आया था हाथ में। अपने पत्ते भी चले थे, लेकिन विधाता के पास मेरी बदनसीबी के तीन इक्के थे। इस कारण भागना पड़ा।'' उसने अनोखे ढंग से अपनी बात कही।

''क्या नाम है तुम्हारा?'' पायल ने उसे दिलचस्प पाया, ''वाकई काफी दिलचस्प इंसान हो!''

''निडर इन्तकाम, मेरा नाम है।''

''निडर इन्तकाम! यह क्या नाम हुआ?''

''मां का दिया नाम है, मुझे पसंद है।''

''लेकिन कोई लॉजिक तो होगा।''

''मैंने मां से पूछा था लॉजिक।''

''क्या जवाब दिया था मां ने?''

''सिर्फ यही कहा था कि कई लोगों के नाम के साथ 'शर्मा' लिखा होता है। जिस कारण वह शर्माते हैं, तेरा नाम निडर रखा ताकि तू ना तो शर्माये और ना डरे।''

''बड़ी अजीब मां है तुम्हारी।''

''जी! लोग मेरी मां को चलता-फिरता हॉरर कहते हैं।'' इतना कहने के पश्चात वह रुका नहीं था, तेज-तेज कदमों से द्वार की ओर आकृष्ट हुआ। फिर द्वार खोल कर बाहर निकल गया।

तब उसके जाने के बाद पायल ने दिल्ली का फोन नम्बर डायल किया।

''भागीरथ मदान दिस एण्ड!''

''पायल पाराशर फ्रॉम मुम्बई।''

''होटल सम्राट में ही हो ना?''

''हां, सुइट नम्बर बाईस नोट कर लीजिए।''

''जरूरत नहीं।''

''क्यों?''

''बाईस तारीख को मैं जन्मा था नोट करने की क्या जरूरत है।''

''ओह! यह बात थी। खैर, रोहन से बात हुई?''

''हां, हो गई है। वह तैयार है, पांच करोड़ रुपयों में वैसे ही

उसने कुछ कागज ही तो देने हैं।''

''वह आपके लिए कागज हैं, मेरे लिए उनकी कीमत पांच अरब से भी ज्यादा है।''

''अजीब हो तुम पायल! आखिर...आखिर चाहती क्या हो?''

''वक्त आने दो पता चल जाएगा। कोई खास बात जो जिक्र के काबिल हो?''

''हां, एक बात है—तुम्हें वह चोर युवक याद होगा। जिसने डायरी चुराई थी और वह वापिस करने गया तो मारा गया था। फिर मैंने एक लाख रुपया उसके पिता को दिया था।''

''उस चोर को तो मैं भूल ही नहीं सकती, बेचारा! मुफ्त में ही मारा गया। सिद्धार्थ...सिद्धार्थ चक्रवर्ती नाम था उसका।''

''जो मारा गया वह सिद्धार्थ चक्रवर्ती था लेकिन वह चोर जिन्दा है। उसने अपना ही सामान बेरोजगार सिद्धार्थ को वह लिफाफा देकर भेजा था। साथ में शायद हिदायत भी दी होगी कि पकड़ा मत जाना। इस कारण रोहन के भागने पर ही वह भागा था...!''

''और वह ऐसी जगह पहुंच गया जहां भाग्य का निर्धारण होगा—भागने का नहीं। स्वर्ग सिधार गया वो! लेकिन वह चोर नहीं था, यह कैसे जाना?''

''जब मैं एक लाख रुपया चक्रवर्ती परिवार को देने गया था, तो मैंने उसकी डायरी मांगी थी सिद्धार्थ जिस लिफाफे में खत डाल कर लाया था। उस खत की लिखावट से सिद्धार्थ की डायरी की लिखावट मेल नहीं खाती, यानी खत चोर ने लिखा था और भेजा सिद्धार्थ को।''

''हैण्डराइटिंग के फर्क से सच्चाई जान ली आपने! स्मार्ट...वेरी स्मार्ट!''

''लेकिन वह चोर हमारे लिए समस्या न बन जाए। इस पहलू को भी ध्यान रखना है।''

''यह ध्यान आपने रखना है कि चोर हमें नुकसान न पहुंचाए और जल्दी से जल्दी बेनकाब हो जाए।'' पायल ने स्पष्ट किया।

''मेरे पास उसे बेनकाब करने की योजना है। वह चोर बेनकाब हो जाएगा—डोंट वरी!''

comicsmylife.blogspot.in

"थैंक्स!"
"रखूं?"
"ओ.के.।" फिर उसने रिसीवर क्रेडिल पर रख दिया। अब वह कुछ देर सोना चाहती थी।

❑❑

अचानक फोन की घण्टी बज उठी। नींद की आगोश में समाने की कोशिश करती हुई पायल पाराशर चौंक उठी।

होटल के सूइट में उसे कौन फोन कर सकता है? यह सोचते हुए उसने रिसीवर उठाया।

"सूइट नम्बर टवेन्टी टू!"

"हाए स्वीटहार्ट। कैसी हो तुम?" भर्राया हुआ वही अजनबी स्वर जिसकी आवाज उसने अपनी मां कैथरीन की मौत पर पहली बार सुनी थी।

"कैथरीन का शुभचिन्तक?" उसने आश्चर्य से पूछा।

"एकदम दुरुस्त। वही बोलता हूं मैं। मैंने कहा था न कि इण्डिया में भी मेरी आवाज सुनोगी।" उसने याद दिलाया।

"यह सारा नाटक आखिर है क्या? क्यों तुम मुझे अपने इशारे पर नचा रहे हो?"

"ताकि तुम नागिन के परिवार को खत्म कर सको।"

"तुम्हारा क्या रिश्ता है मुझसे?"

"कुछ भी नहीं।"

"शर्मा खानदान से रिश्ता है तुम्हारा?" पायल ने बेहद गंभीर स्वर में पूछा, "किससे रिश्ता है तुम्हारा?"

"नो कमेण्ट्स।"

"फोन क्यों किया, यह तो बता सकते हो तुम!"

"एक सवाल करना चाहता था।"

"क्या?"

"तुम अपने किरदार को समझ गई हो न पायल कि वास्तव में तुम कौन हो?"

"हां, काफी हद तक। मैं नहीं कह सकती कि दो जमा दो चार करने की तमीज नहीं मुझमें।" उसने स्वीकार किया।

"गुड! यानी तुम समझ गई हो कि कैथरीन वाकई तुम्हें एक राज बताने जा रही थी लेकिन अफसोस! बेचारी का कत्ल हो

गया।"

"तुम हो कातिल?"

"शुभचिंतक था मैं कैथरीन का।" ठण्डा स्वर उभरा, "कैथरीन को कत्ल करने की बात मैं सोच भी नहीं सकता था!"

"क्या रिश्ता था तुम्हारा कैथरीन से?"

"तुम्हें क्या लगता है?"

"प्रेमी थे तुम?"

"हां, सच्चाई यही है—काफी गरीब था मैं!"

"और अब गरीब नहीं।"

"अब तो सबसे ज्यादा गरीब हूं, क्योंकि मेरी चाहत इस दुनिया में नहीं रही।" दुख झलका था स्वर में।

"यहां इंडिया में क्या करने आए हो?"

"अपने बेटे को ढूंढने आया हूं?"

"वह किसका बेटा था? मेरा मतलब उसकी मां कौन थी मिस्टर अजनबी?"

"यकीन नहीं करोगी!"

"कर लूंगी। नाम बताओ!"

"कैथरीन...कैथरीन वाज द मदर ऑफ माई सन!" एक-एक शब्द पर वजन डाल कर उसने दावा किया था।

"बकवास!"

"क्योंकि तुम्हें लगता है कि कैथरीन ने तुम्हें जन्मा था। क्यों, ठीक कहा न मैंने?"

"दुनिया जानती है कि मैं कैथरीन की बेटी हूं। तुम साबित करके दिखाओ कि मैं कैथरीन की बेटी नहीं थी!"

"इसी कारण तो मुम्बई लाया हूं तुम्हें। यहां एक सोफिया नर्सिंग होम है, वहां से सच्चाई का पता करो। छब्बीस जनवरी सन् उन्नीस सौ अस्सी के वह रिकॉर्ड देखना, जिनमें प्रसूति का विवरण होता है और पैदा हुए बच्चे की निशानियां भी लिखी जाती हैं।" रहस्य भरा स्वर उभरा।

चकरा कर रह गई पायल पाराशर।

"कैथरीन मेरी मां नहीं थी, तो कौन थी मेरी मां?"

"मैं जानता हूं, शर्मा परिवार में तुम्हें इसी कारण तो उलझा रखा है।"

comicsmylife.blogspot.in

"मेरा बाप ?" उसने सपाट स्वर में पूछा।

"वह भी असली नहीं। पराग पाराशर तुम्हारा बाप नहीं है पायल लेकिन उसे बाप का रूतबा हासिल हुए बिना दादा की अरबों रुपयों की जायदाद नहीं मिल सकती थी। इस कारण उसने अमेरिका जाकर कैथरीन को फांसा और उसके साथ एक शर्त पर शादी की थी।"

"शर्त पर शादी! क्या थी वह शर्त ? यह सब सच भी है या..."

"तेरा बाप पराग पाराशर कैथरीन से बोला था कि उसे इण्डिया चल कर रहना होगा। जहां वह अपने दादा के सामने उसे पत्नी घोषित करेगा। बाकायदा शादी भी की थी पराग और कैथरीन ने। पराग कौटिल्य पाराशर नामर्द था। औलाद पैदा करने में असमर्थ। कैथरीन ने नकली शादी का सौदा पच्चीस लाख डॉलर में किया था। इक्कीस साल पहले यह बहुत बड़ी राशि थी।"

"हां, समझ सकती हूं!"

"मैं भी इण्डिया साथ ही आया था, क्योंकि पराग कौटिल्य पाराशर को कैथरीन से औलाद चाहिए थी और उसके नाम पर वह औलाद मैंने पैदा करनी थी। कैथरीन के प्रेमी ने। ऐसा हुआ भी था। कैथरीन को गर्भ ठहर गया था। तभी मेरे पिता की मौत का समाचार मिला तो मैं अमेरिका वापिस रवाना हो गया। इसी बीच कैथरीन ने मेरे बेटे को जन्म दिया था लेकिन पराग पाराशर ने कहा था कि उसे मरा हुआ बेटा हुआ था और एक नर्स से मिलकर उसने एक बच्ची को चुराकर कैथरीन की बेटी घोषित कर दिया था। इस प्रकार अरबों रुपयों की शर्त वह पूरी करके अमेरिका में बस गया था। कैथरीन से शादी करने के कारण उसे नागरिकता भी प्राप्त हो गई।"

"फिर तुम्हारा बेटा कहां गया ?"

"उसी को ढूंढने आया हूं। कैथरीन को मरा हुआ बच्चा नहीं हुआ था।"

"कहीं ऐसा तो नहीं कि कैथरीन का बेटा उस मां के पास हो, जिसकी मैं बेटी हूं।"

"मैं भी यही सोच रहा हूं। पराग पाराशर ने यह चाल इस

कारण चली थी ताकि मैं और कैथरीन उसे ब्लैकमेल करें तो वह हमें बेटे की मौत का डर दिखाकर हमारी ब्लैकमेलिंग को काउण्टर कर सके। खतरनाक दिमाग है पराग पाराशर के पास।"

"हां, अब यही लगता है।" उसने हिचकिचाहट के साथ स्वीकार किया।

"खैर, तुम मेरी निगाह में हो। कोई आ रहा है, मैं बाद में फोन करूंगा।" फिर संबंध-विच्छेद कर दिया गया था। क्या क्रांतिदूत शर्मा को विशेष चक्रव्यूह रच कर भेजा गया था ? यही सवाल था उसके दिमाग में।

❑❑

बुलढाणा का जाना माना बिल्डर और सभ्रांत नागरिक यानी तेजपाल शर्मा को आश्चर्य था कि आखिर पायल पाराशर नाम की वह युवती कौन है ? उसका क्या संबंध है क्रांतिदूत शर्मा और बुलढाणा से ? लेकिन लाख सिर खपाने के पश्चात भी तेजपाल शर्मा किसी निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाया था।

बुलढाणा पहुंचने के पश्चात उन्होंने चिखली रोड की अपनी कोठी के तीन कमरे नौकरों के द्वारा खाली करवाए, जो कि तेजपाल शर्मा के लिए एक पुल के कंस्ट्रक्शन पर कार्य कर रहे थे। पुल का काम लगभग पूरा हो चुका था। अब वहां पर सिर्फ तराई की जा रही थी।

"क्या बात है शर्मा जी ? यह नौकरों से क्या करवा रहे हैं ?" पड़ोस में रहने वाले हेमन्त खर्चे मास्टर ने बगल की दीवार के पास आते हुए पूछा।

वह दीवार दोनों कोठियों के मध्य में थी।

"कुछ महीनों के लिए देस (राजस्थान का शहर रींगस, जहां उसकी पैदाइश हुई थी।) जा रहा हूं मास्टर साहब। कुछ जरूरी काम आन पड़ा है।" तेजपाल शर्मा ने गंभीर स्वर में कहा।

"आजकल देस आना-जाना काफी होने लगा है। वहां भी कुछ काम करवा रहे हैं क्या ?" खर्चे मास्टर ने पुनः पूछा।

खर्चे मास्टर साठ वर्ष के पेठे में पहुंचा शख्स था, जिसे सिर्फ इस बात से मतलब था कि अपना समय किस प्रकार से व्यतीत किया जाए। मास्टरी से रिटायरमेंट होने के बाद खर्चे मास्टर ने 'बुलढाणा टाइम्स' नाम का अखबार निकाला था, वह साप्ताहिक

comicsmylife.blogspot.in

था और महज चार पृष्ठों का था। पत्रकारिता का शौक जवानी में खूब रहा था लेकिन सरकारी स्कूल में टीचर होने के कारण यह शौक परवान नहीं चढ़ पाया था। इस कारण रिटायरमेंट के बाद शौक पूरा किया।

''हां, देस में एक मंदिर का निर्माण करवा रहा हूं। इस कारण उधर भी वक्त देना पड़ रहा है।''

''लेकिन यह तीन कमरे आप खाली क्यों करवा रहे हैं ?'' हेमन्त खर्चे की तीखी नजर ने यह बात नोट की थी।

''मैंने सोचा था कि जाते समय आपको बताकर जाऊंगा लेकिन अब आपने पूछ ही लिया है तो बताए देता हूं कि यहां मेरा एक मित्र अपनी बेटी के साथ आने वाला है मास्टर साहब !''

''ओह ! यानी आपने तीन कमरे किराए पर उठा दिए हैं ?''

''नहीं, किराए पर नहीं ! अपने मित्र को दो-तीन माह के लिए सुविधा देना चाहता हूं। डॉक्टर की राय में मेरे मित्र को स्थान परिवर्तन की आवश्यकता है। उसकी पत्नी का अभी हाल में ही निधन हुआ है। उस माहौल में रहते हुए वह पत्नी के गम से उबर नहीं पा रहा था। इस कारण अपनी बेटी के साथ यहां आ रहा है।''

''यह तो आपने अच्छा किया शर्मा साहब। इस प्रकार आप मित्रता का कर्तव्य निभा रहे हैं।''

''फर्ज भी निभ जाएगा और खाली कोठी की निगरानी भी हो जाएगी।''

''बूढ़े की बेटी का नाम... !''

''उसका नाम है नीलम...नीलम भारद्वाज ! मेरे मित्र का नाम अनन्त भारद्वाज है।''

''अनन्त भारद्वाज और नीलम भारद्वाज !'' खर्चे साहब ने नाम दोहरा कर याद करने चाहे थे।

''हां, लेकिन आप से एक प्रार्थना है मास्टर साहब !''

''जी, कहिए !''

''उस वृद्ध के साथ ज्यादा मेल-जोल मत रखिएगा, क्योंकि वह अपनी पत्नी के बारे में सुनकर स्वयं पर काबू नहीं रख पाता है।''

''ओह ! उसे नर्वसनेस और सैडनेस का दौरा पड़ जाता

होगा।'' उसने सहानुभूति के साथ कहा।

''अब यह तो मैं भी नहीं जानता कि बीमारी को अंग्रेजी में क्या कहते हैं लेकिन वह उदास हो जाता है, तब उसे दवा लेनी पड़ती है।''

''ओह ! मैं ध्यान रखूंगा कि उसकी कमजोर रग पर मेरा हाथ न जाए। मैं ऐसी कोई बात नहीं करूंगा।'' उसने सिर हिलाकर वायदा सा किया।

''लड़की की उम्र लगभग बीस वर्ष के आस-पास है। वह समाज शास्त्र पर डॉक्टरेट कर रही है।''

''पी.एच.डी. !''

''मुझे तो डॉक्टरी बताया था। अंग्रेजी में शायद यही कहते होंगे। इस कारण वह बुलढाणा के सामाजिक जीवन के बारे में भी जानना चाहेगी।''

''मैं उसे सब कुछ बता दूंगा।''

''नहीं, यह मेहरबानी मत करना। वह दूसरों की आंखों के चश्मे से देखने के बजाय अपने दिमाग की नजरों से देखने पर यकीन करती है। जाहिर है कि बुलढाणा में उसे काफी घूमना पड़ेगा।''

''ओह, फिर तो नीलम वाकई जहीन होगी !''

''जरूर होगी।''

''आप अपने मित्र की मदद करना चाहते हैं। फिर कमरे में से सामान क्यों हटा रहे हैं ?'' उसने उलझन भरे स्वर में पूछा।

बड़ी घाघ नजर पाई थी खर्चे मास्टर ने।

''फालतू सामान हटा रहा हूं, क्योंकि इन कमरों में कबाड़ भी भरा हुआ था। अच्छा मास्टर साहब, मैं देखूं नौकरों ने कितना काम अंजाम दिया है।''

''अवश्य...अवश्य !'' बातूनी हेमन्त खर्चे से तब कहीं जाकर उसका पीछा छूट पाया था।

☐☐

महेन्द्र कुमार शर्मा के पास स्वयं का फोन नहीं था। इस कारण उसने बतौर पी.पी. पड़ोसी का फोन नम्बर रखा था।

महेन्द्र कुमार उस वक्त दो पैग लगा चुका था और तीसरे

comicsmylife.blogspot.in

की तैयारी में था तभी पड़ोसी ने बताया था कि फोन कॉल है। शराब की गंध मिटाने के लिए उसने दाल के पकौड़े मुंह में ठूंसे और फिर उठ खड़ा हुआ।

उसने होल्ड किया हुआ रिसीवर पड़ोसी के ड्राइंगरूम में पहुंच कर उठाया।

"महेन्द्र कुमार बोल रहा हूं। हैलो...हैलो...!"

"...हां सुन रहा हूं!" उसने बीच में ही किसी का कठोर और गर्जनायुक्त स्वर सुना, "क्या हाल है बे तेरे? अपने श्वसुर का तो तमाम माल ठिकाने लगा चुका है। सुना है कि बाप के मकान में से भी अपना हिस्सा ले लिया है तूने। प्यारे लाल शर्मा...यही नाम है न तेरे बाप का, जो दिल्ली के आर्य नगर में रहता है?"

"कौन हो तुम? मैंने तुम्हें पहचाना नहीं!" उसने हड़बड़ा कर कहा।

"वक्त लगेगा तुझे महेन्द्र कुमार लेकिन अपनी आदत से मजबूर होकर फोन किया है तेरे पास।"

"क...क्या! कैसी आदत से मजबूर होकर?"

"हां, मेरी आदत है कि दुश्मनी का आगाज करने से पूर्व मैं दुश्मन को हमेशा चेतावनी अवश्य ही देता हूं।" स्वर में क्रोध की मात्रा बढ़ गई थी।

"मेरी क्या दुश्मनी है तेरे से? मैं तो तेरी आवाज भी नहीं पहचानता हूं!"

"सच है—एक पहचान तेरे नाम कर देना चाहता हूं। मेरा संबंध हनुमान प्रसाद शर्मा से है। मेरा संबंध जगन्नाथ काटजू से है।"

"ओह! लगता है अतीत की कब्र फाड़ कर कोई दुश्मनी प्रकट कर रहा है।"

"चाहे जो समझ, लेकिन अब अपनी चिन्ता करना आरम्भ कर दे महेन्द्र कुमार। ईश्वर ने तुझे भैंगा बना कर चेतावनी दी थी कि यह शख्स खतरनाक है। किसी का सगा नहीं—बाप का भी नहीं।"

"फोन पर क्या भौंक रहा है। सामने आकर बात कर ना हरामजादे। तेरे जैसे लोग धमकियां ही दे सकते हैं—मर्द का

बच्चा है तो बहन... सामने आकर बात कर।"

"महेन्द्र बाबू! गाली नहीं!" पड़ोसी अनवर रोष भरे स्वर में बोला, "मैं अपनी पत्नी और बच्चों के साथ रहता हूं। शिष्टाचार का ध्यान तो रखो।"

"माफ करना यार।" कहते हुए रिसीवर उसने क्रेडिल पर रख दिया, "कोई आदमी अनाप-शनाप बक रहा था। इस कारण क्रोध आ गया।"

"लेकिन आपमें तो शराफत होनी चाहिए। दूसरों के घर में गाली बकना आपको शोभा नहीं देता है।"

"कह दिया ना कि गलती हो गई। एक गाली क्या बक दी, जैसे आपका घर ही अपवित्र हो गया।" महेन्द्र कुमार चिल्लाया।

"महेन्द्र बाबू आइन्दा आप यह उम्मीद न रखें कि आपका फोन आने पर बुलाया जाएगा। आप किसी अन्य का नम्बर दे दीजिएगा।"

"अबे! धौंस क्यों दे रहा है, मैं अपनी बूढ़ी मां के नाम पर सीनियर सिटीजन कोटा में फोन के लिए आवेदन कर चुका हूं। एक फोन क्या लगवा लिया है—अपने आपको टेलीकॉम मिनिस्टर ही समझ लिया है।" महेन्द्र कुमार ने अभद्रता भरे अंदाज में कहा, "मैं तो खुद के मकान में रहता हूं, तू तो किराए के मकान में रह रहा है। फिर भी तेवर दिखा रहा है!"

"बेशक मैं किराए के मकान में रह रहा हूं, लेकिन अपने श्वसुर की दौलत पर अय्याशी नहीं कर रहा हूं। रही बात मकान की, तो इस मकान पर भी तुमने काफी कर्जा ले रखा है।"

"साले। तेरी तो मैं... !"

"चुप कर महेन्द्र कुमार!" पड़ोसी को भी क्रोध आ गया, "तू अगर गुण्डा है तो गुण्डों के लिए मैं भी महा गुण्डा हूं। यह मत भूल कि मेरा भाई दिल्ली पुलिस में डी.सी.पी. है। अपने स्वसुर पर गुण्डागर्दी की है। मुझे वैसा शरीफ मत समझ लेना।"

"मैंने गलती मान ली अनवर साहब!" महेन्द्र कुमार के कस-बल ढीले पड़ गए।

"ठीक है, दफा हो अब यहां से। आइन्दा यहां आने की हिम्मत मत करना। बहुत निभा दिया पड़ोसी का धर्म।" अनवर नाम के पड़ोसी ने द्वार की ओर इशारा किया। अपमानित महेन्द्र

comicsmylife.blogspot.in

कुमार ने वहां से ठण्डे-ठण्डे कूच करने में ही सलामती समझी।

सेर को सवा सेर जो मिल गया था।

□□

एडवोकेट क्षितिज क्षेत्रपाल के पास रोहन ने यह सूचना भेज दी थी कि उसे शीघ्र ही पांच करोड़ रुपया प्राप्त हो जाने वाला है। अत: वह उसके पिता को इस बारे में सूचना दे दें।

दोनों की बातचीत फोन पर ही हुई थी।

''तुम्हें रुपया मिल चुका है!'' क्षितिज क्षेत्रपाल का आश्चर्य भरा स्वर था।

''नहीं, अभी मिला नहीं है, शीघ्र ही मिल जाने वाला है।'' आत्मविश्वास था रोहन के स्वर में।

''ठीक है, तुम्हें जब रुपया मिल जाए तो तुम डायरी पढ़ने के लिए स्वतंत्र रहोगे बरखुरदार। मेरे हिस्से की जो जिम्मेदारी है, वह भी मैंने निभानी है लेकिन मैं रुपयों के बारे में विवरण जानना चाहता हूं।''

''मैं यही सुनना चाहता था। इसी सवाल की अपेक्षा थी मुझे।''

''मुझे हैरानी है कि पांच करोड़ रुपया तुम्हारे पास कहां से आ गया?'' क्षितिज का हैरानी भरा स्वर उभरा, ''तुमने यह भी साबित करना है कि पांच करोड़ रुपया तुमने अपराध के द्वारा तो नहीं कमाया होगा।''

''हां, मैं इस बात की गारण्टी कर रहा हूं। दरअसल कोई शख्स है, जो मेरे पिता के कार्य को खरीदना चाहता है। उस कार्य को जो उन्होंने अज्ञातवास के दौरान रचा है। साथ ही वह पापा की डायरी भी खरीदना चाहता है। इसके अलावा, वह यह जानना चाहता है कि पांच करोड़ रुपयों का क्या इस्तेमाल होना है जाहिर है कि पांच करोड़ रुपयों के लिए पापा ने घर छोड़ा था तो उसकी कोई विशेष वजह भी अवश्य रही होगी। वह पूर्ण विवरण पाना चाहता है।'' रोहन ने बेहद गंभीर स्वर में कहा।

''यह सवाल तो मेरे दिल में भी उत्सुकता का ऐसा पहाड़ खड़ा कर चुका है, जिसकी ऊंचाई माउन्ट एवरेस्ट से ज्यादा ही होगी।''

''आप तो सिर्फ पापा के मित्र और उनके एडवोकेट हैं। मैं तो

अंतराल नहीं रहेगा और पार्ट का उपन्यास 'मांग जला दी बेटी ने' आपको शीघ्र ही बुक स्टॉल पर उपलब्ध रहेगा, जो उपन्यास जगत में 2002 का बेमिसाल धमाका साबित होगा।

तो अजीज पाठको यह है वह कारण, जिनकी वजह से मुझे उपन्यास का दूसरा चरण लिखना पड़ा।

- □ पायल पाराशर अपनी मां कैथरीन के गाल पर जब भरी महफिल में तमाचा मारकर उस पर ममता को जलील करने का आरोप लगाती है, तब बेहद ठण्डे स्वर में कैथरीन उसे यह क्यों कहती है कि बेशक तूने भरी महफिल में मेरे गाल पर तमाचा मारा है लेकिन मैं एकांत में अपने रहस्य का वह तमाचा मारूंगी जो जिन्दगी भर तेरे गाल की जलन बन कर तेरे साथ रहेगा। क्या वाकई ऐसा कोई रहस्य बता पाई थी कैथरीन? क्या भेद था कैथरीन के हृदय में जो उसे कत्ल कर दिया गया?
- □ कौन था कैथरीन का कातिल?
- □ कौन था वह अजनबी शख्स जो कैथरीन को इण्डिया जाने की सलाह दे रहा था? दुश्मन या दोस्त?
- □ डायरी का वह चोर कौन था और वह डायरी चुराने क्यों पहुंचा था?
- □ क्या वाकई रोहन को पांच करोड़ रुपए मिलेंगे?
- □ पराग कौटिल्य पाराशर ने कैथरीन के बारे में सच बोला था या झूठ?
- □ क्या क्रांतिदूत शर्मा अपने परिवार के बीच पहुंचे?
- □ पांच करोड़ रुपया पाकर वह उनका क्या करना चाहते थे?
- □ पायल ने अनवर खान का क्या किया था? क्या उस बच्चे को पायल ने वापिस किया?
- □ रत्ना राणा और उसकी चार अन्य साथी युवतियों के भविष्य का क्या हुआ?
- □ वासुदेव कुमारन ने अपना वायदा निभाया या तोड़ा?
- □ उस डॉक्टरेट थिसिस का क्या हुआ, जिसे नोबेल पुरस्कार के लिए भेजा गया था?
- □ क्या हुआ जगन्नाथ नानाजी की स्टेट का?
- □ पांच करोड़ रुपयों ने क्या गुल खिलाए?

comicsmylife.blogspot.in

- ☐ पराग पाराशर और पायल का शर्मा परिवार से क्या रिश्ता था?
- ☐ तेजपाल शर्मा की असलियत क्या थी?
- ☐ क्रांतिदूत शर्मा ने जो लिफाफा एडवोकेट क्षितिज क्षेत्रपाल के पास रखवाया था, क्या वह खाली ही था अथवा उसे खाली कर दिया गया था?
- ☐ वह दामाद जो सपेरा था—वह बेटी जो नागिन थी। क्या उन्हें अपने कर्मों की सजा मिली?
- ☐ पायल पाराशर की मां वास्तव में कौन थी?
- ☐ तीस वर्ष पूर्व प्राइवेट नर्सिंग होम में क्या कैथरीन ने मृत शिशु को जन्म दिया था?
- ☐ खुद पराग कौटिल्य पाराशर की असलियत क्या थी?
- ☐ संगमा देवी का क्या हुआ?

इन सवालों के अतिरिक्त भी ढेरों रहस्य हैं। जिन्हें आप प्याज के छिलकों ही तरह से उतरते देखना चाहते हैं। अत: अपनी प्रति आज ही सुरक्षित करवाएं ऐसा न हो कि 'मांग जला दी बेटी ने' उपन्यास से आपको वंचित रह जाना पड़े।

और अब आगे...

☐☐

अतीत की उस घटना के सजीव चित्रण ने सभी को स्तब्ध कर दिया। खास तौर पर इस बात ने कि संगमा नाम की वह औरत गर्भवती थी और पति को पाने के लिए वह हर कुर्बानी करने को तैयार थी।

"बीस साल पुरानी बात आप आज बता रहे हैं अरविन्द भइया!" रुकमणी ने ठण्डी सांस भरी, फिर कहा, "उस समय आपको संगमा को हमारे पास गुड़गांव ले आना था।"

"क...क्यों?" अरविन्द ने घूर कर पूछा।

"ताकि उसका किस्सा भी हराम के पिल्ले के साथ ही निबटा दिया जाता।"

"यह कहना आसान है भाभी। लेकिन किसी गर्भवती नारी पर जुल्म करना तुम्हारे बस की भी बात नहीं थी क्योंकि रिश्ते में वह तुम्हारी मां थी—बेशक सगी नहीं! लेकिन रिश्ता तो मां का ही था।"

दोनों ने फिर उन कागजों का बेताबी के साथ मुआयना किया। लेकिन कागज एकदम कोरे थे। उन पर एक शब्द भी लिखा हुआ नहीं था।

"कमाल है! यदि यह कागज कोरे ही रखने थे, तो फिर इन्हें मेरे पास रखवाया क्यों गया।" एडवोकेट क्षेत्रपाल के मुख से आश्चर्य का सावन बरसा।

जबकि रोहन को महसूस हो रहा था कि वह अंतरिक्ष के चक्कर लगा रहा है। तमाम दुनिया उसे अपनी आंखों के आगे घूमती नजर आ रही थी।

जब इंसान भरपूर आशा के रहते अप्रत्याशित निराशा से दो-चार होता है, तब स्वयं को सामान्य बनाने में उसे वक्त लगता है। उसी वक्त की दरकार थी तब दोनों को।

☐☐☐

दामाद सपेरा बेटी नागिन
की
अपार सफलता के बाद
मनोज
का आगामी नया उपन्यास
मांग जला दी बेटी ने
शीघ्र आ रहा है...

comicsmylife.blogspot.in

दामाद सपेरा बेटी नागिन

A.H.W. Sawan Series

दौलत की लपटों में रिश्तों का जलना कोई नई बात नहीं थी। नई बात तो यह थी, दौलत के लिए अपने जन्मदाता, अपने पिता को ही जिंदा जला देने की खौफनाक घटना।

और इस घटना को अंजाम दिया, उस जहरीली नागिन ने जो उसके खून के एक कतरे से पैदा हुई थी।

उसके पति ने सपेरा बनकर उसे नचाया। वह बल खा-खाकर नाचती रही और कहर बनकर डसती रही उन्हें जो उसके अपने थे...खास थे!

मगर स्वार्थ की दुनिया में जीने वाले, स्वार्थ सिद्धि को ईमान मानने वाले ऐसे लोगों का एक दिन क्या अंजाम होता है—उपन्यासकार 'मनोज' ने इसी सुलगते सवाल को उठाया है इस उपन्यास में।

आदि से अंत तक एक ही बैठक में पठनीय एक बेहतरीन शाहकार है—'मनोज' का यह नवीनतम उपन्यास!

मनोज पब्लिकेशन्स

comicsmylife.blogspot.in